А. П. ЧЕХОВ

ПОВЕСТИ и РАССКАЗЫ
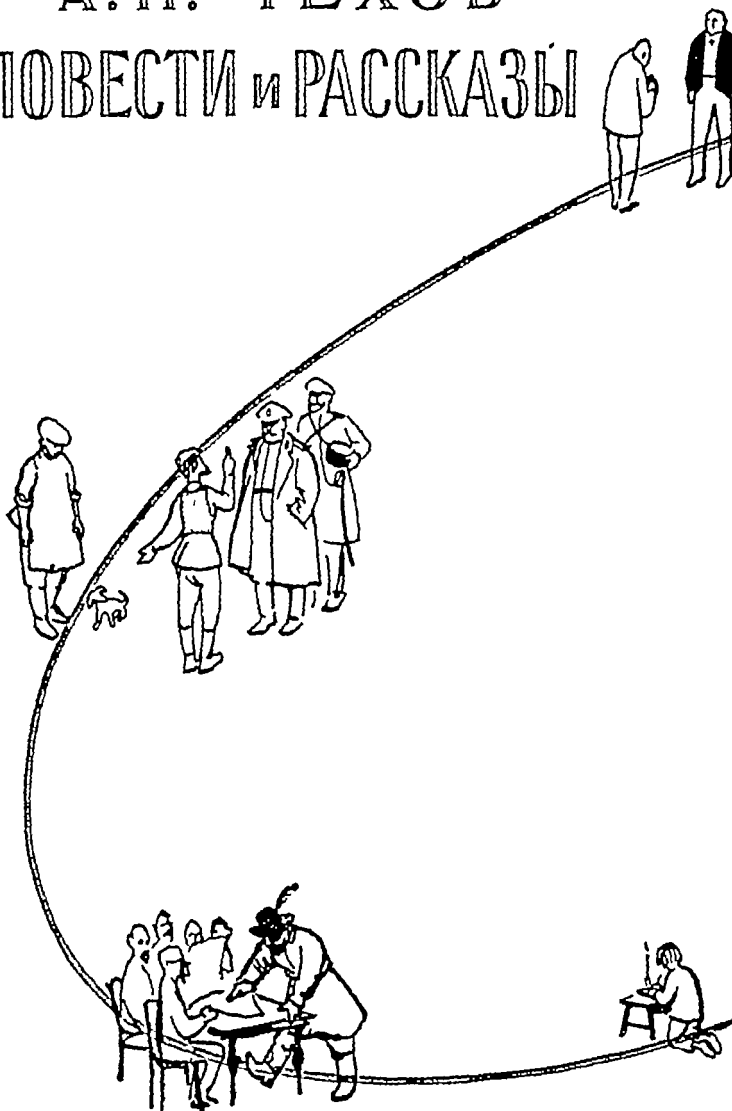
ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ
НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ

अ. प. चेख़ोव
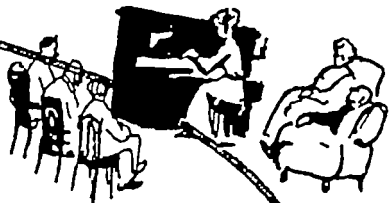
लघु उपन्यास और कहानियाँ

अनुवादक कृष्ण कुमार

विषय-सूची

क्लर्क की मौत

वह एक सुन्दर रात थी जब होशियार क्लर्क, इवान दिमीत्रिच चेरव्यकोव* अव्वल दर्जे की दूसरी पक्ति में वैठकर दूरवीन की मदद से 'लक्लोचेस दकर्नविल' का आनन्द ले रहा था। वह खेल देख रहा था और अपने को सबसे सुखी मनुष्य समझ रहा था, जब यकायक— 'यकायक' एक घिसा-पिटा मुहावरा हो गया है, किन्तु लेखको के सामने उसका प्रयोग करने के अलावा चारा ही क्या है, क्योकि ज़िन्दगी ही अचम्भो से भरी है—तो, यकायक उसका चेहरा सिकुड गया, उसकी आखें आसमान की ओर चढ गयी, उसकी सास रुक गयी. वह दूरवीन से मुह हटाकर अपने स्थान पर दोहरा हो गया और आक छी!. कहने का मतलव यह कि उसे छीक आ गयी। यू तो हर किसी को जहा चाहे छीकने का हक है, किसान, थाने के दारोगा, यहा तक कि प्रिवी कौंसिल के मेम्बर तक छीकते है—हर कोई छीकता है, हर कोई। चेरव्यकोव को इससे कोई झेंप नही लगी, रूमाल से उसने अपनी नाक पोछी और एक शिष्ट व्यक्ति की भाति, यह देखने के लिए कि उसकी छीक से किसी को असुविधा तो नही हुई, उसने चारो ओर निगाह दौडायी और तव वह

* "चेरव्याक" शव्द से, जिसका मतलव है कृमि।

सचमुच घबडा गया क्योकि उसने एक छोटे से वृद्ध व्यक्ति को पहली पक्ति मे अपने ठीक आगे बैठा हुआ देखा जो सावधानी से अपनी गजी खोपडी और गरदन को अपने दस्ताने से साफ कर रहा था और कुछ बडबडाता जा रहा था। चेरव्यकोव ने उस बूढे को पहचान लिया कि वह यातायात मन्त्रालय के सिविल जनरल ब्रिजालोव हैं।

"मैंने उनके ऊपर छीका है!" चेरव्यकोव ने सोचा। "वह मेरे अफसर नही है, यह सही है, किन्तु, तब भी यह कितना भद्दा है! मुझे माफी मागनी चाहिए।"

हल्के से खासकर, चेरव्यकोव आगे झुका और जनरल के कान में फुसफुसाया—

"मैं क्षमाप्रार्थी हू, महानुभाव, मै छीका था मेरा यह मतलब नही था कि "

"अजी, कोई बात नही!"

"कृपया मुझे क्षमा कर दें। मै यह जान बूझकर नही हुआ था "

"ईश्वर के लिए क्या तुम चुप नही रह सकते? मुझे सुनने दो!"

कुछ घबडाया हुआ चेरव्यकोव झेंप में मुसकराया और खेल की तरफ मन लगाने की कोशिश की।

वह अभिनेताओ को देख रहा था किन्तु अब वह अपने को दुनिया का सबसे ज्यादा सुखी इसान नही समझ पा रहा था।

पश्चात्ताप मे वह डूबा हुआ था। इटरवल (मध्यान्तर) में वह ब्रिजालोव के पास पहुचा, एक क्षण असमजस में गुमसुम खडा रहा, फिर साहस बटोरकर वह मिनमिनाया—

"हुजूर! मैंने आप के ऊपर छीक दिया मुझे क्षमा करें . आप जानते हैं मेरा यह मतलब नही "

"अरे ! बस मैं तो उसे भूल भी गया था, क्या तुम छोडोगे नही इस बात को ?" जनरल ने कहा। बेसब्री से उसका अधर फडक रहा था।

"वह कहते है कि वह भूल गये है, लेकिन मुझे उनकी आखो का भाव ठीक नही लगा" चेरव्यकोव जनरल की ओर अविश्वासपूर्वक ताकते हुए सोच रहा था।

"मुझसे बात नही करना चाहते ! मुझे उन्हें अवश्य समझाना चाहिए कि मेरा यह मतलब नही था कि कि यह प्रकृति का एक नियम है, अन्यथा शायद वह यह सोच बैठें कि मैं उन पर थूकना चाहता था। अभी भले ही वह ऐसा न सोचे, लेकिन बाद में शायद वह सोचने लगे "

घर पहुचकर चेरव्यकोव ने अपनी पत्नी को अपने अभद्र व्यवहार के बारे में बताया। उसे लगा कि उसकी बीवी ने इस घटना की बात बडी बेपरवाही से सुनी। यह ठीक है कि एक पल के लिए तो वह अवश्य सहमी, पर यह जानकर कि ब्रिजालोव हमारा अफसर नही है वह निश्चिन्त-सी हो गयी।

"लेकिन मेरा ख्याल है कि तुम्हे जाकर माफी माग लेनी चाहिए," उसने कहा "अन्यथा वह सोचेगे कि तुम्हे भले आदमियो में बैठने का शऊर नही है।"

"यही तो ! मैंने माफी मागने की कोशिश की थी, पर इसका ढग ऐसा अजीब था। कोई कायदे की बात ही नही की। फिर वहा बात करने का मौका भी नही था।"

अगले दिन चेरव्यकोव ने अपना दफ्तरवाला नया कोट पहना, बाल कटवाये और ब्रिजालोव से माफी मागने गया। जनरल का मुलाकाती कमरा प्रार्थियो से भरा हुआ था और जनरल खुद उनकी

अर्ज़ियां सुन रहा था। उनमें से कुछ से बात करने के बाद जनरल की निगाह उठी और चेरव्यकोव के चेहरे पर जा अटकी।

"हुजूर, कल रात, 'आर्केडिया' में, अगर आपको याद हो," क्लर्क ने कहना शुरू किया "मैं आ मुझे छीक आ गयी थी, और आ . ऐसा हुआ मैं क्षमा चाहता "

"उफ, क्या बकवास है।" जनरल ने कहा और दूसरे आदमी से पूछने लगा "मैं आप के लिए क्या कर सकता हू?"

"मेरी बात सुनेंगे नही!" डर से पीले पडते हुए चेरव्यकोव ने सोचा, "इसका मतलब है कि वह मुझसे बहुत नाराज़ हैं। बात यही खत्म नही की जा सकती मुझे यह बात उन्हे समझा ही देनी चाहिए।"

जब जनरल अन्तिम प्रार्थी से बात करके अपने निजी कमरे की ओर जाने के लिए मुडा, चेरव्यकोव उनके पीछे भिनभिनाता हुआ जा पहुचा—

"हुजूर, मुझे माफ करें। हार्दिक पश्चात्ताप होने के कारण ही मैं आपको कष्ट देने का दुस्साहस कर पा रहा हू।"

ऐसा लगा मानो जनरल चीख पडेंगे। हाथ से उसे जाने का इशारा करते हुए उन्होंने कहा—

"तुम मेरा मज़ाक उडा रहे हो, जनाब!" और उसके सामने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"मज़ाक" चेरव्यकोव ने सोचा, "मुझे तो इसमें कोई मज़ाक की बात दिखायी नही देती। क्या वह समझते नही? और वह बडे जनरल हैं! बहुत अच्छा, मैं इस भले आदमी को अब अपनी क्षमा प्रार्थनाओ से परेशान नही करूगा। भाड में जायें वह! मैं उन्हे एक पत्र लिख दूगा, मैं अब उनके पास जाऊगा नहीं, हा, मै नही जाऊगा—बस।"

ऐसे ही विचारो में डूबा चेरव्यकोव वापस घर पहुचा, पर उसने पत्र नही लिखा। उसने बहुत सोचा-विचारा, लेकिन वह यह नही

तय कर पाया कि वात किन शब्दो में लिखी जाय। अत अगले दिन फिर, उसे मामला साफ करने के लिए जनरल के पास जाना पडा।

"श्रीमान! मैंने कल आपको कष्ट देने की जो हिम्मत की थी "—जब जनरल ने उसपर प्रश्नसूचक निगाह डाली, तो उसने कहना शुरू किया—"आपपर हसने के लिए नही, जैसा कि हुजूर ने कहा, मैं आपके पास माफी मागने आया था, कि आपको मेरी छीक से कष्ट हुआ जहा तक आपका मज़ाक उडाने की वात है, मै ऐसी वात कभी सोच भी नही सकता, मैं यह हिम्मत कैसे कर सकता हू? अगर हम लोगो के दिमाग में ऐसे लोगो का मज़ाक़ वनाने की वात घर कर जाय, तो फिर सम्मान की भावना कहा रह जायगी . वडो की कोई इज्जत ही नही रह जायगी "

"निकल जाओ, यहा से!!!" गुस्से से कापते, लाल पीले हो, जनरल चीखा।

भय से स्तम्भित हो, चेरव्यकोव फुसफुसाय—"क—क—क्या?"

पैर पटकते हुए, जनरल ने दोहराया—"निकल जाओ!!!"

चेरव्यकोव को लगा जैसे उसके भीतर तडाक से कुछ टूट गया हो, दिल डूब रहा हो।

जब वह लडखडाते हुए पीछे चलकर दरवाज़े तक पहुचा, दरवाज़े से वाहर आया और सडक पर चलने लगा, तव वह न कुछ देख रहा था, न सुन रहा था, सज्ञाशून्य, यत्रचालित-सा वह सडक पर वढता गया, घर पहुचकर वह दफ्तरवाला कोट पहने ही जैसे का तैसा, सोफे पर गिर पडा और मर गया।

१८८३

अर्जियां सुन रहा था। उनमें से कुछ से बात करने के
निगाह उठी और चेरव्यकोव के चेहरे पर जा अटकी
"हुजूर, कल रात, 'आर्केडिया' में, अगर आ
क्लर्क ने कहना शुरू किया "मैं आ मुझे छीं
और आ ऐसा हुआ मैं क्षमा चाहता
"उफ, क्या बकवास है।" जनरल ने कहा औ
से पूछने लगा "मैं आप के लिए क्या कर सकता हू
"मेरी बात सुनेंगे नहीं।" डर से पीले पड़ते हु
सोचा, "इसका मतलब है कि वह मुझसे बहुत नाराज़
खत्म नहीं की जा सकती मुझे यह बात उन्हें समझा ही दे
जब जनरल अन्तिम प्रार्थी से बात करके अपने निजी कम
जाने के लिए मुड़ा, चेरव्यकोव उनके पीछे भिनभिनाता हुआ जा पहुंचा।
"हुजूर, मुझे माफ करें। हार्दिक पश्चात्ताप होने के कारण

तय कर पाया कि बात किन शब्दो में लिखी जाय। अत अगले दिन फिर, उसे मामला साफ करने के लिए जनरल के पास जाना पडा।

"श्रीमान! मैंने कल आपको कष्ट देने की जो हिम्मत की थी . "—जब जनरल ने उसपर प्रश्नसूचक निगाह डाली, तो उसने कहना शुरू किया—"आपपर हसने के लिए नही, जैसा कि हुजूर ने कहा, मैं आपके पास माफी मागने आया था, कि आपको मेरी छीक से कष्ट हुआ जहा तक आपका मजाक उडाने की बात है, मैं ऐसी बात कभी सोच भी नही सकता, मैं यह हिम्मत कैसे कर सकता हू? अगर हम लोगो के दिमाग में ऐसे लोगो का मजाक बनाने की बात घर कर जाय, तो फिर सम्मान की भावना कहा रह जायगी बडो की कोई इज्जत ही नही रह जायगी "

"निकल जाओ, यहा से!!!" गुस्से से कापते, लाल पीले हो, जनरल चीखा।

भय से स्तम्भित हो, चेरव्यकोव फुसफुसाय—"क—क—क्या?"

पैर पटकते हुए, जनरल ने दोहराया—"निकल जाओ!!!"

चेरव्यकोव को लगा जैसे उसके भीतर तडाक से कुछ टूट गया हो, दिल डूब रहा हो।

जब वह लडखडाते हुए पीछे चलकर दरवाजे तक पहुचा, दरवाजे से बाहर आया और सडक पर चलने लगा, तब वह न कुछ देख रहा था, न सुन रहा था, सज्ञाशून्य, यन्त्रचालित-सा वह सडक पर बढता गया, घर पहुचकर वह दफ्तरवाला कोट पहने ही जैसे का तैसा, सोफे पर गिर पडा और मर गया।

१८८३

गिरगिट

पुलिस का दारोगा ओचुमेलोव* अपना नया ओवरकोट पहने, बगल मे एक बण्डल दबाये बाज़ार से गुज़र रहा था। उसके पीछे पीछे लाल बालोवाला पुलिस का एक सिपाही हाथ में एक टोकरी लिये लपका हुआ चला आ रहा था। टोकरी ऊपर तक बेरो से भरी हुई थी, जिन्हे उन्होने उसी वक्त ज़ब्त किया था। चारो ओर खामोशी थी। चौक में एक भी आदमी नही, भूखो के जबडो की तरह खुले हुए दुकानो व सरायो के दरवाज़े ईश्वर की सृष्टि को उदासी भरी निगाहो से ताक रहे थे। यहा तक कि कोई भिखारी भी आसपास दिखायी नही देता था।

"अच्छा! तो तू काटेगा? क्यो बे! शैतान कही का!" ओचुमेलोव के कानो मे सहसा यह आवाज़ पडी, "पकड तो लो, छोकरो! जाने न पाये! अब तो काटने के खिलाफ भी कानून बन गया है! पकड लो! आ आह!"

एक कुत्ते के पिपयाने की आवाज़ सुनायी दी। ओचुमेलोव ने उधर नज़र दौडायी जिधर से आवाज़ आयी थी। उसने देखा कि पिचूगिन की लकडी की टाल में से एक कुत्ता तीन टागो से भागता हुआ

---

* "ओचुमेली" शब्द से जिसका मतलब है उद्‌भ्रान्त।

चला आ रहा है। कलफदार छपी हुई कमीज़ पहने, वास्कट के वटन खोले एक आदमी उसका पीछा कर रहा है जिसका वदन आगे की ओर झुका हुआ है, वह कुत्ते पर झपटता है, लपककर उसे पकडने की कोशिश करता है और गिरते गिरते भी कुत्ते की पिछली टाग पकड लेता है। कुत्ते की पें पें फिर सुनायी दी, और साथ ही वही आवाज़ — "जाने न पाये।" ऊघते हुए लोग गरदनें दूकानो से वाहर निकालकर देखने लगे, और देखते देखते एक भीड टाल के पास जमा हो गयी, मानो ज़मीन फाडकर निकल आयी हो।

"हुजूर! मालूम पडता है कि कुछ झगडा-फसाद है!" — सिपाही बोला।

ओचुमेलोव मुडा और भीड की ओर चल दिया। टाल के दरवाज़े पर ही उसकी मुठभेड उस आदमी से हो गयी जिसकी वास्कट के वटन खुले हुए थे, जिसका ज़िक्र अभी ऊपर किया जा चुका है। वह अपना दाहिना हाय ऊपर उठाये, भीड को अपनी लहूलुहान उगली दिखा रहा था। लगता था कि उसकी शरावियो जैसी सूरत पर साफ लिखा हुआ हो कि "अवे वदमाश!" और उसकी उगली जीत का निशान मालूम पडती थी। ओचुमेलोव ने इस व्यक्ति को पहचान लिया। वह सुनार ख्रूकिन था। भीड के वीचोवीच अगली टागें पसारे, मुजरिम — एक सफेद वोर्ज़ोइ पिल्ला, दुवका पडा, ऊपर से नीचे तक काप रहा था। उसका मुह नुकीला था और पीठ पर पीला दाग़ था। उसकी आसू भरी आखो में मुसीवत और डर की छाप थी।

"क्या हगामा मचा रखा है यहा?" ओचुमेलोव ने कधो से भीड को चीरते हुए सवाल किया। "यह उगली क्यो ऊपर उठाये हो? कौन चिल्ला रहा था? तुम लोग यहा भीड क्यो लगाये हुए हो?"

हो? कानून की परवाह किये बिना, एक मिनट मे उससे छुट्टी पा ली जाय! ख्रूकिन! तुम्हें चोट लगी है। तुम इस मामले को यू ही मत टालो इन लोगो को मजा चखाना पडेगा। ऐसे काम नही चलेगा।"

"लेकिन मुमकिन है, जनरल साहब का ही हो," कुछ अपने आपसे सिपाही फिर बोला, "इसके माथे पर तो लिखा नही है। उन जनरल साहब के अहाते में मैंने कल बिल्कुल ऐसा ही कुत्ता देखा था।"

"हा, हा, जनरल साहब का तो है ही!" भीड में से किसी की आवाज़ आयी।

"हू येल्दीरिन जरा मुझे कोट तो पहना दो। अभी हवा का एक झोका आया था, मुझे सरदी लग रही है। कुत्ते को जनरल साहब के यहा ले जाओ और वहा मालूम करो। कह देना कि मैंने इसे सडक पर देखा था और वापस भिजवाया है और हा, देखो, यह भी कह देना कि इसे सडक पर न निकलने दिया करे मालूम नही, कितना कीमती कुत्ता हो और अगर सुअर इसके मुह में सिगरेट घुसेडता रहा तो कुत्ता बहुत जल्दी तबाह हो जायगा। कुत्ता बहुत नाज़ुक जानवर होता है और तू हाथ नीचा कर, गधा कही का! अपनी गन्दी उगली क्यो दिखा रहा है? सारा कसूर तेरा ही है"

"यह जनरल साहब का बावर्ची आ रहा है, उससे पूछ लिया जाय। ए प्रोखोर! इधर तो आना भाई! इस कुत्ते को देखना, तुम्हारे यहा का तो नही है?"

"अमा वाह! हमारे यहा कभी भी ऐसा कुत्ता नही था!"

"इसमें पूछने की क्या बात थी? बेकार वक्त खराब करना है," ओचुमेलोव ने कहा, "आवारा कुत्ता है। यहा खडे खडे इसके बारे में बात करना समय बरबाद करना है। तुम से कहा गया है कि सडक पर

"हमारा तो नही है," प्रोखोर ने फिर कहा, "यह जनरल साहब के भाई का कुत्ता है। अभी थोडे दिन हुए, वह यहा आये है। हमारे जनरल साहब को बोर्ज़ोई जाति के कुत्तो मे कोई दिलचस्पी नही है, पर उनके भाई साहब! उन्हे यह नस्ल पसन्द है "

"क्या? जनरल साहब के भाई आये है? व्लादीमिर इवानिच?" अचम्भे से ओचुमेलोव बोल उठा, उसका चेहरा आह्लाद से चमक उठा। "ज़रा सोचो तो! मुझे मालूम भी नही? अभी ठहरेगे क्या?"

"हा साहब।"

"ज़रा सोचो, उन्होने अपने भाई से मिलना चाहा और मुझे मालूम भी नही कि वह आये है। तो यह उनका कुत्ता है? बहुत खुशी की बात है। इसे ले जाओ कैसा प्यारा नन्हा-मुन्ना-सा कुत्ता है। इसकी उगली पर झपटा था? हा हा हा बस बस, अब कापो मत। गुर्र गुर्र शैतान गुस्से में है कितना बढिया पिल्ला है!"

प्रोखोर ने कुत्ते को बुलाया और उसे अपने साथ लेकर टाल से चल दिया। भीड ख्र्यूकिन पर हसने लगी।

"मै तुझे ठीक कर दूगा," ओचुमेलोव ने उसे धमकाया और अपना लबादा लपेटता हुआ बाज़ार के बीच अपने रास्ते चला गया।

१८८४

नकाब

"एक्स" नाम के क्लब में किसी संस्था की सहायतार्थ ड्रेस-वाल डास या जैसा कि स्थानीय नवयुवतिया उसे पुकारती है, "वाल पारेय" हो रहा था, जिसमे लोग वेश बदलकर और चेहरो पर नकाब लगाकर नाचते हैं।

उस समय आधी रात थी। नाच में भाग न लेनेवाले वुद्धिजीवी 'ज्ञानी' लोग, जो नकाब नही पहने थे, वाचनालय में बडी मेज़ के चारो ओर बैठे हुए थे। सख्या में वे पाच थे, उन की नाक और दाढिया अखबारो के पन्नो में दवी हुई थी, वे पढ रहे थे। ऊघ रहे थे और राजधानी के समाचारपत्रो के स्थानीय उदारचेता विशेप सवाददाता के शब्दो में "विचारमग्न" थे।

नाचघर से एक विशेष नाच, "क्वैड्रिल" के सगीत की धुन आ रही थी। वैरे वारबार दरवाज़े के पास मे पैर खटखटाते और तश्तरिया खनखनाते हुए भाग-दौड कर रहे थे। किन्तु वाचनालय के भीतर गभीर शान्ति का साम्राज्य था।

एक घुटी हुई सी गहरी आवाज़ ने, जो किसी सुरग से आयी मालूम देती थी, शान्ति भग कर दी। "मै समझता हू, हमे यहा ज्यादा आराम रहेगा, चले आओ साथियो! इस तरफ!"

दरवाज़ा खुला और एक चौडे कन्धोवाला, नाटा, हट्टा-कट्टा व्यक्ति कोचवान की वरदी पहने, अपनी टोपी में मोरपख लगाये, नकाव लगाये, वाचनालय में घुसा। उसके पीछे नकाव लगाये दो महिलाए थी और किश्ती लिये वैरा था। किश्ती में चौडे पेंदेवाली हलकी शराव की एक वोतल, लाल शराव की तीन वोतले और कई गिलास थे।

"इस तरफ, यहा ज्यादा ठडा रहेगा," उस आदमी ने कहा, "किश्ती मेज़ पर रख दो, कुमारियो वैठ जाओ! और आप सज्जनो, ज़रा जगह दीजिये, आप हमारी वातचीत में वाधक होगे।" वह थोडा-सा डगमगाया और अपने हाथ से झाडकर मेज़ पर से कई पत्रिकायें गिरा दी। "रख दो उसे! और आप लोग रास्ते से हट जाइये! पढनेवाले सज्जनो! यह आप की राजनीति या अखवार पढने का वक्त नही है उन्हे अलग हटाइये!"

"मैंने कहा, आप थोडा शान्त रहे न!" पढाकू ज्ञानियो मे से एक अपने चश्मे से नकावपोश की ओर घूरता हुआ वोला, "यह वाचनालय है, शरावखाना नही यह शराव पीने की जगह नही है।"

"कौन कहता है? क्या मेज़ मजवूत नही है? या हमारे ऊपर छत आ गिरेगी? क्या मज़ाक है! लेकिन मेरे पास वातें करने के लिए वक्त नही है। आप अपने अखवार रख दे वहुत पढ चुके आप लोग और यह पढाई काफी है। वैसे ही आप लोग वहुत काविल है। इसके अलावा ज्यादा पढने से आप लोगो की आखें खराव हो जायेंगी, लेकिन इससे ज्यादा वडी वात यह है कि मै यहा यह नही होने दूगा—वस।"

वैरे ने मेज़ पर किश्ती रख दी और झाडन वाह पर डाल, दरवाजे पर खडा हो गया। महिलाओ ने तुरन्त लाल शराव उडेलनी शुरू कर दी।

"ज़रा सोचो तो! ऐसे भी वुद्धिमान लोग होते है जो ऐसी शराव से अखवार ज्यादा पसन्द करते है," मोरपखवाले ने अपने लिए शराव

उडेलते हुए कहा। "यह मेरा विश्वास है, आदरणीय महानुभावो, कि आप लोगो को अखबार इसलिए अधिक प्रिय है कि आपके पास शराब पीने के लिए पैसा नही है। क्या मै ठीक कहता हू? हा हा हा इन पढाकुओ की ओर देखो और आपके अखवारो में लिखा क्या है? ए चश्मेवाले! हमें भी कुछ खवर वताओ? हा हा हा अच्छा बन्द करो यह सब। रोव गाठने की या तकल्लुफ वरतने की जरूरत नही है। लो थोडी शराव पिओ!"

मोरपखवाले ने हाथ वढाकर चश्मेवाले सज्जन के हाथ से अखवार छीन लिया। चश्मेवाला भौचक्का हो दूसरे ज्ञानियो की ओर देखता हुआ गुस्से से लाल पीला पडने लगा, दूसरे ज्ञानी भी उसकी ओर देखने लगे।

"जनाव-आली! आप अपने आप को भूल गये है!" वह चिल्लाया। "आप वाचनालय को शराब के अड्डे में वदले डाल रहे है, आप हगामा कर रहे है, लोगो के हाथ से अखवार छीन रहे है, और समझ रहे हैं कि यह सव ठीक है। पर मै यह वरदाश्त नही कर सकता! आप जानते नही, जनाव, कि आप बात किससे कर रहे हैं। मै वैक का मैनेजर जेस्त्याकोव हू! "

"मुझे खाक परवाह नही है कि तुम जेस्त्याकोव हो। और तुम्हारे अखवार की मैं कितनी इज्जत करता हू, वह इसी से साबित हो जायगी।" यह कहते हुए उसने अखबार उठा लिया और फाडकर उसके टुकडे टुकडे कर डाले।

गुस्से से पागल हुआ जेस्त्याकोव बोला, "भले मानस। इसके मानी क्या है? यह तो वहुत अजीब बात है, यह यह तो बस भौचक्का कर देनेवाली बात है।"

"अव गुस्सा हो रहे है!" वह व्यक्ति हसते हुए बोला– "हाय, मै कितना डर गया हू! देखो, डर के मारे मेरी टागें कैसी थर्रा

रही है   अच्छा, सज्जनो! अब मेरी बात सुनो, मजाक अलग रहा, मैं आपसे कतई बात करना नही चाहता   आप देख रहे है कि मैं इन कुमारियो के साथ एकान्त चाहता हू, मैं मौज करना चाहता हू, इसलिए, मेहरबानी करके गडबड न मचाओ और यहा से चुपचाप चले जाओ   वह रहा दरवाजा। श्री वेलेवूखिन! निकल जाओ यहा से, जाओ जहन्नुम में! तुम इस तरह अपना थूथन क्यो उठा रहे हो? जब मैं कहता हू जाओ, तो फौरन चले जाओ   जल्दी, वरना उठाकर फेंक दूगा! "

अनाथो की अदालत के खजानची वेलेवूखिन ने क्रोध से लाल पडते हुए और कधे मटकाते हुए कहा, "क्या कहा तुमने? मेरी समझ में नही आता   कोई उद्दण्ड व्यक्ति कमरे में घुस आये और   एकाएक भगवान जाने क्या क्या वकने लगे।"

"क्या कहा? उद्दण्ड?" क्रोध से मेज पर घूसा मारते हुए, जिससे किश्ती में रखे गिलास उछल पडे, मोरपखवाला आदमी चिल्लाया, "तुम समझते क्या हो? तुम किससे वात कर रहे हो? क्या तुम समझते हो कि मैं नकाब पहन हू, तो तुम मुझे जो चाहो कह लोगे? तुम तो वडे खरदिमाग हो! मैं कहता हू, निकल जाओ वाहर! और वैंक मनेजर भी यहा से रफूचक्कर हो जाय! तुम सव वाहर निकल जाओ! मैं नही चाहता कि एक भी वदमाश इस कमरे में रहे। भागो   जाओ अपने सूअरखानो में!"

"वह हम देख लेगे," जेस्त्याकोव वोला, जिसका चश्मा तक क्रोध में पसीना पसीना होता मालूम पड रहा था। "मैं तुम्हे अभी दिखाता हू। अरे कोई है? अरे, तुम जरा किसी मैनेजर वैनेजर को तो बुलाओ!"

एक मिनट बाद, छोटे कद का लाल बालोंवाला मैनेजर कोट के कालर में अपने पद का सूचक नीला फीता लगाये, नाच की मेहनत से हाफता हुआ कमरे में आया।

"कृपा कर इस कमरे को छोड दे!" उसने शुरू किया, "यह पीने की जगह नही है! मेहरबानी करके जलपान-कक्ष मे जाय।"

"और तुम कहा से आ टपके?" नकाबवाला बोला, "मैने तो तुम्हे बुलाया नही था।"

"कृपया गुस्ताखी न करे और बाहर चले जाय।"

"देखिये, जनाब! चूकि आप यहा के प्रबन्धक है और एक प्रमुख अधिकारी है मै आपको एक मिनट का मौका देता हू – इन कलाकारो को बाहर ले जाइये। मेरे साथ की ये कुमारिया आसपास किसी अजनबी का रहना पसन्द नही करती वे शरमाती है और मै अपने पैसे की पूरी कीमत चाहता हू, और उन्हे बिल्कुल वैसा ही देखना चाहता हू जैसा कि उन्हे प्रकृति ने बनाया था"

"निश्चय ही यह सुअर यह नही समझ रहा कि वह अपने सुअरखाने में नही है," जेस्त्याकोव चिल्लाया, "येवस्त्रात स्पिरिदोनिच को बुलाओ!"

"येवस्त्रात स्पिरिदोनिच!" – सारे क्लब में यही आवाज़ गूज उठी "येवस्त्रात स्पिरिदोनिच कहा है?"

और शीघ्र ही वह आ पहुचा, पुलिस की वरदी पहने वह एक बूढा आदमी था।

भारी गले से अपनी डरावनी आखें तरेरते हुए और खज़ाब से रगी अपनी मूछें हिलाते हुए वह बोला – "मेहरबानी कर कमरा छोड दें।"

मज़ा लेकर वह व्यक्ति हसते हुए बोला –

"सचमुच तुमने तो मुझे डरा दिया, भगवान की कसम, बिल्कुल

डरा दिया। कैसी मजाकिया सूरत है! खुदा की कसम, बिल्ली की सी मूछें! बाहर निकल पड रही आखें! ओफ! हा हा हा ”

गुस्से से कापता, अपना सारा दम लगाकर येवस्त्रात स्पिरिदोनिच चीखा—“ वहम बन्द करो! निकल जाओ, वरना मै तुम्हे बाहर फिकवा दूगा!”

वाचनालय में हगामा मचा हुआ था। लाल टमाटर बना स्पिरिदोनिच चिल्ला रहा था और पैर पटक रहा था। जेस्त्याकोव चिल्ला रहा था। वेलेवूखिन चीख रहा था। सभी ‘बुद्धिजीवी’ चिल्ला रहे थे। पर उन सब की आवाजें नकाबपोश की गले से निकली, दबी-घुटी, गभीर आवाज़ में डूब गयी। इस होहल्ले में नाच बन्द हो गया और मेहमान लोग नाचघर से निकलकर वाचनालय में आ गये।

क्लब-भवन में जितनी पुलिस थी, असर डालने के लिए उस सबको बुलाकर स्पिरिदोनिच रिपोर्ट लिखने बैठा।

“लिख डालो,” नकाब वाले व्यक्ति ने कलम के नीचे उगली घुसेडते हुए कहा, “अब मुझ बेचारे का क्या होगा? हाय, मुझ गरीब का क्या होगा! आप लोग क्यो किसी अनाथ गरीब को बरबाद करने पर तुले हुए है? हा हा हा अच्छा तो फिर लिख डालो! क्या रिपोर्ट तैयार हो गयी? क्या सब लोगो ने इस पर दस्तखत कर दिये? अब देखो! एक, दो, तीन ”

वह उठ खडा हुआ, अपनी पूरी ऊचाई तक तन गया और अपनी नकाब फाड डाली। अपना शराबी चेहरा दिखाने और उसमे पडे असर का मजा लूटने के बाद वह अपनी आराम कुरसी मे धस गया और खूब जोर जोर से हसने लगा। सचमुच ही देखने लायक असर हुआ था। सभी बुद्धिजीवी हैरान नजरो मे एक दूसरे की तरफ देखने लगे और डर मे पीले पड गये, कुछ तो अपने सिर खुजलाते भी देखे गये। अनजाने में कोई भारी गलती कर डालनेवाले

व्यक्ति की तरह स्पिरिदोनिच ने खखारकर अपना गला साफ किया।

झगडा करनेवाले को सबने पहिचान लिया था कि झगडालू व्यक्ति पुश्तैनी इज्जतदार नागरिक प्यातिगोरोव है जो हुल्लडबाजी व दानवीरता के लिए मशहूर है, और जिसके शिक्षा-प्रेम के बारे में स्थानीय समाचारपत्र लिखते थकते नही थे।

"क्या अब आप लोग यहा से जायेंगे या नही?" थोडा रुककर प्यातिगोरोव ने पूछा।

शोर बचाने के लिए पजो के बल चलते हुए, बिना एक भी शब्द कहे, बुद्धिजीवी लोग कमरे के बाहर निकल आये और उनके पीछे प्यातिगोरोव ने दरवाजा बन्द कर ताला लगा लिया।

"तुम जानते थे कि वह प्यातिगोरोव है," स्पिरिदोनिच ने कुछ देर बाद वाचनालय में शराब ले जानेवाले बैरे के कन्धे झझोडते हुए भारी आवाज में कहा, "तुमने कुछ कहा क्यो नही?"

"उन्होने मुझे मना जो किया था।"

"मना किया था! ठहरो, बदमाश! मै तुम्हे जब एक महीने के लिए जेल में ठूस दूगा, तब तुम्हे पता चलेगा कि 'मना किया था' के क्या मानी होते हैं। निकल जाओ!" फिर बुद्धिजीवी लोगो की ओर मुडते हुए स्पिरिदोनिच बोला—"और आप लोग भी खूब है! हडबोग मचा दिया, जैसे, दस मिनट के लिए आप वाचनालय छोड न सकते हो! खैर, सारी गडबड और मुसीबत आपकी ही लायी हुई है और आप लोग ही अब निपटिये इससे। अरे साहब, भगवान के सामने कहता हू, मुझे ये तरीके पसन्द नही है, कतई पसन्द नही है।"

मायूस, परेशान, पछताते हुए बुद्धिजीवी लोग एक दूसरे से फुसफुसाते हुए क्लब में इधर-उधर घूम रहे थे, उन लोगो की तरह

जिन्हें आनेवाली मुसीवत का पता लग गया हो। उनकी वीवियो और वेटियो पर यह सुनकर खामोशी छा गयी कि प्यातिगोरोव को वेइज्जत किया गया है, वह वुरा मान गये है, और अपने अपने घर चल दी। नाच वन्द हो गया।

रात दो वजे प्यातिगोरोव वाचनालय के वाहर निकला। वह नशे में झूम रहा था। नाचघर में आकर वह वैड की वगल में वैठ गया और वाजो की धुन पर ऊघने लगा, ऊघते ऊघते उसका सिर मतप्त मुद्रा में लटक गया और वह खर्राटे लेने लगा।

"वन्द करो वाजे" वैण्डवालो को इशारा करते हुए मैनेजर वोला, "काश-श-श-श, येगोर नीलिच सो गये है।"

"क्या मै आपको घर तक पहुचा आऊ, येगोर नीलिच?" करोडपति के कानो तक झुकते हुए वेलेवूखिन ने पूछा।

प्यातिगोरोव ने होठ विचकाये, मानो गाल पर वैठी कोई मक्खी उडा रहा हो।

"क्या मै आपको घर तक पहुचा आऊ?" वेलेवूखिन ने फिर कहा, "या आपकी गाडी लाने को कह दू?"

"है? क्या? आ हा! तुम हो! तुम क्या चाहते हो?"

"आपको घर पहुचाना   मोने जाने का ममय हो गया है न?"

"घर! मै घर जाना चाहता हू   मुझे घर ले चलो!"

सन्तोष से दमकते हुए वेलेवूखिन ने प्यातिगोरोव को सहारा देकर खडा किया। वाकी वुद्धिजीवी लोग भी भागते हुए आ पहुचे और खुशी से मुसकुराते हुए उन मव ने मिलकर खानदानी इज्जतदार नागरिक को उठाया और वडी मतर्कता के माथ उसे गाडी तक पहुचाया।

"कोई कलाकार, कोई अत्यन्त प्रतिभाशाली व्यक्ति ही हम मव का ऐमा मजाक वना मकता था," करोडपति को गाडी में वैठाते हुए

प्रसन्नचित्त जेस्त्याकोव वडवडाया। "मैं तो सचमुच आश्चर्यचकित हू, येगोर नीलिच! मैं हसी नही रोक पा रहा, अव भी नही हा हा हा श्रौर हम सव इतने उत्तेजित हो गये श्रौर गडवड करने लगे! हा हा हा, श्राप विश्वास करे, मैं नाटक मे भी इतना कभी नही हसा! हास्य की इतनी गहराई! जिन्दगी भर यह अविस्मरणीय साझ मुझे याद रहेगी!"

प्यातिगोरोव को पहुचाने के वाद वुद्धिजीवी लोग प्रसन्न व आश्वस्त हो गये।

जेस्त्याकोव ने खुशी से डीग मारी—"उन्होने मुझसे हाथ मिलाया! तो अव सव ठीक है, वह नाराज़ नही है।"

लम्बी सास लेकर स्पिरिदोनिच वोला, "भगवान करे, वह वदमाश है, खराव आदमी है, पर वह हमारा हितकारी है। हमें होशियारी वरतनी चाहिए!"

१८८४

संताप

मिस्त्री ग्रिगोरी पेत्रोव, जिसे पूरे गाल्चिनो ज़िले भर में लोग कुशल दस्तकार, पक्के शराबी और आवारे के रूप में अच्छी तरह जानते थे, अपनी बीमार बीवी को ज़ेंस्त्वो अस्पताल ले जा रहा था। उसे गाडी हाककर तीस वेर्स्त* का सफर तय करना था और सडक बेहद खराब थी, काहिल मिस्त्री ग्रिगोरी की बात ही क्या, डाक के हरकारे तक के बूते के बाहर की बात थी वह। ठिठुरन भरी तेज़ हवा उसके चेहरे पर लग रही थी। बर्फ के गाले बडे बडे बादलों की तरह हवा में उड रहे थे और यह पता लगाना मुश्किल हो रहा था कि बर्फ आसमान से आ रही है या ज़मीन से। बर्फ की वजह से खेत, तार के खम्भे, जगल कुछ भी नही दिखाई देते थे और जब बहुत ज़्यादा तेज़ हवा का झोंका आ जाता ग्रिगोरी को बम या जुआ भी न सूझता। कमज़ोर, बूढी घोडी कछुए की रफ़तार से घिसट रही थी। गहरी बर्फ से एक एक टाप निकालने और गरदन झटकते हुए गाडी खीचने में ही उसे अपनी सारी ताकत लगा देनी पडती थी मिस्त्री को जल्दी थी। बेचैनी मे वह अपनी जगह पर बीच बीच में उठता-बैठता और घोडी की पीठ पर चाबुक मारता।

"रोओ न, मत्र्योना" वह बडबडाया, "जरा कोशिश कर के बरदाश्त कर लो। ईश्वर कृपा करे हम लोग जल्दी ही अस्पताल

---

* वेर्स्ता – रूस का एक नाप है, जो आधी मील के लगभग है।

पहुच जायेंगे और वे लोग फौरन पलक मारते मारते तुम्हारा इलाज पावेल इवानिच तुम्हे कुछ गोलिया खाने को देगा, या उनमे तुम्हारी फस्द खोलकर खून निकालने को कहेगा, या फिर शायद वह इतनी भलाई करे कि तुम्हारे वदन पर शराव की मालिश करवा दे शराव वदन का दर्द खीच लेती है। पावेल इवानिच अपनी ताकत भर तुम्हारे लिए सब कुछ करेगा वह चीखे चिल्लायेगा और पैर पटकेगा, फिर तुम्हे अच्छा करने के लिए जो कुछ कर सकता है, वह करने में जुट जायेगा वह वडा सज्जन, भलामानस और दयालु है, ईश्वर उसका भला करे जैसे ही हम लोग वहा पहुचेगे, वह दौडता हुआ अपने घर से निकल आयेगा और गाली देने लगेगा। वह चिल्लायेगा— 'क्या? क्यो? तुम वक्त पर क्यो नही आये? क्या मै कोई कुत्ता हू जो तुम बदमाशो की दिन भर देखभाल करता रहू? तुम सवेरे क्यो नही आये? भाग जाओ, अव कल आना!' और मै कहूगा— 'डाक्टर साहव! पावेल इवानिच! हुजूर!'—जल्दी चल न, शैतान की वच्ची! जल्दी चल!"

मिस्त्री ने घोडी के चावुक जमाया और बीवी की ओर देखे विना, वडबडाता गया—

"'हुजूर, ईश्वर साक्षी है मै पाक सलीब की कसम खाता हू, मै वहुत तडके घर से रवाना हुआ था। लेकिन मै वक्त से कैसे पहुच पाता, मा मरियम ने कुपित होकर यह अधड चला दिया? आप अपने आप देख ले कोई वढिया घोडा भी वक्त पर नही पहुच सकता था और मेरी घोडी आप ज़रा इस पर एक निगाह डाले यह घोडी नही, यह तो एक ववाल है!' और पावेल इवानिच गुस्से में भवें तानकर चिल्लायेगा 'मै तुम्हे समझता हू! तुम हमेशा कोई न कोई वहाना ढूढ ही लोगे। खास तौर पर तुम ग्रीश्का, तुम्हें तो मै खूब

समझता हूं। मेरा ख्याल है कि तुम रास्ते में पांच वार शरावखानों में रुके होगे।' और मैं कहूगा 'हुजूर! मैं क्या कोई सगदिल, नास्तिक हू, क्या मुझे भगवान का डर नहीं है? यहा मेरी वुढिया मराऊ रखी है, उसके प्राण पखेरू उडनेवाले है और मैं क्या शरावखानो की ओर दौड़ूगा! यह आप कैसी वात कर रहे हैं? जहन्नुम में जाये शरावखाने!' तव पावेल इवानिच उन लोगो से तुम्हे अस्पताल के भीतर ले जाने को कहेगा और मैं उसके पैरो पर गिर जाऊगा—'पावेल इवानिच! हुजूर! हम आप के अहसानमन्द हैं, आपको धन्यवाद देते है! हम पापियो व मूर्खों को आप माफ करे। हमें वहुत कडाई से न जाचें, हम ठहरे गवार किसान! हम लोगो को तो लात मारकर निकाल देना चाहिए, और आप है कि हमसे मिलने के लिए वाहर वर्फ में निकल आये है!' और पावेल इवानिच मेरी ओर ऐसे ताकेगा मानो मुझे ठोकनेवाला है और कहेगा—'मेरे पैरो पर गिरने की जगह, तुझ गदहे को वोदका ढकोसना छोड अपनी वुढिया पर कुछ तरस खाना चाहिए। तेरे तो कोडे मारना चाहिए!' 'कोडे! पावेल इवानिच! ईश्वर जानता है, हम लोगो के सचमुच कोडे लगाने चाहिए! पर आपके पैरो पर हम कैसे न गिरे, आपकी श्रद्धा कैसे न करे जव आप हमारे हितचिन्तक है, हमारे अपने पिता है? हुजूर! मैं सच कहता हू, ईश्वर साक्षी है, अगर मै अपनी वात से फिरु तो आप मेरे मुह पर थूक देना! जैसे ही मेरे मत्र्योना अच्छी हो जायेगी, विल्कुल पहले जैसी हो जायेगी, आप जो हुकुम देने की मेहरवानी करेगे, मै वही चीज़ वनाकर तैयार कर दूगा! अगर आपको पसन्द हो, तो सिगरेट केस वना दूगा, विन्दीदार भूर्ज का सिगरेट केस। क्रोके खेलने के लिए लकडी के गेंद वना दूगा, स्किटिल खेलने की तीलिया वना दूगा—ऐसी वढिया मानो विदेशी हो आपके लिए सव कुछ करने को तैयार

रहूगा और इसके लिए मै आपसे एक कोपेक भी न लूगा। इस तरह के सिगरेट केस के लिए मास्को मे वे आपसे चार रूबल ऐंठ लेते और मैं आपसे एक कोपेक भी नही लूगा।" और डाक्टर हसकर कहेगा–'अच्छा अच्छा, अब बस कर, बहुत हुआ। पर यह बडे अफसोस की बात है कि तू शराबी है।' इन भलेमानसो से बात करना मुझे आता है, बुढिया! ऐसा कोई साहब है ही नही जिसे मैं मना न लू। बस, भगवान इतनी दया करे कि हम रास्ता न भूले। कैसा तूफान है। बर्फ की वजह से मुझे ठीक ठीक दिखाई भी नही पडता।"

मिस्त्री लगातार बडबडाता जाता, अपनी घबडाहट को दबाने के लिए वह मशीन की तरह ज़बान चलाता जाता। पर जहा उसके पास शब्दो की कमी नही थी, उसके दिमाग में लगे विचारो और सवालो के तातो का भी अत नही था। सताप ने अनजाने ही आकर उसे घेर लिया था, जैसे गाज गिर पडी हो और वह हतबुद्धि हो गया था, वह सम्हल न पा रहा था, पुराना ग्रिगोरी न हो पा रहा था, सोच न पा रहा था। अभी तक उसने लापरवाही की ज़िन्दगी बितायी थी, शराब के खुमार में, उसे खुशी या अफसोस किसी का पता ही न था, और अब एकाएक उसके हृदय में असहनीय पीडा हो रही थी। खुशमिज़ाज, काहिल और शराबी अब अकस्मात अपने को व्यस्त, काम मे बझे व्यक्ति की, हडबडी में पडे ऐसे व्यक्ति की स्थिति मे पा रहा था, जो स्वय प्रकृति के विपरीत पड गया हो।

जहा तक मिस्त्री को याद थी, इस सन्ताप ने उसे पिछली शाम आ घेरा था। हमेशा की तरह नशे में चूर, वह जब शाम को घर लौटा और बरसो पुरानी आदत के मुताबिक गाली बकने और घूसे चलाने लगा, उसकी बुढिया ने अपने अत्याचारी की ओर ऐसी निगाह से देखा, जिस ढग से उसने पहले कभी नही निहारा था। उसकी बूढी आखो में

आम तौर पर जो भाव रहता था, वह था शहीद का, भीरुता का, ऐसे कुत्ते का भाव जो पीटा बहुत जाता हो और भोजन बहुत कम पाता हो, पर अब उसकी आखें स्थिर और कठोर थी, जैसे सन्तो की मूर्तियो की आखें होती है, या मरणासन्न लोगो की होती है। उन विलक्षण, वेदनाप्रद आखो ने ही सन्ताप का बीज बोया था। किंकर्तव्य विमूढ मिस्त्री पडोसी से घोडा माग लाया था और अब इस आशा में अपनी बुढिया को अस्पताल ले जा रहा था कि पावेल इवानिच अपने चूर्णो और लेपो की सहायता से वृद्धा की आखो में वही पुरानी झलक ला देगा।

"सुनो, मत्र्योना!" वह बोला "याद रखो! अगर पावेल इवानिच तुमसे पूछे कि क्या मै तुझे मारता हू, तो तुम कह देना "अरे नही, हुजूर!" और मै अब कभी भी तुझे नही पीटूगा। पाक सलीब की सौगन्ध, मै अब कभी नही मारूगा। तू तो जानती है कि मैं जब भी तुझे मारता था तो तुझे सचमुच मारना कभी नहीं चाहता था। मै तो तुझे ऐसे ही, बिना क्रोध के मारता था। मै तुझे प्यार करता हू। कोई और होता तो परवाह भी न करता, पर मैं तुझे अस्पताल ले चल रहा हू मै जो कुछ भी कर सकता हू, कर रहा हू। और ऐसे तूफान में! तेरी दया है भगवान! बस परमात्मा हमें रास्ता न भूलने दे। मत्र्योना! अब तुम्हारी बगल का दर्द कैसा है? तुम कुछ कहती क्यो नही? मैं पूछता हू—तुम्हारी बगल का दर्द अब कैसा है?"

उसे यह बात अजीब लग रही थी कि वृद्धा के चेहरे पर बर्फ पिघल नही रही थी, अजीब बात यह थी कि उसका चेहरा भी लम्बा खिचा लगता था, और ऐसे मटमैले भूरे रग का हो रहा था, मानो गन्दी मोम का हो, और ऐसा गभीर, ऐसा कठोर लग रहा था।

मिस्त्री ने भन्नाकर कहा "ऐ पागल बूढी! मैं तुझसे ईमानदारी से, ईश्वर को साक्षी करके पूछता हू, और तू बूढी पगली। मैं तुझे पावेल इवानिच के पास नही ले जाऊगा, बस!"

मिस्त्री ने लगाम ढीली छोड दी और सोच-विचार में लग गया। वुढिया की ओर ताकने की उसकी हिम्मत नही हो रही थी, वह डर रहा था। बिना जवाव पाये उससे सवाल करते जाने में भी उसे डर लग रहा था। अंत में इस दुविधा को दूर करने के लिए उसने वृद्धा की ओर देखे विना उसका ठढा हाथ टटोला। जव उसने हाथ छोडा, वह पत्थर की तरह गिर पडा।

"या खुदा, वह मर गयी! हाय, हाय!"

और मिस्त्री रोने लगा। उसकी भावना दुख की नही, खीझ की थी। वह सोचने लगा कि दुनिया में घटनाए किस तेजी से घटती है! उसका सन्ताप ठीक से शुरू भी न हुआ था, कि अव सब कुछ समाप्त हो गया। अपनी वृद्धा के साथ रहना, उससे अपने दिल की बात कहना, उससे स्नेह करना, उसकी सेवा करना अभी ठीक से शुरू भी न हुआ था कि वह मर गयी वह उसके साथ चालीस वर्ष से रह रहा था पर ये चालीस वर्ष मानो एक कुहासे में बीत गये थे। शराब पीने, लडने-झगडने और ज़रूरतो में जिन्दगी अज्ञात सी ही गुजर गयी थी और वृद्धा ठीक उस समय गुज़र गयी जब उसे आभास हुआ कि वह उसे प्यार करता था, कि वह उसके विना रह नही सकता था, कि उसने उसके साथ वडा ज़ुल्म किया था।

उसे याद आया—"वह भीख मागने जाती थी, मैं उसे रोटी के लिए भीख मागने भेजता था, हा, मैं भेजता था! ओफ, ओफ! वह अभी दस साल और जिन्दा रह सकती थी, वेचारी पगली, और अव वह सोचती होगी कि मै सचमुच ही

ऐसा था। पवित्र माता! मैं जा कहा रहा हू? अब उसे डाक्टर नही, कब्र की जरूरत है! अरे मुड जा, वापस मुड!"

ग्रिगोरी ने लगाम खीचकर घोडी का मुह फेर दिया और पूरी ताकत से उसके चाबुक जमाया। हर घण्टे सडक और ज्यादा खराब होती जाती थी। अब उसे घोडी का जुआ बिल्कुल ही नही दिखाई देता था। बीच बीच में गाडी किसी सफेद देवदारु के नये पेड से टकरा जाती, कोई काली चीज मिस्त्री का हाथ खरोच जाती और तेज़ी से उसकी आखो के सामने से चमककर निकल जाती, और फिर उसे चक्कर मारती हुई सफेदी के अलावा और कुछ न दिखाई देता।

मिस्त्री सोच रहा था—"काश! ज़िन्दगी फिर नये सिरे से शुरू करने का मौका मिलता।"

उसे याद आया कि चालीस साल पहले मत्र्योना नवयुवती सुन्दरी और प्रसन्न चित्तवाली थी, कि वह एक समृद्ध परिवार से आयी थी। उन्होने उसकी शादी ग्रिगोरी की कुशलता के कारण ही उससे कर दी थी। सुखी जीवन के लिए जो कुछ चाहिए, वह सब उनके पास था, पर विवाह सम्पन्न होते ही, उसी क्षण, शराब में चूर वह अलावघर* के ऊपर की पट्टी पर धम् से आकर सो रहा और तब से वह कभी पूरी तरह जागा नही, आज तक पूरी तरह होश में आया नही। उसे शादी की तो याद थी, पर वह चाहे जितनी कोशिश करे शादी के बाद क्या हुआ इसकी याद उसे नही आती थी—सिवा शराब पीने, सोने और मारपीट करने के, और इस तरह चालीस साल बरबाद हो गये थे।

---

*अलावघर—रूस के देहाती घरो में इटो की कमरानुमा अगीठिया होती है जिसकी छत पर लोग सोते है।

उडती हुई बर्फ के सफेद बादल अब धीरे धीरे धूमिल हो रहे थे। साझ होती जा रही थी।

अचानक मिस्त्री ने फिर अपने आप से पूछा "मैं जा कहा रहा हू? मुझे चाहिए कि मैं जाकर उसे गाड दू, और मैं लगातार अस्पताल की ओर हाकता चला जा रहा हू। मैं मानो पागल हो गया हू।"

उसने फिर घोडी का मुह फेरा, चाबुक से उसे फिर मारा। अपनी सारी शक्ति सजोकर घोडी फुफकारी और दुलकी भागने लगी। मिस्त्री उसे बराबर चाबुक मारता जाता   उसे अपनी पीठ पीछे खट् से कोई आवाज़ सुनाई पडी और उसने पीछे मुडे बिना समझ लिया कि लाश का सिर स्लेजगाडी से टकराया होगा। अधेरा बढता गया, बढता गया, हवा और ठडी होती गयी, और तेज़ व ठिठुरनभरी होती गयी

"ज़िन्दगी फिर से शुरू करने को मिले," मिस्त्री सोच रहा था, "मैं अपने लिए नये औज़ार खरीद लू और लोगो से आर्डर ले लेकर उनके लिए सामान बनाने लगू   और रुपया मैं वृद्धा को देने लगू   हा, मैं रुपया उसी को दूगा।"

तब उससे लगाम छूट गयी। वह उसे ढूढने लगा और झुककर उसे उठाना चाहा पर बेकार, उसके हाथ चल नही रहे थे

"कोई बात नही," उसने सोचा, घोडी अपने आप चलती जायेगी, वह रास्ता जानती है। अगर मैं अभी एक झपकी ले पाता   जनाज़े और गिरजाघर में दुआ के वक्त तक मैं आराम कर लेता   "

मिस्त्री ने आखें मीच ली और ऊघने लगा। थोडी देर में उसे लगा कि घोडी रुक गयी है। आखे खोलकर उसने देखा कि वह किसी गहरे रग की झोपडी या चारे के बडे ढेर के सामने है

वह समझ रहा था कि उसे स्लेज से उतरकर देखना चाहिए कि वह है कहा, पर उसके अग अग में ऐसी थकान, ऐसा आलस्य भरा था कि वह सरदी से जमकर मर जाने से बचने के लिए भी हिलडुल न सकता था वह शान्तिपूर्वक सो गया।

वह एक वडे कमरे में जागा जिसकी दीवारे सफेदी से पुती हुई थी। खिडकी से चमकीली धूप भीतर आ रही थी। मिस्त्री ने देखा कि कमरे में लोग मौजूद है और उसके दिमाग में जो पहली बात आयी वह थी कि उसे विज्ञ और सम्मानित लगना चाहिए।

उसने कहा—"पादरी को वताना होगा, हमें वृद्धा के लिए दुआ मागनी चाहिए।"

किसी आवाज़ ने उसे टोका—"ठीक है, ठीक है, तुम जरा चुपचाप लेटे रहो!"

यकायक डाक्टर की झलक पा, अचम्भे में वह चिल्ला पडा—"अरे, यह तो पावेल इवानिच है, हुजूर! माई वाप! हमारे हितचिन्तक!"

उसने विस्तर से कूदकर चिकित्सा विज्ञान के चरणो में नत मस्तक होने की कोशिश की, लेकिन उसे लगा कि उसके हाथ पाव उसके वस में नही है।

"हुजूर, मेरे पाव कहा हैं? मेरे हाथ कहा गये?"

"अपने हाथ पावो को अल्विदा कह लो तुमने उन्हे जमा डाला था! हू हू वस करो! तुम रो किसलिए रहे हो? ईश्वर को धन्यवाद

3*

दो कि तुम्हे पूरी ज़िन्दगी मिली। मै समझता हू, तेरी उमर तो साठ हो चुकी है। तुमने भी अपना ज़माना देख लिया।"

"हाय, हाय, हुज़ूर! मन में यह विथा लिये कैसे मरू? मुझे माफ करे। मै अगर पाच-छ वरस और रह पाता।"

"काहे के लिए?"

"यह घोडी मेरी नही थी, मुझे वह वापस करनी होगी मुझे अपनी वुढिया को दफन करना होगा आह, इस दुनिया मे हर वात किस तेजी से हो जाती है। हुज़ूर! पावेल इवानिच! सवसे वढिया विन्दीदार भूर्ज की लकडी का सिगरेट केस! मै आपको क्रोके खेलने के गेंद बना दूगा "

डाक्टर हाथ हिलाकर कमरे के वाहर हो गया। मिस्त्री का सब कुछ समाप्त हो गया।

१८८५

वानका

नौ वर्ष का वानका जूकोव, जो तीन महीने पहले अल्याखिन मोची के यहा काम सीखने भेजा गया था, वडे दिन से पहले वाली रात को सोने नही गया। वह इन्तजार करता रहा और जव उसका मालिक और मालकिन व वहा काम सीखनेवाले दूसरे लोग गिरजाघर चले गये, तव उसने आलमारी से कलम और दावात निकाली। कलम की निव मे मोर्चा लग गया था, उसने एक मुडा मुडाया कागज़ का ताव निकाला और उसे फैलाकर रखा और लिखने वैठ गया। पहला अक्षर वनाने के पहले उसने कई वार खिडकी और दरवाज़े की तरफ सहमी आखो से ताका, गहरे रग की मूर्ति की ओर निहारा जिसके दोनो ओर दूर तक जूतो के फर्मो मे भरी आलमारिया थी और कापते हुए गहरी उसास ली। कागज़ वेंच पर फैला हुआ था, वानका वेंच के पास फर्श पर घुटनो के वल वैठ गया।

उसने लिखा—"प्यारे वावा कोस्तातिन मकारिच! और मैं तुम्हे एक चिट्ठी लिख रहा हू। मै तुम्हे वडे दिन का सलाम भेजता हू और आशा करता हू कि ईश्वर तुम्हें सुखी रखेगा। मेरे वापू और मेरी अम्मा नही है और मेरे लिए वस तुम ही वाकी हो।"

वानका ने सिर उठाकर खिडकी के अधेरे शीशे की तरफ ताका जिस पर जलती मोमवत्ती की परछाई झिलमिला रही थी, कल्पना में

उसने अपने बाबा कोस्तातिन मकारिच को साफ साफ देखा जो जिवरोव नामक किसी धनी आदमी की मिल्कियत का चौकीदर था। वह दुबला-पतला, छोटा-सा, पैंसठ साल का बूढा था, पर बहुत चुस्त और फुरतीला, उसके चेहरे पर सदा मुस्कान छायी रहती और उसकी आखें शराब के नशे से चुधियायी रहती। दिन में वह या तो पिछवाडे के रसोईघर मे सोया करता या बैठा बैठा नौकरानियो से मखौल किया करता, रात मे वह भेड की खाल का बना लबादा ओढे, लाठी खटखटाते हुए हवेली के चारो ओर चक्कर काटा करता। उसके पीछे पीछे उसकी बूढी कुतिया काश्ताका व एक दूसरा कुत्ता जो, काले बालो और नेवले जैसे लम्बे शरीर की वजह से 'फुर्तीला' कहलाता था, सिर झुकाये चला करते। फुर्तीले के ढग से लगता कि उसमें आदर करने और हर एक से परिचय प्राप्त करने की विलक्षण प्रतिभा है, जान-पहिचानवाले और अजनबी हर एक की ओर विनयपूर्ण दृष्टि डालता, पर उस पर विश्वास की भावना नही जमती थी। उसकी सिधाई और आदर सूचक बरताव तो ढोगी बातो की तरह द्वेष और प्रतिशोध की गहरी प्रवृत्तियो को छिपाने के लिए नकाब भर थे। चोरी करने, अकस्मात् दौडकर पैर में काट लेने, बर्फघर में चुपचाप घुस जाने या किसानो की मुर्गिया झपट लेने में वह उस्ताद था। उसकी पिछली टागो पर बारबार कोडे लग चुके थे। दो दफा उसे रस्सी से बाधकर लटकाया जा चुका था, हर हफ्ते उस पर इतनी मार पडती थी कि वह अधमरा हो जाता था, पर इस सब के बावजूद वह जैसे का तैसा बना था।

बाबा शायद इस वक्त फाटक पर खडे गिरजाघर की खिडकियो से आ रही तेज़ लाल रोशनी को चुधियाती आखो से देख रहे होगे या फेल्ट जूते पहने ठोकर मारते नौकरो से चुहल कर रहे होगे। उनका

डण्डा पेटी में खोसा हुआ होगा। वह अपनी बाहे फैलाते और सर्दी से बचने के लिए छाती पर हाथ कसकर बाधते होगे, या, रसोईदारिन या नौकरानी को चुटकी काटते हुए बूढो की तरह ठी ठी करते होगे।

औरतो की तरफ हुलास की डिबिया बढाते हुए वह कहते होगे—
"लो, एक चुटकी सुघनी लो।"

औरते सुघनी नाक में डालेगी और छीकेगी। बाबा बेहद खुश हो खिल्ली उडाते हुए ठट्ठा मारकर हस पडेंगे और चिल्लायेंगे—

"ठड से जमी नाक के लिए तो अक्सीर है!"

कुत्तो को भी सुघनी दी जायेगी। काश्ताका छीकेगी, सिर हिलायेगी और चुपचाप चली जायेगी, मानो बुरा मान गयी हो। लेकिन फुर्तीला छीकने की अशिष्टता नही करेगा और दुम हिलाता रहेगा। मौसम बेहद सुहावना था। हवा थमी-सी साफ और ताजी। रात अधेरी थी पर सफेद छतो, पाले और उडती हुई बर्फ से चादी से चमकते पेडो, चिमनियो से उठते धुए वाला पूरा गाव साफ साफ दिखाई पडता था। आसमान में खुशी से चमकते तारे छिटक रहे थे और आकाश गगा बिल्कुल साफ दिखाई पड रही थी मानो त्योहार के लिए अभी ही धोयी माजी गयी हो और उस पर बर्फ से रोगन कर दिया गया हो

वानका ने गहरी सास ली, स्याही में कलम डुबोयी और लिखने लगा।

"और कल मुझ पर बुरी तरह मार पडी। मालिक मेरे बाल पकडकर घसीटता हुआ बाहर आगन मे खीच ले गया और रकाब के तस्मे मे मुझे पीटने लगा क्योंकि गलती से मैं उनके बच्चे को झुलाते झुलाते सो गया था। और पिछले हफ्ते एक दिन मालकिन ने मुझसे हेरिंग मछली साफ करने को कहा, मैं उसकी दुम से सफाई शुरू करने लगा सो उसने मछली छीन ली और उसका सिर मेरे मुह पर रगड

डाला। जो दूसरे लोग काम सीखते हैं, वे मेरा मजाक उडाते हैं, शराबखाने से वोदका लाने को भेजते है और मुझे मालिक के खीरे चुराने को मजबूर करते हैं और मालिक जो चीज भी सामने पड जाय, उसी से मेरी ठुकाई करने लगता है। और खाने को कुछ मिलता नही। वे मुझे सवेरे रोटी दे देते हैं और फिर पसावन, शाम को फिर रोटी दे देते हैं, मुझे चाय या गोभी का शोरबा कभी नही मिलता, ये चीजें तो वे सारी की सारी खुद ही ढकोस जाते है। वे मुझे गलियारे में सुलाते है और रात में जब उनका बच्चा रोने लगता है तो मुझे उसे दुलराना-झुलाना पडता है और मै बिल्कुल सो नही पाता। प्यारे बाबा, भगवान के लिए तुम मुझे यहा से ले जाओ, मुझे गाव ले जाओ, मैं अब यह सह नही पाता हू। मेरे बाबा मैं तुमसे प्रार्थना करता हू, मै तुम्हारे हाथ जोडता हू, पैर पडता हू, तुम मुझे यहा से ले जाओ नही तो मै मर जाऊगा। मै हमेशा तुम्हारे लिए भगवान से प्रार्थना करूगा "

वानका के होठ फडके, काली हुई मुट्ठी से उसने अपनी आखें मली और सिसकी भरी।

"मै तुम्हारी सुघनी तुम्हारे लिए पीस दिया करूगा," उसने पत्र में आगे लिखा। "मै तुम्हारे लिए भगवान से प्रार्थना किया करूगा और अगर मैं शरारत करू तो जितने चाहो उतने बेंत मारना। और अगर तुम समझते हो कि मेरे लिए वहा कोई काम नही है तो मैं कारिन्दे से कहूगा कि वह मुझ पर रहम खाकर मुझे जूते साफ करने का काम दे दे या मैं फेद्या की जगह चरवाहे का काम कर लूगा। प्यारे बाबा मैं अब और ज्यादा बरदाश्त नही कर सकता उससे मेरी जान निकली जा रही है। मैने सोचा था कि मैं पैदल ही गाव भाग आऊगा पर मेरे पास जूते नही हैं और मुझे पाले का डर था। और जब मै बडा हूगा और आदमी हो जाऊगा तब मै तुम्हारी देख भाल करूगा और मै किसी को

भी तुम्हें तकलीफ नही पहुचाने दूगा और जव तुम मर जाओगे तव मैं तुम्हारी आत्मा के लिए प्रार्थना करूगा जैसे मैं अम्मा के लिए करता हू।

"मास्को इतना वडा शहर है। वडे व भले लोगो के यहा इतने सारे मकान है और इतने ज्यादा घोडे है और भेडें तो विल्कुल नही हैं और कुत्ते विल्कुल डरावने नही है। वडे दिन पर लडके सितारे लेकर नही निकलते और गिरजाघर में उन्हे गाने नही दिया जाता है और एक वार मैंने दूकान में मछली पकडने के काटे विकते देखे और उनमें डोर वसी सव लगी हुई थी, जैसी चाहो वैसी मछली पकडने की वसी वहुत वढिया वढिया और वहा एक थी जिस पर एक एक पूद* के रोहू मच्छ तक आ जाय। और मैंने दूकानें देखी है जहा हर तरह की वन्दूकें मिलती हैं विल्कुल वैसी ही जैसी घर पर मालिक के पास है। उनकी कीमत सौ रूवल तो जरूर होगी। और वूचडो की दूकानो पर वनकुकरी, मुर्गावी और खरगोश मिलते है पर वे यह नही वताते कि वे इन्हे कहा से मारकर लाते है।

"प्यारे वावा वहा हवेली में जव वडे दिन का पेड वनाया जाय तव तुम उसमें मे मेरे लिए कलई किया हुआ एक अखरोट निकाल लेना और उसे हरे सन्दूक में रख देना। कुमारी ओल्गा इग्नात्येव्ना से माग लेना कह देना यह वानका के लिए है।"

वानका ने गहरी साम ली और फिर खिडकी के शीशे की ओर ताकने लगा। उसे याद आया वावा मालिको के लिए वडे दिन का पेड लेने जगल में गये थे और उमे अपने साथ ले गये थे। अहा, वे भी कितने सुख के दिन थे! वावा ठट्ठा मारकर हमते और पाले मे जमा जगल का

---

*रूसी वजन—लगभग १६ सेर

जगल ठढा पडता और उनका अनुकरण करते हुए वानका भी हस पडता। फर के दरख्त काटने के पहले वावा पाइप सुलगाते, एक चुटकी हुलास लेते और ठढ से कापते वानका पर हसते फर के छोटे छोटे पेड वर्फ पाले से जमे, स्तब्ध से खडे यह प्रतीक्षा करने लगते कि उनमें से कौन कटेगा, कौन मरेगा। और यकायक वर्फ के ढेर पर उछलता कोई खरगोश तीर-सा निकल जाता। वावा चिल्लाने से न चूकते –

"रोक ले, पकड ले ऐ दुमकटे शैतान।"

बाबा पेड घसीटते हुए हवेली ले जाते और वहा उसे सजाना शुरू कर देते वानका की हितकारिणी मिस ओल्गा इग्नात्येव्ना सबसे ज्यादा व्यस्त होती। जब तक वानका की मा पेलागेया ज़िन्दा थी और हवेली में चाकरी करती थी, ओल्गा इग्नात्येव्ना वानका को मिठाइया देती थी और अपने मनबहलाव के लिए उसे पढना लिखना और सौ तक गिनती करना सिखाती थी, यहा तक कि "क्वेड्रिल" नाच नाचना भी सिखाती थी। पर जब पेलागेया मर गयी, अनाथ वानका फिर अपने बाबा के पास पिछवाडेवाले रसोईघर और वहा से मोची अल्याखिन के यहा मास्को भेज दिया गया

वानका ने आगे लिखा – "प्यारे बाबा, मेरे पास आ जाओ, मैं तुमसे प्रार्थना करता हू कि ईशु के नाम पर तुम मुझे यहा से ले जाओ। मुझ अभागे अनाथ पर दया करो। ये हमेशा मुझे पीटा करते है और मै वरावर भूखा रहता हू और मैं इतना दुखी हू कि तुम्हे वता नही सकता, मै वरावर रोया करता हू। और अभी उस दिन मालिक ने मेरे सिर पर फरमा इतने ज़ोर से मारा कि मै गिर पडा और मुझे लगा कि अव मै फिर उठ नही पाऊगा। मेरी ज़िन्दगी कुत्ते से भी वदतर है। और

अल्योना, काने येगोर और कोचवान को मेरा प्यार कहना और मेरा वाजा किसी को मत देना। मैं हू तुम्हारा नाती इवान जूकोव, प्यारे वावा आ जाओ।"

वानका ने कागज़ को चौपरता मोडा और उसे एक लिफाफे में वन्द किया, जिसे वह दो दिन पहले एक कोपेक का खरीद लाया था तव वह ठहरकर सोचने लगा, फिर दवात में कलम डुवोयी और लिखा "वावा", अपना सिर खुजलाया, फिर सोचा और ज़ोड दिया—

कोन्स्तातिन मकारिच

गाव

इस वात पर खुश कि लिखने में उसे किसी ने नही रोका-टोका, उसने टोपी लगायी और कमीज़ पर कोट पहने विना गली मे दौड गया।

दो दिन पहले वूचड की दूकान पर पूछने पर लोगो ने उसे वताया था कि खत डाक के वम्वे में डाले जाते है और इन वम्वो मे डाक की उन गाडियो पर सारी दुनिया में भेजे जाते है जिनके तीन घोडे होते है, कोचवान शरावी होते है और जिनमें घटिया वजा करती है। वानका पासवाले वम्वे तक दौडकर पहुचा और अपनी अमूल्य चिट्ठी वम्वे की दराज में डाल दी

घण्टे भर वाद, सुनहरी आशाओ की लोरियो ने उसे गहरी नींद में सुला दिया उसने एक अलावघर का सपना देखा, अलावघर के ऊपर वावा वैठे थे, उनके नगे पैर लटक रहे थे, वह रसोईदारिनो को पढकर चिट्ठी सुना रहे थे फुर्तीला अलावघर के सामने आगे-पीछे दुम हिलाते हुए टहल रहा था।

१८८६

वैरी

अंधेरे पाख की सितम्बर की रात, नौ वजे के थोडी देर वाद ज़ेंस्त्वो* के डाक्टर किरीलोव का इकलौता छ वर्षीय पुत्र आन्द्रेइ डिप्थीरिया से मर गया। डाक्टर की पत्नी गहरे शोक व निराशा के पहले दौर में बच्चे के पलग के पास घुटनो के वल वैठी ही थी जब दरवाज़े की घण्टी कर्कश स्वर में खनखना उठी।

डिप्थीरिया की छूत के कारण घर के नौकर सवेरे ही घर से वाहर भेज दिये गय थे। किरीलोव, जैसा था वैसे ही, सिर्फ कमीज़ पहने वास्कट के बटन खोले, अपना गीला चेहरा और कारवोलिक से झुलसे हाथ पोछे विना, दरवाज़ा खोलने चल दिया। ड्योढीवाले कमरे में अंधेरा था और डाक्टर आगन्तुक का जो कुछ देख पाया वह थी उसकी लम्बाई। वह औसत कद का था, उसका गुलूबन्द सफेद था, उसका चेहरा बडा था और इतना पीला पडा हुआ था कि लगता था कमरे में उससे रोशनी आ गयी हो

---

*ज़ेंस्त्वो – सन् १८६४ के राजनीतिक सुधारो के वाद रूस के प्रत्येक ज़िले को आर्थिक क्षेत्र में सीमित स्वशासन अधिकार दिया गया। इस दृष्टि से जो प्रशासन सस्थायें चुनी गयी उनको "ज़ेंस्त्वो" कहते थे। इनके सदस्य प्राय वडे ज़मीदार-जागीरदार होते थे।

"क्या डाक्टर घर पर है?" उसने जल्दी से पूछा।

"हा, मै घर पर ही हू," किरीलोव ने जवाब दिया, "आप क्या चाहते है?"

"ओह! आपसे मिलकर खुशी हुई!" उस व्यक्ति ने प्रसन्न होकर अधेरे में डाक्टर का हाथ टटोलते हुए और उसे पाने पर अपने दोनो हाथो के बीच ज़ोर से दबाकर, कहा। "बहुत बहुत खुशी हुई! हम पहले मिल चुके है। मेरा नाम है अबोगिन गर्मियो में ग्नुचेव परिवार में आपसे मिलने का सौभाग्य हुआ था। आपको घर पर पाकर मुझे बहुत खुशी हुई ईश्वर के लिए कृपा करके फौरन मेरे साथ चले। मै आपसे प्रार्थना करता हू मेरी पत्नी बहुत सख्त बीमार पडी है। मै गाडी लाया हू "

आगन्तुक के हाव-भाव और आवाज़ से लग रहा था कि वह बहुत घबडाया हुआ है। उसकी सास तेज़ी से चल रही थी और वह तेजी से कापती हुई आवाज़ में बोल रहा था, मानो वह कही किसी पागल कुत्ते या आग से बचकर फौरन चला आ रहा हो, और वह बच्चो जैसे भोलेपन मे बात कर रहा था। वह छोटे अधपूरे जुमले बोल रहा था, जैसा कि आशकित और अभिभूत लोग करते है और बहुत-सी ऐसी फालतू बातें कह रहा था जिनका मामले से कोई सम्बध नही था।

"मुझे डर था कि आप घर पर न मिलेगे," उसने कहना जारी रखा। "यहा आने तक, सारे रास्ते भर में यत्रणा और व्यथा से घिरा रहा ईश्वर के लिए, आप अपना कोट पहन ले और चले यह सब हुआ इस तरह कि पापचिस्की—आप उसे जानते है, अलेक्सान्दर सेम्योनोविच पापचिस्की मुझसे मिलने आया। थोडी देर हम लोग बैठे बाते करते रहे फिर मेज़ पर जमकर चाय पी। यकायक मेरी पत्नी चीखी और दिल पर हाथ रखकर कुरसी में गिर पडी। हम लोग उसे उठाकर पलग पर ले गये और मैंने उसकी

कनपटियो पर श्रमोनिया मला श्रौर उसके मुह पर पानी छिडका पर वह बिल्कुल स्तब्ध पडी रही, बिल्कुल मरी-सी मुझे डर है कही उसका दिल बढ न गया हो श्राप चलें उसके पिता की मौत दिल के बढ जाने से हुई थी "

किरीलोव चुपचाप सुनता रहा मानो वह रूसी भाषा ही न समझता हो।

जब श्रबोगिन ने फिर पापचिस्की श्रौर श्रपनी पत्नी के पिता का ज़िक्र किया श्रौर श्रधेरे में फिर उसका हाथ ढूढना शुरू किया, तब उसने सिर उठाया श्रौर उदासीन भाव से कहा—

"मुझे खेद है कि मैं श्रापके घर नही जा सकूगा। पाच मिनट पहले मेरा लडका मर गया "

"श्ररे, नही!" पीछे को हटते हुए श्रबोगिन फुसफुसाया। "हे ईश्वर, मैं किस गलत मौके पर श्राया! कैसा श्रभागा दिन है यह वाकई यह कैसी श्रजब बात है! कैसा सयोग है यह कौन सोचता था।"

उसने दरवाज़े का हत्था पकड लिया, उसका सिर झुका हुश्रा था, मानो चिन्तामग्न हो। स्पष्टत वह निश्चय नही कर पा रहा था कि वह लौट जाय या डाक्टर की श्रारज़ू-मिन्नत जारी रखे।

किरीलोव की बाह पकड वह लालसा मे बोला—

"मैं श्रापकी हालत बखूबी समझता हू। ईश्वर जानता है कि मैं ऐसे वक्त श्रापका ध्यान श्राकृष्ट करने की कोशिश करने के लिए कितना शर्मिन्दा हू, पर मैं क्या करू? श्राप ही सोचे मैं कहा जाऊ? इस जगह श्रापके सिवा श्रौर कोई डाक्टर नही है। श्राप चले, ईश्वर के लिए चले। मैं श्रपने लिए श्रनुनय नही कर रहा न मैं बीमार हू।"

खामोशी छा गयी। किरीलोव श्रबोगिन की श्रोर पीठ फेरकर एक दो मिनट चुपचाप खडा रहा श्रौर फिर ड्योढी से धीरे धीरे बैठक में चला गया। उसकी श्रनिश्चित यत्रवत् चाल बैठक में श्रनजले लैम्प-शेड

की झालर सीधी करने और मेज़ पर पडी एक मोटी किताब के पन्ने पलटने के खोये खोये ढग से लग रहा था कि उस समय न उसकी कोई इच्छा थी, न इरादा था, न वह कुछ सोच रहा था। वह शायद बिल्कुल भूल गया था कि बाहर ड्योढी में कोई अजनबी भी खडा है। कमरे के सन्नाटे और धुध में उसकी विमूढता बढती लगती थी।

बैठक मे पढाईवाले कमरे की ओर बढते हुए उसने अपना दाहिना पैर जरूरत से ज्यादा ऊचा उठा लिया और फिर दरवाज़े की चौखट टटोलने लगा, उसकी पूरी आकृति से एक तरह का भौंचकापन प्रकट हो रहा था, मानो वह किसी अनजाने मकान में चला आया हो या जिन्दगी मे पहली बार शराब पी ली हो और अब नशे में विमूढ हो नयी तरग में बह रहा हो। रोशनी की एक चौडी पट्टी पढाई के कमरे की एक दीवाल व किताबो की अलमारियो पर पड रही थी। यह रोशनी कारबोलिक व ईथर की तीखी व भारी गध के साथ सोनेवाले कमरे मे आ रही थी, जिसका दरवाजा खुला हुआ था डाक्टर मेज़ के पासवाली कुरसी में धम गया। थोडी देर वह रोशनी में पडी किताबो की ओर उनीदा-सा घूरता रहा, फिर उठकर सोनेवाले कमरे में चला गया।

यहा, सोनेवाले कमरे में मौत का सा सन्नाटा था। यहा की छोटी से छोटी चीज भी उस तूफान का सबूत दे रही थी जो बिल्कुल हाल में आया था और अब थककर चूर हो गया था, यहा पूर्ण विश्रान्ति थी। बोतलो, बक्सों व मर्तबानो से भरी तिपाई पर एक मोमबत्ती और अलमारी पर रखा एक बडा लैम्प पूरे कमरे को रोशन कर रहे थे। खिडकी के ठीक नीचे पलग पर एक बालक लेटा था जिसकी आखें खुली थी और चेहरे पर आश्चर्य का भाव था। वह बिल्कुल हिलडुल नही रहा था पर उसकी खुली आखें क्षण क्षण काली पडती और माथे में गहरी धसती जा रही लगती थी। उसके शरीर पर हाथ रखे, बिस्तर में मुह छिपाये

स्पर्श कर पाते हैं, मृतक के बच्चो व विधवा को वह निष्प्रेम व अति साधारण ही लगते हैं।

किरीलोव चुपचाप खडा रहा। अबोगिन फिर डाक्टरी के पेशे व उसके त्याग तपस्या आदि के सम्बन्ध में बोला। डाक्टर ने रुखाई के साथ पूछा—"क्या बहुत दूर जाना होगा?"

"बस यही तेरह या चौदह वेर्स्ता। मेरे घोडे बहुत बढिया है, डाक्टर! ईमान की कसम, वे घण्टे भर में तुम्हे वापस पहुचा देंगे, सिर्फ एक घण्टे में!"

डाक्टर पर डाक्टरी के पेशे और मानवता के सबध में कहे गये जुमलो से ज्यादा असर इन आखिरी शब्दो का पडा। एक क्षण सोचने के बाद उसने उसास भरकर कहा—

"अच्छा! चलो चले!"

वह तेजी से पढाईवाले कमरे में घुसा। अब उसकी चाल स्थिर थी, क्षण भर में ही वह फ्राक कोट डालकर वापस लौट आया। अबोगिन, खुश खुश, छोटे छोटे डग घसीटते हुए उसकी बगल में चलने लगा और कोट पहिनने में उसकी मदद करने लगा, दोनो साथ साथ घर से बाहर निकले।

बाहर अधेरा था, पर इतना गहरा नही जितना भीतर ड्योढी में था। लम्बे, झुके हुए, पतली ऊची नाक और लम्बी, नुकीली दाढीवाले डाक्टर की आकृति अधेरे की पृष्ठभूमि में भी साकार थी। मुरझाये हुए चेहरेवाले अबोगिन का बडा सिर भी जिस पर छात्रोवाली टोपी लगी थी और जो मुश्किल से उसकी चदिया ढक रही थी, दिखाई दे रहा था। गुलूबन्द सिर्फ सामने ही सफेद चमक रहा था, पीछे वह उसके लम्बे वालो से ढका हुआ था।

"आप यकीन माने आपकी उदारता की कद्र करना मैं जानता हू।" गाडी में डाक्टर को बैठाते हुए वह बुदबुदाया, "हम लोग वहा अभी

पहुचते हैं। लुका! प्यारे, तुम जितनी तेजी से हाक सकते हो, हाको! मेहरबानी करके, हाको!"

कोचवान ने घोडे दौडा दिये। पहले इन लोगो को अस्पताल के अहाते की वदनुमा इमारतो की कतार मिली। इमारते अधेरे में थी, सिर्फ अहाते के विल्कुल कोनेवाली इमारत के सामनेवाले वगीचे में एक खिडकी से तेज रोशनी आ रही थी और अस्पताल की इमारत की ऊपर की मजिल की तीन खिडकियो के शीशे रोशनी के कारण आसपास से ज्यादा पीले लग रहे थे। अब गाडी विल्कुल अधकार में चल रही थी, कुकुरमुत्तो की भीगी गध आ रही थी और पत्तियो की सरसराहट सुनाई पड रही थी। पहियो की आवाज से जागे कौए शाखो से चौंककर शोकाकुल आवाज में काव काव कर उठते मानो उन्हे पता हो कि डाक्टर का लडका मर गया है और अवोगिन की वीवी वीमार है। पर जल्दी ही पेडो की कतारे खत्म हो गयी और इक्का-दुक्का पेड और फिर झाडिया सपाटे से गुजरने लगी। एक पोखरा जिसकी सतह पर वडी वडी काली परछाइया पड रही थी, उदासी से झिलमिला रहा था, गाडी खुले देहात में खडखडाती जा रही थी। कौवो की काव काव खोखली पडती जा रही थी और धीरे धीरे वह भी खत्म हो गयी।

करीव रास्ते भर किरीलोव और अवोगिन चुप रहे। अवोगिन सिर्फ एक वार गहरी सास लेकर वडवडाया—

"कैसी दारुण परिस्थिति है! जो आत्मीय है, उन पर इतना प्रेम कभी नही उमडता जितना तव जव उन्हें खो वैठने पर डर पैदा हो जाता है।"

फिर जव नदी पार करने के लिए गाडी धीमी हुई किरीलोव यकायक चौक पडा मानो पानी की छपछप ने उसे चौंका दिया हो और अपने स्थान से हिलकर उदास लहजे में वोला—

"देखिये, मुझे जाने दीजिये। मैं बाद में आ जाऊगा। मैं सिर्फ अपने सहकारी को अपनी पत्नी के पास भेजना चाहता हू। वह तो बिल्कुल ही अकेली रह गयी है, न!"

अबोगिन ने कुछ नही कहा। नदी के तल मे पडे पत्थरो से पहियो के लडने से गाडी डगमगायी और रेतीले किनारे पर निकलकर आगे बढ गयी। सतप्त किरीलोव बेचैनी से कुलबुलाता और अपने आसपास झाकता। सितारो की हलकी रोशनी मे, पीछे, सडक और नदी के किनारे की बेंत के झाड अधेरे में गायब होते दिखाई पडते। दाहिनी ओर मैदान फैला था, आकाश की तरह निस्सीम और समतल। वहा दूरी पर छुटपुट रोशनिया झिलमिला रही थी जो शायद दलदल की सडी घास से चमक रही थी। बायी ओर, सडक के समानान्तर एक पहाड था, जो झाडियो के कारण झबरा लग रहा था और जिस पर बडा, लाल हसिया-सा चाद स्थिर रूप से लटका हुआ था, कुहरे से वह कुछ धुधला धुधला लग रहा था और उसके चारो तरफ छोटी छोटी बदलिया घिरी हुई थी, मानो उसे चारो ओर से देख उस पर पहरा दे रही हो कि वह कही चला न जाय।

पूरी प्रकृति निराशा और रोग से व्याप्त मालूम पडती थी। अधेरे कमरे में अकेली बैठी पतित स्त्री की तरह जो अपना विगत भुलाने की कोशिश कर रही हो, पृथ्वी वसन्त और ग्रीष्म की स्मृतियो से परेशान हो अनिवार्य शरद की उपेक्षापूर्ण प्रतीक्षा में थी। जिधर भी निगाह जाती प्रकृति अधेरा, असीम गहरा, ठढा गडहा मालूम पडती जिममे से न किरीलोव, न अबोगिन और न लाल चाद का हसिया कभी भी उबर सकेगे

गाडी जैसे जैसे गन्तव्य स्थान के पास पहुचती जाती, अबोगिन उतना ही धैर्यहीन होता जाता। वह उठता, बैठता, चौंककर उछल

पडता, आगे कोचवान के कन्धे के ऊपर से ताकता। अतत गाडी जब धारीदार किरमिच के परदे से रुचिपूर्ण ढग से सजे ओसारे में जाकर रुकी, उसने जल्दी और ज़ोर से सांसें लेते हुए दूसरी मंज़िल की खिडकियो की ओर ताका जिनसे रोशनी आ रही थी।

"अगर कुछ हो गया तो मैं बरदाश्त न कर पाऊगा", उसने डाक्टर के साथ हॉल की ओर बढते और घबराहट में हाथ मलते हुए कहा। "पर परेशानी प्रकट करनेवाली कोई आवाज़ तो सुनाई नही पडती, इसलिए अब तक सब कुछ ठीक ही होगा" सन्नाटे में कुछ सुन पाने के लिए कान लगाये, वह बोला।

हाल में बोलने या कदमो की आवाज़ भी नही सुनाई पड रही थी और पूरा घर तेज़ रोशनी के बावजूद सोया हुआ लग रहा था। अभी तक अधेरे में रहने के बाद किरीलोव और अबोगिन अब एक दूसरे को अच्छी तरह देख सकते थे। डाक्टर लम्बा, झुके कन्धोवाला था और बेपरवाही से भोंडे कपडे पहने था। वह सुन्दर नही था। उसके मोटे, कुछ कुछ हबशियो जैसे होठ, पतली, ऊची, आगे को झुकी नाक और आलस्य व उपेक्षा भरी निगाह में कुछ ऐसा था जो कठोर, कठिन, रूखा, निष्ठुर लगता था। उसके बेकढे बाल, धसी हुई कनपटी, लम्बी नुकीली दाढी की असमय सफेदी, जिसमें से बीच बीच में उसकी ठुड्डी झलकती थी, उसकी त्वचा का मिट्टी जैसा फीकापन, उसका बेढगा और लापरवाही भरा बरताव सभी जीवन से ऊब, शाश्वत गरीबी और आवश्यकताओ की पूर्तिहीनता, लोगो में दिलचस्पी का अभाव प्रकट करते थे। उसकी भावहीन आकृति से यह प्रकट नही होता था कि इस शख्स के भी पत्नी है और वह अपने बच्चे के लिए रो भी सकता है। अबोगिन बिल्कुल भिन्न था। वह हट्टा-कट्टा गोरा आदमी था, उसका सिर बडा था और आकार-प्रकार चुस्त, हालाकि बच्चो जैसा भरा भरा

था, वह बिल्कुल नये फैशन के कपडे वडे सुन्दर ढग से पहने हुए था। उसकी चाल-ढाल में कुलीनता थी। उसके वडे वडे वालो की लटें, उसके चेहरे और कसकर वन्द किये गये फ्राक कोट से कुछ कुछ शेर जैसी वात लगती थी। वह चलता तो सिर उठाकर, सीना आगे निकालकर और वडी भली लगनेवाली भारी आवाज़ में वोलता। जिस ढग से उसने गुलूवन्द उतारा और बालो पर हाथ फेरा उसमें स्त्रियो जैसी सुघरता और छवि थी। यहा तक कि उसकी उदासी वा पीलेपन और ओवरकोट उतारते हुए सीढियो की ओर वच्चो जैसी झिझक से ताकने से भी उसके व्यक्तित्व से समृद्धि, स्वास्थ्य, खायेपिये होने व आत्मविश्वास की छाप बिगड नही पाती थी।

सीढिया चढते हुए उसने कहा—"न कोई आवाज़ है और न कोई दिखाई ही पडता है, कही कोई हलचल खलवली भी नही है, ईश्वर करे "

अबोगिन डाक्टर को हॉल से दूसरे वडे कमरे में ले गया जहा एक वहुत बडे पियानो की काली आकृति दिखाई पड रही थी और छत से ढीले सफेद आवरण में फानूस लटक रहा था। यहा से वे एक छोटे दीवानखाने में गये जो आरामदेह और सुरुचिपूर्ण ढग से सजा था और जिसमें एक तरह की गुलाबी कान्ति झिलमिला रही थी।

"डाक्टर! आप यहा बैठें और प्रतीक्षा करे" अबोगिन बोला, "मै अभी एक मिनट में आता हू। मै जाकर देख लू और वता दू कि आप आ गये हैं।"

किरीलोव अकेला रह गया। दीवानखाने की विलासिता, मधुर साध्य प्रकाश, अजनवी अनजाने घर में उसकी मौजूदगी जो स्वय अपने में एक उल्लेखनीय घटना थी इन सब का उस पर कोई प्रभाव पडता नही लग रहा था। वह एक आराम-कुरसी पर बैठ गया और

कारवोलिक के निशान पडी अपनी उगलियो की ओर देखने लगा। उसने लाल लैम्प-शेड और वायलिन के केस की ओर कनखियो से देखा और टिक-टिक करती घडी की ओर देखकर उसने एक भेडिया जरूर देख लिया जिसकी खाल कटाकर भर दी गयी थी और जो अवोगिन की तरह ही भारी भरकम और खायापिया तैयार मालूम पडता था।

सब ओर शान्ति थी। दूर, किसी दूसरे कमरे में किसी ने जोर से कहा "आह," किसी अलमारी का शीशे का दरवाज़ा जोर से झनझनाया और फिर शान्ति छा गयी। कोई पाचेक मिनट के बाद किरीलोव ने हाथो की ओर निहारना छोड उस दरवाज़े की ओर देखा जिसमे अवोगिन गया था।

अवोगिन दरवाज़े में खडा था, पर वह अब वह अवोगिन नही था जो कमरे से गया था। उसकी परिष्कृत सुघरता और हृष्टपुष्टता की छवि उसे दगा दे गयी थी। उसके चेहरे, हाथो व मुद्रा पर एक विरक्ति का भाव अकित था जो मानो भय था या भौतिक कष्ट। उसकी नाक, होंठ, मूछें, उसके सब अवयव फडक रहे थे, मानो वे उसके चेहरे से फूटकर अलग निकल पडना चाहते हो, उसकी आखो में पीडा की चमक थी

लम्बे भारी डग भरता हुआ वह बैठक के बीच आ खडा हुआ, फिर आगे झुककर मुट्ठिया बाधते हुए कराहा।

"वह मुझे दगा दे गयी!", 'दग़ा' पर ज़ोर देते हुए वह चिल्लाया "दगा दे गयी! मुझे छोडकर भाग गयी! बीमार पडी और मुझे डाक्टर लाने भेजा सिर्फ इसलिए कि वह उस बन्दर पापचिस्की के साथ भाग जाय। हे भगवान!"

अवोगिन भारी कदम भरता हुआ डाक्टर के पास तक चला आया और उसके चेहरे के पास अपना भरा, सफेद घूसा हिलाता हुआ चिल्लाया —

"मुझे छोड गयी ! ! दगा दे गयी ! यह सव झूठ क्यो ?! हे भगवान ! हे भगवान ! यह गन्दी, फरेव भरी चालवाज़ी क्यो, यह शैतानियत भरा, धोखे का खेल क्यो ? मैंने उसका क्या विगाडा था ? वह मुझे छोड गयी !"

आसू उसके गालो पर छलक आये। वह मुडा और वैठक में इधर-उधर टहलने लगा । छोटे फ्राक कोट व फैशनेविल चुस्त पतलून म जिससे बडे वालोवाले भारी सिरवाले उसके जिस्म के मुकाविले उसकी टागें वहुत पतली मालूम पडती थी, वह अव और भी ज्यादा शेर की तरह लग रहा था। डाक्टर की उदासीन मुद्रा में जिज्ञासा की झलक आयी, वह उठ खडा हुआ और अवोगिन की ओर देखता हुआ वोला –

"पर मरीज कहा है ?"

"मरीज़ ! मरीज़ !" हसता और रोता, मुट्ठिया हिलाता अवोगिन चिल्लाया, "वह मरीज़ नही है, अधम दुष्टा है ! कितना कमीनापन ! कितनी कलुषता ! आप सोचेगे शैतान खुद इससे ज्यादा घिनौनी वात न सोच पाता। मुझे भेज दिया ताकि वह भाग सके, उस वन्दर, उस दलाल, उस भोडे भाड के साथ भाग जाय ! हे भगवान ! इससे अच्छा होता कि वह मर जाती। मै वरदाश्त नही कर सकूगा, कभी नही !"

डाक्टर तनकर खडा हो गया। उसने आसुओ से भरी आखें झपकायी और भौचक हो चारो तरफ देखते हुए वोला –

"माफ कीजिये पर इसका मतलव क्या है ? मेरा वच्चा मर गया है, मेरी पत्नी शोक से व्याकुल है, घर में अकेली है खुद मै मुश्किल से खडा हो पा रहा हू, तीन रात से मै सोया नही हू और यहा मुझे क्या पता लगता है ? मै एक भद्दी भडैत में पार्ट करने को

बुलाया गया हू। एक तरह से स्टेज की सामग्री भर बना दिया गया हू। मैं   मेरी तो समझ में नहीं आता।"

बोलते वक्त जबडो के साथ उसकी नुकीली दाढी भी बायें से दाहिनी ओर हिल रही थी।

अवोगिन न एक मुट्ठी खोली और मुडामुडाया पुर्जा फर्श पर डालकर उसे कुचल दिया, मानो वह कोई कीडा रहा हो जिसे वह नष्ट कर डालना चाहता था। अपने चेहरे के सामने मुट्ठी हिलाते हुए, दात भीचकर वह बोला—

"और मैंने कुछ ध्यान नही दिया, कुछ समझा नही, मैंने इस बात पर ध्यान नही दिया कि वह रोज़ मेरे यहा आता है, इस बात पर गौर नही किया कि आज वह मेरे घर बग्घी में आया था। बग्घी मे क्यो? मै अन्धा और मूर्ख था जो इस बात पर सोचा तक नही! अधा और मूर्ख!" उसके चेहरे से लग रहा था मानो किसी ने उसके पैर की बिवाई कुचल दी हो।

डाक्टर फिर बडबडाया—"मैं   मेरी समझ में नही आता, इस सब का मतलब क्या है? यह तो किसी इन्सान की हिकारत करना हुआ, इन्सान के दुख और वेदना का मज़ाक उडाना हुआ! यह तो बिल्कुल नामुमकिन बात है—मैंने तो अपनी जिन्दगी मे कभी ऐसी बात सुनी तक नही!"

घोर अविश्वास की भावना मे, उस व्यक्ति की तरह जो अब समझ रहा हो कि उसका बडा भारी अपमान किया गया है, डाक्टर ने अपने कधे झझोडे और दोनो हाथ बाहर की ओर बढा दिये, बोलने या कुछ भी कर सकने में असमर्थ वह आराम-कुर्सी मे फिर धस गया।

"तो तुम अब मुझे प्यार नहीं करती, किसी दूसरे से प्रेम करती हो—अच्छी बात है, पर यह धोखा क्यों, यह कमीनी दगाबाजी की हरकत

क्यो ?" रुद्ध स्वर में अबोगिन बोला। "इससे किसका भला होगा ? और यह किया क्यो ? मैंने तुम्हारा कब क्या बिगाडा था ? डाक्टर !" वह आवेग में किरीलोव के पास जाता हुआ, चिल्लाया – "आप मेरे दुर्भाग्य के अवश बन गये साक्षी हैं और मै आपमे सच बात नही छिपाऊगा, मै कसम खाता हू, उस औरत से मैं मुहब्बत करता था, मै उसकी पूजा करता था, मै उसका गुलाम था ! मैंने उसके लिए हर चीज़ की कुरबानी की। अपने रिश्तेदारो से झगडा किया, अपना काम छोड दिया। सगीत का अपना शौक छोड दिया, उन बातो के लिए उसे माफ कर दिया जिनके लिए मैं अपनी मा और बहन को माफ न करता मैंने उसकी ओर कभी कडी निगाह से ताका तक नही मैंने कभी उसे बुरा मानने का ज़रा-सा मौका नही दिया ! यह सब झूठ और फरेब है क्यो ? अगर तुम मुझे प्यार नही करती तो ऐसा साफ साफ कह क्यो नही दिया – इन सब मामलो में तुम मेरी राय जानती थी "

आखो में आसू भरे, कापते हुए, अबोगिन ने ईमानदारी से अपना दिल डाक्टर के सामने खोलकर रख दिया। वह भावोद्रेक से आवेग में बोल रहा था, सीने से हाथ लगाये हुए, बिना किसी झिझक के वह गोपनीय घरेलू बाते बता रहा था, वास्तव में, एक तरह से आश्वस्त-सा होता हुआ कि आखिरकार ये गोपनीय बाते अब खुल गयी। अगर इसी तरह वह घण्टे भर और बोल लेता, अपने दिल की बात कह लेता, गुबार निकाल लेता तो इसमें सशय नही कि वह बेहतर महसूस करने लगता। कौन जाने ? अगर डाक्टर दोस्ताना हमदर्दी से उसकी बाते सुन लेता, शायद, जैसा कि अक्सर होता है वह ना-नुकर किये बिना और अनावश्यक गलतिया किये वग़ैर ही अपने प्रारब्ध से सन्तुष्ट हो जाता पर हुआ कुछ और ही। जब अबोगिन बोल रहा था, अपमानित डाक्टर

के चेहरे पर एक परिवर्तन होता दिखाई दिया। उसके चेहरे पर जो उदासीनता और स्तब्धता का भाव था वह मिट गया और उसकी जगह क्रोध, घोर अप्रसन्नता और रोष ने ले ली। उसकी मुद्रा और भी कठोर, अप्रिय व हठपूर्ण हो गयी। अवोगिन ने जब उसे घोर धार्मिक पादरिनो जैसे कठोर व भावशून्य चेहरेवाली एक सुन्दर नवयुवती की तस्वीर दिखाते हुए पूछा कि क्या कोई यकीन कर सकता है कि इस चेहरेवाली औरत झूठ बोल सकती है, डाक्टर यकायक झटके से खडा हो गया, उसकी आखो में एक वहशियना चमक आ गयी और हर लफ्ज पर जोर देते हुए वह रुखाई से बोला—

"तुम मुझे यह सब क्यो बता रहे हो? मुझे कोई दिलचस्पी नही है, मैं यह सब नही सुनूगा!" अब तक वह मेज पर हाथ पटक पटक कर चिल्लाने लगा था "मुझे तुम्हारे ओछे रहस्यो की कोई जरूरत नही है। बुरा हो उनका! मुझसे ऐसी अगडबगड बाते करने की हिम्मत भी न करना! शायद तुम समझते हो कि मेरा अभी तक काफी अपमान नही हुआ? तुम मुझे अपना नौकर समझते हो जिसका तुम अपमान कर सकते हो? क्यो, है न?"

अबोगिन किरीलोव के पास से पीछे हट गया और स्तम्भित हो उसकी ओर देखने लगा।

"तुम मुझे यहा लाये क्यो?" डाक्टर कहता गया, उसकी दाढी हिल रही थी। "तुमने शादी की क्योकि इससे ज्यादा अच्छा कोई और काम तुम्हे था नही, और इसीलिए तुम अपना ओछा नाटक मनमाने ढग से खेलते रहो, पर मुझे इससे क्या लेना-देना? मुझे तुम्हारे प्यार मुहब्बत से क्या सरोकार? मुझे तो चैन से छोड दो। तुम अपनी सभ्य मुक्केबाजी करो, अपने मानवतावादी सिद्धान्त बघारो, (वायलिन केस की ओर देखते हुए) अपने बाजे बजाओ, मुर्गे की तरह मुटाओ, लेकिन

एक व्यक्ति का अपमान करने की हिम्मत न करो। अगर तुम उनका सम्मान नही कर सकते तो उनसे अलग ही रहो, बस।"

अबोगिन का चेहरा लाल हो गया, उसने पूछा–

"बोलो, इसका मतलब क्या है?"

"इसका मतलब यह है कि लोगो के साथ यह कमीना और कुत्सित खिलवाड है। मैं डाक्टर हू, तुम डाक्टरो को, बल्कि हर ऐसा काम करनेवाले को जिसमें इत्र और वेश्यावृत्ति की गन्ध नही आती, नौकर, बदमाश किस्म का आदमी समझते हो, तुम समझें पर दुखी व्यक्ति को नाटक की सामग्री समझने का तुम्हे कोई अधिकार नही है।"

अबोगिन का चेहरा गुस्से से फडक रहा था, उसने हलके से पूछा–" मुझसे ऐसी बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

मेज पर फिर घूसा मारते हुए, डाक्टर चिल्लाया–"मेरा दुख जानते हुए, अपनी अनाप-शनाप बाते सुनाने के लिए मुझे यहा लाने की हिम्मत तुम्हे कैसे हुई। दूसरे के दुख का मखौल करने का हक तुम्हे किसने दिया?"

अबोगिन चिल्लाया–"तुम जरूर पागल हो। कैसी सकीर्णता है। मै खुद कितना अधिक दुखी हू और और "

नफरत से मुस्कराकर डाक्टर ने कहा–"दुखी। तुम इस शब्द का प्रयोग न करो, इसका तुमसे कोई वास्ता नही। जो निकम्मे आवारे कर्ज़ नही ले पाते वे भी अपने को दुखी कहते है। मुटापे से परेशान मुर्गा भी दुखी होता है। ओछे आदमी।"

गुस्से से पिपयाते हुए अबोगिन ने कहा –"जनाब, अपने को भूल रहे है। ऐसे शब्दो के लिए मुक्के चलते हैं। समझे?"

अबोगिन ने जल्दी से अन्दर की जेब टटोलकर उसमें से नोटो

की एक गड्डी निकाली और उसमें से दो नोट निकालकर मेज़ पर पटक दिये। नथुने फड़काते हुए उसने कहा—

"यह रही तुम्हारी फीस, तुम्हारे दाम अदा हो गये।"

नोटों को हाथ से ज़मीन पर फेंकते हुए डाक्टर चिल्लाया—

"मुझे रुपये देने की गुस्ताखी न करो। अपमान रुपये से नहीं धुल सकता।"

अबोगिन और डाक्टर एक दूसरे से गुस्से में ऐसी अपमानजनक बातें कहने लगे जो अनावश्यक थी। उन दोनों ने जीवन भर शायद सन्निपात में भी कभी इतनी अनुचित, निर्दयतापूर्ण और मूर्खतापूर्ण बातें नहीं कही थी। दोनों में वेदना जन्य अहं जाग गया था। जो वेदना में होते हैं उनका अहं बहुत बढ़ जाता है, वे क्रोधी, नृशंस और अन्यायी हो जाते हैं, वे एक दूसरे को समझने में मूर्खों से भी ज्यादा असमर्थ होते हैं। दुर्भाग्य लोगों को मिलाने की जगह अलग करता है, और जब कि यह समझा जाता है कि एक ही तरह का दुख पड़ने पर लोग एक दूसरे के निकट आयेंगे, वास्तविकता यह है कि ऐसे लोग अपेक्षाकृत सन्तुष्ट लोगों से बहुत ज्यादा नृशंस व अन्यायी साबित होते हैं।

डाक्टर चिल्लाया—"मेहरबानी करके मुझे मेरे घर पहुचा दीजिए।" गुस्से से उनका दम फूल रहा था।

अबोगिन ने ज़ोर से एक घण्टी बजायी। जब उसकी पुकार पर कोई नहीं आया, तब अपने गुस्से में घण्टी फर्श पर फेंक दी। कालीन पर एक हलकी खोखली आह सी भरती हुई घण्टी खामोश हो गयी। एक नौकर आया।

घूसा ताने अबोगिन ज़ोर से चीखा—"तुम कहां छिपे थे? तेरा सत्यानाश हो। तू अभी था कहां? जा, इस भलेमानस के लिए गाड़ी लाने को कह और मेरे लिए बग्घी निकलवा।" जैसे ही नौकर जाने

के लिए मुडा, अवोगिन फिर चिल्लाया "ठहर! कल इस घर मे एक भी गद्दार दगावाज़ नही रहेगा! सव निकल जाय! मै नये नौकर रखूगा, कीडे कही के!"

गाडियो के लिए इन्तज़ार करते समय डाक्टर और अवोगिन खामोश रहे। हृष्ट-पुष्ट और नाजुक सुरुचि का भाव अवोगिन के चेहरे पर फिर लौट आया था। वडे सभ्य लहज़े में वह अपना सिर हिलाता हुआ, कुछ योजना-सी वनाता हुआ कमरे मे टहलता रहा। उसका क्रोध अभी शान्त नही हुआ था। लेकिन ऐसा लगने की कोशिश कर रहा था मानो कमरे में दुश्मन की मौजूदगी की ओर उसका ध्यान भी न गया हो। डाक्टर एक हाथ से मेज़ पकडे हुए स्थिर खडा अवोगिन की ओर गहरी वदनुमा, गहरी हिकारत की निगाह से ताक रहा था— ऐसी नफरत से देख रहा था जैसी कि सतुष्टि और सुरुचि देखकर केवल निर्धन और दुखी लोगो की नज़रो में आ पाती है।

कुछ देर वाद, जव डाक्टर गाडी में वैठा अपने घर जा रहा था, उसकी आखो में तव भी घृणा की वही भावना कायम थी। घण्टे भर पहले जितना अन्धेरा था, अव वह उससे ज्यादा वढ गया था। दूज का लाल चाद पहाडी के पीछे छिप गया था और उसकी रखवाली करनेवाले वादल के टुकडे सितारो के आस-पास काले धव्वो की तरह पडे थे। पीछे से सडक पर गाडी के पहियो की आवाज़ सुनाई दी और वग्घी की लाल रग की लालटैनो की चमक डाक्टर की गाडी के वरावर आ गयी। यह अवोगिन था जो था प्रतिवाद करने, झगडा करने, गलतिया करने पर उतारू

रास्ते भर डाक्टर अपनी पत्नी या पुत्र आन्द्रेइ के वारे में नही अवोगिन और उस घर में रहनेवालो के वारे में सोचता रहा जिसे वह अभी छोडकर आया था। उसके विचार नृशसता और अन्यायपूर्ण थे।

उसने अवोगिन, उसकी वीवी, पापचिस्की, सुगधिपूर्ण, गुलावी उषा में रहनेवाले सभी लोगो के विरुद्ध क्षोभ प्रकट किया और रास्ते भर वरावर वह इन लोगो के वारे में घृणा और नफरत की वाते ही सोचता रहा, यहा तक कि उसके दिल में दर्द होने लगा और ऐसे लोगो के प्रति एक ऐसा ही दृष्टिकोण उसके दिमाग में स्थिर हो गया।

वक्त गुज़रेगा और किरीलोव का दुख भी गुज़र जायगा लेकिन यह अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण जो मानवोचित नही है, नही गुज़र पायगा और डाक्टर के साथ रहेगा ज़िन्दगी भर, उसकी मौत के दिन तक।

१८८७

एक नीरस कहानी

रूस में एक बहुत सभ्रान्त प्रोफेसर, प्रिवी कौसिल का मेम्बर, कई उपाधियो से आभूषित एक व्यक्ति निकोलाई स्तेपानोविच रहता है। उसे इतने रूसी तथा विदेशी पदक मिल चुके है कि जब कभी उसे उन सब को लगाने का मौका आता तो छात्र उसे प्रतिमा-स्टैण्ड कहते है। वह रईस, अति कुलीन लोगो में उटता-बैठता है। पिछले पच्चीस तीस साल में रूस में ऐसा कोई प्रसिद्ध विद्वान नही रहा जिससे उसके मैत्रीपूर्ण सम्वन्ध न रहे हो। बडे लोगो में अब ऐसा कोई नही बचा है जिससे उसको दोस्ती कायम करना बाकी हो। विगत की ओर देखें तो कवि नेक्रासोव, पिरोगोव, कवेलिन जैसे लोगो ने उसे अपनी स्नेहपूर्ण सच्ची दोस्ती प्रदान की है। हर रूसी विश्वविद्यालय का वह सम्मानित सदस्य है और तीन विदेशी विद्यालयो का भी और ऐसे न जाने कितने पद उसे और प्राप्त हैं। इन सब तथा इनसे और भी बहुत ज्यादा वातो से वह नाम बना है जो मेरा है।

यह मेरा नाम बहुत प्रख्यात है। रूस का हर शिक्षित व्यक्ति इससे परिचित है और विदेशो में विश्वविद्यालयो में यह आदर के साथ हमेशा "प्रमुख और सम्मानित" कहकर लिया जाता है। मेरा नाम उन इने-गिने भाग्यशाली नामो में से है जिसके प्रति खुले आम या अखवारो में अनादर दिखाना कुरुचिपूर्ण समझा जायगा। और ऐसा होना भी चाहिए। आखिरकार मेरे नाम का सम्वन्ध एक ऐसे व्यक्ति से है जो मशहूर है,

प्रतिभाशाली है और समाज के लिए निश्चय ही उपयोगी है। मै ऊट की तरह मेहनती और मजबूत हू और यह बडी बात है, फिर मै गुणी और प्रतिभासम्पन्न हू, जो और बडी बात है। यहा यह भी कह दू कि मै एक ईमानदार, सुसंस्कृत और निरभिमानी व्यक्ति हू। मै कभी साहित्य या राजनीति के क्षेत्र में अपनी टाग नही अडाता, न जाहिलो से बहस कर लोकप्रियता चाहता हू, न मै बडे बडे भोजो के अवसर पर या अपने सहयोगियो के मजारो पर भाषण देता हू। वैज्ञानिक की हैसियत से मेरा नाम निष्कलक है, शिकायत की कोई गुजाइश नही है। मेरा नाम भाग्यशाली है।

इस नाम के पीछे जो व्यक्ति है, यानी मै, बासठ वर्ष का पुरुष हू। गजा, नकली दातवाला, और मुझे बोलते वक्त मुह सिकोडने की अत्याज्य आदत है। मैं उतना ही अकिंचन और कुरूप हू जितना मेरा नाम कीर्तिमान और सुन्दर है। मेरे हाथ और सिर कमजोरी के कारण कापते है। मेरी गर्दन तुर्गेनेव की एक नायिका की भाति वायलिन के हत्थे की तरह है। मेरा सीना पिचका हुआ, मेरी पीठ दुबली है। जब मै बातचीत करता हू या विश्वविद्यालय में भाषण करता हू तो मेरे होठ एक तरफ लटक जाते है। जब मै मुस्कराता हू तो मेरे चेहरे पर वृद्धावस्था की स्थायी झुर्रिया पडती है। मेरे पतले-दुबले शरीर में कोई रोब दबदबेवाली बात नही है। हा, यह अवश्य है कि अब मासपेशियो के खिचाव का दौरा पडता है तो उस समय मेरे चेहरे पर विशेष प्रकार का भाव आता है, जिसे देखकर कोई भी यह कह सकता है कि "यह आदमी बहुत जल्दी ही मर जायगा।"

मै अब भी काफी अच्छी तरह से विश्वविद्यालय में भाषण कर सकता हू। पहिले की तरह अब भी मै श्रोताओ को दो घटे तक आकृष्ट किये

रह सकता हू। मेरा उत्साह, मेरी व्यग चातुरी और भाषा पर अधिकार, मेरी आवाज़ के दोषो को पूरा कर लेते है। हालाकि मेरी आवाज़ फटी और चिडचिडी है और कभी कभी तो मै पादरियो की तरह भुनभुनाने लगता हू। परन्तु मै अच्छा लेखक नही हू। मेरे मस्तिष्क का यह भाग जो मेरी लेखन-प्रवृत्तियो का नियन्त्रक है अब काम नही देता। मेरी याददाश्त शिथिल पड गयी है। मेरे विचारो में क्रम नही रहता। जब मै उन्हे लिखता हू तो मुझे लगता है कि उनको एक सूत्र में बाधनेवाली क्षमता अब मुझमें नही है। मेरी लेखनी ठस है, मेरे मुहावरे अटपटे तथा बचकाने हैं। अक्सर मैं जो चाहता हू वह लिख नही पाता। जब मै लेख का अन्त करने लगता हू तो आरम्भ याद नही आता। अक्सर सीधे सादे शब्द भी याद नही आते और फालतू शब्दो और मुहावरो को हटाने और वाक्य-विन्यास के सुधार में ही बडी शक्ति खर्च हो जाती है। स्पष्ट है कि मेरी मानसिक अवस्था गिर रही है। मार्के की बात यह है कि जितना सादा पत्र मुझे लिखना होता है उतना ही अधिक परिश्रम मुझे करना होता है। वैज्ञानिक लेख लिखना मुझे आसान लगता है, बनिस्बत किसी बधाई के पत्र या काम की बात लिखने के। एक बात और—जर्मन या अग्रेज़ी में लिखना मैं रूसी के मुकाबले ज्यादा आसान पाता हू।

मेरे मौजूदा जीवन के बारे में सब से प्रमुख चीज़ है मेरा अनिद्रा रोग जिसका मै हाल में ही शहीद हुआ हू। अगर मुझसे कोई अपनी ज़िन्दगी के बुनियादी तत्व पूछे तो मैं उत्तर दूगा—अनिद्रा, पुरानी आदत के अनुसार मै ठीक आधी रात को कपडे उतारकर बिस्तर में घुस जाता हू। मै फौरन सो जाता हू पर रात को एक बजते ही आख खुल जाती है और लगता है जैसे नीद न आयी हो। मुझे बिस्तर छोड देना पडता है। मै बत्ती जलाता हू, घटे दो घटे कमरे में चहलकदमी

करता हू, जानी-पहिचानी फोटो व तस्वीरो को घूरता हू। चलते चलते अपनी डेस्क के सामने आ वैठता हू, अविचल, विचारहीन और इच्छाहीन। अगर कोई किताव मेरे सामने पडी हो, तो यान्त्रिक ढग से उसे खीच, विना किसी दिलचस्पी के पढने लगता हू। इसी तरह मैने हाल में पूरा एक उपन्यास यन्त्रवत ही एक रात में पढ डाला था, जिसका अजव नाम था—"अवावील का गीत"। कभी कभी दिमाग को स्थिर रखने के लिए एक हजार तक गिनती गिनने लगता हू, या अपने किसी दोस्त या परिचित को कल्पना की आखो से देखता हू और यह याद करने की कोशिश करता हू कि किस वर्ष और किस स्थिति में वह कालेज मे आया था। मै आवाजें सुनना पसन्द करता हू। कभी दो दरवाजो के पार सोई हुई वेटी लीजा नीद में तेजी से वडवडा उठती है या मेरी पत्नी हाथ में मोमवत्ती ले वैठक से गुजरती है, वह माचिस सदैव ही गिरा देती है। कभी कपडे की अलमारी के सिकुडते तख्ते चू चू करते है या लैम्प की वत्ती अकस्मात ही फरफराने लगती है और सभी ध्वनिया मुझे अनोखे ढग से प्रभावित करती है।

रात में जागते रहने का अर्थ होता है अपनी असामान्यता के प्रति सचेत रहना, इसी से मैं अरुणोदय का वेचैनी से इन्तजार करता हू, जव जागते रहना स्वाभाविक है। वहुतेरे कठिन घण्टे गुजारने के वाद आगन में मुर्गा वाग देता है। मुझे मुक्ति मिल जाती है। मै जानता हू कि अव एक घण्टे में दरवान जग जायगा और चिडचिडाहट भरी खासी खासते अकारण ही ऊपर पहुचेगा और तव खिडकियो के शीशे धीरे धीरे रुपहले होने लगेंगे और सडक से धीरे धीरे शोर-गुल उठने लगेगा

मेरा दिन शुरु होता है मेरे कमरे में मेरी पत्नी के पदार्पण से। वह स्कर्ट पहने, नहायी धोयी, यूडिकोलन से महकती, वाल सवारे आती है।

अपने व्यवहार से वह दिखाती है कि विना काम के ही उसका आना हुआ है और सदैव एक ही बात दुहराती है—

"क्षमा करना, मै यू ही चली आयी   क्या रात फिर बुरी कटी ?"

तब वह बत्ती बुझा देती है, मेज़ के सामने बैठ जाती है और बातचीत शुरू कर देती है। मै भविष्यद्रष्टा नही हू पर उसकी बात पहले ही से जानता हू। हर सवेरे वही बात। साधारणतया मेरे स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्तापूर्ण पूछ-ताछ कर उसे एकदम हमारे बेटे की याद आ जाती है जो वार्सा में फौजी अफसर है। महीने की हर बीस तारीख बीतने पर हम उसे पचास रूबल भेजते है। और यही हमारी बातचीत का मुख्य विषय रहता है।

"हा हा, वह हम पर बोझ तो है ही," मेरी पत्नी उसास लेती है, "पर जब तक वह ठीक तरह से जम न जाय, उसकी मदद करना हमारा कर्तव्य है। लडका अजनबियो के साथ रहता है, उसकी तनख्वाह कितनी कम है। पर यदि तुम चाहो तो अगले महीने पचास की जगह चालीस रूबल ही भेज देना, क्या कहते हो ?"

दैनिक अनुभव से तो मेरी बीवी को यह मालूम हो जाना चाहिए था कि लगातार बहस से खर्च कम नही हो जाता, पर मेरी पत्नी के लिए तजुर्बा बेकार सी चीज है। वह हर दिन हमारे अफसर बेटे की, पाव रोटी की कीमत की, जो ईश्वर का धन्यवाद है कि कम हो गयी जबकि शक्कर की कीमत दो कोपेक बढ गई है, बात करती है, और ऐसे ढग से जैसे मुझे वह कोई नयी चीज़ बता रही हो।

मै सब सुनता हू, चुपचाप हा-हू करता हू और निस्सन्देह चूकि रात जागते बीतती है, मेरे दिमाग में अजीब से बेमतलब के विचार घुमडते है। मै अपनी बीवी की ओर बच्चे की तरह अचम्भे से ताकता

रहता हू। मै तो ताज्जुब से अपने आपसे सवाल करता हू कि क्या यह सम्भव है कि यह मोटी, भोडी, बूढी और‍त जिसके चेहरे से रोटी के एक टुकडे की या ऐसी ही जरा-जरा-सी परेशानिया और चिन्ताए झलकती है, जिसकी आखें कर्ज, गरीवी की शाश्वत मार से तेजहीन हो गयी है, जो सिवा खर्च के दूसरी वात करना नही जानती, जिसके चेहरे पर तभी मुस्कराहट खेलती है जब वाजार में मन्दी आये, यह वही सुकुमार युवती है जिसको मैं उसकी प्रखर, स्पष्ट वुद्धि, पवित्र, निश्छल आत्मा के लिए प्रेम करता था, और जैसे कि ओथेलो ने डेस्डामोना को "मुझपर कृपा करने के लिये" प्रेम किया, मैंने इसमे अपने वैज्ञानिक जीवन के परिवर्तनो में कृपा करने के लिए प्रेम किया? क्या यह सभव है कि यह वही मेरी पत्नी वार्या है, जिसने मेरे पुत्र को जन्म दिया?

मै इस थलथल स्त्री के फूले चेहरे को एकटक देखता हू, उसमें अपनी वार्या को खोजने का प्रयत्न करता हू पर अतीत का कोई अवशेष नही मिलता, सिवा मेरे स्वास्थ्य के प्रति उसकी चिन्ता और मेरी तनख्वाह को हमारी तनख्वाह और मेरी टोपी को हमारी टोपी कहने के उसके उस पुराने ढग के। उसे देखकर मुझे दुख होता है और उसे जरा प्रसन्न करने के लिए उसकी वातचीत के प्रवाह को रोकता नही, मै तव भी चुप रहता हू जव वह लोगो की व्यर्थ आलोचना करती है या मुझे खरोंचती है कि मै प्राइवेट रूप मे इलाज क्यो नही करता, कोई पाठ्य-पुस्तक क्यो नही छपाता।

हमारी वातचीत हमेशा एक ही ढग मे समाप्त होती है। मेरी पत्नी को यकायक याद आती है कि मैंने अव तक चाय नही पी है और वह चौंक पडती है।

"मुझे हो क्या गया है?" कुर्सी मे उठकर वह कहती है। "समोवार न जाने कव से मेज पर रखा है और मै यहा वैठी वक वक लगाये हू। न जाने मेरी याददाश्त को क्या हो गया है!"

वह तेज़ी से दरवाज़े की ओर वढती है और दरवाज़े पर रुककर कहती है—

"येगोर की पाच महीने की पगार चढ गयी है। तुम्हे मालूम है? कितनी वार मैंने कहा था कि नौकरो की तनख्वाह चढाना ठीक नही। हर महीने दस रूवल देना, पाच महीने में पचास रूवल देने से कही आसान है!"

दरवाज़े से वाहर निकल, वह फिर एक वार रुककर कहती है—

"मुझे लीज़ा बेचारी पर वहुत दया आती है, विचारी सगीत विद्यापीठ जाती है, अच्छे सभा-समाज में उठती-बैठती है, पर देखो कपडे कैसे पहिनती है! ऐसे कोट पहिन कर सडक पर निकलना शर्म की वात है। वह किसी और की वेटी होती तो कोई वात नही थी, लेकिन हर कोई जानता है कि उसका पिता विख्यात प्रोफेसर है, प्रिवी कौंसिल का सदस्य है!"

और वह मेरे पद और प्रतिष्ठा पर चोट कर चली जाती है। इस ढग से हर दिन शुरू होता है और इसी ढग से वीतता है।

चाय पीते समय मेरी वेटी लीजा मेरे कमरे में आती है, कोट व टोपी पहिने सगीत की पुस्तक लिये सगीत विद्यालय जाने के लिए तैयार। वह बाईस बरस की है पर देखने में कम उम्र मालूम पडती है, सुन्दर लडकी है, कुछ कुछ मेरी पत्नी की युवावस्था की झलक उसमें है। वह प्यार से मेरा माथा चूमती है, हाथ चूमती है और कहती है—

"नमस्ते पिता जी! आपकी कैसी तबीअत है?"

जब लीज़ा। छोटी थी तो उसे आइस-क्रीम वहुत पसन्द थी। और अक्सर मुझे इसी के लिए उसे हलवाई की दुकान में ले जाना पडता था। आइस-क्रीम उसके लिए अच्छी चीज़ो का मापदड था। यदि वह मेरी प्रशसा करना चाहती तो कहती "पापा तुम

आइस-क्रीम हो।" वह अपनी एक उगली को पिस्ता की कहती, दूसरी को मिसरी की, तीसरी को मलाई की वगैरह। जब वह प्रात काल मुझसे मिलने आती तो मै उसे अपने घुटनो पर बैठाकर उसकी उगलिया चूमता, उनको अलग अलग नामो से पुकारता "क्रीम की, पिस्ता की, नीबू की "

और अब भी मै पुराने समय की आदत से लीज़ा की उगलिया चूमता हुआ "पिस्ता की, क्रीम की, नीबू की " बडबडाता हू पर वह पुराना असर नही होता। मै स्वय आइस-क्रीम की तरह ठण्डा हो गया हू और मुझे शर्म आती है। जब मेरी बेटी मेरे कमरे में आती है, अपने होठो से मेरा माथा चूमती है तो मै ऐसे चौंक पडता हू जैसे किसी मक्खी ने मुझे डक मार दिया हो, बनावटी ढग से मुस्कराकर अपना मुह फेर लेता हू। जब मे मै अनिद्रा से पीडित हुआ हू, दिमाग में एक ही ख्याल चक्कर काटकर मुझे परेशान करता है। मेरी बेटी, मुझ प्रख्यात आदमी को वृद्ध नौकर की तनख्वाह रुकने पर शर्म से लाल होते देखती है। बराबर देखती है कि छोटे छोटे कर्ज़ चुकाने की चिन्ता में मै काम छोड, कमरे में टहलने लगता हू। फिर भी वह मेरे पास आकर (बिना अपनी मा को कहे) कहती नही कि—"पापा मेरी घडी ले लो, मेरे कगने, कनफूल, मेरी फ्रार्के सब ही गिरवी रख दो, तुम्हे रुपये की ज़रूरत है।" वह देखती है किस प्रकार मै और उसकी मा, झूठी लज्जा के वश में आकर दूसरो से अपनी गरीबी छिपाना चाहते है, और फिर भी वह सगीत सीखने का खर्चीला सुख नही छोड सकती। ईश्वर न करे कि मै उसकी घडी और कगना या उसका बलिदान स्वीकार करू। मै यह कभी नही करना चाहता।

साथ साथ मुझे अपने बेटे का ख्याल आता है, जो वार्सा में अफसर है। वह बुद्धिमान है, इमानदार है, सतुलित है, पर यह मेरे लिए

काफी नही है। मुझे लगता है कि यदि मेरा पिता बूढा होता और यदि मै जानता होता कि कुछ क्षण ऐसे हैं जब वह अपनी गरीबी से शर्मसार हो उठता है तो अपनी अफसरी की शान छोड मजदूरी करने लगता। अपने बच्चो के बारे में मेरे ऐसे विचार मेरे जीवन को जहर बनाये दे रहे हैं। इससे लाभ क्या है? सकीर्ण विचारो का कटु व्यक्ति ही साधारण लोगो के खिलाफ शिकायत की भावना रखता है कि वे महान नही हैं। पर बहुत हो चुका इस सबके बारे में।

पौने दस बजे मुझे अपने प्यारे विद्यार्थियो को पढाने जाना होता है। मै कपडे पहिन उस सडक पर चल देता हू, जिससे पिछले तीस वर्षो से मैं परिचित हू, जिसका मेरी नजर में पूरा इतिहास है। आज जहा भूरी बडी इमारत की पहली मजिल में दवाखाना है वही एक जमाने में शराब की एक दुकान थी और उसी मे बैठे मैंने अपने निबन्ध का नकशा बनाया था और वार्या को पहला प्रेमपत्र लिखा था। वह पत्र पेंसिल से एक कागज पर लिखा था जिसके शीर्षक रूप में लैटिन भाषा में छपा हुआ था—"बीमारी का इतिहास"। और सामने जो परचूनिये की दुकान है, वहा उस समय उसका दूसरा मालिक एक छोटा-सा यहूदी था जिससे मै उधार सिगरेट खरीदता था, बाद में एक मोटी औरत ने वह दुकान ले ली जो विद्यार्थियो के प्रति विशेष प्रेम रखती थी, क्योकि जैसे वह कहती थी—"उन सबके घर पर माताए हैं।" आजकल इस दुकान का मालिक लाल बालो वाला व्यवसायी है जो ग्राहको के प्रति बिल्कुल लापरवाह है, सारे दिन ताबे के चायदान से अपने लिए चाय ढालता रहता है। अब मैं विश्वविद्यालय के उदास फाटक पर आ पहुचता हू जिसकी बहुत दिन पहले मरम्मत होनी चाहिए थी। भेड की खाल पहिने अनमना चौकीदार, बरफ के ढेर झाड़ू

यकीनन ऐसे फाटक उन लडको पर प्रेरणापूर्ण प्रभाव नही डाल पाते जो

नये ही देहात से आते है और सोचते है कि विज्ञान-मन्दिर वास्तव मे कोई मन्दिर है। विश्वविद्यालय की इमारतो की खस्ता हालत, उसके गलियारो का अन्धेरा, धुए से काली दीवारे, धुधली और नाकाफी रोशनीवाले कमरे, बैचो, ज़ीने व टोप रखनेवाले कमरे की दयनीय दशा— शायद रूमी निराशावाद के इतिहास में, उमकी चेतना के कारणो में अपना खास रुतवा रखती है और यह हमारा पार्क है। जव मै विद्यार्थी था तव मे अव तक इसमें कोई अन्तर नही आया दीखता। मुझे यह पसन्द नही आता। कही ज्यादा वेहतर होता अगर यहा ऊचे चीढ के वृक्ष और मज़वूत वलूत लगे होते, वजाय इसके कि क्षय-ग्रस्त लैम के पेड, पीले पीले ववूल, और वढने में कजूसी करनेवाली वकाइन की तराशी हुई झाडिया होती छात्रो के सम्मुख, जिनके मस्तिष्क पर वातावरण का विशेप प्रभाव पडता है, पढाई की जगह हर समय ऐसी वस्तुए हो जो महान हो, शक्तिशाली हो और सुन्दर हो। उन्हे वीमार वृक्षो, खिडकी के टूटे शीशो, मटमैली दीवारो, फटे मोमजामे मे मढे दरवाज़ो मे ईश्वर वचाये।

जैसे ही मै इमारत के उम हिस्मे के पाम पहुचता हू जहा मै काम करता हू, दरवाज़ा खट से खुल जाता है और मेरा एक पुराना सहयोगी, दरवान, मेरा स्वागत करता है। उसका और मेरा जन्म एक ही वर्प हुआ था और नाम भी एक सा ही—निकोलाई है। मेरे दरवाजे में दाखिल होते ही वह घुरघुराते हुए कहता है—

"वडी ठण्ड है, हुज़ूर!" या अगर मेरा कोट भीगा हो, तो— "वारिश हो रही है, हुज़ूर!" फिर वह मेरे आगे दौड उन सव दरवाज़ो को खोलता है जिनमें से मुझे गुज़रना है। जव मैं अपने दफ्तर मे पहुचता हू, तो वह सावधानी से मेरा कोट उतारता है और हमेशा विश्वविद्यालय की कुछ न कुछ खवरें दिया करता है। पहरुओ और दरवानो की घनिष्ठ

मैत्री के फलस्वरूप उसको चारों फैकल्टियो, दफ्तर, विश्वविद्यालय के प्रधान के कमरे और पुस्तकालय में क्या हो रहा है, सब मालूम रहता है। ऐसा कुछ भी नही जो उसे मालूम न हो। जब कभी ऐसी बात उठती है, जैसे प्रधान या किसी डीन का त्यागपत्र, मुझे उसकी जबान पहरेदार से बातचीत सुनाई पडती है कि इन जगहो के लिए किस उम्मीदवार के लिए जाने की सबसे अधिक सम्भावना है। किस उम्मीदवार को मत्री की स्वीकृति प्राप्त नही होगी, कौन खुद ही इसे लेने से इनकार कर देगा, बाद में इस सिलसिले मे वह अजीबोगरीब ब्यौरे बताता है कि दफ्तर में कोई रहस्यमय दस्तावेज़ आयी है और मत्री व विद्यालय के सरक्षक की गुप्त बातचीत हुई और ऐसी ही बहुत सी बाते। ब्यौरे की इन बातो के अलावा उसका कहा आम तौर से सही भी उतरता है। उम्मीदवारो का वर्णन वह बिल्कुल विलक्षण ढग से करता है, लेकिन सही। अगर आपको यह जानने की आवश्यकता है कि फ़ला आदमी ने कब अपना प्रबन्ध दाखिल किया था या विश्वविद्यालय में नौकरी पायी या इस्तीफा दिया या मरा तो आपको केवल इस भूतपूर्व सिपाही की असाधारण याददाश्त का सहारा लेना काफी होगा, वह केवल आपको वर्ष, महीना या तिथि बताकर ही सन्तोष नही करेगा बल्कि आपको यह भी बतायगा कि अमुक घटना किन परिस्थितियो में हुई थी। उसकी याददाश्त आशिको की तरह हमेशा तरोताज़ा रहती है।

वह विश्वविद्यालय की दतकथाओ का रक्षक है। उसने अपने पहले आये और गये दरबानो से विश्वविद्यालय के जीवन के बारे में किस्सो का एक खज़ाना विरासत में पाया है। इस सचित पूजी में उसने भी अपना योग दिया है, अपनी नौकरी के दौरान में सम्मिलित किस्सो द्वारा, अगर आप चाहें तो वह आपको बहुत-सी छोटी-बडी दोनो तरह की कहानिया सुनाया करेगा। वह आपको ऐसे असाधारण ज्ञानियो के बारे में बतायेगा

जो सब जानने की बाते जानते थे, ऐसे श्रमिको के बारे में बतायेगा जो हफ्तो बिना सोये काम करते थे, ऐसे असख्य लोगो के बारे में बतायेगा जो विज्ञान पर शहीद हो गये या विज्ञान का शिकार हो गये। किस्सो में भले की हमेशा बुरे पर विजय होती है, कमज़ोर सदैव ताकतवर से बाज़ी जीतता है, ज्ञानी हमेशा मूर्ख पर हावी होता है और नम्र घमण्डी से ऊपर उठ जाता है और जवान बूढो पर। इन सभी किस्सो व अचम्भो को सच मान लेना ज़रूरी नही है। पर जब वे आपके दिमाग की छलनी मे छनकर निकलते है तब तथ्य की कुछ बाते रह ही जाती है—हमारी उज्ज्वल परम्परा और उन सच्चे बडे लोगो के नाम जो सर्वमान्य है।

हमारे समाज में विज्ञान की दुनिया की जो भी जानकारी है, वह उन भुलक्कडपन के असाधारण किस्सो तक सीमित है जो बूढे प्रोफेसरो से जुडे है, और कुछ उन चुटीली पुरमज़ाक बातो तक जो ग्रुबेर, बाबूखिन और मेरी कहकर बतायी जाती है। सुसस्कृत कहलानेवाले समाज के लिए यह काफी नही है। यदि समाज विज्ञान व वैज्ञानिको और विद्यार्थियो से सच्चा प्रेम करता जैसे निकोलाई करता है तो हमारा साहित्य बहुत पहले से किस्सो, कहानियो व खण्ड काव्यो से अलकृत हो उठता जिनका दुर्भाग्यवश अभी अभाव है।

खबरे बताने के पश्चात निकोलाई के चेहरे पर गम्भीरता छा जाती है और हम काम की बातें आरम्भ कर देते है। अगर कोई बाहरी व्यक्ति निकोलाई को वैज्ञानिक भाषा का इस सुगमता से प्रयोग करते सुने तो निश्चित ही वह उसे फौजी पोशाक पहिननेवाला एक वैज्ञानिक मान ले। पर, असलियत यह है कि विश्वविद्यालय के चौकीदारो के बृहत् ज्ञान की चर्चा में अतिशयोक्ति बहुत होती है। यह सच है कि निकोलाई सौ से ऊपर लैटिन शब्द जानता है, मनुष्य के अस्थिपजर को ठीक

ढग से तरतीववार रख सकता है, कभी कभी वैज्ञानिक प्रयोगो के लिए सामान ठीक से इकट्ठा कर सकता है। लम्वे उद्धरण देकर छात्रो का मनोरजन कर सकता है, पर ऐसी मामूली चीज़ें भी, जैसे उदाहरण के लिए, शरीर का रक्तसचार सम्वन्धी सिद्धात, आज भी उसके लिए उतनी ही गूढ है, जैसे वीस वरस पहिले थी।

किसी किताव या रासायनिक पदार्थ पर झुका वैठा मेरा सहकारी प्योत्र इग्नात्येविच है जो दर्जे में मेरे व्याख्यानो के लिए विभिन्न अवयव दिखाने के लिए, मृत शरीरो की चीरफाड किया करता है, मेहनती, निरभिमानी पर वहुत मामूली वुद्धि का पैंतीस वर्ष का व्यक्ति है, जो अभी से गजा हो रहा है और जिसके तोद निकलने लगी है। वह सवेरे से रात तक काम में जुटा रहता है, अथक रूप से वरावर पढा करता है, और जो कुछ भी पढता है, उसे याद रहता है। इससे मेरे लिए तो वह वहुत ही उपयोगी व्यक्ति है, सोने से तोलने योग्य। पर दूसरे विपयो में वह विल्कुल लद्दू घोडा, या यू कहे कि पढा लिखा वुद्धू है। प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति और इसानी लद्दू घोडे में फर्क यह है कि उसका दृष्टिकोण सकुचित है और अपनी विशेपज्ञता तक सीमित है। अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र के वाहर वह वच्चो की तरह सरल व सीधा है। मुझे याद है कि एक दिन सवेरे मैं जव दफ्तर पहुचा तो मैंने कहा—

"कैसे दुर्भाग्य की वात है! खवर है कि स्कोवेलेव की मृत्यु हो गयी।"

निकोलाई ने तो शोकसूचक सलीव का चिन्ह अपने सीन पर वनाया पर प्योत्र इग्नात्येविच मेरी तरफ मुडकर पूछने लगा—

"स्कोवेलेव कौन है?"

एक वार पहले भी जव मैंने उसे वताया कि प्रोफेसर पेरोव मर गये तव भी उसने पूछा था—

"उनका विपय क्या था?"

मैं सोचा करता कि प्रख्यात इतालवी गायिका पात्ति आकर उसके कान में गाया करे, चीनी गिरोह रूस पर हमला बोल दें, भूकम्प आ जाय, पर उसके कान पर जू तक न रेंगगी और वह एक आख वन्द किये अपनी खुर्दबीन में घूरता रहेगा। सक्षेप में, उसके लिए सुन्दर से सुन्दर स्त्री का भी कोई महत्व नहीं था। यह ठूठ अपनी बीवी के साथ सोता कैसे है, यह जानने के लिए मैं बहुत खर्च करने को तैयार हो जाता।

उसका दूसरा बडा गुण, विज्ञान, विशेषकर उन सब बातों के जो जर्मनो ने लिखी है सच्चाईपूर्ण और अचूक होने में उसकी अटूट और अगाध निष्ठा है। उसमें आत्मविश्वास है और अपनी बनायी चीजो पर भरोसा है, जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए यह उसे मालूम है और कुशाग्र बुद्धिवानो के बाल जिन चिन्ताओ सदेहो और निराशाओ से सफेद हो जाते है, उनसे वह बिल्कुल बचा हुआ है। हर क्षेत्र में विशेषज्ञो की सम्मतियो को वह श्रद्धा की दृष्टि से देखता है और स्वतत्र विचारो की उसे आवश्यकता ही प्रतीत नही होती। उसका विश्वास डिगा देना कठिन है, उससे बहस करना असम्भव है। ऐसे आदमी से कोई बहस करे भी कैसे जिसका अडिग विश्वास है कि चिकित्सा विज्ञान सभी विज्ञानो से ज्यादा अच्छा है, डाक्टर दुनिया के सब से अच्छे लोग होते हैं और डाक्टरी परम्पराए दुनिया की सब से अच्छी परम्पराए है। डाक्टरी की बुरी परम्पराओ में जो अकेली पुरानी बात बाकी बची है, वह है डाक्टरो का अब भी सफेद टाई लगाना। वैज्ञानिक व साधारणत पढे लिखे लोग श्रद्धा करते है तो पूरे विश्वविद्यालय की परम्पराओ की, चिकित्सा, कानून या ऐसे किसी एक विभाग की परम्पराओ की नही, पर प्योत्र इग्नात्येविच को आप यह बात नही मनवा सकते, वह इस पर ताकयामत बहस करने को तैयार होगा।

उसके भविष्य की मै स्पष्ट कल्पना कर सकता हू। अपने जीवन में वह सैकडो रासायनिक नुस्खे बाधेगा जो राई रत्ती से ठीक होगे, बहुत से रूखे पर प्रशसनीय निबध लिखेगा, करीब एक दर्जन किताबो के बिल्कुल ठीक अनुवाद करेगा, पर ऐसा कुछ वह कभी नही करेगा जो साधारण न हो। साधारण से ऊपर उठने के लिए कल्पना, अन्वेपक बुद्धि, अन्तर-ज्ञान चाहिए जिनका प्योत्र इग्नात्येविच में सर्वथा अभाव है। सक्षेप में कहे तो वह विज्ञान का मालिक नही मजदूर है।

वह, निकोलाई और मै, मन्द स्वर में बोलते हैं। हम लोग कुछ घबराये से रहते है। इस बात का ज्ञान कि दरवाजे की उस तरफ श्रोता समुद्र की भाति मर्मर स्वरो में बोल रहे है, हृदय में एक विशेप भाव उत्पन्न कर देता है। तीस वर्प का अभ्यास भी मुझे इस अनुभूति का आदी नही बना सका है और प्रति दिन सबेरे मुझे इसका अनुभव होता है। मै घबराया हुआ, अपने फ्राक कोट के बटन बन्द करता हू, निकोलाई से कोई अनावश्यक प्रश्न करता हू, तेवर दिखाता हू कोई सोचेगा कि मै डर जाता हू, लेकिन यह भीरुता नही है, यह कोई भिन्न भावना है जिसका मै न वर्णन ही कर सकता हू और न जिसे मै कोई नाम ही दे सकता हू।

बिना बात मै घडी देखता हू और कहता हू–

"अच्छा, समय हो गया।"

हम लोग इस प्रकार चलते है–आगे निकोलाई व्याख्यान में प्रदर्शन का सामान या चित्र, नक्शे आदि लेकर चलता है, फिर मैं होता हू और मेरे पीछे नम्रतापूर्वक सिर झुकाये वह लद्दू घोडा होता है। या, जब कभी जरूरी होता है, एक स्ट्रेचर में लाश जाती है, फिर निकोलाई होता है, फिर वही तरतीब। मेरे पहुचते ही छात्र खडे हो जाते है, फिर बैठ जाते है, समुद्र की गम्भीर मर्मर अकस्मात् बन्द हो जाती है। गम्भीर शान्ति छा जाती है।

मैं जानता हू कि मैं किस विषय पर बोलूगा, पर यह नही जानता कि व्याख्यान शुरू कैसे करूगा, कैसे अन्त करूगा, कैसे बोलूगा। मेरे दिमाग में एक भी जुमला नही आता जो मैं बोलनेवाला हू। लेकिन जैसे ही ढलावदार वृत्ताकार कमरे में लगी कुरसियो में अपने सामने बैठे श्रोताओ पर निगाह डालता हू और पुराना, पिटा हुआ जुमला कहता हू—"पिछली बार हम पर जाकर रुके थे", जुमले कभी न खत्म होनेवाले सिलसिले में आने लगते है और मैं बोल चलता हू। मै तेज़ी से, उत्साह के साथ बोलता हू और लगता है कि कोई ऐसी शक्ति नही जो भाषण के प्रवाह को रोक सके। बढिया व्याख्यान देने के लिए, अर्थात श्रोताओ का ध्यान आकर्षित किये रहने और उन्हें लाभान्वित करने के लिए प्रतिभा के अलावा अभ्यास व अनुभव भी चाहिए, वक्ता को अपनी और अपने श्रोताओ की योग्यता का पूरा ज्ञान होना चाहिए और विषय की पूरी जानकारी होनी चाहिए। इन सब के अलावा उसमें एक तरह का छल या सयानापन भी होना चाहिए, और उसे एक क्षण के लिए भी अपने श्रोताओ से निगाह न हटानी चाहिए।

सगीत मे, किसी अच्छे आर्केस्ट्रा-सचालक को सगीत-निर्माता का तत्व समझाने के लिए एक दर्जन काम एकसाथ करने होते है— सगीतलिपि पढना, अपना बेंत हिलाना, गवैये पर निगाह रखना, अब ढोल और अब तुरही बजानेवाले की ओर सकेत करना और ऐसे ही कई और काम। व्याख्यान करते समय यही दशा मेरी होती है। मेरे सामने डेढ सौ चेहरे होते है, सब भिन्न, तीन सौ आखें मेरे चेहरे की ओर ताकती होती है। इस शतशिर दानव को जीतना मेरा काम होता है। जब तक मै पूर्ण रूप से इस दैत्य के ध्यान के परिमाण के सम्बन्ध में और उसकी तर्क बुद्धि के सम्बन्ध में, भाषण देते समय सचेत रहता हू, मेरा उसपर नियन्त्रण रहता है। मेरा दूसरा शत्रु मेरे हृदय में रहता

है। यह शत्रु नाना आकारो, प्राकृतिक नियमो, कानूनो, मेरे व दूसरो के चिन्तनो की उस भीड में परिलक्षित होता है जो इन आकारो की विविधता से प्रस्फुटित होती है।

सामग्री के इस विशाल भण्डार से मुझे बराबर और कुशलतापूर्वक वह खोज निकालना पडता है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक हो, और अपने शब्दो के प्रवाह के साथ विचार उस रूप में पेश करते रहने पडते हैं जो इस दैत्य के मस्तिष्क में सबसे अधिक आसानी से प्रवेश पा सके, उसमें दिलचस्पी पैदा कर सके, साथ ही मुझे इस बात का भी ध्यान रखना होता है कि मेरे विचार उस तरतीब से व्यक्त न हो जिसमें वह मेरे दिमाग में आते हैं, बल्कि, उस तरतीब से हो जिनसे वह चित्र बने जो बनाना मेरा इष्ट है। साथ ही मुझे सस्कृत और सुरुचिपूर्ण ढग से बोलने का प्रयास करना होता है, परिभाषाए सक्षिप्त और ठीक सटीक देनी होती है, अपने वाक्य इतने सरल व सुन्दर रखने होते हैं, जितना कि सम्भव हो। हर क्षण मुझे सयम से काम लेना पडता है और याद रखना होता है कि मेरे पास कुल एक घण्टा और चालीस मिनट हैं। सक्षेप में, मुझे अनेक काम एकसाथ करने होते है। मुझे वैज्ञानिक, वक्ता वा अध्यापक तीनो एकसाथ बनना होता है, और ईश्वर न करे कि मेरे भीतर का वक्ता, अध्यापक व वैज्ञानिक पर हावी हो जाय या अध्यापक और वैज्ञानिक वक्ता पर हावी हो जायें, तब तो मुसीबत हो जाय।

मै पन्द्रह मिनट तक या शायद आध घण्टे तक बोलता हू और अकस्मात देखता हू कि छात्र छत की ओर देख रहे है या प्योत्र इग्नात्येविच की ओर ताक रहे हैं, कोई अपना रूमाल जेब से निकाल रहा है, कोई अपनी कुरसी पर आसन बदल रहा है, कोई अपने ही विचारो में मग्न मुस्करा रहा है। इसका अर्थ यह है कि उनका चित्त अब लग नही रहा।

इसके लिए कोई कार्रवाई होनी चाहिए। मैं पहले ही मौके पर कोई मजाक कर देता हू, किसी श्लेष का प्रयोग कर देता हू और सभी डेढ सौ चेहरे गहरी मुस्कराहट से फैल जाते है, उनकी आखें चमक उठती हैं, एक क्षण के लिए समुद्र की मर्मर ध्वनि मुखर हो उठती है मैं भी हसी में शामिल हो जाता हू। उनका ध्यान फिर केन्द्रित हो जाता है और मैं आगे बढता हू।

किसी भी मनोरजन, खेलकूद, वाद-विवाद आदि में मुझे कभी इतना आनन्द नही आया जितना व्याख्यान देने में आता है। भाषण करते समय ही मैं पूरी उमग से रस विभोर हो पाता हू, तभी मैं जान पाता हू कि प्रेरणा कवियो की कल्पना नही, बल्कि, उसका अपना अस्तित्व है। अपनी प्रणय-लीलाओ के बाद हरकुलीज को भी ऐसी सुन्दर क्लान्ति न होती होगी जैसी आकर्षक थकावट मुझे भाषण के बाद होती है।

ऐसा हुआ करता था। अब भाषण करना मेरे लिए एक यातना के सिवा कुछ नही है। आधा घण्टा नही हो पाता और मुझे टागो और कन्धो में बेहद कमजोरी मालूम होने लगती है। मैं बैठ जाता हू, पर बैठकर व्याख्यान देने की मुझे आदत नही है। अगले क्षण ही मैं उठ खडा होता हू और खडे खडे भाषण जारी रखता हू, फिर बैठ जाता हू। मेरा गला सूख जाता है, आवाज भारी हो जाती है, सिर चकराने लगता है अपनी हालत अपने श्रोताओ से छिपाने के लिए मैं बारबार पानी का घूट लेता हू, खासता हू, नाक साफ करता हू, मानो जुकाम से नाक बन्द हो रही हो, यू ही मजाक करता हू और अन्त में समय से पहले अतरविराम कर देता हू। पर मेरी प्रमुख भावना शर्म की होती है।

मेरी अतरात्मा और दिमाग मुझसे कहते है कि मेरे लिए बेहतर यही होगा कि मैं लडको को अतिम व्याख्यान दू, अतिम बातें बता दू, उन्हे

आशीर्वाद दू और अपना पद किसी दूसरे ऐसे व्यक्ति के लिए रिक्त कर दू जो उम्र में कम हो, मुझसे ज्यादा मजबूत हो। किन्तु, भगवान माफ करे! मुझमें अपनी अतरात्मा की आवाज सुनने का साहस नही है।

दुर्भाग्यवश, मैं न दार्शनिक हू और न धर्मज्ञानी। मै बखूबी जानता हू कि मुझे छ महीने से ज्यादा ज़िन्दा नही रहना। सोचा जा सकता है कि मुझे पारलौकिक चिन्तन, उस मृत्युनिद्रा में आनेवाले स्वप्नो के प्रश्नो में व्यस्त होना चाहिए। पर जो भी कारण हो, मेरी आत्मा उन समस्याओ पर विचार करने के लिए तैयार नही यद्यपि मेरा दिमाग कहता है कि ये समस्याएँ अधिक महत्वपूर्ण है। मृत्युद्वार पर खडे अब भी मुझे जिस एक चीज़ में दिलचस्पी है, वह वही है जिससे तीस वर्ष पहले दिलचस्पी थी, अर्थात विज्ञान। मुझे विश्वास है कि जब मै आखिरी सास ले रहा हूगा, तब भी मेरी निष्ठा यही होगी कि मनुष्य के जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण, सबसे अधिक सुन्दर व परमावश्यक वस्तु विज्ञान ही है, कि प्रेम का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन विज्ञान में ही होता रहा है और होता रहेगा, कि विज्ञान द्वारा ही मनुष्य स्वय अपने पर और प्रकृति पर विजय पायेगा। यह विश्वास बुनियादी तौर पर गलत और भोला हो सकता है, पर यदि मेरा ऐसा ही विश्वास है तो मैं क्या करू? मै अपना यह विश्वास मिटा नही सकता।

पर मुख्य बात यह नही है। मै सिर्फ अपनी कमज़ोरी के लिए रिआयत चाहता हू और चाहता हू कि लोग समझ ले कि जिस व्यक्ति को विश्व के अतिम लक्ष्य में उतनी दिलचस्पी नही है जितनी गूदे के विकास के भविष्य की, उसे प्रोफेसरी और छात्रो से अलग खीचना ज़िन्दा ही कब्र में दफन कर देने के बराबर होगा।

मेरे अनिद्रा रोग और तज्जनित निर्बलता से मेरे कठिन सघर्ष ने एक अजब बात को जन्म दिया है। भाषण करते करते मेरा गला

रुध जाता है, मेरी पलको में खुजली होने लगती है और मुझे विलक्षण और अति प्रवल इच्छा हाथ उठाकर ज़ोर ज़ोर से वीमारी की शिकायत करने की होती है। मै ज़ोर से चिल्लाना चाहता हू कि प्रारब्ध ने मेरे जैसे प्रख्यात व्यक्ति को प्राणदण्ड दे दिया है, कि लगभग छ महीने में मेरी जगह कोई दूसरा मेरे श्रोताओ को प्रभावित करता होगा। मै चिल्लाना चाहता हू कि मुझे ज़हर दिया गया है। ऐसे नये विचार, जो अब तक मेरे लिए विल्कुल अनजाने थे मेरे जीवन के अतिम दिनो को विषाक्त वना रहे है, मेरे दिमाग में मच्छडो की तरह काटते रहते है। ऐसे मौको पर मैं अपनी स्थिति से इतना आतकित हो उठता हू कि मै चाहता हू कि मेरे श्रोता भी आतकित हो उठें, अपनी कुरसियो मे उछलकर डर के मारे चिल्लाते हुए दरवाज़े की ओर भागने लगें।

ऐसे क्षण वरदाश्त करना कठिन होता है।

(२)

भाषण के उपरान्त मै घर पर रहकर काम करता हू। मै पत्रिकाए या पुस्तके पढता हू या अपने अगले व्याख्यान की तैयारी करता हू, कभी कभी मैं थोडा वहुत लिखता हू। मैं रुक रुककर काम करता हू क्योकि मिलने-जुलनेवाले आते रहते है।

दरवाज़े की घण्टी वजती है। कोई सहयोगी किसी काम की वात में मेरी सलाह लेने आता है। टोप और छडी हाथ में लिये और ये दोनो चीजें मेरी तरफ वढाते हुए वह कहता है—

"एक मिनट के लिए मै आया हू—सिर्फ एक मिनट के लिए। 'कोलेगा' (सहयोगी) आप उठें नही, मै सिर्फ दो वाते करके चला जाऊगा।"

असाधारण शिष्टता के प्रदर्शन के साथ, एक दूसरे से भेंट पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए हमारी बातचीत शुरू होती है। मै उसे कुरसी पर बैठाने की कोशिश करता हू और वह मुझे बैठा रहने देने की कोशिश करता है। साथ ही हम लोग एक दूसरे को कमर के पास सावधानी से थपथपाते है, फ्राक कोट के बटन छूते हैं, मानो एक दूसरे को टटोल रहे हो और उगली जल जाने से बचा रहे हो। हालाकि मज़ाक की कोई बात कही नही गयी होती, हम दोनो हसते है। बैठने के बाद एक दूसरे की ओर झुककर हम लोग मन्द स्वर में बातचीत शुरु करते है। हमारे सम्बन्ध चाहे जितने घनिष्ट हो हम चीनियो जैसी शिष्टाचारपूर्ण और सजावटवाली भाषा बोलने की मजबूरी महसूस करते है। "आपने बिल्कुल ठीक ही फर्माया" "जैसा कि मुझे बताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ" आदि कहने व अनुपयुक्त होते हुए भी एक दूसरे के मज़ाको पर हसने की मजबूरी। काम की बात खत्म होने पर मेरा दोस्त यकायक उठ खड़ा होता है और मेरी मेज़ की ओर अपने टोप से इशारा करते हुए, बिदा लेने को उद्यत होता है। हम फिर एक दूसरे को टटोलते और हसते है। मैं ड्योढी तक उसके साथ आता हू जहा उसे फर का ओवरकोट पहिनने में मदद देता हू और वह बराबर इस सम्मान के लिए अपनी अयोग्यता बताता हुआ ओवरकोट अपने आप पहिनने की कोशिश करता है। फिर जब येगोर उसके लिए सामने का दरवाज़ा खोलता है, तो मेरा दोस्त मुझे यकीन दिलाता है कि मुझे ठड लग जायेगी और मै बराबर उसके साथ बाहर निकलने की तैयारी का बहाना करता हू। आखिर, जब मैं अपने पढाई के कमरे में वापस लौटता हू तो मेरे चेहरे पर मुस्कराहट जमी रहती है, जैसे यह हटेगी ही नही।

थोड़ी देर बाद फिर घण्टी बजती है। कोई ड्योढी में आता है और सड़कवाले कपड़े उतारने और गला साफ करने में बहुत देर लगाता है।

येगोर आकर वताता है कि कोई छात्र मुझसे मिलना चाहता है। मैं कहता हू "उमे भीतर आने दो"। कुछ ही क्षण में एक सुन्दर नवयुवक मेरे कमरे में आता है। करीव एक साल से हमारे व उमके सम्वन्ध कुछ खिचे मे रहे है। मेरी परीक्षाओ में वह विल्कुल कच्चा उतरता है और मैं उमे सवमे कम नम्वर देता हू। हर वर्प लगभग सात नवयुवक ऐमे होते है, जिन्हे छात्रो की भापा में मैं लथेड डालता हू या फेल कर देता हू। जो छात्र परीक्षा में वीमारी या अयोग्यता के कारण फेल होते है, वे अपना दुर्भाग्य चुपचाप वरदाश्त कर लेते है और मुझसे मौदा करने नही आते। सिर्फ चचल स्वभाववाले, लापरवाह व काहिल लोग ही मुझमे मोलभाव करने की कोशिश करते है जिनकी भूख और गीति-नाट्यो में हाजिरी में अकेला व्याघात परीक्षा मे फेल होने से आता है। पहली तरह के लोगो मे मैं नरमी मे पेश आता हू, पर दूमरी तरह के लोगो को मैं साल भर वरावर वेरहमी मे लथेडता रहता हू।

अभ्यागत से मैं कहता हू—"वैठ जाओ! तुम्हे क्या कहना है?"

"प्रोफेमर माहव! आपको कष्ट देने के लिए मैं क्षमा चाहता हू," वह हकलाता तुतलाता, दूमरी ओर ताकता हुआ कहता है, "मैं आपको कष्ट देने की हिम्मत न करता, पर   मैं पाच वार आपकी परीक्षा में वैठा हू, और   फिर फेल हो गया। कृपा कर इस वार मुझे पास कर दें, क्योकि   "

अपने पक्ष में काहिल लोग हमेशा एक ही तर्क पेश करते है—दूमरी सभी परीक्षाओ में वे अच्छे नम्वरो से पास हुए है और सिर्फ मेरी परीक्षा में फेल हुए है और यह और भी ज्यादा ताज्जुव की वात है क्योकि उन्होने वहुत लगन से मेरा विपय पढा था और उसका उन्हे पूर्ण ज्ञान है। अगर वे फेल हो गये तो किसी वेवूझ गलतफहमी की वजह से।

मैं अपने अतिथि से कहता हू—"मेरे दोस्त! मुझे अफसोस है कि मैं तुम्हे पास नही कर सकता। जाकर फिर से पढो और तब मेरे पास आओ। तब देखा जायगा।"

थोडी देर मौन रहता है। विज्ञान से ज्यादा वीर और ओपेरा में दिलचस्पी रखनेवाले छात्र को कुछ परेशान करने में मुझे मज़ा आता है और गहरी सास लेकर मैं कहता हू—

"मेरी राय में तो, तुम्हारे लिए अब बेहतर यही होगा कि तुम चिकित्सा विज्ञान की पढाई ही छोड दो। अगर अपनी योग्यता के बावजूद तुम इम्तिहान पास नही कर सकते तो इसकी सिर्फ यह वजह हो सकती है कि तुम्हे न तो डाक्टर बनने की इच्छा है और न तुममें उसके लिए आवश्यक अन्त प्रवृत्ति ही है।"

चचल व्यक्ति का मुह लटक आता है। घबराहट भरी हसी के साथ वह कहता है—"मुझे माफ करे, प्रोफेसर साहब! पर मेरे लिए यह बडी अजब बात होगी, पाच वर्ष तक पढने के बाद अकस्मात . छोड दू!"

"बिल्कुल नही। ऐसे पेशे में जिन्दगी बिताने से जिसमें तुम्हारी रुचि न हो, पाच साल बरबाद करना कही ज्यादा अच्छा है।"

पर अगले ही क्षण मुझे उसपर रहम आ जाता है और मैं जल्दी से कहता हू—

"ख़ैर, अपने बारे में तुम खुद सबसे ज्यादा समझ सकते हो। जाओ और थोडा और पढो, तब मेरे पास आना।"

काहिल खोखली आवाज में पूछता है—"कब?"

"जब तुम चाहो। चाहो तो कल ही।"

उसकी भली आखो का सन्देश मैं साफ पढ सकता हू—"मैं आ सकता हू, पर तुम फिर फेल कर दोगे, बेरहम जानवर!"

मैं अपनी वात जारी रखता हू—"यह ज़रूर है कि मेरे इम्तिहान में पन्द्रह वार वैठ लेने से तुम्हारी योग्यता नही वढेगी पर इससे तुम्हारी इच्छाशक्ति शायद मजवूत हो जाय। यही क्या कम है?"

फिर सन्नाटा हो जाता है। मैं खडा हो जाता हू और अपने मेहमान के जाने का इन्तज़ार करने लगता हू, पर वह वही सोचता खिडकी की ओर ताकता अपनी दाढी उगली से सुलझाता हुआ खडा रहता है। मैं ऊवने लगता हू।

चचल व्यक्ति की आवाज़ मधुर और पकी हुई है, उसकी आखो से कुशाग्रता और उद्धत स्वभाव प्रकट होता है, लेकिन आत्मतुष्टि की उसकी मुद्रा वहुधा वीर पीने और सोफो पर पडे आराम करने से कुछ धुवला गयी है। इसमें सन्देह नही कि ओपेरा, अपनी प्रेमलीलाओ और अपने साथियो के वारे में जिनसे उसका लगाव वहुत गहरा है, वह वहुत-सी दिलचस्प वाते वता सकता है, पर दुर्भाग्यवश ऐसी वातो की चर्चा हमारे वीच होती नही लेकिन मैं उसकी वाते वखुशी सुनू

"प्रोफेसर साहव! मैं आपको विश्वास दिलाता हू, मैं ईमान की कसम खा सकता हू कि अगर आप मुझे पास कर दें तो मैं "

जब वात "ईमान की कसम" तक पहुचती है, मैं हाथ हिलाता हू और फिर मेज़ पर आ वैठता हू। छात्र थोडी देर और सोचता खडा रहता है, फिर निराशा से कहता है—

"तो फिर नमस्कार मुझे क्षमा कीजिये।"

"नमस्कार मेरे दोस्त। भाग्य तुम्हारा साथ दे!"

हिचकिचाहट के साथ वह कमरे के वाहर जाता है, ड्योटी में धीरे धीरे अपना कोट पहनता है और वाहर निकलकर शायद फिर एक वार सोचता है। वह "वूसट शैतान" कहकर मुझे अपने दिमाग से निकाल देता है, किसी सस्ते रेस्तरा में जाकर वीर पीता है और खाना खाता

है और फिर घर जाकर सो जाता है। ईमानदार परिश्रमी ! तेरी अस्थियो को शान्ति मिले।

तीसरी बार घण्टी बजती है। कोई जवान डाक्टर नया काला सूट, सुनहरी कमानी का चश्मा और डाक्टरो की अनिवार्य सफेद टाई लगाये आता है। वह अपना परिचय देता है। मै उससे बैठने को कहता हू और उसके काम की बाबत पूछता हू। विज्ञान का यह युवा पुजारी आवेग के साथ मुझे बताता है कि उसने इसी वर्ष डाक्टरी की परीक्षा पास की है और अब उसे सिर्फ निबन्ध लिखना बाकी रह गया है। वह मेरे साथ, मेरे नीचे काम करना चाहता है और चाहता है थीसिस का कोई विषय बताकर मैं उसपर अनुग्रह करूगा।

मै कहता हू – "तुम्हारी सहायता करने में मुझे खुशी होगी, सहयोगी। पर हम साफ साफ समझ ले कि निबन्ध होता क्या है। यह शब्द आम तौर पर मौलिक रूप से किये गये काम पर लिखे गये लेख के लिए प्रयुक्त होता है। है कि नही? दूसरे के बताये विषय और दूसरे के नीचे किये गये काम पर लिखे गये लेख का नाम दूसरा होता है "

निबन्ध का अभिलाषी जवाब नही देता। मै झल्लाहट के साथ अपनी कुरसी से उठ खडा होता हू।

"मुझे ताज्जुब है, आखिर तुम सब लोग क्या समझकर आते हो?" मै गुस्से में भरा उसे सबोधित करता हू, "क्या मै कोई दूकान खोले हुए हू? मै विषयो का व्यापार तो नही करता! सौ मरतबे मै तुम सब लोगो के हाथ जोडता हू कि मुझे बख्श दो! मुझे माफ करना अगर मेरी बाते असभ्य लगें, पर सचमुच मै इस सबसे परेशान हो उठा हू!"

अभिलाषी अब भी एक शब्द नही बोलता, पर उसके गालो पर झेंप की हलकी लाली छा जाती है। मेरी विद्वत्ता और प्रसिद्धि के लिए श्रद्धा का भाव उसके चेहरे से झलकता है, पर उसकी आखो में मुझे दिखाई

देता है कि वह मेरी आवाज़, मेरे दयनीय शरीर और मेरे बीमार हाव-भावो से घृणा करता है। उसे लगता है कि मै क्रोध मे अजब सनकी मालूम देने लगता हू।

मै क्रोध में फिर दोहराता हू—"मै दूकान नही लगाता! सचमुच यह तो अजब बात है कि तुम स्वतंत्र क्यो नही होना चाहते? तुम्हे स्वाधीनता इतनी बुरी क्यो लगती है?"

मै बोलता रहता हू और वह बराबर मौन धारण किये रहता है। अंत में मेरा क्रोध खत्म होने लगता है और अन्त में मै हार मान ही लूगा। अभिलाषी को निबन्ध के लिए मुझसे कोई पिटापिटाया विषय मिल जायेगा, मेरे पथ प्रदर्शन में वह एक निबन्ध लिखेगा जो दुनिया में किसी के कोई काम नही आयेगा, ऊबा देनेवाले वाद-विवाद में वह विजयी होगा और उसे विज्ञान की एक डिग्री मिल जायेगी जो उसके किसी काम नही आयेगी।

घण्टी बराबर बजती रहती है, पर मै पहले चार मेहमानो का वर्णन करके ही सन्तोष कर लूगा। चौथी बार जब घण्टी बजती है तो मुझे जानी-पहिचानी आहट सुनाई पडती है। कपडो की सरसराहट सुनाई पडती है, ऐसी आवाज सुनाई पडती है जो मुझे बहुत प्रिय है

अठारह वर्ष पहले मेरा एक दोस्त जो आखो की बीमारियो का विशेषज्ञ था, सात वर्ष की पुत्री, कात्या और लगभग साठ हज़ार रूबल छोडकर मरा था। अपनी वसीअत में उसने मुझे अपनी पुत्री का अभिभावक नियुक्त किया था। कात्या दस वर्ष की उम्र तक मेरे परिवार में रही, फिर वह एक बोर्डिंग स्कूल में भेज दी गयी और सिर्फ गर्मियो की छुट्टी मे हमारे यहा आती थी। उसकी देखभाल और पालन-पोषण के लिए मुझे समय नही मिलता था और उसे देखने के मुझे अवसर भी कम

मिलते थे, इसलिए मैं उसके बचपन के बारे में बहुत कम बता सकता हू।

उसकी पहली याद मुझे तब की है और यह याद मुझे बहुत प्यारी है, जब वह अगाध विश्वास के साथ मेरे घर रहने आयी और बीमारी में उसने डाक्टरो को इलाज करने दिया, ऐसा विश्वास जो उसके चेहरे को जगमगा देता था। सूजे और पट्टी बधे गाल के साथ वह सबसे अलग बैठी होती, पर अपने आसपास हो रहे हर काम में हमेशा पूरी दिलचस्पी लेती रहती, चाहे मुझे लिखते और किताब के पन्ने पलटते देखती हो, चाहे मेरी बीवी को घर के काम में हडबडी में पडी देखती हो, चाहे रसोइये को आलू छीलते या कुत्ते को उछलकूद मचाते देखती हो, उसकी आखो से हमेशा एक ही विचार प्रकट होता था कि "जो कुछ भी इस दुनिया में हो रहा है वह आश्चर्यजनक और बुद्धिमत्तापूर्ण है।" उसमें प्रबल जिज्ञासा थी और वह मुझसे बात करना बहुत पसन्द करती थी। कभी कभी वह मेज़ पर मेरे सामने बैठ जाती और मुझे काम करते देखती और सवाल करती जाती। वह जानना चाहती कि मै पढता कैसे हू? मै विश्वविद्यालय में क्या करता हू? मुझे मुरदो से डर लगता है या नहीं? मै अपनी तनख्वाह का क्या करता हू?

कभी वह पूछती "क्या विश्वविद्यालय में लडके आपस में लडते है?"

"हा, लाडली, वे लडते हैं।"

"और तुम उन्हे घुटने के बल खडा करवा देते हो?"

"हा, हा।"

लडको की लडाई और मेरा उन्हे कोने में खडा कर देना उसे इतना हास्यास्पद लगता कि वह हसने लगती। वह बहुत सीधी, सहिष्णु और अच्छी लडकी थी। अक्सर जब उससे कोई चीज़ छिन जाती, उसे गलत सजा मिल जाती या उसकी जिज्ञासा शान्त हुए बिना रह जाती तब

मै उसके चेहरे की ओर देखता, तब आत्मविश्वास की स्थायी भावना में उदासी भी मिल जाती, पर बस, इससे ज्यादा कुछ नही। मै नही जान पाता कि उसका समर्थन और पक्षपोषण कैसे करू पर जब भी मै उसे उदास पाता तो मेरी उत्कट इच्छा यह होती कि बूढी आयाओ की तरह उसे चिपका लू और "मेरी प्यारी अनाथ बच्ची" कहकर दया और वात्सल्य प्रकट करू।

मुझे यह भी याद है कि वह अच्छे कपडे पहनने और खुशबू लगाने की कितनी शौकीन थी। इस बात में वह मेरी तरह थी। मुझे भी अच्छे कपडे और बढिया इत्र बहुत पसन्द है।

मुझे यह कहते खेद होता है कि चौदहवे-पन्द्रहवे वर्ष से कात्या के मुख्य चाव के विकास को समझने का मुझे न समय मिला और न मेरा रुझान ही उस ओर रहा। मेरा आशय उसके तीव्र नाट्य प्रेम से है। गरमियो में वह जब बोर्डिंग स्कूल से घर आती तो इतने उत्साह और उमग से वह किसी चीज की बात न करती जितनी कि नाटको और अभिनेताओ की। नाटको के बारे में लगातार बकबक कर वह हमें थका डालती। मेरी पत्नी और बच्चे उसकी बाते सुनते नही थे। घर में मै ही अकेला ऐसा था जिसे उसकी बात पर ध्यान न देने की हिम्मत नही होती थी। जब भी उसे इच्छा होती कि वह अपने उत्साह में किसी और को भी शामिल करे, वह मेरे पढाई के कमरे में चली आती और अनुनयभरी आवाज में कहती—

"निकोलाई स्तेपानिच! क्या मै तुमसे नाटको के बारे में बात कर सकती हू?"

मै घडी की ओर इशारा कर कहता—"मै तुम्हे आधा घण्टा दे सकता हू, बात शुरू कर दो।"

श्रौर यह श्रामदनी ही हमेशा चर्चा का विपय होती, श्रभिनेत्रिया श्रपने को गिराती हुई भोडे गीत गाती श्रौर दु खान्त नाटको के श्रभिनेता उन व्यक्तियो पर जिनकी वीविया उन्हे दगा दे गयी श्रौर शीलहीन स्त्रियो के गर्भिणी होने पर फवतिया कसते हुए दोहे गाते। ऐसे में यह ताज्जुब की ही वात है कि ऐसे भ्रष्ट रग-ढग श्रौर सीमित साधनो में भी छोटे नगरो में थियेटर श्रव भी टिका हुश्रा है।

जवाब में मैने कात्या को एक लम्बा श्रौर मुझे डर है कि उकता देनेवाला पत्र लिखा। दूसरी वातो के श्रलावा मैंने यह भी लिखा— "ऊचे विचारवाले उन वूढे श्रभिनेताश्रो से मेरी श्रक्सर वात हुई है जिन्होने मुझसे स्नेह करने की कृपा की है। उनसे हुई बातचीत से मुझे ज्ञात हुश्रा कि उनके काम का नियत्रण खुद उनके विचारो श्रौर सकल्पो से नही दर्शको में प्रचलित फैशन श्रौर उनके मनोभावो से होता है। उनमें से श्रेष्ठ श्रभिनेताश्रो ने श्रपने समय में दु खान्त नाटको, गीति-नाटिकाश्रो, फ्रासीसी प्रहसनो व मूक श्रभिनय तक के स्वागो में काम किया श्रौर हर बार यह समझकर कि वे ठीक रास्ते पर है श्रौर श्रच्छा काम कर रहे हैं। तो, तुम देखो कि बुराई की जड श्रभिनेताश्रो में नही, वल्कि गहरे जाकर, स्वय कला श्रौर कला के प्रति समाज के दृष्टिकोण में ढूढनी होगी।" मेरे इस पत्र ने कात्या को श्रौर खिजा दिया। उसने जवाब दिया— "हम बिल्कुल भिन्न बात कर रहे है। मैने उन लोगो के बारे में नही लिखा था जो ऊचे विचारो के थे, जिन्होने तुमपर श्रपना स्नेह बिखेरा था, बल्कि उन लोगो के वारे में लिखा था जो लफगो के गिरोह के श्रलावा श्रौर कुछ नही है श्रौर जिनमें उच्च विचारो का नाम निशान भी नही है। यह जगलियो का दल है जो थियेटर में है क्योकि कही श्रौर उसे नौकरी नही मिलती, वे श्रपने को श्रभिनेता कहते है केवल उद्दण्डतापूर्वक। किसी में प्रतिभा नही है, पर शराबियो, चुगलखोरो,

हिकमतवाज तिकडमियो, औसत मे कम अक्लवाले लोगो की भरमार है। मै तुम्हे वता भी नही सकती कि मेरे लिए यह कितने दु ख की वात है कि जिस कला से मै इतना प्रेम करती हू वह ऐसे व्यक्तियो के हाथो में हो जिनसे मै नफरत करती हू, कि उच्चाशय व्यक्ति इस वुराई को सिर्फ दूर से देखते है और इसके पास आने की उनकी प्रवृत्ति नही होती और सहानुभूति करने की जगह क्लिप्ट भापा में फालतू वाते लिखते है और विल्कुल अनावश्यक नैतिक उपदेश देते है "
और ऐसे ही, इमी ढग की वातो से पत्र भरा था।

कुछ और ममय गुजरा और मुझे निम्नलिखित पत्र मिला– "मुझे वहुत वेरहमी मे दगा दी गई। मैं ज़िन्दा नही रह सकती। मेरे रुपये का तुम जो चाहो, उपयोग करना। मैंने तुम्हे पिता और अपने अकेले मित्र की भाति प्रेम किया है। क्षमा करना।"

और इमसे पता लगा कि 'वह' भी "जगलियो के गिरोह" का निकला। इसके वाद जहा तक मै मकेतो को समझ सका, आत्महत्या की भी कोशिश हुई। लगता है कि कात्या ने विप खाने की कोशिश की। इमके वाद वह वहुत वीमार पड गयी होगी, क्योंकि जो दूमरा पत्र मिला वह याल्ता मे आया था, जहा शायद वह डाक्टरी राय पर गयी होगी। मुझे उसने जो अतिम पत्र लिखा उसमें उसने जल्दी से जल्दी एक हज़ार रुवल याल्ता भेज देने को कहा था और अत में लिखा था–"यदि मेरे पत्र में उदामी हो तो मुझे माफ करना। कल मै अपने वच्चे को दफन कर चुकी हू।" वह लगभग एक वर्ष तक क्रीमिया में रही और फिर घर वापस आ गयी।

वह चार वर्ष तक वाहर रही थी और मुझे स्वीकार करना पडेगा कि इस पूरे समय उसके प्रति मेरा रवैया अजव और ऐमा रहा जो प्रशमनीय नही था। शुरू में जव उसने अभिनेत्री वनने का फैमला किया, फिर जव मुझे अपने प्रेम के सम्वन्ध में लिखा, फिजूलखर्ची का

7*

एक दौरा-सा उसपर आया और कभी एक कभी दो हज़ार रूबल मगाने लगी, फिर जब मर जाने की अपनी इच्छा उसने व्यक्त की और फिर जब अपने बच्चे की मौत के सम्बन्ध में लिखा, मैं किंकर्त्तव्यविमूढ रहा। उसकी ज़िन्दगी में मेरा केवल इतना ही हाथ था कि मैं बराबर उसी के बारे में सोचा करता और उसे लम्बे, गैरदिलचस्प पत्र लिखा करता जो न भी लिखे जाते तो बुरा न होता। और तब भी क्या मैं उसके पिता की जगह पर न था और क्या मैं उसे अपनी ही बेटी की तरह प्यार न करता था।

आजकल कात्या मुझसे कोई दो फरलाग की दूरी पर रहती है। उसने पाच कमरोवाला एक मकान भाडे पर ले रखा है और उसे बहुत आरामदेह ढग और ऐसी सुरुचि से सजाया है जो बिल्कुल उसकी अपनी है। यदि कोई उस वातावरण का वर्णन करने की कोशिश करे जिसमें वह रहती है तो उस वर्णन में ज़ोर आलस्य पर ही होगा। मुलायम कोच और मुलायम कुरसिया अलस शरीर के लिए, मुलायम कालीन अलस पावो के लिए, मन्द, धुधले उडे उडे-से रग अलसायी आखो के लिए। अलस आत्मा के लिए दीवारो पर ढेरो सस्ते पखे, छोटी तसवीरे जिनमें विषय पर अभिव्यक्ति का नवीन ढग हावी है, छोटी मेज़ो, आलमारियो, हर जगह बिल्कुल फालतू और फिज़ूल चीज़ो का अम्बार, कपडे के बेढगे टुकडे परदे की जगह यह सब और चटकदार रगो, करीने, खुली जगह से बचने के स्पष्ट प्रयास से आत्मा का आलस्यपूर्ण होना प्रकट होता है और साथ ही स्वाभाविक सुरुचि का दूषित होना भी। कात्या कई कई दिन तक कोच पर लेटी पढा करती है—मुख्यत उपन्यास और कहानिया। वह घर से सिर्फ एक बार निकलती है, तीसरे पहर, जब वह मुझसे मिलने आती है।

मै काम करता रहता हू और कात्या पास ही सोफे पर बैठी चुपचाप अपने शाल को अपने आसपास खीच खीचकर ओढती रहती है, मानो उसे सरदी लग रही हो। या तो इसलिए कि मै उसे प्यार करता हू या इसलिए कि मै उसके बचपन के समय से ही उसके बारबार आने का आदी हो चुका हू, उसकी उपस्थिति मेरी एकाग्रता में बाधा नही पहुचाती। बीच बीच में मै कोई फालतू सवाल उससे कर लेता हू और वह मुझे संक्षिप्त-सा उत्तर दे देती है। या क्षण भर के लिए थकावट दूर करने के ख्याल से मै मुडकर उसकी ओर देखता हू, वह अन्यमनस्क भाव से किसी अखबार या डाक्टरी की पत्रिका के पन्ने पलटती होती है। तब मै देखता हू कि उसके चेहरे पर पहलेवाला आत्मविश्वास का वह भाव अब नही है। अब उसका चेहरा विचारो में खोया हुआ, उदासीन, सूनासूना लगता है, जैसे उन यात्रियो के चेहरे जिन्हे ट्रेन का बहुत देर तक इन्तजार करना पडा हो। कपडे वह अब भी अच्छे पहनती है, पुरानी सुरुचिपूर्ण सादगी से, पर अब वह सुथरता और सुथरापन नही है। उसके वस्त्रो और बालो से सोफो और झूलनेवाली कुरसियो की छाप रहती है जिन पर वह दिन भर पडी आराम करती है। और अब उसमें हर बात समझने की जिज्ञासा भी नही है जैसी कि पहले थी। अब वह मुझसे कोई सवाल नही करती मानो जीवन मे जो कुछ नाना था, उसका अनुभव कर चुकने पर अब वह कोई नयी बात सुनने की आशा नही करती।

चार बजने से कुछ पहले बैठक और ड्राइंग रूम में जीवन आने लगता है। इसका अर्थ है कि लीजा सगीत विद्यापीठ से लौट आयी है और अपने साथ कुछ सखियो को ले आयी है। किसी के पियानो बजाने की आवाज सुनाई देती है, कोई एक दो टुकडे गा भी देती है, हसी

गूज जाती है। भोजन के कमरे में येगोर मेज़ सजाता है और तश्तरियो की खडखडाहट सुनाई देती है।

कात्या कहती है—"नमस्कार! आज मै उन लोगो से मिल न सकूगी, वे मुझे माफ कर दें। मुझे समय नही है। मेरे पास आओ।"

जब मै उसे बाहर के दरवाज़े तक छोडने जाता हू वह मुझे सिर से पैर तक जाचती है और फिर चिडचिडाकर कहती है—

"तुम रोज़ दुबले होते जा रहे हो। इलाज क्यो नही कराते? मै सेर्गेइ फेदोरोविच को तुम्हारे पास भेजूगी। तुम उसे अपनी जाच कर लेने देना।"

"कात्या, यह मत करना।"

"मेरी समझ में नही आता कि तुम्हारे घरवाले क्या सोच रहे हैं। तुम्हारा परिवार भी खूब है!"

वह झटककर अपना कोट पहन लेती है, लापरवाही से बधे उसके जूडे से दो एक पिने हमेशा गिर जाती हैं। काहिली और हडबडी के कारण वह बाल नही सवारती, सिर्फ एकाध लट को टोपी के भीतर ठूसकर चल देती है।

जब मैं खाने के कमरे में पहुचता हू, मेरी बीवी मुझसे पूछती है—

"क्या कात्या आयी थी? वह हमसे मिलने क्यो नही आयी? यह ऐसी अजब बात ."

लीजा झिडकती हुई कहती है—"अरे, अम्मा! अगर वह नही आना चाहती तो वह रहे अलग! हमें उसके पैर पडने की ज़रूरत नही है।"

"तुम चाहे जो कहो, है यह उपेक्षा। पढाई के कमरे में तीन घण्टे बैठी रहे और हमारा उसे ख्याल तक न आये। लेकिन, जैसी उसकी मरजी हो, जो जी में आये करने को स्वतत्र तो वह है ही।"

वार्या और लीज़ा दोनो कात्या से नफरत करती है। यह नफरत

मेरी समझ में नही आती, इसे कोई औरत ही समझ सकती हो। मैं कसम खा सकता हू कि उन डेढ सौ नवयुवको में से जिनसे मैं लगभग प्रतिदिन व्याख्यान-हॉल में मिलता हू और उन वीसियो अधेड लोगो में से जिनसे मै हर हफ्ते मिलता हू एक भी ऐसा न निकलेगा जो कात्या के विगत जीवन, उसके विवाह हुए बिना बच्चा होने, खुद जारज सन्तान के लिए यह घृणा और अरुचि समझ सके। साथ ही मैं अपनी जानपहचान की स्त्रियो व लडकियो में से एक की भी कल्पना नही कर सकता जो जाने अनजाने ऐसी ही भावनाए पोषित न कर रही हो। यह इसलिए नही है कि स्त्रिया पुरुषो के मुकाबिले ज्यादा पुण्यात्मा होती हैं। अतत पुण्य और पाप में बहुत ही कम अन्तर रह जाता है यदि पुण्य दुर्भावनाहीन न हो। मैं इसका कारण स्त्रियो का पिछडापन समझता हू। दुर्भाग्य देखकर आधुनिक पुरुष को जो उदास समवेदना और अस्पष्ट सा पछतावा होता है वह मुझे नैतिक विकास और सस्कृति का घृणा और अरुचि से अधिक बडा प्रतीक लगता है। आधुनिक नारी आसू बहाने में और कठोरहृदयता में मध्ययुगीन नारी के समान ही है। मेरी राय में वे लोग सही है जो कहते है कि स्त्रियो की शिक्षा-दीक्षा और लालन-पालन भी पुरुषो की तरह ही होना चाहिए।

मेरी पत्नी कात्या को इसलिए भी नापसन्द करती है कि वह अभिनेत्री रह चुकी है, अकृतज्ञ है, घमण्डी व सनकी है, और उसमें वे अनगिनत दोष हैं जो एक औरत दूसरी औरत में हमेशा ढूढ सकती है।

खाने की मेज पर घर के लोगो के अलावा लीज़ा की दो-तीन सखिया और उसका प्रशसक और प्रेमी अलेक्सान्द्र अदोल्फोविच ग्नेकेर भी है। वह भूरे बालो, लाल लाल से गलमुच्छे, रगी हुई मूछोवाला तीस साल का औसत कद, मोटा बदन, चौडे कन्धोवाला नौजवान है जिसके चिकने मोटे चेहरे पर कुछ कुछ गुडियो की सी छवि है। वह एक बहुत

छोटा कोट, रगविरगे वासकट, चारखाने की पतलून जो कमर पर वहुत ढीली और टखनो पर बहुत तग है और सपाट तल्ले के लाल जूते पहनता है। उसकी आखें झीगे की तरह आगे को उभरी हुई है, उसकी टाई झीगे की गर्दन-सी है और मुझ लगता भी है कि यह युवक भी झीगा मछली के शोरबे की तरह महकता होगा। वह रोज ही हमारे यहा आता है पर हममें से कोई भी नही जानता कि वह किस परिवार का है, कहा पढा है, उसकी जीविका का साधन क्या है। वह न तो गाता है और न बजाता है पर तब भी सगीत व गाने बजाने से उसका कुछ सम्बन्ध है। अज्ञात खरीदारो को अज्ञात बडे पियानो बेचा करता है, सगीत विद्यापीठ में बरावर मौजूद रहता है, हर बडे सगीतज्ञ को जानता है और सगीत गोष्ठियो में अतिथि सत्कार किया करता है। सगीत की आलोचना में वह अति प्रामाणिक कुछ कुछ सर्वज्ञ देवताओ की तरह बोलता है और मैंने देखा है कि हर कोई जल्दी से उससे सहमत हो जाता है।

रईसो के हमेशा आश्रित मुसाहिब लगे रहते हैं, यही हाल विज्ञान और कला का भी है। मै नही समझता कि कोई भी कला या विज्ञान मिस्टर ग्नेकेर जैसे विदेशी तत्वो से मुक्त है। मैं सगीतज्ञ नही हू और ग्नेकेर के सम्बन्ध में भूल कर सकता हू, इसलिए भी, कि उसके बारे में मै बहुत कम जानता हू। पर उसका अधिकारपूर्ण ढग और किसी के गाते-बजाते समय उसका पियानो के पास सन्तुष्ट भाव से खडे होने का लहजा मुझे सन्देहास्पद लगता है।

शिष्ट सभ्य समाज की आप नाक भले ही हो, चाहे प्रिवी कौंसिल के मेम्बर ही क्यो न हो, पर आपके अगर एक बेटी है तो निम्न मध्यमवर्गीय फूहड के वातावरण से आप बच नही सकते, जो प्रणय-प्रार्थना, वर की तलाश और विवाह, आपके घर और आपकी मनोदशा पर छा देंगे। जहा तक मेरा सम्बन्ध है, मै ग्नेकेर के आने पर अपनी

पत्नी के चेहरे पर छा जानेवाले दिखावटी भाव को कभी बरदाश्त नही कर पाता या कि जब सिर्फ उसे दिखाने के लिए मेज़ पर शरी, पोर्ट व फ्रांसीसी शराब की बोतलें सजायी जाती है ताकि वह समझ सके कि हम किस शान-शौकत से रहते है, मुझे अच्छा नही लगता। मै लीजा की वह हसी बरदाश्त नही कर पाता जो उसने विद्यापीठ में सीखी है— अलग अलग टुकडो मे हसने का ढग। या जब घर मे पुरुष अतिथि आते है तो वह जिस तरह आखें सिकोडकर उनकी ओर देखती है वह भी मुझे पसन्द नही आता। पर जो बात कभी भी, कैसे भी मेरी समझ में नही आ सकती, वह यह है कि ऐसा व्यक्ति जो मेरी आदतो, मेरे विज्ञान, मेरे जीवन के पूरे ढग से पूर्णत अपरिचित है, बेगाना है, उन लोगो से बिल्कुल भिन्न है, जिन्हे मै पसन्द करता हू, वह क्यो हर दिन मेरे घर आये और हर शाम मेरे साथ खाना खाये। मेरी पत्नी और नौकर रहस्यमय ढग से फुसफुसाते है कि वह 'वर' है, तब भी मेरी समझ में नही आता कि वह यहा है क्यो? उसे देखकर मुझे उसी तरह का अचम्भा होता है जैसा अचम्भा मुझे तब हो जब कोई जूलू मेरे साथ मेज पर बैठा दिया जाय। मुझे यह भी अजब लगता है कि मेरी बेटी जिसे मै अब भी बच्ची समझता हू यह टाई, ये आखें, ये फूले फूले गाल पसन्द करे

पहले मुझे खाने मे मजा आता था, या, मै खाने के बारे में उदासीन हो जाता था, पर अब खाने से मुझे ऊब और खीज होती है। जब से मै एक्सीलेंसी हुआ और फैकल्टी का अध्यक्ष भी, मेरी पत्नी और पुत्री ने न जाने क्यो, यह जरूरी समझ लिया है कि खाने की किस्मो और खाने के शिष्टाचार में रद्दोबदल किया जाय। उन सीधे-सादे भोजन की जगह जिनका मै छात्र और बाद में डाक्टर के जीवन से आदी था, अब मुझे शराब की चटनी में गुर्दे और गाढा सूप (शोरबा) जिसमें

सफेद टुकड़े तैरते रहते है, खाने को मिलते है। मेरे नये पद और ख्याति ने मेरे प्रिय भोजन बन्दगोभी का शोरबा, केक, सेवो से भरे भुने बत्तख, पीली मछली के साथ दलिया छीन लिये है। मुझसे इनके कारण नौकरानी अगाशा भी छिन गयी है जो खुशमिज़ाज और बातूनी थी, उसकी जगह येगोर जो बुद्धू और दम्भी है, खाना परोसता है, दाहिने हाथ में सफेद दस्ताना पहिनकर। एक खाने के बाद दूसरे के आने के बीच का अन्तर अब बड़ा लगने लगा है क्योकि इस अन्तर को भरने के लिए कुछ नही होता। वह पुरानी हसी खुशी, गपशप, मज़ाकें, चुहले, हसी-दिल्लगी, आपसी प्यार, बच्चो, बीवी व मेरे एक साथ खाने की मेज़ पर जमा होने की प्रसन्नता, सब हवा हो गयी। मेरे जैसे व्यस्त व्यक्ति के लिए खाने का वक्त आराम और घर के लोगो से मिलने के लिए होता था और मेरी बीवी व बच्चो के लिए यह वक्त खुशी की जेवनार हो जाता था चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही, जब वे जानते थे कि इस आध घण्टे में मैं अपने छात्रो या विज्ञान का नही उनका अपना था और किसी का भी नही। एक जाम हलकी शराब से मस्त हो जाने के दिन गये, अगाशा और मछली और दलिया के दिन गये, खाने के वक्त की हर छोटी घटना का मज़ा लेने और शोरगुल मचाने के दिन गये, ऐसी घटनाओ के मज़े लेने के दिन जैसे मेज़ के नीचे कुत्ते और बिल्ली का लड़ पड़ना या कात्या के गाल की पट्टी खुलकर शोरबे में गिर जाना।

आजकल के भोजन का वर्णन भी उतना नीरस होगा जितना कि स्वय भोजन होता है। मेरी बीवी जो हमेशा परेशान लगती है, अब दिखाऊ गभीरता और रोब का भाव चेहरे पर धारण किये खाने की मेज़ पर बैठी रहती है। थाली की ओर देखती हुई वह परेशानी से कहती है—"तुम्हे गोश्त पसन्द नही मै देखती हू कि तुम्हे पसन्द नही है, तो फिर कह क्यो नही देते?" और मुझे जवाब देना होता है कि "नही,

नही, बात बिल्कुल ऐसी नही है, प्यारी! यह तो बहुत स्वादिष्ट है!" और वह कहती है—"निकोलाई स्तेपानिच! तुम हमेशा मेरा पक्ष ग्रहण करते हो, सच कभी नही कहते। पर अलेक्सान्द्र अदोल्फोविच इतना कम क्यों खाता है?" खाने के दौरान भर ऐसी ही बात चला करती है। लीजा अपनी अलग अलग टुकडोवाली हसी हसती है और आखे सिकोडती है। मैं एक के बाद दूसरे के चेहरे पर निगाह दौडाता हू और खाते वक्त ही मुझे सबसे ज्यादा आभास इस बात का होता है कि इन दोनो के आतरिक जीवन की मेरी समझ और अध्ययन बहुत दिन पहले से छूट चुका है। मुझे लगता है कि एक समय था जब मैं घर पर अपने असली परिवार के साथ रहता था, और अब मैं कही, घर के बाहर, ऐसी बीवी के साथ भोजन कर रहा हू जो असली नही है और ऐसी बेटी लीजा को देख रहा हू जो असली नही है। उन दोनो में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो गया है और मैं यह परिवर्तन लानेवाली लम्बी प्रक्रिया को देखने मे चूक गया, इसलिए अब अगर मैं इस परिवर्तन को समझ नही पाता तो ताज्जुब की बात नही। यह परिवर्तन हुआ क्यो? मैं नही जानता। शायद असली मुसीबत यह है कि भगवान ने मेरी बीवी और बेटी को यह शक्ति नही दी है जोकि मुझे मिली है। बाहरी प्रभाव से टक्कर लेने की आदत मैंने बचपन से ही डाल ली है और इसमे मेरी खासी ट्रेनिग हो गयी है। जीवन में प्रतिष्ठा, पद, आमदनी के भीतर खर्च करने की हालत से बूते के बाहर खर्च करने की, दुर्घटनायें, प्रख्यात व्यक्तियो से जान-पहचान आदि परिवर्तनो ने मुझपर नहीं के बराबर ही प्रभाव डाला है और मेरी ईमानदारी इन सब बातो से अछूती रही है। पर ये सब बाते मेरी पत्नी और लीजा पर बर्फ के पहाड की तरह टूट पडी है, कमजोर और अनभ्यस्त तो वे थी ही, इस पहाड ने उन्हे चकनाचूर कर दिया।

ग्नेकेर और नवयुवतिया, गीतो के स्वर, ताल, गवैयो पियानोवादको, बाख़, ब्रेम्स आदि पर बहस करते है और मेरी पत्नी इस डर से कि कही वह अनाडी और अनभिज्ञ न समझ ली जाय, सहानुभूतिपूर्वक मुसकराती हुई धीरे धीरे कहा करती है – "बहुत सुन्दर सचमुच ? देखो भला "

ग्नेकेर डटकर खाता है, भारी-भरकम मजाक करता है और नवयुवतियो की बाते इस ढग से सुनता है मानो अहसान कर रहा हो। बीच बीच में वह फ्रासीसी भाषा का गलत प्रयोग करने के लिए लालायित हो उठता है और फिर न जाने क्यो मुझे फ्रासीसी मे "महामहिम" कहने लगता है।

पर मै कुढा हुआ हू। मै उनकी और वे मेरी उलझन का कारण बनते है। पहले कभी मुझमें अपना बडप्पन या दूसरो को छोटा समझने की भावना नही आती थी। पर अब ऐसी ही भावना मुझे सालती रहती है। मेरी प्रवृत्ति और चेष्टा ग्नेकेर में बुराइया ढूढने की ही होती है और इसमें मुझे देर नही लगती और शीघ्र ही मै इस बात पर चिन्तित हो उठता हू कि एक निपट अजनबी मेरे घर आकर वर की भूमिका अदा कर रहा है। उसकी मौजूदगी से एक दूसरी तरह से भी मेरे ऊपर बुरा असर पडता है। नियमत जब मै अकेला होता हू या ऐसे लोगो के साथ होता हू जिन्हे मैं पसन्द करता हू तो मै अपने गुणो की बात नही सोचता और यदि किसी क्षण सोच भी लू तो मुझे वे ऐसी नगण्य लगती है मानो विज्ञान की डिगी मैने अभी हाल ही में ली हो। लेकिन ग्नेकेर जैसे लोगो के सामने मुझे अपने गुण पहाड जैसे लगने लगते हैं। पहाड जिसकी चोटी बादलो में खो गयी हो और ग्नेकेर जैसे लोग नीचे तलहटी में कही इस तरह रेग रहे हो कि दिखाई भी न दें।

भोजन के बाद मैं अपने अध्ययन-कक्ष में चला जाता हू और

पाइप सुलगाता हू। सुबह से रात तक तम्बाकू पीने की मेरी पुरानी लत का अब दिन-रात में सिर्फ यही एक बार का पाइप अवशेष रह गया है। जब मैं पाइप पी रहा होता हू, मेरी बीवी मेरे पास बैठने और बात करने आती है। जैसा कि सवेरे होता है, मैं पहले से जानता होता हू कि वह क्या बात करेगी।

"निकोलाई स्तेपानिच, हमें इस मसले पर गभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए," वह शुरू करती है, "मेरा मतलब लीज़ा के बारे में बात करने से है आखिरकार, तुम्हे भी इसमें दिलचस्पी लेनी ही चाहिए "

"क्या मतलब?"

"तुममें बुराई यह है कि तुम कोई चीज न देखने का बहाना करते हो। इतनी लापरवाही बरतने का तुम्हे कोई हक नही है। ग्नेक़ेर की लीजा के बारे में उसका इरादा है तुम्हारा इस बारे में क्या ख्याल है?"

"मैं यह तो नही कह सकता कि वह बिल्कुल दो कौडी का आदमी है, क्योंकि मैं उसे ठीक से जानता नही, पर मैं तुम्हे बार बार बता चुका हू कि वह आदमी मुझे पसन्द नही है।"

"पर तुम ऐसा नही कर सकते तुम कह नही सकते "

वह घबरायी हुई उठकर कमरे में इधर-उधर टहलने लगती है।

फिर कहती है—ऐसी गभीर बात को तुम यों नही टाल सकते। जहा तुम्हारी बेटी के सुख की बात हो, अपनी व्यक्तिगत बातें टाल ही देनी पडती है। मैं जानती हू कि तुम उसे पसन्द नही करते। बहुत अच्छा, तब मान लो कि हम उससे ना कर दे, बात टूट जाय, फिर क्या इसका कोई भरोसा है कि लीजा इस बात को जिन्दगी भर हमारे खिलाफ उठाती न रहेगी? आजकल अच्छे लडकों की कोई

बहुतायत तो है नही, यह भी मुमकिन है कि कोई दूसरा वर मिले ही न. वह लीज़ा को बहुत प्यार करता है और जहा तक मैं जानती हू वह भी उसे पसन्द करती है मैं जानती हू कि उसकी कोई पक्की नौकरी नही है, पर इसके लिए हम क्या करे! भगवान करेगा तो एक दिन वह भी कही जम जायगा। उसका परिवार अच्छा है और धनी आदमी है।"

"तुम्हे कैसे मालूम?"

"उसने मुझे बताया था। उसके पिता का खारकोव में एक बडा मकान है और पास में ही जागीर है। तुम्हें खारकोव जाना पडेगा, निकोलाई स्तेपानिच, जानते हो तुम्हे वहा जाना है।"

"क्यो?"

"वहा जाकर ही तुम्हे, मौके पर सब बातो का पता लग सकेगा वहा तुम कुछ प्रोफेसरो को जानते हो, वे तुम्हारी मदद कर देंगे। मै खुद चली जाती, पर मै औरत हू, मै जा नही सकती "

मुह फुलाकर मै कहता हू—"मै नही जाता खारकोव।"

पत्नी घबरा उठती है, उसके चेहरे पर असीम वेदना का भाव छा जाता है।

सुबकती हुई वह अनुनय शुरू करती है—"भगवान के लिए, निकोलाई स्तेपानिच! भगवान के लिए तुम मेरे सिर से यह बोझ उतार दो, मै बहुत दुखी हू।"

उसे ऐसा करते देखकर मुझे तकलीफ होती है। मैं मृदुलता से कहता हू—"अच्छी बात है वार्या, तुम कहती हो तो मैं खारकोव हो आऊगा और तुम्हारे लिए कुछ भी कर दूगा।"

आखो से रूमाल लगाकर वह अपने कमरे में रोने चली जाती है। मै अकेला रह जाता हू।

थोडी देर बाद लैम्प आ जाता है। आराम-कुरसी व लैम्प-शेड की जानी-पहिचानी परछाइया, जिनसे मैं बहुत पहले उकता चुका हू, दीवालो पर पडने लगती है और उन्हे देखकर मुझे प्रतीत होता है कि रात आ गयी और मेरे सत्यानाशी अनिद्रा रोग का दौरा शुरू होगा। मैं बिस्तर पर जा लेटता हू, फिर उठकर कमरे में इधर-उधर टहलता हू, फिर जा लेटता हू भोजन के बाद रात होने पर आम तौर पर मेरी घबराहट और चिडचिडापन अपनी चरम सीमा पर पहुच जाता है। अकारण ही, मैं तकिये मे मुह छिपाकर रोने लगता हू। ऐसे मौको पर मुझे बराबर यह डर लगा रहता है कि कोई आ जायेगा या कि मैं अकस्मात मर जाऊगा। मुझे अपने रोने पर शर्म आती है और मेरी अवस्था दुःसाध्य हो जाती है। मुझे लगता है कि अपने लैम्प, अपनी किताबो, फर्श पर पडनेवाली परछाइयो को देखना मैं अभी बरदाश्त नही कर सकता, बैठक से आनेवाली आवाजें सुनना मैं बरदाश्त नही कर सकता। कोई अज्ञात, अनबूझ शक्ति मुझे जबरदस्ती घर से बाहर ढकेलती है। मैं उछल पडता हू, कपडे डाल लेता हू और यह कोशिश करते हुए बाहर निकल पडता हू कि कोई घरवाला मुझे देख न ले। मैं कहा जाऊ?

इस प्रश्न का उत्तर पहले ही मेरे दिमाग में है—कात्या के यहा।

(२)

आम तौर पर मैं उसे तुर्की सोफे या कोच पर पडे पढती पाता हू। मुझे देखकर वह अलसायी हुई-सी धीरे से सिर उठाती है, बैठ जाती है और मेरी ओर हाथ बढा देती है।

दम लेने के लिए थोडा ठहरकर मैं कहता हू—"फिर पडी ऐंड

रही हो? अच्छा नही है यह तुम्हारे लिए। तुम कुछ करती क्यो नही?"

"क्या?"

"मैं कहता हू, तुम्हे अपने लिए कुछ न कुछ काम ढूढ निकालना चाहिए।"

"पर क्या काम? औरतो के लिए कारखाने और नाटक कपनी के अलावा कोई और काम भी तो नही है।"

"अच्छा, तो, चूकि कारखाने में काम नही करना है तो थियेटर में ही क्यो न शामिल हो जाओ।"

वह जवाब नही देती।

"तुम शादी क्यो नही कर लेती?" मैं कुछ कुछ गभीरता से कहता हू।

"कौन है जिससे कर लू? और फिर क्यो कर लू?"

"ऐसे काम जो नही चल सकता।"

"बिना पति के? क्या ज़रूरत है? और अगर मैं यही चाहू तो क्या मरदो की कमी है?"

"कात्या, यह भली बात नही है।"

"क्या भली बात नही है?"

"जो तुमने अभी कही।"

यह देखकर कि उसने मुझे परेशानी में डाल दिया है, कात्या मुझपर पडे बुरे प्रभाव को हलका करने के लिए कहती है—

"मेरे साथ आओ। इधर आओ। इस तरफ।"

वह मुझे बडे आरामदेह ढग से सजे एक छोटे से कमरे में ले जाती है और एक डेस्क दिखाकर कहती है—

"देखो यह मैंने तुम्हारे लिए ठीक किया है। तुम यहा काम किया करोगे। अपना काम बटोरकर रोज़ यहा चले

आया करो। अपने घर पर तुम्हे वे लोग चैन से बैठकर काम न करने देंगे। यहा करोगे काम? कह दो न कि हा।"

इनकार से उसका दिल दुखाना नही चाहता, इसलिए कह देता हू कि हा, आया करूगा और मुझे यह कमरा बहुत पसन्द है। तब हम दोनो उसी आरामदेह छोटे कमरे में बैठकर बाते शुरू कर देते है।

गरम, आरामदेह वातावरण और हमदर्द साथ अब मुझमें पहले की तरह प्रसन्नता की भावना पैदा नही करते बल्कि शिकवा-शिकायत करने की प्रेरणा देते हैं मुझे लगता है कि थोडी बहुत शिकायत करने और अपने आप पर तरस खाने से शायद मेरी तबीअत सुधर जाय।

गहरी सासे लेते हुए मै कहना शुरु करता हू—"हालत ठीक नही है, प्यारी बेटी, हालत बहुत बुरी है।"

"क्यो, क्या बात है?"

"बात यू है, प्यारी, बादशाहो का सबसे बडा और सबसे पवित्र अधिकार क्षमा करने का अधिकार है। मै अपने को हमेशा बादशाह ही मानता रहा हू क्योकि मैने इस अधिकार का व्यापक प्रयोग किया है। मै कभी उचित अनुचित का फैसला नही करता था, हमेशा दूसरो का मन रखता था और हर एक को क्षमा करता रहता था। जहा दूसरे प्रतिवाद करते और क्रोध करते वही मै सिर्फ समझाता-बुझाता। जीवन भर मैने कोशिश की है कि मेरा साथ मेरे परिवार, मेरे नौकरो, छात्रो और साथियो आदि को रुचिकर हो। मेरे सम्पर्क में आनेवालो पर मेरे इस बरताव का अच्छा प्रभाव पडता था, मै जानता हू कि उन पर इसका असर पडता था। पर अब मै बादशाह नही रहा। मेरे अन्दर में दिन रात ऐसा कुछ होता रहता है जो केवल किसी गुलाम के लिए क्षम्य होगा—दिमाग में कटु विचार मडराया करते है, ऐसी भावनाए दिल में बसेरा लिये रहती है जिनसे

पहले मैं कभी परिचित भी नही था। मुझे घृणा, नफरत, क्रोध, भय, रोष और झल्लाहट की भावनाए घेरती हैं। मैं अहकारमय रूप से कठोर, चिडचिडा, सशयालु और रूखा हो गया हू। पहले जिस बात को मैं हसी मजाक कर खत्म कर देता, वही बात मुझे अब कुपित कर डालती है। मेरी तर्क-बुद्धि ही मुझे दगा दे जाती है। पहले मैं सिर्फ रुपये भर से नफरत करता था, अव धन से ही नही रईसो से भी कटु हो जाता हू मानो वे दोषी हो। पहले मैं हिसा और अत्याचार से घृणा करता था अब मैं हिसा का प्रयोग करनेवालो को भी घृणा की दृष्टि से देखता हू, मानो हम नही वल्कि केवल वे ही दूसरो में अच्छी भावनाए जागृत करने में असमर्थ हैं, दोषी है। इस सबका अर्थ क्या है? यदि मेरे नये विचार और नयी भावनाए बदली हुई मान्यताओ का फल है तो मेरी मान्यताओ में परिवर्तन का कारण क्या है? क्या असलियत यह है कि मैं वेहतर हो गया हू और दुनिया बुरी हो गयी है, या यह है कि मैं अब तक अन्धा और बेपरवाह था? अगर परिवर्तन शारीरिक व मानसिक शक्तियो के क्षीण होने से आया है, तुम तो जानती हो कि मैं बीमार आदमी हू और मेरा वजन दिन पर दिन गिर रहा है, तो फिर मेरी हालत सचमुच दयनीय है। क्योकि इसका मतलब यह हुआ कि मेरे विचार अस्वाभाविक और बीमार है और मुझे इनके लिए शरमिन्दा होना चाहिए, इन्हें तुच्छ समझना चाहिए "

कात्या ने मुझे टोककर कहा – "इस सबसे तुम्हारी बीमारी का कोई सम्बन्ध नही है। बात सिर्फ यह है कि अब तुम्हारी आखें खुल गयी है। बस। तुम अब वह देखते हो जो देखने से पहले तुम इनकार करते थे। मेरी राय में तुम्हे जो पहला काम करना चाहिए, वह है अपने परिवार को छोड देना, उससे हमेशा के लिए नाता तोड लेना।"

"तुम बेवकूफी की बात कर रही हो।"

"तुम अब उन्हे प्रम नही करते । ढोंग क्यो करते हो? क्या इसी को परिवार कहते है? बिल्कुल नगण्य लोग! आज मर जाय तो कल कोई यह जाने भी नही कि वे है भी कि नही।"

कात्या मेरी पत्नी और बेटी मे उतनी ही नफरत करती है, जितनी कि वे उनमे। आजकल लोग एक दूसरे से नफरत करने के अधिकार के सम्बन्ध में शायद ही बात करते। पर कात्या का दृष्टिकोण अपनाकर अगर कोई इस अधिकार का अस्तित्व स्वीकार कर ले तो फिर यह अस्वीकार करना असम्भव हो जायेगा कि मेरी पत्नी व बेटी को जितना अधिकार कात्या मे नफरत करने का है, उतना ही कात्या को उनका तिरस्कार करने का भी है।

"तुच्छ, नगण्य लोग!" वह दोहराती है। "तुमने आज खाना खाया? तुम्हे खाने के लिए बुलाने की याद उन्हे कैसे रह गयी? उन्हे तुम्हारे अस्तित्व की ही याद कैसे बनी हुई है?"

मै कड़ाई से कहता हू—"कात्या! इस तरह मे बात करना बन्द करो।"

"और क्या तुम समझते हो कि उनके बारे में बात करने में मुझे कोई मजा आता है? मै उनसे बिल्कुल अपरिचित होती तो और भी प्रसन्न होती। मेरी बात मान लो, प्यारे! सब छोड़छाड़कर चल दो। बाहर, विदेश चले जाओ, और जितनी जल्दी चले जाओ उतना ही अच्छा।"

"कैसी बेवकूफी की बात है! तो विश्वविद्यालय का क्या होगा?"

"विश्वविद्यालय को भी तिलाजली दो। तुम्हे विश्वविद्यालय मे मतलब? तुम्हे उससे क्या लेना-देना? तुम तीस साल मे वहा पढा रहे हो, और तुम्हारे शागिर्द है कहा? उनमें से कितने मशहूर वैज्ञानिक हुए? कोशिश करके उन्हे गिनो तो! ऐसे डाक्टर पैदा करने के लिए, जो दूसरो के अज्ञान का फायदा उठाकर हजारों की दौलत जमा करना ही

जानते है, तुम्हारे जैसे प्रतिभासपन्न और ईमानदार लोगो की ज़रूरत नही होती। यहा तुम्हारी ज़रूरत नही है।"

मैं दुखी होकर बोल पडता हू—"हे भगवान! तुम कितनी दो टूक बात करती हो। अब तुम चुप हो जाओ, नही तो मै चला जाऊगा। ऐसी रूखी बातो का मैं जवाब क्या दू, यह मेरी समझ में नही आता।"

नौकरानी आकर कहती है कि चाय मेज़ पर लगा दी गयी है। समोवार के पास बैठ हमारी बातचीत बदल जाती है। अपनी शिकायते ख़त्म कर मैं बूढो की दूसरी कमज़ोरी में मुब्तिला होता हू, पुराने सस्मरण सुनाने की कमज़ोरी। अपने विगत की कहानिया मैं कात्या को सुनाता हू और उससे बात करते करते मुझे अचम्भा होने लगता है कि मै उसे वे बाते बता रहा हू जिनकी याद होने का मुझे गुमान भी न था। वह सहानुभूतिपूर्ण प्रशसा व अभिमान की मुद्रा में बैठी सास रोके मेरी बाते सुना करती है। अपने धार्मिक विद्यालय के जीवन के किस्से और विश्वविद्यालय में प्रवेश के सपनो के बारे में बात करने का मुझे बडा चाव है।

मै उसे बताता हू—"धार्मिक पाठशाला के बगीचे में मै घूमा करता, दूर किसी शराबखाने से गाने और हारमोनियम बजाने की धुनें हवा में तैरती हुई आती या तीन घोडोवाली गाडी पाठशाला की दीवाल के पास से तेजी से गुज़र जाती, उसके घुघरू दूर तक झनझनाते रहते और यह मेरे सीने में खुशी भर देने के लिए काफी होता, सिर्फ सीने में ही नही मेरे पेट, पैरो, हाथो सब में खुशी भर जाती मै हारमोनियम या दूर जाती हुई घटियो की आवाज़ सुनता और कल्पना करता कि मै डाक्टर हू, और एक से एक सुन्दर दृश्यो की कल्पना किया करता। और देखो! मेरे सपने साकार हो गये। जितने की मैंने आशा की थी, उससे कही ज्यादा मुझे मिला। तीस वर्ष तक प्रोफेसर की हैसियत से

मुझे स्नेह मिला, बढिया दोस्त मिले और सम्मान व ख्याति प्राप्त हुई। मैंने प्रेम जाना, लालसापूर्ण प्रेम में विवाह किया, सतान प्राप्त हुई। सक्षेप में, पीछे मुडकर देखने में मुझे अपना जीवन सुन्दर चित्र की भाति लगता है जो किसी महान चित्रकार ने बनाया हो। मुझे अब सिर्फ करना इतना ही है कि इसका अतिम दृश्य न बिगड जाय। इसके लिए जरूरी है कि मैं मरू तो मर्द की तरह। यदि मृत्यु कोई सकट है तो उसका सामना मुझे अध्यापक, वैज्ञानिक, ईसाई राज्य के नागरिक के अनुरूप शान्त व प्रफुल्ल आत्मा से करना चाहिए। पर मैं तो अतिम दृश्य बिगाड रहा हू। मैं डूब रहा हू और तुम्हारी मदद के लिए दौडता हू और तुम मुझसे कहती हो—डूबो, तुम्हे तो डूबना ही है।"

पर यकायक ड्योढी की घण्टी बज उठती है। कात्या और मैं दोनो घण्टी की आवाज पहिचानते है और कहते है—"वह मिखाइल फेदोरोविच होगा।"

सचमुच ही, मिनट भर बाद आता है मेरा भाषाविज्ञ मित्र मिखाइल फेदोरोविच, लम्बा, दुबला, लचीला, पचास वर्षीय, घने सफेद बाल और काली भवोवाला, दाढी मूछ सफाचट। वह बहुत अच्छा व्यक्ति और बहुत सच्चा साथी है। वह एक अति कुलीन प्राचीन परिवार का है और उस परिवार का हर सदस्य भाग्यवान और प्रतिभाशाली रहा है, हर एक ने साहित्य और शिक्षा के इतिहास मे महत्वपूर्ण योग दिया है। वह स्वय चतुर, सुशिक्षित व प्रतिभाशाली है, पर उसमें कुछ सनक भी है। हम मे से हर एक में थोडा बहुत अनोखापन तो होता ही है, पर उसकी सनको में कुछ असाधारणता है और वह उसके मित्रो के लिए खतरे से खाली नही है। उसके दोस्तो मे मैं कई ऐसे लोगो को जानता हू जो उसके सनकीपन के कारण उसके अगणित गुणो में से एक भी देख नही पाते।

कमरे में आकर वह दस्ताने धीरे धीरे उतारते हुए गहरी आवाज़ में बोलता है—"नमस्कार! चाय पी जा रही है? बहुत अच्छे, कैसी बला की सरदी है।"

वह मेज़ पर बैठकर एक गिलास चाय अपने लिए निकालता है और फौरन बात करना शुरू कर देता है। उसकी बातचीत का खास गुण है चुहलबाज़ी की एक स्थायी धुन, दर्शन और ठिठोली का एक अद्भुत मिश्रण जो 'हैमलैट' में कब्र खोदनेवालो की याद दिलाता है। वह हमेशा गभीर विषयो पर बात करता है पर बात करने का ढग कभी गभीर नही होता। उसकी आलोचना हमेशा कटु और गाली-गलौज भरी होती है पर उसका नम्रतापूर्ण, हसोड, मधुर लहजा गाली और कटुता का डक खत्म कर देता है और थोडी ही देर में लोग उसकी बातचीत के आदी हो जाते ह। हर शाम वह विश्वविद्यालय से आधे दर्जन किस्से बटोर लाता है और जैसे ही आकर बैठता है बिला नागा उन्हे सुनाना शुरू कर देता है।

परिहासपूर्ण ढग से अपनी काली भवे मटकाते हुए, वह लम्बी सास लेकर कहता है—"या खुदा! दुनिया में कैसे मसखरे मिलते हैं!"

"क्या हुआ?" कात्या कहती है।

"आज जब मै व्याख्यान-हॉल से बाहर निकल रहा था, मुझे वह बूढा बेवकूफ न०न० मिल गया घोडो की तरह अपनी ठोडी बाहर की ओर निकाले वह बढा आ रहा था, बदस्तूर किसी ऐसे आदमी की तलाश में जिससे वह अपने सिर-दर्द, अपनी बीवी, अपने छात्रो की जो दरजे में नही आते, शिकायत करे। उसने मुझे देख लिया है, मैंने सोचा, अब खैर नही। अब इससे छुटकारा मुश्किल है"

और इसी तरह किस्सा आगे बढता है, या फिर वह कुछ इस तरह शुरू करता है—

"मै कल ज० के सार्वजनिक भाषण के वक्त मौजूद था। मुझे सचमुच इस बात पर ताज्जुब है कि हमारा विश्वविद्यालय, किसी को इसकी कानो-कान खबर न हो—कैसे ज० जैसे मूर्खों को सार्वजनिक रूप से दिखाने का खतरा मोल लेता है। अरे! वह तो सारे यूरोप भर में मूर्ख मशहूर है। आप सारा यूरोप छान मारे, दिया लेकर ढूढ आय, पर ऐसा मूर्ख आपको न मिलेगा। आप जानते है, वह बोलता कैसे है, अम-अम मानो मिठाई चूस रहा हो, फिर वह घबरा जाता है, अपना ही लिखा हुआ भाषण मुश्किल से पढ पाता है। विचार उसके इस तेजी से चलते है जैसे बडा पादरी साइकिल पर चलता है और सबसे बदतर बात तो यह है कि कोई भी नही समझ पाता कि वह कहना क्या चाहता है। पोखरे के पानी की तरह प्रवाहहीन उसका भाषण उतना ही उबानेवाला होता है, जितना विश्वविद्यालय का दीक्षान्त भाषण और इससे बदतर और क्या होगा?"

और यहा से वह बात बदलकर दूसरी दिशा में चल निकलती है—

"तीन साल पहले यह निकोलाइ स्तेपानिच को भी याद होगा, यह दीक्षान्त भाषण मुझे करना पडा। गरमी, उमस, मेरा कोट बगलो पर तग, ओफ! मैने आध घण्टे पढा, घण्टे भर, डेढ घण्टे, दो घण्टे पढा मैने सोचा "चलो, खुदा का शुक्र है कि कुल दस सफे और बचे है पढने को।" और आखिरी चार सफे तो बिल्कुल गैरजरूरी थे, उन्हे तो मै निकलवा देना चाहता था, तो बचे कुल छ। मै यह सोच ही रहा था, आप मुलाहिजा फरमायें! मैने आख उठाकर श्रोताओ की ओर ताका, यहा अगली कतार में ही तमगे लगाये एक जनरल और एक बडे पादरी बगल बगल डटे थे। ऊब के मारे बेचारे अकड से गये थे, आखें खुली रखने के लिए वे उन्हे बराबर मिच-मिचा रहे थे और

मिखाइल फेदोरोविच गहरी सास लेकर कहता है—"जनरुचि गिरती जा रही है, मै आदर्शों व वैसी ऊची बातो के बारे में नही सोच रहा, मैं तो कहता हू कि अगर लोग ठीक से सोच और काम कर पाते। आजकल हालत तो वैसी ही है जैसी कवि ने बतायी जब उसने लिखा—"नयी पीढी को मै उदासी से देख रहा हू"।

"हा, नयी पीढी में बहुत ही ज्यादा गिरावट आयी है," कात्या उससे सहमत होती हुई कहती है, "पिछले पाच या दस साल ही ले लो, क्या इस अवधि के अपने शिष्यो में से एक का भी नाम ले सकते हो जो प्रतिभाशाली रहा हो?"

"और प्रोफेसरो की तो मैं जानता नही, पर अपने शिष्यो में से किसी भी ऐसे छात्र की मुझे तो याद आ नही रही।"

कात्या कहना जारी रखती है—"अपने समय में मैं तुम्हारे अनगिनत छात्रो, युवा विद्वानो, ढेरो अभिनेताओ से मिली हू और आप क्या समझते है? मुझे एक भी दिलचस्प व्यक्ति नही मिला, वीरो या प्रतिभाशाली व्यक्तियो की तो बात ही छोडिये। वे सब हैं अति साधारण, घमण्डी, चोचलेबाज़, नीरस "

गिरावट की इस बातचीत से मुझे हमेशा लगता है मानो सयोगवश मैंने अपनी बेटी के बारे में कोई अप्रिय बात सुन ली हो। शानदार भव्य विगत और वर्तमान आदर्शहीनता, जैसे जूजू बनानेवाले विषयो पर पिटेपिटाये अति साधारण गिरावट के तर्कों पर आधारित ऐसे व्यापक आरोपो से मुझे खीज होती है। कोई भी आरोप चाहे वह महिलाओ की मौजूदगी में ही क्यो न लगाया जाय, बहुत सोच समझकर और ठीक ठीक लगाया जाना चाहिए, नही तो वह आरोप नही, चुगली हो जाती है जो भले लोगो को शोभा नही देती।

मैं बूढा हो गया हू और इधर तीस वर्ष से काम कर रहा हू, लेकिन मुझे न गिरावट नजर आती है, न आदर्शहीनता और न

मैं यह समझता हूं कि वर्तमान विगत से बुरा है। दरबान निकोलाइ के अनुसार और इस मामले में उनके अनुभव का वजन है, आज के छात्र पहले के छात्रों से न अच्छे हैं और न बुरे।

अगर कोई मुझसे पूछे कि अपने आजकल के छात्रों में, मैं क्या बात नापसन्द करता हूं तो मैं फौरन जवाब न दे पाऊंगा और ज्यादा कुछ कह भी न सकूंगा, पर मैं काफी स्पष्ट बातें कहूंगा। मैं उनके दोषों से परिचित हूं, इसलिए मुझे गोलमोल पिटीपिटायी बातें कहने की जरूरत नहीं है। उनका इतना तम्बाकू और शराब पीना और इतनी देर बाद शादी करना मुझे पसन्द नहीं है। मुझे उनकी लापरवाही अच्छी नहीं लगती और न उपेक्षा की वह भावना जिसकी वजह से वे अक्सर भूखे छात्रों की अपने बीच मौजूदगी के बारे में लापरवाह हो जाते हैं और परावलम्बी छात्र सहायता समिति का बकाया चन्दा नहीं देते। उन्हें विदेशी भाषाओं का ज्ञान नहीं और रूसी भाषा में भी वे ठीक से अपने विचार व्यक्त नहीं कर पाते। अभी कल ही स्वास्थ्य-विज्ञान के मेरे सहयोगी प्रोफेसर शिकायत कर रहे थे कि अब उन्हें सिर्फ इसलिए पहले से दुगुने भाषण देने पड़ते हैं कि छात्रों की भौतिक विज्ञान की जानकारी कम होती है और ऋतु-विज्ञान में तो वे बिल्कुल कोरे होते हैं। नये लेखकों के प्रभाव में, चाहे वे श्रेष्ठ न भी हों, वे बहुत जल्दी आ जाते हैं लेकिन शेक्सपीयर, मार्कस ऑरेलियस, एपिक्टेटस या पासकल जैसे क्लैसिकल लेखकों के प्रति वे उपेक्षा बरतते हैं। बड़े व छोटे लेखकों के बीच फर्क कर पाने की क्षमता के अभाव में ही उनमें सहज बुद्धि की कमी सबसे ज्यादा प्रकट होती है। लोगों के पुनर्वासन जैसे सामाजिक ढंग के जटिल प्रश्नों को अनुभव और वैज्ञानिक जांच के आधार पर हल करने की जगह, और यही तरीका उन्हें सबसे ज्यादा आसानी से प्राप्त है और उनके नाम व पेशे के अनुरूप है, वे सिर्फ चन्दे

की फेहरिस्ते बनाया करते हैं। बौद्धिक स्वतन्त्रता, विचारो की स्वाधीनता की आवश्यकता और व्यक्तिगत प्रेरणा या पेश-कदमी करने की भावना विज्ञान में भी उतनी ही ज़रूरी होती हैं जितनी कि उदाहरणार्थ कला या व्यवसाय में, पर वे ख़ुशी ख़ुशी डाक्टर के सहकारी, प्रयोगशाला कर्मचारी, अस्पताल में न रहनेवाले डाक्टर या ऐसी ही दूसरी नौकरिया कर लेते हैं और चालीस चालीस वर्ष की उम्र तक उन्ही नौकरियो में सन्तुष्ट बने रहते हैं। मेरे शिष्य और छात्र असख्य हैं, पर सहकारी या उत्तराधिकारी कोई नही और इसीलिए मैं यद्यपि उनकी प्रशसा करता हू, उन्हे प्यार करता हू पर उन पर अभिमान नही कर पाता और ऐसी ही अनेक और बाते है।

पर ये दोष, वे सख्या में चाहे जितने अधिक हो, केवल भीरु या कमज़ोर-दिल व्यक्तियो में ही निराशा या गाली देने की मनोभावना पैदा कर सकते हैं। उन सब पर क्षणिक और सयोग से हो जाने की छाप रहती है और वे पूरी तरह परिस्थिति के ग़ुलाम होते है। उनके गायब हो जाने या नये दोषो को अनिवार्य रूप से अगीकार कर लेने के लिए दस वर्ष बहुत काफी होते हैं और इससे दूसरे भीरु लोग आतकित हो उठेंगे। छात्रो के दोषो और पापो पर मैं बहुधा खिन्न हो उठता हू पर यह खिन्नता उस आह्लाद की तुलना में कुछ भी नही है जो मैंने तीस वर्षों में अपने छात्रो से बाते कर, उन्हे पढाकर, उनके आपसी सम्बन्धो को देखकर और बाहरी दुनिया के लोगो से उनकी तुलना कर प्राप्त किया है।

मिखाइल फेदोरोविच की व्यग्यपूर्ण जुमलेबाज़ी जारी रहती है, कात्या उसे सुना करती है और उन दोनो में से कोई भी नही ध्यान देता कि ऊपर से बिल्कुल निरीह दीखनेवाला जैसे कि लोगो को गाली देने का उनका मनोरजन धीरे धीरे उन्हे एक बहुत गहरी खाई की ओर

खीचे लिये जा रहा है। उन दोनो में से कोई भी यह नही देख पाता कि साधारण बातचीत धीरे धीरे ताने मारन और बोली कसने में बदल रही है और वे सचमुच चुगली खाते हैं।

मिखाइल फेदोरोविच कहता है—"कैसे कैसे अजब लोगो से मुलाकात होती है। कल मैं अपने येगोर पेत्रोविच से मिलने गया, वहा आपका तीसरे वर्ष का, मेरा ख्याल है, एक मेडिकल छात्र मिला। क्या चेहरा था उसका! गम्भीर, घोर चिन्तन की छाप उसपर लगी हुई थी। हम लोग बाते करने लगे, मैंने कहा—"सुनो, भाई। मैंने कही पढा है कि किसी जर्मन ने, मुझे उसका नाम याद नही पड रहा, इन्सान के दिमाग से एक नया रासायनिक पदार्थ तैयार किया है, जिसका नाम है 'मूर्खीसिव'"। और आप जरा गौर करे! उसे मेरी बात का यकीन हो गया, उसके चेहरे पर श्रद्धा का भाव छा गया। 'देखो! विज्ञान क्या क्या कर सकता है।' यह भाव उसके चेहरे पर अकित था। एक दिन मैं एक नाटक देखने गया था। जहा मैं बैठा था उसके ठीक सामने अगली कतार में दो व्यक्ति बैठे थे। एक कानून का विद्यार्थी मालूम पडता था—इसी बिरादरी का और बडे बालोवाला, झबरा-सा ढीला-ढाला व्यक्ति, मेडिकल छात्र मालूम होता था। यह मेडिकल छात्र बुरी तरह पिये हुए था। नाटक की ओर उसका ध्यान नही था। वहा बैठा ऊघ रहा था और सिर हिला रहा था पर जब कभी कोई अभिनेता ऊची आवाज में कोई स्वगत सवाद बोलता, या सिर्फ अपनी आवाज ऊची भर कर देता तो डाक्टरी का छात्र चौककर बगलवाले के कोहनी मारकर पूछता—'क्या कहा उसने? क्या उच्चाशयपूर्ण था वह? 'कानून का छात्र जवाब देता—'बहुत ही उच्चाशयपूर्ण!' तब डाक्टरी छात्र चिल्ला पडता 'शाबाश! उच्चाशयपूर्ण। शाबाश!' यह शराबी मूर्ख नाटकघर जाता है कला के लिए नही, बल्कि, आप गौर करे, उच्चाशयता देखने।"

कात्या सुनकर हसती है। उसकी हसी में कुछ अजीब बात होती है, उसकी हसी तेज़ी के साथ बडी लय मे सास लेना निकालना होती है, मानो वह कसर्टिना वाजा बजा रही हो, खुशी का उसके चेहरे पर भाव होता है तो सिर्फ नथुनो में। मेरा जी उचाट हो जाता है, तवीअत बैठने लगती है, मेरी समझ में नही आता कि क्या कहू। मै गुस्से में आ जाता हू, कुरसी से उछल पडता हू और चिल्लाता हू—

"खत्म करो! यहा तुम दोनो मेढको की तरह अपनी सास से हवा को ज़हरीली बना रहे हो। काफी हुई यह बकवास!"

और मैं उनकी चुगलखोरी खत्म होने का इन्तज़ार किये बिना ही घर चलने को तैयार हो जाता हू। घर जाने का वक्त भी हो चुका होता है। दस बज चुके होते है।

मिखाइल फेदोरोविच कहता है—"मैं कुछ देर और बैठूगा। बैठू न, येकातेरीना व्लादीमिरोव्ना?"

"हा, हा, ज़रूर," कात्या जवाब देती है।

"अच्छा," वह लैटिन भाषा में कहता है—"तो फिर मेहरबानी कर शराव की एक वोतल और निकलवाओ"।

हाथ में मोमबत्तिया लिये वे दोनो मुझे ड्योढी तक छोडने आते है और जब म ओवरकोट पहनता होता हू, मिखाइल फेदोरोविच कहता है—

"तुम इधर हाल में बहुत दुबले और बूढे लगने लगे हो, निकोलाइ स्तेपानोविच! बात क्या है? क्या तुम बीमार हो?"

"हा, कुछ।"

और कात्या गमज़दा आवाज़ में कहती है—"और किसी डाक्टर को दिखायेंगे नही।"

"तुम किसी डाक्टर की राय क्यो नही लेते? इस तरह तो काम

नही चलेगा न! मेरे दोस्त! ईश्वर भी उन्हीं की मदद करता है जो खुद अपनी मदद अपने आप करते हैं। अपने परिवार से मेरा नमस्कार कहना और क्षमा माग लेना कि मैं आ नही सका। विदेश जाने के पहले दो एक दिन में ही मैं खुद आकर अलविदा कहूगा। मैं ज़रूर आऊगा। मै अगले हफ्ते ही तो जा रहा हू।"

कात्या के यहा से मै खीजा हुआ लौटता हू, अपनी बीमारी की चर्चा से घबराया हुआ और अपने से नाराज़। मैं सोचता हू कि आखिर मै अपने किसी सहयोगी को दिखा क्यो न डालू अपने को? तब फौरन मेरे दिमाग़ में तसवीर आ जाती है कि मेरी जाच करने के बाद मेरा सहयोगी चुपचाप खिडकी के पास चला जायेगा, कुछ देर सोचता रहेगा, फिर मेरी ओर मुडकर अपने चेहरे से सच्चाई का पता न चलने देने की कोशिश करता हुआ बहुत साधारण आवाज़ में कहेगा—"जहा तक मै देख पाया हू, कोई खास बात नही है, पर मेरे सहयोगी! तब भी मैं तुम्हे काम बन्द करने की ही सलाह दूगा " और इससे मेरी आखिरी आशा भी खत्म हो जायेगी।

हम में से कौन एक न एक आशा नही लगाता? अब जब मैं अपना इलाज अपने आप करता हू, तो मैं कभी कभी आशा करने लगता हू कि मेरा अज्ञान ही मुझे धोखा दे रहा है, मेरे पेशाब में जो शक्कर और एलबुमिन आ रहे हैं, उनके बारे में मै गलती कर रहा हू, मेरे दिल की जो हालत है, उसके बारे में मुझे गलतफहमी है, दो बार सवेरे मुझे सूजन जो प्रकट हो चुकी है वे भी ग़लत समझ के कारण। शोकाकुल व्यक्तियो की सी लगन से जब मै रोग-निदान की पुस्तके पलटकर अपने लिए नित्य नये नुस्खे तय करता हू, तो मैं बराबर सोचा करता हू कोई सचमुच फायदेमन्द दवा निकल आयेगी। यह सब कितना ओछा है।

आसमान में चाहे बादल छाये हो, चाहे चाद तारे चमक रहे हो, मै उधर देखता हुआ सोचता हू कि कितनी जल्दी मौत आकर मुझे समेट लेगी। सोचा जा सकता है कि ऐसे समय मेरे विचार साफ, महान आसमान जैसे स्वच्छ व गहरे होगे पर ऐसा कुछ भी नही होता। मै अपने, अपनी बीवी, लीज़ा, ग्नेकेर, अपने छात्रो, सक्षेप में लोगो के बारे में सोचता हू। मेरे विचार ओछे और क्षुद्र होते है, मैं स्वय अपने को धोखा देने की कोशिश करता हू और इस बीच लगातार जीवन के प्रति मेरा जो दृष्टिकोण है वह प्रख्यात अरकचेयेव के उन शब्दो से व्यक्त होता है जो उसने एक निजी पत्र में लिखे थे—"दुनिया की हर अच्छाई में कोई न कोई बुराई होती होगी और यह बुराई अच्छाई पर छायी रहती है।" दूसरे शब्दो में, हर चीज़ घृण्य है, जिन्दा रहने के लिए कुछ भी नही और अभी तक व्यतीत बासठ वर्ष बिल्कुल वरबाद हो गये है। जब मुझे अपने ऐसे विचारो का आभास होता है तब मै यह सोचने की कोशिश करता हू कि ये विचार तो सयोग से आ गये हैं और अभी अभी बदल जायेंगे, मेरे दृष्टिकोण में इनका कोई स्थायी स्थान नही है, लेकिन अगले ही क्षण मैं सोचता हू—

"यदि बात ऐसी है, तो तुम उन दोनो मेढको के पास हर शाम क्यो जाते हो?"

और मै कसम खाता हू कि फिर कभी कात्या से मिलने नही जाऊगा, हालाकि मुझे इस बात का बोध बराबर रहता है कि कल ही मै फिर जाऊगा कात्या के पास।

दरवाज़े की घण्टी बजाते समय और बाद में जब मैं ऊपर जाता हू, तब मुझे लगता है कि अब मेरा कोई परिवार नही है और न परिवार होने की मेरी कोई इच्छा ही है। स्पष्ट है कि कुख्यात जनरल अरकचेयेव के शब्दो से आये नये विचार मेरे व्यक्तित्व

मे सयोगजनक या अस्थायी स्थान नही रखते वल्कि मेरे पूरे अस्तित्व पर नियन्त्रण करते है। अतरात्मा से परेशान, दुखी, थकान से चूर, हाथ पैर हिलाये विना मानो मेरे ऊपर मनो का वोझ हो, मै विस्तर में घुसता हू और फौरन सो जाता हू।

और फिर अनिद्रा

(४)

गर्मिया आने के साथ जीवन वदल जाता है।

एक सुहावने सवेरे लीज़ा मेरे कमरे में आकर मजाक करती हुई कहती है–"पधारे, हुज़ूर! सव सामान तैयार है।"

"हुज़ूर" वाहर सडक पर निकाले जाते हैं और गाडी पर घुमाये जाते हैं। गाडी में आगे वढते निठल्लेपन में साइन वोर्डों को दाहिन से वायें उलटे पढता हू 'सराय' को 'यारस'। यह नाम किसी महारानी के लिए वहुत उपयुक्त होगा। शाहज़ादी यारस। शहर छोड खुले देहात में पहुचते ही एक कव्रिस्तान दिखाई पडता है और इसका मुझपर ज़रा भी असर नही पडता, हालाकि वहुत शीघ्र मै खुद यहा आकर सोऊगा। हमारा रास्ता एक जगल में होकर गुज़रता है और फिर खुला देहात आ जाता है। मुझे किसी चीज़ में दिलचस्पी नही होती। दो घण्टे की सैर के वाद 'हुज़ूर' एक देहाती वगले में ले जाये जाते हैं और वहा निचले तल्ले के एक छोटे से लकदक कमरे मे वैठाये जाते है जिसकी दीवालो पर नीला कागज लगा है।

रात वदस्तूर अनिद्रा में कटती है, पर सवेरे उठकर वीवी की वातचीत सुनने की जगह मैं विस्तर पर ही लेटा रहता हू। मै सो नही रहा हू, लेकिन अर्ध सुपुप्तावस्था में हू जव मै जानता हू कि मै सो

नही रहा हू फिर भी सपने देखता जाता हू। दोपहर को मै उठता हू और आदतन अपनी मेज़ पर जा बैठता हू, हालाकि काम नही करता और कात्या द्वारा भेजे गये सस्ते फ्रासीसी उपन्यासो से जी वहलाता हू। रूसी लेखको को पढना ज्यादा बडी देशभक्ति होगी, पर मैं स्वीकार करता हू कि मुझे वे विशेष पसन्द नही है। दो-चार जाने-माने बडे लेखको को छोडकर बाकी सभी आधुनिक साहित्य मुझे साहित्य नही एक घरेलू धन्धा मालूम पडता है जो सिर्फ जनता की सहिष्णुता पर टिका हुआ है और जिसकी कोई माग नही है। घरेलू धन्धो की अच्छी से अच्छी चीज़ भी कभी बहुत बढिया नही कही जा सकती और कभी भी ईमानदारी के साथ उसकी प्रशसा 'किन्तु' लगाये विना नही की जा सकती। यही बात उस सब साहित्यिक अनोखेपन पर लागू होती है जो मैं पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में पढ चुका हू। उनमें कुछ भी उल्लेखनीय नही है, ऐसा नही है जिसमें किन्तु जोडने की ज़रूरत न पडे। चतुरतापूर्ण, उदात्त किन्तु प्रतिभाहीन, प्रतिभापूर्ण, उदात्त किन्तु चातुर्यहीन, चतुर व प्रतिभासम्पन्न किन्तु उदात्त नही।

यह बात नही कि मै फ्रासीसी किताबो को उदात्त, चतुरतापूर्ण और प्रतिभापूर्ण मानता हू। उनसे भी मुझे सतुष्टि नही होती। किन्तु वे कम से कम उतनी नीरस नही होती जितनी कि रूसी किताबें और उनमें व्यक्तिगत स्वतत्रता का वह विशिष्ट गुण मिलना असाधारण बात नही जो किसी रूसी लेखक में उपलब्ध नही। इधर लिखी गयी किताबो में मुझे किसी ऐसी किताब की याद नही पडती जिसमें लेखक ने शुरू से ही पहले पन्ने से ही अपने को परम्परा और अपनी अन्तरात्मा को समझौते की आड में छिपाने की कोशिश जानबूझकर न की हो। कोई लेखक नगे शरीर का वर्णन करने में झिझकता है, कोई मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में बुरी तरह फसा हुआ

है, कोई "मानव के प्रति सहिष्णु दृष्टिकोण" रखने को आतुर है, तो कोई जानबूझकर प्राकृतिक दृश्यो के वर्णनो मे पन्ने के पन्ने रगे डालता है ताकि उसमें विशेष रुझान होने का सन्देह किसी को न हो कोई लेखक अपने को अपनी कला में हर हालत मे मध्यम वर्गीय साबित करने पर तुला हुआ है, कोई उच्च कुल का बनने का ढोग करता है और इसी तरह और लेखक भी इन लेखको में हमें नक्शबाज़ी, सावधानी मिलती है, अतिसतर्कता मिलती है, ढग मिलता है पर आज़ादी नही मिलती, जैसी तबीअत हो वैसा लिखने का साहस नही दिखाई पडता और इसीलिए मौलिकता नही मिलती।

यह बात उस साहित्य पर लागू होती है जो ललित साहित्य के नाम से प्रसिद्ध है।

जहा समाजशास्त्र या कला आदि विषयो पर रूसी लेखको के गम्भीर निबन्धो का नम्बर आता है, मै उन्हे डर के मारे बचा जाता हू। बचपन व जवानी में मुझे दरबानो व थियेटरो के ड्योढीदारो से डर लगता था और यह डर मुझमें आज तक कायम है। मै अब भी उनसे डरता हू। लोग कहते है कि डर अनजान चीज़ो से ही लगता है। और सचमुच यह समझना मुश्किल ही है कि दरबान व ड्योढीदार इतने टीमटामवाले, घमण्डी और अशिष्ट क्यो होते हैं। वही बेबूझ डर मुझे इन गम्भीर लेखो के पढने में लगता है। उनकी असाधारण तडक-भडक, उनकी विराट कृत्रिमता, विदेशी लेखको के सम्बन्ध में बडे परिचित ढग से बात करना, बिना कोई खास बात कहे लम्बी-चौडी हाकने की उल्लेखनीय प्रतिभा, ये सब बाते मेरी समझ में नहीं आती और मुझे आतकित कर देती हैं। ये बाते उस विनयपूर्ण शिष्ट ढग के बिल्कुल विपरीत है जिसका मै आदी हू और जिसे डाक्टरी या प्रकृति-विज्ञान के विषय पर लिखनेवाले हमारे लोगो ने अपनाये है। गम्भीर

रूसी लेखको द्वारा अनूदित या सम्पादित ग्रथो को पढ़ने में भी मुझे उतनी कठिनाई होती है, जितनी स्वय उनके लेख पढने में। उनकी भूमिकाओ की बड़प्पन की शैली, अनुवादको की ढेरो टिप्पणिया जिनके कारण मैं मूल पुस्तक पर एकाग्रतापूर्वक ध्यान केन्द्रित नही कर पाता, प्रश्न-सूचक चिह्न व कोष्ठको में दिये गये सकेत व हवाले, जिनकी उदार अनुवादक लेख या पुस्तक में बौछार कर देता है, ये सब मुझे लेखक के व्यक्तित्व और पाठक की स्वतत्रता पर हमले मालूम पडते है।

जिला अदालत में मुझे एक बार एक मामले में विशेषज्ञ की हैसियत से राय देने जाना पड़ा। मध्यान्तर में मेरे एक सहयोगी विशेषज्ञ ने मेरा ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि सरकारी वकील किस धृष्टता से अभियुक्तो को सबोधित कर रहा था, जिनमें दो शिक्षित महिलाए भी थी। मैंने अतिशयोक्ति से काम नही लिया, जब मैंने जवाव में अपने सहयोगी से कहा कि यह धृष्टता उस बरताव से ज्यादा बुरी नही है जो गम्भीर विषयो के लेखक एक दूसरे के प्रति करते है। वास्तव में, यह धृष्ट व्यवहार इतना स्पष्ट है कि इसके सम्बन्ध में चुपचाप नही रहा जा सकता। या तो वे एक दूसरे के प्रति व दूसरे आलोच्य लेखको के प्रति ऐसे अत्युक्तिपूर्ण आदर से काम लेते है, जो बिल्कुल दासता-सी लगती है, या इसके विपरीत, अपनी सम्मतिया उस भाषा में प्रकट करते है जो मेरे भावी दामाद ग्नेकेर के प्रति मेरी इस डायरी में और इन विचारो से प्रयुक्त भाषा से कही ज्यादा कठोर होती है। पागलपन, नियत से सन्देहास्पद होने, यहा तक कि हर तरह के अपराधो के आरोप इन गम्भीर लेखो के साधारण अलकार हैं। और इन सबका प्रयोग होता है, जैसा कि तरुण डाक्टर अपने लेखो में लैटिन भापा में कहा करते है "अतिम तर्क" के रूप में। ऐसा रवैया तरुण पीढी के लेखको की नैतिकता को प्रभावित किये बिना नही रह सकता और

यही कारण है कि हमारे ललित साहित्य को पिछले दस–पन्द्रह वर्षों में विभूषित करनेवाली नयी पुस्तको में ऐसे नायको को, जो बहुत ज्यादा वोद्का (शराब) पिया करते है और ऐसी नायिकाओ को, जो सच्चरित्र नही होती पाकर मुझे तनिक भी आश्चर्य नही होता। मै अपने फ्रासीसी उपन्यास पढ रहा हू और खुली खिडकी के बाहर देखता जाता हू। घर के सामने के बगीचे की चहारदीवारी के खूटो के ऊपरी सिरे, दो-तीन सूखे सूख-से पेड और चहारदीवारी के बाहर चीड के वृक्षो की एक चौडी पट्टी में खत्म होनेवाला मैदान मुझे दिखाई पडता है। मुझे अक्सर भरे बालोवाले, फटे कपडे पहने एक लडका और एक लडकी दिखाई पडते है जो चहारदीवारी पर चढते है और मेरे गजे सिर पर हसते है। उनकी चमकीली आखो से यह विचार झलकता दिखाई पडता है कि इस गजे को तो ज़रा देखो। सिर्फ ये ही लोग हैं जो मेरे पद और प्रतिष्ठा की तनिक भी परवाह नही करते।

अब मेरे पास मिलनेवाले प्रतिदिन नही आते। मैं सिर्फ निकोलाइ व प्योत्र इग्नात्येविच के बारे में कहूगा। निकोलाइ अक्सर छुट्टी के दिनो में मुझसे मिलने आता है। ऊपर से किसी काम का बहाना करके, पर वास्तव में मुझसे मिलने। वह बहुत नशे मे होता है, पर यह बात जाडो में नही होती।

बाहर ओसारे में उससे मिलने के लिए जाते हुए मैं पूछता हू–"कहो, क्या हाल-चाल है?"

अपना हाथ सीने पर रखता हुआ और प्रेमियो की भाति विह्वल आह्लाद से मुझे घूरता हुआ वह कहता है–"हुजूर! ईश्वर साक्षी है!। खुदा मुझे गारत कर दे अगर " फिर वह लैटिन में कहता है–"खुश रहे हम सब जब तक जवानी है"।

श्रौर वह श्रातुरता से मेरे कन्धे, कोट की बाहे श्रौर वटन चूमता है।

मै पूछता हू—"वहा सब ठीक है न?"

"हुजूर! खुदा गवाह है "

वह लगातार ईश्वर का नाम लेता है। शीघ्र ही मै उससे ऊव जाता हू श्रौर उसे खाने के लिए रसोईघर भेज देता हू। प्योत्र इग्नात्येविच भी छुट्टियो के दिन ही मुझसे मिलने श्रौर श्रपने विचार वताने श्राता है। वह श्राम तौर पर मेरी मेज़ के पास श्रा वैठता है। साफ-सुथरा, विनयशील, विवेकपूर्ण, टाग पर टाग रखने या मेज़ पर झुकने की हिम्मत न करता हुश्रा। वह लगातार श्रपनी शालीन श्रावाज़ श्रौर प्रवाहमय किताबी भाषा में मुझे वे खबरे व बाते बताया करता है जिन्हे वह वहुत दिलचस्प श्रौर चटपटी समझता है श्रौर जिन्हे वह किताबो व पत्रिकाश्रो से सग्रह किया करता है। ये खबरे सवकी सव बिल्कुल एक जैसी श्रौर एक ढग की होती है। किसी फ्रासीसी ने कोई खोज की, किसी जर्मन ने उसकी कलई खोलते हुए लिखा कि यह खोज तो सन् १८७० में फला श्रमरीकी ने कर डाली थी, श्रौर किसी तीसरे व्यक्ति ने, वह भी जर्मन होता है, इन दोनो को गलत सावित करते हुए बताया कि श्रणुवीक्षण-यत्र के नीचे हवा के बुलबुले को देखकर वे उसे गहरा रग समझ वैठे श्रौर धोखा खा गये। यद्यपि उसका इरादा मेरा मनोरजन करना होता है, प्योत्र इग्नात्येविच इस ढग से बात करता है मानो निबन्ध को प्रतिपादित कर रहा हो। पूरा विवरण देते हुए, वह विशद रूप से बात कहता है, श्रपनी सूचना के सूत्र रूप में पुस्तको की नामावली पेश करता है, तारीखो पत्रिकाश्रो के नाम व श्रको में गलती न करने की भरसक चेष्टा करते हुए, प्ती का हमेशा पूरा नाम जा जक प्ती वोलता है। कभी कभी वह खाने के लिए रुक जाता है श्रौर

खाने के दौरान में भी ये चटपटी खबरे सुनाया करता है, जिनकी वजह से हम सब लोग बौखला उठते हैं। यदि ग्नेकेर और लीजा ग्राम्स, वाद्य व सगीत के विषयो पर बात छेडते है तो वह शर्मभरी हडबडाहट में आखें नीची कर लेता है। उसे इस बात पर शर्म आती है कि मेरे व उसके जैसे गम्भीर व्यक्तियो के सामने ऐसी हलकी बातो का जिक्र होता है।

आजकल की मेरी मन स्थिति में पाच मिनट का उसका साथ मुझे इतना उबा डालता है मानो एक युग से लगातार उसे देख सुन रहा हू। मुझे इस गरीब से नफरत है। उसकी किताबी भाषा और नम्र एक-सी आवाज़ मेरी तबीअत गिरा देती है, उसके किस्सो से मुझपर तन्द्रा छा जाती है। उसकी मेरे प्रति जो भावना है उसमें दया प्रधान है, जो कुछ भी वह कहता है, मेरे मनोरजन के लिए और मैं इसके बदले में बराबर मन ही मन 'जाओ, जाओ, जाओ' कहता हुआ उसे घूरा करता हू मानो मैं उस पर जादू करना चाहता हू। पर इस जादू का उसपर कोई असर नही होता और वह ठहरा रहता है, ठहरा रहता है, ठहरा रहता है

जब तक वह मेरे पास रहता है, मैं इस विचार से छुटकारा नहीं पा सकता कि "बहुत सभव है कि मेरी मौत के बाद वह मेरी जगह नियुक्त हो जाय," और मेरा बदकिस्मत दरजा मुझे उस नखलिस्तान सा लगता है जिसका सोता सूख गया हो, और मैं प्योत्र इग्नात्येविच से रुखाई, मौन व दुख का व्यवहार करता हू, मानो इन विचारो का दोषी मैं नही, वह है। जब वह जर्मन वैज्ञानिको की प्रशसा बदस्तूर शुरू करता है, मैं परिहासपूर्ण उत्तर नही देता, बल्कि रूठे हुए स्वर में भुनभुनाता हू "तुम्हारे जर्मन गधो की जमात है "

मैं जानता हू कि मेरा व्यवहार स्वर्गीय प्रोफेसर निकीता क्रिलोव के समान ही है जो एक बार पिरोगोव के साथ रेवेल में नहाने गये तो पानी के ठढे होने पर क्रोध में बोले "ये बदमाश जर्मन"। प्योत्र इग्नात्येविच के साथ मेरा व्यवहार बुरा है, लेकिन जब वह जाता है और मैं खिडकी से उसका भूरा टोप चहारदीवारी के बाहर ऊपर नीचे उठता गिरता देखता हू तो मेरी इच्छा होती है कि उसे वापस बुला लू और कहू—"भले मानस! मुझे माफ कर दे!"

खाने का वक्त जाडो से भी ज्यादा मुश्किल से कटता है। वही ग्नेकेर जिससे मैं अब नफरत करता हू, उपेक्षा करता हू, लगभग रोज़ हम लोगो के साथ खाना खाता है। पहले मैं उसकी मौजूदगी खामोशी से बरदाश्त कर लेता था, पर अब उसपर कटूक्तिया छोडता हू जिससे मेरी बीवी और लीज़ा को शर्म आती है। गुस्से में मैं बिना जाने बूझे अक्सर मूर्खतापूर्ण बाते कह जाता हू। ऐसे ही एक बार मैंने नफरत भरी निगाह ग्नेकेर पर डालकर बिना किसी उकसाहट के जोर ज़ोर से पढना शुरू किया—

"चाहे उकाब चूज़े से न ऊचा उडे।
पर नामुमकिन है कि चूज़ा आस्मा को छुए।"

और सबसे ज्यादा खिजा डालनेवाली बात यह है कि चूज़ा ग्नेकेर उकाव-प्रोफेसर से कही ज्यादा होशियार सावित हुआ। यह समझते हुए कि मेरी बीवी और बेटी उसके साथ हैं वह ये तिकडमें करता है—मेरे तानो का जवाब वह सहिष्णु मौन से देता है (बूढा सठिया गया है, उससे उलझने से फायदा?) या हसमुख ढग से मुझसे मजाक किया करता है। यह देखकर ताज्जुब होता है कि आदमी कितना ओछा हो सकता है! खाते वक्त मैं लगातार कल्पना-जगत में देखा करता हू कि ग्नेकेर चार सौ बीस सावित हुआ है, मेरी बीवी और लीज़ा ने अपनी

गलती मान ली है और मैं उनपर ताने कस रहा हू, ये और इस तरह के सपने देखता रहता हू और यह तव जव मेरा एक पैर कब्र में लटका हुआ है।

अव मुझसे ऐसी भी हरकतें हो जाती हैं जिनके वारे में पहले मैं सिर्फ सुना करता था। इनका जिक्र करते मुझे शर्म आती है, पर मैं सिर्फ एक का बयान करूगा जो खाने के वाद अभी हाल में हुई।

खाने के वाद मैं अपने कमरे में वैठा पाइप पी रहा था। अपनी आदत के मुताविक मेरी वीवी आकर वठ गयी और कहने लगी कि कितना अच्छा हो अगर मैं अभी जव मौसम अच्छा है और छुट्टिया हैं खारकोव जाकर पता लगा लू कि अपना ग्नेकेर किस किस्म का आदमी है।

मैंने उससे सहमत होते हुए कहा—"अच्छा, मैं चला जाऊगा।"

खुश होकर मेरी वीवी उठी और दरवाजे की तरफ चल दी, पर वहा से पलटकर कहने लगी—

"अरे, हा, एक वात और है। मैं जानती हू कि तुम नाराज होगे, पर तुम्हे सावधान कर देना मेरा फर्ज है मुझे माफ करना निकोलाइ स्तेपानिच! हमारे सव दोस्त और पडोसी तक अव इस वात पर ध्यान देने लगे हैं कि तुम कितने अक्सर कात्या से मिलने उसके यहा जाते हो। वह चतुर और सुशिक्षिता और मनोरजक साथिन है, पर यह तो तुम्हें मानना पडेगा कि तुम्हारी उम्र और सामाजिक प्रतिष्ठावाले व्यक्ति के लिए उसके साथ में खुशी पाना वडा भद्दा लगता है फिर, उसकी वदनामी भी है "

यकायक मेरा खून खौल उठता है, आखो से चिनगारिया छूटने लगती है, मैं उछलकर खडा हो जाता हू और चीखकर कहता हू—"मुझे छोड दो! छोड दो! छोड दो!" यह मैं जमीन पर पैर पटकता हुआ और अपनी कनपटिया थामे हुए चिल्लाता हू।

मेरा चेहरा बडा भयानक लगता होगा और मेरी आवाज़ बडी अजब लगती होगी क्योकि मेरी बीवी पीली पड जाती है और ज़ोर ज़ोर से चीख़ती चिल्लाती है। हमारी चीखें सुनकर लीज़ा और ग्नेकेर दौडते हुए आते हैं और साथ में येगोर भी   मैं दोहराता जाता हू–
"मुझे रहने दो! यहा से निकल जाओ! मुझे छोड दो!"

मेरे पैर बिल्कुल सुन्न पड जाते है, मानो वे हैं ही नही, मुझे किसी की बाहो में गिरने और किसी के सिसकने का आभास होता है और बेहोश हो जाता हू। यह बेहोशी दो-तीन घण्टे तक रहती है।

कात्या की बात फिर जारी रखू। वह सूर्यास्त के समय रोज़ मुझसे मिलने आती है और स्पष्ट है कि यह बात दोस्तो और पडोसियो की निगाह में पडने से नही चूक सकती। वह कुछ मिनटो के लिए आती है और मुझे सैर के लिए ले जाती है। उसका अपना घोडा है और उसने इसी बार की गरमियो में नयी बग्घी खरीदी है। कुल मिलाकर वह बडी शान से रहती है। उसने एक बडा-सा खर्चीला देहाती बगला किराये पर लिया है जिसमें एक बडा बगीचा भी है, उसने अपना सारा फर्नीचर यहा लाकर सजा दिया है, वह दो नौकरानिया और एक कोचवान रखे हुए है   मै उससे अक्सर पूछता हू–

"तुम्हारे पिता ने जो रकम छोडी है उसे खर्च कर डालने के बाद तुम्हारा गुज़ारा कैसे होगा, कात्या?"

वह जवाब देती है–"देखा जायेगा।"

"सुनो, प्यारी! तुम्हे इस धन का और अधिक सम्मान करना चाहिए। इस भले आदमी ने इसके सचय के लिए कडी मेहनत की थी।"

"मै जानती हू। तुम पहले भी मुझे यह बता चुके हो।"

पहले हम खुले देहात में सैर करते हैं, फिर चीड के उस जगल में होकर गुज़रते हैं जो मुझे खिडकी से दिखाई देता है। प्रकृति मुझे

अब भी सुन्दर लगती है, यद्यपि कोई शैतान मेरे कान में फुसफुसाता रहता है कि ये सब चीड और सनोवर, ये चिडिया और आसमान में सफेद बादल तीन-चार महीने में मेरे मरने के बाद मेरी कमी महसूस नही करेगे। कात्या खुद गाडी चलाना पसन्द करती है और रास हाथ में ले लेती है, अच्छा मौसम और अपनी बगल में मेरी मौजूदगी उसे खुश कर देती है। उसकी तबीअत खुश रहती है और वह तानेज़नी नही करती।

वह कहती है—"निकोलाइ स्तेपानिच! तुम बड़े अच्छे हो। तुम इतनी बढिया किस्म के इसान हो कि कोई भी अभिनेता तुम्हारी नकल नही कर सकता। मेरी या मिखाइल फेदोरोविच की नकल कोई मामूली अभिनेता कर सकता है, पर तुम्हारी कोई नही कर सकता। मुझे तुमसे ईर्ष्या है, मुझे तुमसे बहुत जलन होती है। आखिरकार, मै अपने को समझती क्या हू? मै हू क्या?"

एक मिनट सोचकर वह मुझसे पूछती है—"मै अच्छे ढग की नही हू, है न, निकोलाइ स्तेपानिच? मै भली नही हू, है न?"

"हा, तुम ऐसी ही हो।"

"हू तो मै क्या करू?"

मैं उसे क्या जवाब दू? यह कह देना बडा आसान है कि "काम करो" या "जो कुछ तुम्हारे पास है ग़रीबो को दे डालो" या "अपने आपको पहिचानो!" और चूकि यह कह देना आसान है, मैं उसके जवाब में कह सकने लायक कुछ भी नही सोच पाता।

रोग-निदान विज्ञान के मेरे सहयोगी अपने छात्रो से कहते हैं कि इलाज करते वक्त "हर मरीज़ को बिल्कुल अलग एक व्यक्ति मानो"। जैसे ही कोई व्यक्ति इस सलाह पर आचरण शुरू करता है उसे मालूम हो जाता है कि पाठ्य पुस्तको में दिये गये स्टेण्डर्ड इलाजो में

बताई गयी दवाए कितनी बेकार साबित होती है जब किसी का इलाज शुरू होता है। यही हालत तब भी होती है जब शरीर नही मन रुग्ण होता है।

पर मुझे उसे कुछ न कुछ जवाब तो देना ही है और मै कहता हू –

"प्यारी, तुम्हारा बहुत सारा वक्त खाली रहता है। तुम्हे करने के लिए कुछ न कुछ काम तलाश करना चाहिए। अगर तुम काम में रुचि रखती हो तो तुम फिर से अभिनेत्री क्यो नही बन जाती ?"

"मै बन नही सकती।"

"तुम यह शहीदो-सा ढग क्यो अख्तियार करती हो ? मुझे यह पसन्द नही है, प्यारी। गलती तो सारी तुम्हारी ही है। तुम्हे याद है, तुमने लोगो में और समाज में दोष ढूढना शुरू किया था पर उन्हे सुधारने के लिए कुछ नही किया। तुमने बुराई को रोका नही, उसका प्रतिरोध नही किया, सिर्फ अपने को थका डाला, तुम किसी सघर्ष की शिकार नही हुई बल्कि स्वय अपनी कमज़ोर इच्छाशक्ति की शिकार बन गयी। तुम तब कम उम्र की और अनुभवहीना थी, अब हर बात भिन्न हो सकती है। चलो, फिर कोशिश करो। तुम काम करोगी, पवित्र कला की सेवा करोगी "

"देखो, ढोगी मत बनो, निकोलाइ स्तेपानिच" कात्या मुझे टोकती है – "हम एक बार हमेशा के लिए तय कर डाले कि अभिनेताओ, अभिनेत्रियो, लेखको, सबकी बात करेगे पर कला को अछूता छोड देंगे। तुम बढिया भले आदमी हो, पर कला के सम्बन्ध में तुम इतना काफी नही समझते कि मन से कला को पवित्र समझो। तुममें कला की प्रतिभा नही है, तुम कला को न अनुभव कर सकते हो, न समझ ही सकते हो। ज़िन्दगी भर तुम व्यस्त रहे हो और यह प्रतिभा पैदा करने का तुम्हे समय ही नही मिला। और कुल मिलाकर कला

के बारे में इन सब बातो से मुझे चिढ है" क्षुब्ध मुद्रा में वह कहे जाती है–"मुझे उनसे घृणा है। लोगो ने अभी ही उसे बहुत काफी ओछा बना रखा है। आप मेहरबानी कीजिए।"

"किसने ओछा बनाया है उसे?"

"कुछ ने लगातार शराबखोरी से, अखबारो ने अपनी बकवास से, बुद्धिमान लोगो ने फलसफा बघारकर।"

"फलसफे से, दर्शन से इस बात का क्या सम्बन्ध? कोई सम्बन्ध है ही नही।"

"हा, है, सम्बन्ध है। जब लोग फलसफा बघारते है तो उससे साबित होता है कि वे समझते कुछ भी नही।"

बातचीत गिरकर सिर्फ तानेजनी न रह जाय, इसलिए मै जल्दी से विषय बदल देता हू और फिर काफी देर तक कुछ नही कहता। जगल से गुजरकर कात्या के बगले के पास पहुचने पर मैं फिर पुराना विषय उठाते हुए कहता हू–

"पर तुमने बताया नही कि तुम फिर से अभिनेत्री क्यो नही बनना चाहती?"

"निकोलाइ स्तेपानिच! यह बडी बेरहमी मे भरा सवाल है!" वह चिल्लाकर कहती है, फिर झेंप जाती है–"क्या तुम चाहते हो कि सत्य को शब्दो का आवरण पहनाऊ? अच्छी बात है, अगर तुम यही यही चाहते हो, तो यही सही! मुझमे प्रतिभा नही है! प्रतिभा नही है और और घमण्ड बहुत ज्यादा है। बस!"

इस स्वीकारोक्ति के बाद वह मुझसे मुह फेर लेती है और अपने कापते हाथो को छिपाने के लिए ज़ोर ज़ोर से सास खीचने लगती है।

कात्या के बगले के पास गाडी पहुचने पर हमें दूर से ही मिखाइल

फेदोरोविच फाटक के सामने टहलता और बेचैनी से हमारा इन्तिज़ार करता दिखाई देता है।

"फिर वही मिखाइल फेदोरोचिव! कात्या" खीज में भरी कह उठती है– "उसे यहा से ले जाओ। उसका साथ उबा डालता है, वह सूखा ठूठ है और कुछ नही उसे ले जाओ।"

मिखाइल फेदोरोविच को बहुत पहले ही विदेश चला जाना था पर वह यह सफर हफ्ते-ब-हफ्ते टालता जाता है। इधर उसमें परिवर्तन आ गया है। उसका चेहरा खिचा खिचा-सा रहता है, उसको अब शराब से नशा होने लगा है जो पहले कभी नही होता था और उसकी काली भवो में सफेद बाल दिखाई पडने लगे है। गाडी के फाटक के सामने रुकने पर वह अपनी खुशी और बेसब्री छिपा नही पाता। कात्या **और** मुझे गाडी से उतारने में वह बडा रौला मचाता है, सवालो की झडी लगा देता है, हाथ मलते हुए हसता है और विनय, निरीहता व अनुनयपूर्ण वह भाव जो पहले मुझे सिर्फ उसकी आखो में दिखाई पडता था, अब उसके सारे चेहरे पर फैल चुका है। वह खुश होता है और साथ ही अपनी इस खुशी पर उसे लज्जा भी होती है। हर शाम कात्या के यहा आने की आदत पर उसे शर्म आती है और अपने आने के लिए कोई बेवकूफी का बहाना बनाना वह जरूरी समझता है, जैसे कि– "मै काम से इधर से गुज़र रहा था और सोचा कि कुछ मिनटो के लिए यहा भी रुक लू।"

हम तीनो एकसाथ घर में घुसते हैं। पहले हम चाय पीते हैं, फिर वे सब चीज़ें मेज़ पर आ जाती हैं, जिनका मै आदी हो चुका हू– ताशो की दो जोडिया, पनीर का बडा टुकडा, फल, क्रिमिया की शैम्पेन की बोतल, बातचीत के हमारे विषय भी नये नही होते, वे वही विषय है जिन पर पिछले जाडो में हम गौर कर चुके थे।

विश्वविद्यालय, छात्र, साहित्य, नाटक व्यग्योक्ति व जुमलेवाज़ी के शिकार होते है। द्वेषपूर्ण वातचीत से हवा गदली हो जाती है, घुटनभरी हो जाती है, अव जाडो की तरह दो नही वल्कि तीन मेढको की सासो से हवा जहरीली हो जाती है। हमारी सेवा में सलग्न नौकरानी अव गहरी मखमली हसी और वीन जैसी गहरी सास के झोको के साथ अव नाटको के विदूषक फौजी जनरलो की ही जैसी अलग अलग टुकडोवाली हसी भी सुनती है।

(५)

विजली वादलो की गडगडाहट और घोर वर्पा से भीषण वनी राते आती है—इन्हे रूसी देहाती लोग 'गौरैया की राते' कहते है। ऐसी ही एक रात अपना भीषण खेल मेरी जिन्दगी में खेल गयी।

आधी रात के फौरन वाद मेरी नीद खुल गयी और मै कूदकर विस्तर के वाहर आ गया। मेरे दिमाग में यह वात कौंध गयी कि मै अभी इसी वक्त, यही मर जाऊगा। मैंने यह क्यो सोचा? मौत के शीघ्र आगमन का कोई आभास मुझे शरीर मे नही लग रहा था, सिर्फ एक आतक की चेतना भर थी, मानो मैंने कोई वडी डरावनी ज्वाला देख ली हो।

जल्दी से लैम्प जलाकर मैंने सुराही से पानी पिया और खुली खिडकी की ओर तेज़ी से वढ गया। रात सुन्दर थी, नये कटे चारे की ओर से कोई मीठी सुगन्ध आ रही थी। मुझे चहारदीवारी के खूटे, खिडकी के पास सूखे सूखे-से पेडो की निदासी चोटिया, सडक व जगल की गहरी काली पट्टी दिखाई दे रही थी। आसमान साफ था और उसपर चाद शान्ति और तेज़ी से चमक रहा था। स्तव्धता छायी

हुई थी, पत्ती भी नही हिल रही थी। मुझे लगा कि हर चीज़ मुझे ताक रही है, मुझे सुन रही है, मुझे मरते देखने को तैयार खडी है

मुझे डर लगता है। मैं खिडकी बन्द कर बिस्तर की ओर भागा। मैंने अपनी नाडी टटोली और कलाई मे नाडी न मिलने पर, कनपटियो पर, फिर ठोडी के नीचे, फिर कलाई में ढूढने लगा और जहा भी मैंने अपने आपको छुआ मुझे स्पर्श ठढा और पसीने से चिपचिपा लगा। मेरी सास और जल्दी जल्दी चलने लगी, मेरा पूरा ढाचा कापने लगा। मेरे भीतर बडी उथल-पुथल-सी हो रही थी और मुझे लग रहा था कि मेरे चेहरे पर और गजी खोपडी पर मकडी के जाले चिपक गये है।

किया क्या जाय? अपने परिवार को बुलाऊ? नही, यह मैं नही कर सकता। मेरी बीवी और लीज़ा आकर ही क्या कर लेगी।

मैंने अपना चेहरा तकिये में छिपा लिया, अपनी आखें ढक ली और इन्तिज़ार करने लगा मेरी पीठ ठडी हो गयी थी और मुझे लग रहा था कि मेरी रीढ भीतर को धस रही है और जैसे मौत अनिवार्यत पीछे से ही दुबकती हुई आयगी

"की वी—की वी" यकायक इस आवाज़ ने रात का सन्नाटा भग कर दिया। मुझे यह पता न लगा कि यह आवाज़ कहा से आ रही थी, मेरे भीतर से या मकान के बाहर से।

"की वी—की वी।"

भगवान, कैसा भीषण था यह सब! मै फिर पानी पीना चाहता था, पर आखें खोलने या तकिये से सिर उठाने में मुझे डर लग रहा था। सज्ञाहीन, पशुवत् आतक मुझे झिझोडे डाल रहा था, मैं जान नही पा रहा था मुझे किस बात का डर लग रहा है। क्या मै जिन्दा रहना चाहता था, या कि कोई नयी, अनजान पीडा मुझे होनेवाली थी?

ऊपर के कमरे में कोई कराह रहा था, या शायद हस रहा था मैं कान लगाकर सुनने लगा। कुछ देर बाद जीने पर किसी की पद-चाप सुनाई दी। कोई जल्दी से नीचे आया, फिर ऊपर लौट गया। फिर उतरते हुए कदमो की आवाज़ आयी, कोई मेरे दरवाज़े के बाहर आकर रुक गया और सुनने लगा।

"कौन है?" मैं चिल्लाया।

दरवाज़ा खुल गया, मैंने हिम्मत करके आखे खोली और अपनी बीबी को देखा। उसका चेहरा पीला पडा हुआ था और रोते रोते आखें लाल हो गयी थी।

"तुम जाग रहे हो, निकोलाइ स्नेपानिच?" उसने पूछा।

"क्यो, क्या बात है?"

"भगवान के लिए, ज़रा चलकर लीज़ा को देख लो। उसकी हालत खराब है "

"अभी, एक मिनट में लो," मै गुनगुनाया। मै खुश था कि अब अकेला नहीं हू। "मै चलता हू, बस, एक मिनट ठहरो।"

मै अपनी पत्नी के पीछे पीछे उसकी बाते सुनता हुआ चलने लगा पर इतना विकल था कि उसके शब्द मेरी समझ में नही आ रहे थे। उसके हाथ की मोमबत्ती से सीढियो पर रोशनी धब्बो की तरह पडती जा रही थी, हमारी लम्बी लम्बी परछाइया काप रही थी, ड्रेसिंग गाउन की नीचे की सिलाई में फसकर मै लडखडा गया, और मुझे लगा कि कोई मेरा पीछा कर रहा है और मेरी पीठ पकड लेना चाहता है। मैंने सोचा—"मै अभी, यही सीढियो में मर जाऊगा—अभी इसी क्षण "

पर सीढिया खत्म हो गयी और हम ऐसे अधेरे गलियारे में होते हुए जो एक इतालवी ढग की खिडकी पर जाकर खत्म होता था, लीज़ा के कमरे में पहुचे। वह अपने बिस्तर के किनारे पर बैठी कराह रही

10—948

थी, उसके नगे पर नीचे लटक रहे थे, वह कमीज़ के अलावा और कुछ नही पहने थी।

मोमबत्ती की ओर आखें मिचमिचाती हुई, वह भुनभुनाती रही –

"हे भगवान, हे परमात्मा मै नही कर सकती नही कर सकती।"

"लीज़ा, मेरी प्यारी बेटी", मैने कहा, "क्या बात है? तुझे क्या तकलीफ है?"

उसने मुझे देखा तो रोती हुई मेरे पास दौड आयी और मेरे कन्धे से लग गयी।

वह सिसकती हुई बोली –"पापा, मेरे प्यारे पिता जी, मेरे अच्छे पापा मेरे प्यारे, मेरे दुलारे पापा मुझे मालूम नही कि मुझे क्या हो गया है मैं बहुत दुखी हू।"

उसने मुझे अपनी बाहो में कस लिया और मुझे प्यार करते हुए वे प्यार भरे शब्द कहने लगी जो मैं उससे सुना करता था जब वह बच्ची थी।

"धैर्य धरो, बेटी," मैने कहा, "भगवान भला करेगा। रोओ मत। मै भी बहुत दुखी हू।"

मैने उसे उढाने की कोशिश की, मेरी बीवी ने उसे कुछ पीने को दिया, और हम दोनो बेढगे तौर पर उसके बिस्तर के आसपास घूमने लगे। मेरे कन्धे मेरी पत्नी के कन्धो से लडे और मुझे वे दिन याद आ गये जब हम मिलकर अपने बच्चो को नहलाते थे।

"उसके लिए कुछ करो," मेरी पत्नी ने आजिजी से कहा– "कुछ करो न!"

मै क्या कर सकता था? मै कुछ भी नही कर सकता था। बेचारी लडकी के मन पर कोई बोझ था, कोई बात उसके मन मे थी, लेकिन

न कुछ मेरी समझ मे आ रहा था, न मैं कुछ जानता ही था, मैं सिर्फ बडबडाता रहा—"रोओ मत, रोओ मत . सब ठीक हो जायगा अब तुम सो जाओ।"

मानो हमें चिढाने के लिए ही, कही हमारे अहाते में एक कुत्ता रोने लगा। पहले हलके मे और अनिश्चित ढग से और फिर जोर जोर से, उसकी आवाज कभी गहरी भारी हो जाती और कभी पतली पिपियाती। उल्लू बोलने या कुत्ता रोने के शकुन अपशकुनो को मैंने कभी कोई महत्व नही दिया था लेकिन इस बार मेरा दिल कचोट उठा और कुत्ते के ोने का तर्क मैं अपने आपको समझाने लगा। मैने सोचा—"यह बेवकूफी की बात है, वह एक प्राणी का दूसरे प्राणी पर प्रभाव मात्र है। मेरे स्नायविक तनाव का प्रभाव मेरी पत्नी, लीज़ा और कुत्ते पर पडा होगा, बस अनिष्ट की पूर्व-सूचना, भविष्य ज्ञान व ऐसी ही बातो का सही विश्लेषण एक व्यक्ति की भावनाओ का दूसरे में तबादला ही है "

कुछ देर बाद जब मैं लीज़ा के लिए नुस्खा लिखने अपने कमरे में लौटा तब मै अपनी आकस्मिक मृत्यु के सबन्ध में बिल्कुल नही सोच रहा था, बल्कि मैं इतना उदास और परेशान था कि मुझे लग रहा था कि उसी वक्त मर जाता तो अच्छा था। काफी देर तक मैं कमरे के बीच निस्पन्द खडा रहा —यह सोचने की कोशिश करते हुए कि लीज़ा के लिए क्या दवा लिखू, लेकिन ऊपर के कमरे मे कराह खत्म हो गयी और मैंने तय कर लिया कि कोई दवा न दी जाय, पर तब भी मै वैसे ही निश्चल खडा रहा।

मौत जैसा सन्नाटा था, ऐसा सन्नाटा था कि जैसा कि किसी लेखक ने कहा है कि वह कानो में बजता सा लगता था वक्त बहुत धीरे धीरे गुज़र रहा था, चादनी की पट्टिया खिडकी की मिल

पर निश्चल थी, मानो वे वहा गाड दी गयी हो   सुबह होने में देर थी।

एकाएक फाटक चरमराया और कोई चुपचाप मकान की ओर बढ आया। उसने मरियल पेड से एक टहनी तोडी और मेरी खिडकी के शीशे पर उस टहनी से खट्खट् की।

मैंने किसी को फुसफुसाते सुना – "निकोलाइ स्तेपानिच! निकोलाइ स्तेपानिच!"

मैंने खिडकी खोलते हुए सोचा कि मै कोई सपना देख रहा हूगा – खिडकी की सिल के नीचे दीवाल से चिपकी हुई, काले कपडे पहने हुए, चादनी में चमकती हुई एक औरत खडी अपनी बडी बडी आखो से मुझे ताक रही थी। उसका चेहरा चादनी में पीला, कठोर और अवास्तविक-सा लग रहा था, मानो सगमर्मर से काटकर बनाया गया हो, पर उसकी ठुड्ढी काप रही थी।

"मैं हू " उसने कहा, "मै   कात्या"।

चादनी हर औरत की आखे बडी बडी और काली बना देती हैं, हर व्यक्ति लम्बा और पीला लगता है और शायद इसी वजह से मैं उसे फौरन पहिचान नही पाया।

"क्या बात है?"

"क्षमा करो।" उसने कहा, "मुझे एकाएक ऐसा असहनीय दु ख व्यापने लगा कि मै बरदाश्त न कर पायी और यहा चली आयी मैंने तुम्हारी खिडकी मे रोशनी देखी और सोचा कि थपथपाकर देख लू   मुझे माफ करना   ओफ, काश कि तुम समझ पाते कि मै कितनी दुखी थी! तुम इस वक्त क्या कर रहे हो?"

"कुछ नही   मुझे नीद नही आती   "

"मुझे अनिष्ट की आशका हो गयी थी, पर वह सब वेवकूफी की वात है।"

उसकी भवे चढ गयी, आखो में आसू चमकने लगे और सारा चेहरा उस आत्मविश्वास के भाव से एकदम ऐसे दमक उठा मानो उसपर तेज रोशनी पड रही हो, जो मैंने इतने दिनो से नही देखा था।

"निकोलाइ स्तेपानिच!" उसने अपनी वाहे मेरी ओर वढाते हुए आजिजी भरे लहजे में कहना शुरू किया, "मेरे प्यारे! मैं तुमसे प्रार्थना करती हू, तुम्हारे हाथ जोडती हू तुम्हारे लिए मेरे मन मे जो दोस्ती और इज्जत है, अगर तुम उसकी उपेक्षा नही करते तो मेरी वात मान लो!"

"क्या वात?"

"तुम मुझसे मेरा रुपया ले लो!"

"तुम्हारे दिमाग में यह क्या ऊलजलूल वाते आती रहती है? मैं तेरे रुपये लेकर क्या करूगा?"

"तुम उस रुपये से कही जा सकोगे, अपना इलाज करा सकोगे . तुम्हें इलाज की ज़रूरत है। ले लोगे न? मेरे प्यारे! तुम मेरी वात मानोगे न?"

वह आतुरता के साथ मेरे चेहरे की ओर देखने लगी, फिर वोली, "मेरा रुपया स्वीकार करोगे न? कह दो हा।"

"नही, प्यारी, मैं नही लूगा," मैंने जवाब दिया, "पर तेरा इसके लिए शुक्रिया।"

वह मेरी ओर पीठ करके खडी हो गयी और सिर झुका लिया। इसमें कोई सन्देह नही था कि जिस ढग से मैंने इनकार किया था उसमें कोई ऐसी वात थी जिसमें रुपये की वात आगे वढाने की गुजाइश नही रह गयी थी।

"घर जाकर सो जाओ," मैंने कहा, "कल फिर मुलाकात होगी।"

दुखी होते हुए उसने कहा–"तो तुम मुझे अपना दोस्त नही मानते?"

"मैंने यह नही कहा। पर अब तुम्हारा रुपया मेरे किसी काम का नही।"

"मुझे माफ करना," आवाज़ एकदम गिराते हुए वह बोली, "मै समझ गयी। मुझ जैसी अवकाश प्राप्त अभिनेत्री से रुपया उधार लेना खैर, नमस्कार।"

और वह इतनी तेज़ी से निकल गयी कि मुझे नमस्कार का जवाब देने का भी वक्त न मिला।

(६)

मै खारकोव में हू।

चूकि अपनी वर्तमान मनोदशा के खिलाफ लडना वेकार होता, और वह मेरे बूते के बाहर की बात होती, मैंने निश्चय कर लिया कि कम से कम ज़ाहिर तौर पर तो इस धरती पर मेरे आखिरी दिन ऐसे वीते जिसपर कोई उगली न उठा सके। यदि मै अपने परिवार के लिए वह सब कुछ नही हो सका जो मुझे होना चाहिए था, और मेरे मामले में यही बात सही भी है, तो कम से कम मै वह करने की कोशिश तो करूगा, जो वे मुझसे चाहते है। चूकि मुझे खारकोव जाना है, मै खारकोव जाऊगा। फिर मैं इधर हर बात में ऐसा उदासीन हो उठा हू कि मुझे इस वात की ज़रा भी परवाह नही कि मै जा कहा रहा हू। खारकोव, पेरिस या वेर्दीचेव।

मै यहा दोपहर के करीब आया और गिरजाघर के पास एक होटल में ठहर गया। रेल में हिलते-डुलते रहने से मेरी तबिअत खराब हो गयी

और फिर डिब्बे में तेज़ ठडी हवा आ रही थी। और अब मैं बिस्तर के किनारे बैठा, कनपटिया दबाये, मास पेशिया फडकने की अपनी बीमारी के दौरे के इन्तिज़ार में हू। यहा के प्रोफेसरो में मेरे जो परिचित है, मुझे उनसे मिलने जाना चाहिए पर मुझमें इसकी न इच्छा है न शक्ति।

होटल का बूढा नौकर मुझसे पूछने आया है कि मैं बिस्तर की चादरे आदि अपने साथ लेकर आया हू कि नही। मैं उसे पाच मिनट रोक कर उससे ग्नेकेर के बारे मे पूछता हू जो मेरा खारकोव आने का उद्देश्य है। यह नौकर खारकोव का ही रहनेवाला निकलता है और पूरे शहर से भली भाति परिचित है पर वह किसी ग्नेकेर नामक परिवार को नही जानता। मैं पडोस की ज़मीदारियो व जागीरो के बारे में पूछता हू और उसका भी यही नतीजा निकलता है।

बाहर गलियारे की घडी मे एक बजता है, दो बजते है, तीन बजते है   ज़िन्दगी के ये आखिरी चन्द महीने जब मैं बैठा मौत का इन्तिज़ार कर रहा हू, बाकी पूरे जीवन से मुझे ज़्यादा लम्बे लगते हैं। पहले कभी मै वक्त के इतने धीरे धीरे कटने को इतनी सहिष्णुता से बरदाश्त नही कर पाता था। पहले स्टेशन पर रेल के इन्तिज़ार में या किसी इम्तिहान में बैठने पर मुझे पन्द्रह मिनट भी अनन्तकाल-सा लगता था और अब मैं रात रात भर चारपाई के किनारे निश्चल, चुपचाप बठा रह सकता हू और बिल्कुल उपेक्षा के साथ सोच सकता हू कि कल व परसो भी राते ऐसी ही लम्बी और घटनाहीन होगी

गलियारे की घडी में पाच बजते है   छ बजते है   सात बजते हैं   अधेरा होने लगा है।

मेरे गाल मे हलका दर्द शुरू हो गया है। यह बीमारी के दौरे की शुरूआत है। अपने को विचारो में खोया रखने के लिए मै सोचने

लगता हू कि इस तरह उदासीन होने के पहले मेरा दृष्टिकोण क्या था और मैं अपने से पूछता हू मैं एक प्रसिद्ध व्यक्ति, प्रिवी कौंसिल का सदस्य, एक अजब-सा भूरा कम्बल ओढे होटल के इस छोटे से कमरे में बिस्तर के किनारे क्यो बैठा हू। मुह हाथ धोने की लोहे की इस सस्ती-सी तिपाई को मै क्यो देख रहा हू और गलियारे की दो कौडी की घडी की टिकटिक क्यो सुन रहा हू? क्या यह मेरी प्रसिद्धि और ऊची सामाजिक स्थिति के अनुकूल है? रूखी मुस्कान के साथ मै इन प्रश्नो का उत्तर देता हू। जिस सादगी से जवानी में मैं, प्रसिद्धि के महत्व और प्रसिद्ध व्यक्तियो की असाधारण स्थिति को बहुत बढा चढाकर समझता था, उसे सोच सोचकर मै अपना जी वहला रहा हू। मै प्रसिद्ध हू, मेरा नाम बडे आदर से लिया जाता है, मेरी तसवीर 'नीवा' व 'यूनिवर्सल इलस्ट्रेड' पत्रिकाओ में छप चुकी है और मैंने एक जर्मन पत्रिका में स्वय अपनी जीवनी पढी और इस सबका क्या हुआ? यहा मैं निपट अकेला, एक अजनबी नगर में, अजनबी बिस्तर में बैठा हाथ की हथेली से गाल मल रहा हू जिसमें दर्द हो रहा है घरेलू झगडे, लेनदारो की आड अकड, रेल कर्मचारियो की उद्दण्डता, पासपोर्ट प्रणाली की असुविधाए, स्टेशन के विश्रान्ति गृहो में मिलनेवाला महगा व अस्वास्थ्यकर भोजन, हर ओर अज्ञान और उद्दण्डता – इन सव तथा अन्य बहुत सी बातो का, जिन्हे गिनाने में बहुत देर लगेगी, मुझसे भी उतना ही सम्वन्ध है जितना कि किसी भी नागरिक से जिसके अस्तित्व को भी उसकी गली के वाहर के लोग नही जानते। तव फिर मेरी स्थिति में ऐसा विशिष्ट क्या है? मान लो मै दुनिया का सबसे अधिक प्रसिद्ध व्यक्ति हू, महान हू और मेरे देश को मुझपर अभिमान है, हर समाचारपत्र में मेरे स्वास्थ्य के मवध में विज्ञप्ति प्रकाशित होती है, हर डाक से मेरे पास मेरे सहयोगियो, शिष्यो व आम

जनता से सहानुभूति के पत्र आते है, फिर भी ये सब बातें भी मुझे एकाकी, परेशान हालत में, अजनबी बिस्तर में मरने से नही रोक सकती   यह सच है कि इसके लिए किसी को दोष नही दिया जा सकता और मैं, पापी व्यक्ति हू ही, प्रसिद्धि को बिल्कुल प्रेम नही करता। मुझे लगता है कि इसने मुझे दगा दी है।

करीब दस बजे मुझे नीद आती है और बीमारी के दौरे के बावजूद गहरी नीद में सो जाता हू और शायद देर तक सोता भी रहता यदि किसी ने आकर जगा न दिया होता। एक बजे के थोडी देर बाद ही किसी ने आकर दरवाजा खटखटाया।

"कौन है?"

"तार है।"

दरबान के हाथ से तार लेते हुए मैंने गुस्से से कहा– "इसे कल तक के लिए रख सकते थे, अब मुझे फिर नीद नही आयेगी।"

"मुझे माफ करे, आपकी रोशनी जल रही थी और इसलिए मैं समझा कि आप जाग रहे हैं।"

मैंने तार खोला और नीचे भेजनेवाले का नाम देखा। तार मेरी पत्नी ने भेजा था। वह चाहती क्या है?

"ग्नेकेर और लीज़ा ने कल छिपकर शादी कर ली। वापस लौट आओ।"

तार पढकर मैं क्षण भर को त्रस्त हो उठा। पर ग्नेकेर व लीज़ा ने जो किया उससे मुझे त्रास नही हुआ, मुझे त्रास हुआ अपनी उदासीनता पर, जिससे मैंने उनकी शादी की खबर सुनी। लोग कहते है कि सन्त और दार्शनिक उदासीन हो जाते हैं। पर यह सच नही है, उदासीनता तो आत्मा को लकवा मार जाना है, समय से पहले मृत्यु हो जाना है।

मैं फिर लौट कर बिस्तर पर आ गया और अपना मन बहलाने के लिए कुछ सोचने की कोशिश करने लगा। मैं सोचू क्या ? हर बात ऐसी लगती है जिस पर पूरी तरह विचार किया जा चुका है और अब ऐसा कुछ भी नही था जो मेरे विचारो को जगा सके।

जब पौ फटने लगी, मै बिस्तर में ही बैठ गया, घुटनो को सीने से चिपकाये मै और काम न होने के कारण अपने आपको समझने की कोशिश करने लगा। "अपने आपको पहिचानो" यह बहुत बढिया और फायदेमन्द सलाह है, पर प्राचीन बुजुर्ग लोग यह बताना भूल गये कि यह किया कैसे जाय।

पहले अपने आपको या किसी दूसरे को समझने-पहिचानने की इच्छा होने पर मै अपना ध्यान इच्छाओ पर केन्द्रित करता था, कार्यों पर नही, क्योकि कार्य तो व्यक्ति पर निर्भर करते नही। आप मुझे बतायें कि आपकी अभिलाषाए क्या है, और मै बता दूगा कि आप है क्या! और अब मै अपनी परीक्षा कर रहा हू मेरी इच्छाए क्या है ?

मै चाहूगा कि हमारी पत्निया, बच्चे, हमारे दोस्त और हमारे शिष्य हमे प्यार करे, हमारी ख्याति को नही, वे इसान को प्यार करे, फर्म या लेबिल को नही। और क्या ? मै चाहूगा कि मेरे सहकारी और शिष्य हो। और क्या ? मै चाहूगा कि सौ वर्ष बाद उठू और सिर्फ एक झलक देख सकू कि विज्ञान की क्या हालत है। मै चाहूगा कि दस वर्ष और जिन्दा रहू और क्या ?

बस। मैं बराबर लगातार सोचता रहा पर और कोई बात नही सोच पाया। और मैं जितना भी सोचू मेरे विचार बिखरे हुए और असम्बद्ध होते हुए भी यह बात मुझे स्पष्ट थी कि मेरी अभिलाषाओ में मुख्य बात नही आ पा रही है। विज्ञान के प्रति रुचि, जिन्दा रहने की मेरी इच्छा, अजनबी बिस्तर में बैठना, अपने को पहिचानने की मेरी कोशिश—

मेरे ये सब विचार और धारणाएं और बोध, इनमें कोई पारस्परिक तारतम्य नही, ऐसा कुछ नही जो उन सबको आपस में बुनकर एक चीज़ तैयार कर दे। हर विचार और अनुभूति मेरे भीतर बिल्कुल अलग अलग थी और कुशल से कुशल मनोवैज्ञानिक भी विज्ञान, नाटकघर, साहित्य, शिष्यो की मेरी आलोचनाओ में, उन सब चित्रो में जो मेरी कल्पना ने चित्रित किये है, ऐसा कुछ पाने में असफल होता जिसे सामान्य सिद्धान्त कहा जा सके या जो लोगो के लिए आराध्य देव का काम आ सके।

अगर यह चीज़ नही है तो हर चीज़ का अभाव है।

आत्मा का ऐसा दैन्य हो तो मौत का भय, कोई गभीर बीमारी, लोगो व परिस्थितियो का असर, उस चीज़ को तोडताड कर छिन्न भिन्न कर देने के लिए काफी है जिसे मैं अपना बौद्धिक दृष्टिकोण कहता था, जिसमें मैं जीवन का आनन्द और अर्थ निहित समझता था। इसलिए इसमें आश्चर्य ही क्या है जो मेरे जीवन के अतिम दिन और मास ऐसे विचारो और भावनाओ से उदास और तिमिराच्छन्न हो रहे है जो केवल गुलामो या जगलियो के ही उपयुक्त है। क्या आश्चर्य है कि मै प्रभात को भी नही देखता। जब किसी व्यक्ति में वही वस्तु नही है जो सभी बाहरी प्रभावो से ऊपर और अधिक शक्तिशाली है तो ज़ोर का जुकाम भी उसे इस स्थिति में ला देने को काफी है कि हर चिडिया उसे उल्लू दिखाई दे, हर आवाज़ उसे कुत्ते का रोना सुनाई दे। और उसका सारा आशावाद या निराशावाद उसके सारे उच्च या ओछे विचार सिर्फ लक्षणो भर का ही महत्व रखते है।

मैं हार गया हू। ऐसा होने के कारण सोचते जाने, बोलते जाने मे कोई तुक नही है। जो अनिवार्य है उसकी मैं चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा करूगा।

दूसरे दिन प्रात नौकर आकर मुझे चाय और स्थानीय समाचारपत्र दे गया। यन्त्रवत् मै प्रथम पृष्ठ के विज्ञापन, अग्रलेख, दूसरे समाचारपत्रो व पत्रिकाओ के उद्धरणो व समाचारो पर निगाह डालता जाता हू दूसरी खबरो के साथ मुझे खबरो के कालम में यह सूचना भी दिखाई दी–"कल हमारे प्रसिद्ध वैज्ञानिक सम्मानित प्रोफेसर निकोलाइ स्तेपानोविच न० एक्सप्रेस गाडी से खारकोव आये और न० होटल में ठहरे हैं।"

बडे लोगो के नाम भी स्पष्टत अपना अलग जीवन-यापन करते है। बडे लोगो के जीवन से भिन्न और स्वतत्र जीवन होता है उनका। इस समय मेरा नाम खारकोव में इतमीनान के साथ विचरण कर रहा है। तीन महीने में यह नाम एक कब्र के पत्थर पर सुनहरे अक्षरो में सूरज की तरह चमकेगा, जब कि मुझपर खुद काई जम चुकी होगी

दरवाज़े पर हलकी सी थपथपाहट। कोई मुझसे मिलने आया है।

"कौन है? भीतर आ जाओ।"

दरवाजा खुलता है और मै आश्चर्य के कारण अपना गाउन जल्दी जल्दी अपने चारो ओर समेटते हुए एक पग पीछे हट जाता हू। मेरे सामने कात्या खडी हैं।

ज़ीना चढने के कारण उसकी सास फूल गयी है। गहरी सास लेकर वह कहती है–"नमस्ते, तुम सोच नही रहे थे कि मैं आ जाऊगी, है न? मै भी मैं भी यहा आ गयी।"

वह बैठ गयी और मेरी निगाह बचाती हुई हलके हलके हकलाती हुई सी वह बाते जारी रखे रही–

"तुम मुझसे बोलते क्यो नही? मै भी यहा आ गयी मै आज ही आयी। मैंने सुना कि तुम इस होटल में ठहरे हो और मैं तुमसे मिलने चली आयी।"

कन्धे झिझोडते हुए मैंने कहा—"तुम्हे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई लेकिन मुझे ताज्जुब भी है। जैसे एकदम आसमान से टपक पडी हो। तुम यहा आयी क्योकर?"

"मैं? बस मैंने सोचा कि मैं भी चलू।"

मौन। एकाएक वह एकदम उठी और मेरे पास आ खडी हुई।

"निकोलाइ स्तेपानिच!" हाथ सीने पर दाबे, पीली पडती हुई वह बोली, "निकोलाइ स्तेपानिच! मैं ऐसे तो जिन्दा नही रह सकती! मै नही रह सकती! ईश्वर के लिए मुझे बताओ तो, कि मैं क्या करू मुझे अभी, फौरन, इसी क्षण बताओ। बताओ मैं क्या करू!"

आश्चर्यचकित हो मै बोला—"मैं क्या बताऊ? तुम्हे बताने के लिए मेरे पास कुछ नही है।"

ऊपर से नीचे तक कापते और हाफते वह बोलती रही—"मैं तुम्हारे हाथ जोडती हू, मुझे बताओ। कसम खाकर कहती हू कि इस तरह मैं जी नही सकती! यह मेरे लिए बहुत हो चुका!"

वह एक कुरसी में धस गयी और सुबकने लगी। झटके से उसने सिर पीछे किया, हाथ मले और फर्श पर पैर पटकने लगी। उसका टोप गिर गया और तस्मे से लटकने लगा, उसके बाल टोप से बाहर निकल आये।

वह मुझसे अनुनय करने लगी—"मेरी सहायता करो! मेरी मदद करो न! मैं ऐसे अब एक क्षण भी नही रह सकती।"

उसने अपने बटुए से रूमाल निकाला और उसके साथ कुछ पत्र भी, जो उसके घुटनो से फर्श पर गिर पडे। मैंने उन्हे उठाकर उसे दे दिया। उठाते वक्त मुझे एक पर मिखाइल फेदोरोविच की लिखावट दिखाई दी और अकस्मात् एक शब्दाश "प्रेम पूर्व" दिखाई पड गया।

मैंने कहा, "मैं तुम्हे कुछ भी तो नही बता सकता, कात्या।"

वह मेरा हाथ पकडकर उसे चूमते हुए, सुबकते हुए बोली—

"मेरी मदद करो, तुम मेरे पिता हो, मेरे एकमात्र मित्र हो! तुम बुद्धिमान हो, शिक्षित हो, तुमने वहुत दुनिया देखी है! तुम अध्यापक रहे हो! मुझे बताओ, मैं क्या करू?"

"मै ईमानदारी से कहता हू, कात्या, मै नही जानता।"

उसकी सुबकियो से मैं प्रभावित था, घबराया हुआ था और सोच न पा रहा था कि क्या करू, मैं खडा भी मुश्किल से रह पा रहा था।

"चलकर कलेवा करे, कात्या!" मैंने मुसकराने की कोशिश करते हुए कहा, "रोना बन्द करो।"

फिर मैंने हिचकिचाते हुए कहा—"कात्या, मै जल्दी ही चल बसूगा।"

अपने हाथ मेरी ओर बढाते हुए, रोते हुए वह बोली— "एक शब्द, सिर्फ एक शब्द, मझे एक शब्द में बता दो, मै क्या करू?"

"तुम बडी अजब लडकी हो " मै वडवडाया, "मेरी तो समझ मे नही आता। तुम्हारी जैसी समझदार लडकी और एकाएक इस तरह रो पडे।"

मौन छा गया। कात्या ने अपने बाल ठीक किये, टोप लगाया और फिर अप पत्र मोडमाडकर वटुए में ठूस लिये और यह सब बिल्कुल चुपचाप, विना हडबडी के करती रही। उसका चेहरा, उसकी पोशाक का सामने का हिस्सा, उसके दस्ताने सव आसुओ से भीग गये थे, पर उसके चेहरे का भाव कठोर और रूखा हो गया था उसकी ओर देखकर मुझे इस चेतना पर शर्म आने लगी कि मै उससे ज्यादा सुखी हू। अपने में तो मैंने सिर्फ अभी उसी चीज़ की कमी महसूस की थी जिसे मेरे सहयोगी दार्शनिक सामान्य सिद्धान्त कहते है। मरने के कुछ पहले, जिन्दगी की साझ मे यह कमी होना महसूस किया था, पर यह वेचारी, इसकी आत्मा ने तो पूरा जीवन न पाया, और वह पूरे लम्वे जीवन में भी शान्ति न पा सकेगी, शरण न पा सकेगी।

मैंने कहा—"कात्या, चलो कलेवा कर ले।"

उसने रुखाई से जवाब दिया—"नही, शुक्रिया।"

एक मिनट और खामोशी मे कटा।

मैंने कहा—"मुझे खारकोव पसन्द नही, यहा वडी नीरसता है, यह एक नीरस शहर है।"

"मेरा भी ख्याल है कि यह कुरूप है मै यहा ज्यादा देर नही ठहरूगी बस सफर के वीच, मै आज जा रही हू।"

"कहा जा रही हो?"

"क्रिमिया मेरा मतलव है काकेशस।" -

"सच? क्या वहुत दिनो के लिए जा रही हो?"

"मुझे मालूम नही।"

कात्या उठ पडती है और रूखी मुस्कान चेहरे पर विखेर, विना मेरी ओर देखे, अपना हाथ मेरी ओर वढा देती है।

मैं उससे पूछना चाहता हू—"तो तुम मेरे जनाज़े में शामिल न होगी?" पर वह मेरी ओर देखती नही, उसका हाथ ठढा है। अजनवी हाथो की तरह। मै चुपचाप उसके साथ दरवाज़े तक जाता हू अव वह मुझे छोडकर चली गयी, विना पीछे मुडकर देखे वह लम्वा गलियारा पार कर गयी। वह जानती है कि मै उसकी ओर देख रहा हू, जव वह मोड पर पहुचेगी तव अवश्य वह पीछे मुडकर देखेगी।

पर वह नही देखती। उसकी काली पोशाक आखिरी वार दिखाई देती है, पैरो की आवाज़ सुनाई नही पडती अलविदा, मेरी प्यारी!

१८८९

तितली

ओल्गा इवानोव्ना के तमाम दोस्त और जान पहिचान के लोग उसकी शादी में सम्मिलित हुए।

"उसको देखो, उसमें कुछ है, है न?" वह अपने दोस्तो से कह रही थी। जाहिर था कि वह यह सफाई देने को उत्सुक थी कि कैसे वह एक मामूली आदमी से, जो किसी भी मानी में उल्लेखनीय नही था, शादी करने को राजी हो गयी थी।

उसका पति ओसिप स्तेपानिच दीमोव सिर्फ उपाधि से सलाहकार था और पेशे से डाक्टर। वह दो अस्पतालो में काम करता था, एक में अस्पताल में न रहनेवाले डाक्टर के रूप में और दूसरे में मुरदो की चीरफाड के डाक्टर की हैसियत से। नौ बजे से बारह बजे तक वह आनेवाले मरीजो को देखता और वार्डो का मुआइना करता और तीसरे पहर घोडोवाली ट्राम में दूसरे अस्पताल चला जाता जहा मरनेवाले मरीजो के शवो की चीरफाड कर परीक्षा करता। उसकी व्यक्तिगत प्रेक्टिस वहुत कम थी, लगभग ५०० रूबल सालाना। बस। उसके बारे में और कोई खास बात नही थी। पर ओल्गा इवानोव्ना और उसके दोस्तो को किसी भी तरह से साधारण नही कहा जा सकता था। उनमें से हर एक किसी न किसी तरह से प्रख्यात था और बिल्कुल

अज्ञात तो हरगिज़ नही था। उन लोगो का नाम हो गया था और उन लोगो ने थोडी वहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी और अगर वे पूरी तौर पर प्रसिद्धि न भी पा चुके थे तो भी उज्ज्वल भविष्य का परिचय दे चुके थे। एक अभिनेता था जिसकी वास्तविक नाट्य प्रतिभा को स्वीकार कर लिया गया था। वह शुद्ध, चतुर, विवेकपूर्ण था और सुन्दर ढग से पाठ करता था और ओल्गा इवानोव्ना को सम्भाषण की शिक्षा देता था। दूसरा एक ओपेरा का गायक था, मोटा और हसमुख। वह आह भर कर ओल्गा इवानोव्ना को यकीन दिलाता कि वह अपने को वरवाद कर रही है। अगर वह इतनी काहिल न होती, अगर वह अपने पर कावू रखती तो वह वहुत अच्छी गायिका वन सकती है। इनके अलावा कई कलाकार थे जिनमें सव में प्रमुख र्यावोवस्की था, जो समस्या चित्रकार था, जानवरो और प्राकृतिक दृश्यो का चित्रण करता और लगभग पच्चीस साल की उम्र का वहुत सुन्दर भूरे वालो वाला नवयुवक था। प्रदर्शनियो मे उसके चित्रो की प्रशसा होती थी और सवसे नया चित्र पाच सौ रूवल में विका था। वह ओल्गा इवानोव्ना के रेखाचित्र सुधार देता और उसका हमेशा कहना था कि शायद वह चित्रकार वन जाय, और एक सेलो वाइलिन वजानेवाला भी था जो वाजे पर रुदन की धुन वजा सकता था जिसकी खुली घोषणा थी कि उसकी तमाम परिचित औरतो में केवल ओल्गा इवानोव्ना उसके साथ सगत करने में समर्थ थी। फिर लेखक, नौजवान लेकिन ख्याति प्राप्त, जिसने लघु उपन्यास, नाटक और कहानिया लिखी थी। और कौन? हा, वासीली वासीलिच भी था जो कुलीन ज़मीदार था और जो शौकिया पुस्तको पर चित्र और वेलवूटे वनाता और जिसे प्राचीन रूसी शैली से और पौराणिक गाथाओ से सच्चा प्रेम था। वह कागजो, चीनी के वरतनो और तपी तश्तरियो पर आश्चर्यजनक चित्र वना सकता था। इस कलापूर्ण, उदार समाज में, भाग्य के इन

प्रियपात्रो में, जिन्हे सभ्य और शिष्ट होते हुए भी डाक्टर के अस्तित्व की सिर्फ बीमार पडने पर याद आती थी और जिनके कानो के लिए दीमोव सिदोरोव, तारासोव जैसा साधारण नाम था। उनके बीच दीमोव एक अजनबी, छोटा और फालतू सा व्यक्ति मालूम पडता था, हालाकि वह लम्बा और चौडे कन्धो वाला था। उसका कोट ऐसा लगता था कि किसी दूसरे के लिए बनाया गया है और एक दूकान-कर्मचारी की भाति उसकी दाढी थी। यह सही है कि अगर वह लेखक अथवा कलाकार होता, तो हर एक कहता कि दाढी की वजह से वह (विख्यात फ्रासीसी लेखक) ज़ोला की तरह लग रहा है।

अभिनेता ओल्गा इवानोव्ना से कह रहा था कि भूरे बालो व शादी की पोशाक में वह चेरी पेड की तरह लग रही थी। उतनी ही सुन्दर जैसा कि वसत में सफेद फूलो से लदा चेरी का पेड।

"नही, पर सुनो तो!" ओल्गा इवानोव्ना उसका हाथ पकडते हुए कह रही थी। "ऐसा हुआ कैसे? मेरी बात सुनो, सुनो तुम जानते हो कि मेरे पिता और दीमोव एक ही अस्पताल में काम करते थे। बिचारे पिता जी जब बीमार पडे तो दीमोव ने रात दिन उनके बिस्तर के पास रहकर देखभाल की। ऐसा आत्मत्याग! सुनो, र्‌यवोवस्की और तुम भी सुनो लेखक! तुम्हे बात बहुत दिलचस्प मालूम होगी। नज़दीक आ जाओ। ऐसा आत्मत्याग, ऐसी सच्ची हमदर्दी! मै भी रात को नही सोयी, मै अपने पिता के पास बैठी रही और बिल्कुल एकाएक मैंने उस वीर युवक का दिल जीत लिया। बिल्कुल ऐसे ही। मेरा दीमोव मुहब्बत में दीवाना हो गया। भाग्य कैसा अजीब हो सकता है! खैर, मेरे पिता की मृत्यु के बाद, कभी कभी दीमोव मुझसे मिलने आता और हम कभी कभी घर के बाहर भी मिलते और एक दिन—अरे! लो देखो शादी का प्रस्ताव! जैसे आसमान से बिजली गिरी मै सारी रात रोयी, मै भी प्रेम में दीवानी हो गयी। और अब

मैं एक शादीशुदा औरत हू। उसमें एक मजबूती, एक शक्ति, एक भालू-सी प्रवृत्ति है, है न? उसमें उसका तीन चौथाई चेहरा हमारी तरफ है, रोशनी गलत पड रही है, लेकिन जब वह अपना चेहरा पूरी तरह हमारी तरफ घुमाये तो उसके माथे को देखना। ऐसे माथे के बारे में तुम्हारा क्या कहना है, र्‌याबोवस्की? दीमोव, हम तुम्हारे बारे मे ही बाते कर रहे हैं!" उसने चिल्ला कर अपने पति से कहा। "यहा आओ और र्‌याबोवस्की से अपना ईमानदार हाथ मिलाओ यह ठीक है। तुम्हे दोस्त होना चाहिए।"

दीमोव ने र्‌याबोवस्की की तरफ हाथ सरल और प्रसन्नतापूर्ण मुस्कराहट के साथ बढा दिया।

"बहुत खुशी हुई" उसने कहा, "कॉलेज में मेरे साथ एक स्नातक र्‌याबोवस्की था। मेरे ख्याल में, वह आपका कही रिश्तेदार तो नही था?"

२

ओल्गा इवानोव्ना बाईस साल की थी और दीमोव इकतीस का। शादी के बाद उनका जीवन अत्यन्त सुखी हो गया। अपनी बैठक की दीवारो को ओल्गा इवानोव्ना ने अपने और अपने दोस्तो के मढे और अनमढे रेखाचित्रो से भर दिया। बडे पियानो और कुर्सी मेजो के चारो ओर उसने चीनी छाते, चित्र रखने की तिपाइयो, कई रगो के परदो, कटारियो, छोटी छोटी मूर्तियो, तस्वीरो आदि कलापूर्ण वस्तुओ से भर दिया खाने के कमरे मे उसने सस्ती रगीन तस्वीर, लाइम की छाल के जूते और हसिये दीवारो पर टाग दिये और एक कोने में हसिया और पच्चागुरा रख दिया और इस तरह से खाने का कमरा बिल्कुल रूसी ढग का बना लिया। सोने के कमरे की दीवालो और छत पर उसने गहरे रग के परदे लगा दिये ताकि वह गुफा-सी मालूम हो, बिस्तरो के ऊपर

वैनिस के लैम्प लगा दिये और दरवाज़े पर फरमा लिए एक मूर्ति खडी कर दी। हर एक ने कहा कि नव दम्पति ने अपने लिए बहुत आरामदेह नीड तैयार कर लिया है।

ओल्गा इवानोव्ना हर रोज ग्यारह बजे जागती, पियानो बजाती या अगर धूप होती तो तैल चित्र बनाती। बारह के थोडी देर बाद वह अपनी दर्ज़िन के यहा जाती। उसके और दीमोव के पास बहुत थोडा पैसा था, सिर्फ ज़रूरत भर के लिए काफी, और अगर उसे बराबर नयी पोशाके पहननी थी ताकि औरो पर रोब पडे, तो उसे और उसके दर्ज़िन को हर मुमकिन चालाकी करनी पडती। बार बार पुरानी रगी हुई फ्राक और टूल व लेस के कुछ टुकडो से अचम्भे कर दिखाये जाते और पोशाक नयी बिल्कुल बढिया चीज़ एक सपना सा बनकर तैयार कर दी जाती। दर्ज़िन के यहा से आम तौर पर वह अपनी किसी परिचित अभिनेत्री के यहा जाती और मुलाकात ही में वह किसी खेल के पहले प्रदर्शन या किसी के सहायतार्थ खेल के लिए टिकट पा लेने की कोशिश करती। अभिनेत्री के यहा से उसको किसी कलाकार का स्टूडियो या चित्र-प्रदर्शिनी देखने जाना पडता और फिर वहा से किसी ख्याति प्राप्त व्यक्ति के यहा, उसे अपने घर बुलाने के लिए, मुलाकात का जवाब देने, अथवा सिर्फ गपशप करने के लिए जाना होता। हर जगह अपनत्व और ख़ुशी से उसका स्वागत किया जाता और उसे विश्वास दिलाया जाता कि वह अच्छी, असाधारण, प्यारी है जिनको वह महान और विख्यात कहती थी वे उसका बराबरी के दर्जे से स्वागत करते और उनकी सर्वसम्मत राय थी कि अपने गुणो, दिमाग और रुचि के कारण वह अवश्य ऊची उठेगी, अगर वह अपनी प्रतिभा को इतनी दिशाओ में बर्बाद करना बन्द कर दे। वह गा लेती, पियानो बजा लेती, तैल चित्र बना लेती, मिट्टी की मूर्तिया बना लेती, शौकिया नाटको में अभिनय करती, और यह सब काम यू ही, मामूली से नही बल्कि

वास्तविक प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए। वह जो भी काम करती, चाहे रोशनी के लिए लालटेन बनानी हो, पोशाक पहननी हो, और चाहे किसीको मामूली सी टाई बाधनी हो, कलापूर्ण, सुघड और मोहक हो जाता। लेकिन किसी भी चीज़ में उसकी प्रतिभा इतनी अच्छी तरह प्रदर्शित न होती जितनी कि ख्याति प्राप्त लोगो से तत्काल दोस्ती और आत्मीयता उत्पन्न कर लेने में। जैसे ही कोई ज़रा-सा भी नाम करता या उसके बारे में चर्चा शुरू होती, ओल्गा इवानोव्ना फौरन उससे किसी न किसी तरह जान-पहचान पैदा करती, फौरन दोस्त बन जाती और उस व्यक्ति को अपने यहा आमन्त्रित कर लेती। प्रत्येक नयी जान-पहचान उसके लिए एक सुनहरा दिन होती। वह प्रसिद्ध व्यक्तियो की पूजा करती थी, वह उन पर गर्व करती और रात में उन्ही लोगो को सपने देखती। ख्यातिप्राप्त लोगो से जान पहचान की उसकी प्यास बहुत प्रबल थी, जिसको वह कभी बुझा न पाती। पुराने मित्र विलीन हो जाते और भुला दिये जाते, उनकी जगह नये मित्र ले लेते लेकिन थोडे दिनो में वह इनसे भी उकता जाती थी, या उनसे निराश हो जाती और वह उत्सुकता से नये दोस्त, नये विख्यात लोगो को खोजने लगती और जब उन लोगो को पा लेती तो दूसरे मित्रो की तलाश मे रहती। किसलिए?

चार और पाच बजे के बीच वह अपने पति के साथ घर पर भोजन करती। दीमोव की सादगी, सहजबुद्धि और हसमुख स्वभाव उसको प्रशसा और आह्लाद की दशा में पहुचा देता। वह लगातार कूदती और दीमोव की गरदन में बाह डालकर उसके माथे पर चुम्बनो की बौछार कर देती।

"तुम बुद्धिमान और उदार व्यक्ति हो, दीमोव," उसने दीमोव से कहा, "लेकिन तुम में एक बहुत बडा दोष है। तुम कला में रचमात्र भी दिलचस्पी नही लेते। तुम तो सगीत और चित्रकला की अवहेलना करते हो।"

"मैं उन्हे समझता नही," उसने नम्रता से कहा। "सारी उम्र मैंने विज्ञान और चिकित्सा का अध्ययन किया है और कभी भी कला के लिए मेरे पास समय नही रहा।"

"लेकिन यह तो बहुत बुरा है, दीमोव!"

"क्यो? तुम्हारे दोस्त विज्ञान और चिकित्सा के बारे मे कुछ नही जानते और तुम्हे उन लोगो से शिकवा नही है। हर एक का अपना क्षेत्र होता है। प्राकृतिक दृश्यो के चित्र या ओपेरा मेरी समझ मे नही आते, लेकिन मै तो इसको इस नज़र से देखता हू कि चूकि कुछ होशियार आदमी इन चीज़ो में सारी ज़िन्दगी लगा देते है, और दूसरे बुद्धिमान लोग इनके लिए काफी धन खर्च करते है, इसलिए वे ज़रूर ही आवश्यक होगी। मैं उन्हे समझता नही हू लेकिन इसके ये मानी नही कि मैं उनकी अवहेलना करता हू।"

"ज़रा अपना ईमानदार हाथ बढाना, मै दबाऊ उसे!"

भोजन के बाद ओल्गा इवानोव्ना मुलाकात करने के लिए निकल जाती और फिर नाटक या नाच में जाती और आधी रात से पहले घर वापस न लौटती। हर रोज़ यही होता।

बुधवार की शाम को लोगो से मिलने के लिए वह घर पर रहती। बुधवार की इन शामो को नाच या ताश नही होते थे और गोष्ठी कला से अपना मनोरजन करती थी। प्रसिद्ध अभिनेता सवाद सुनाता, गायक गाता। चित्रकार ओल्गा के असख्य एल्बमो में रेखाचित्र बनाते, वाइलिन बजानेवाला वाइलिन बजाता और गृहणी स्वय चित्र बनाती, मूर्तिया बनाती, गाती और गानेवालो के साथ बाजा बजाती। सवाद बोलने, गाने और बजाने के बीच के अवकाश में वे कला, साहित्य और नाटको के बारे में बातचीत और बहस करते। इन गोष्ठियो में कोई औरते न होती, क्योकि ओल्गा इवानोव्ना अपनी दर्ज़िन और अभिनेत्रियो को छोड कर हर औरत को तुच्छ और उबा देनेवाली समझती थी। बुधवार

की कोई शाम ऐसी न होती जबकि हर घटी की आवाज़ पर गृह स्वामिनी विजय भाव से यह न कहती हो कि "यह वह है!" जिसका अर्थ, नवीन आमन्त्रित प्रसिद्ध व्यक्ति की ओर इशारा होता। दीमोव कभी भी वैठक में न होता और किसी को उसके अस्तित्व का भी भान न रहता। लेकिन ठीक साढे ग्यारह बजे खाने के कमरे का दरवाज़ा खुलता और हसमुख नम्र मुस्कराहट के साथ हाथ मलते हुए दीमोव दरवाज़े पर यह कहता हुआ दिखाई देता—

"महाशयो, भोजन करने आइये।"

सब लोग खाने के कमरे में जाते और हर मरतबा उनकी आखें वही चीज़ें पाती। घोघा, मछली, सूअर या बछडे का गोश्त, पनीर, कुकुरमुत्ते का अचार, कैवियोर, वोद्का और दो जग भरी हल्की शराब।

"मेरे प्यारे होटल के मैनेजर!" आह्लाद मे ताली बजाती हुई ओल्गा इवानोव्ना अपने पति से कहती, "तुम तो बहुत मनमोहक हो! सब लोग ज़रा इनका माथा देखो! दीमोव, हम लोगो की तरफ अपना चेहरा तो घुमाओ ऐसे कि सिर्फ एक तरफ का चेहरा दिखाई दे। देखो, हर एक देखो। बगाल के बाघ का चेहरा और हरिण की तरह दयालु और प्यारा भाव—मेरे प्यारे!"

मेहमान खाना खाते हुए दीमोव की ओर देखते और सोचते, "वास्तव में भला आदमी है यह" लेकिन वे फौरन ही उसको भूलकर नाटक, सगीत, कला की बाते करने लगते।

युवा दम्पति सुखी थे और उनकी ज़िन्दगी हसी-खुशी से कट रही थी। यह सही है कि सुहागरात का तीसरा हफ्ता पूरी तौर पर सुखी नही रहा, वास्तव में यह हफ्ता दुख में कटा। दीमोव को अस्पताल मे एरीसीपलास, (जिसमें शरीर सूज जाता है और चमडा लाल हो जाती है) की बीमारी लग गयी और उसको छ रोज बिस्तरे मे पडा रहना पडा।

उसके खूबसूरत काले बाल कतर कर बिल्कुल छोटे कर दिये गये। बुरी तरह रोती हुई ओल्गा इवानोव्ना उसके सिरहाने बैठी रहती। लेकिन जब वह ज़रा अच्छा हुआ तो ओल्गा ने उसके सिर पर एक सफेद रूमाल बाध दिया और अरब रेगिस्तानी की शक्ल में उसका चित्र बनाने लगी। दोनो ने इसे बडा मनोरजक माना। बिल्कुल ठीक हो जाने के तीन दिन बाद जब उसने अस्पताल जाना शुरू कर दिया था, उस पर फिर एक विपत्ति आ गयी।

"मेरी तकदीर बहुत बुरी है, मम्मो!" दीमोव ने एक दिन खाना खाते वक्त ओल्गा से कहा। "आज मुझे चार शवो की चीरफाड करनी थी और मेरी दो उगलिया कट गयी। मै उन्हे घर लौटने पर ही देख पाया।"

ओल्गा इवानोव्ना घबरा उठी। वह मुस्कराया और बोला कि कोई बात नही है और चीरफाड में अक्सर उसके हाथ कट जाते है।

"मै तन्मय हो जाता हू, मम्मो, और फिर मैं सब कुछ भूल जाता हू।"

ओल्गा इवानोव्ना घबराकर ज़हरबाद शुरू होने की आशका में रही और हर रात प्रार्थना करती रही कि ज़हरबाद न हो। सब परेशानी आसानी से खत्म हो गयी। और पहले की तरह सुखी और शातिपूर्ण चिन्ता व कष्टहीन जीवन का ढर्रा फिर चल पडा। वर्तमान सुन्दर था ही और जल्दी ही वसन्त आनेवाला था। दूर से मुस्कराता हुआ उन्हे हज़ार खुशियो का सुखद आश्वासन देता हुआ कि सदैव प्रसन्नता ही रहेगी। अप्रैल, मई और जून के लिए मास्को नगर से बहुत दूर देहात की कुटी होगी जहा टहलना, रेखाचित्र बनाना, मछली पकडना और बुलबुले होगी और तब जुलाई से पतझड तक वोल्गा पर कलाकारो की उल्लास यात्रा, जिसमें ओल्गा इवानोव्ना स्थायी सदस्या के रूप में हिस्सा लेगी। उसने पटुए की दो सफर की पोशाके बनवा ली थी और

रग, कूची व किरमिच और रग रखने की नयी तश्तरी खरीद ली थी। उसका चित्रकला का अभ्यास कैसा चल रहा है यह देखने के लिए र्यावोवस्की लगभग रोज़ ही आता। जब वह उसे अपने चित्र दिखाती तो जेबो में हाथ डालकर, होठ भीचकर, नाक चढाता हुआ वह कहता—"अच्छा, अच्छा   वादल वहा बहुत भडकीला है। यह तो शाम की रोशनी नही है। आगे की ज़मीन थोडी गडवड है और कुछ, तुम समझ जाओ कि मेरा मतलव है   कमी है। तुम्हारी झोपडी, लगता है जैसे किसी ने ठोक पीट दी हो और वह कष्ट में रिरिया रही हो   उस कोने को और ज्यादा गहरा कर दो। सब मिलाकर तस्वीर इतनी बुरी नही है   मुझे खुशी है।"

वह जितना ही ज्यादा गूढ ढग से बोलता, उतनी ही आसानी ओल्गा इवानोव्ना को उसे समझने मे होती।

३

ईस्टर त्योहार के वाद वाले सोमवार को तीसरे पहर दीमोव देहात में अपनी बीवी के पास ले जाने के लिए कुछ मिठाइया और खाने की चीजें लाया। उसने पन्द्रह दिन मे उसे देखा नही था और उसकी याद उसे बुरी तरह सता रही थी। रेल में और उसके बाद, जब वह घनी झाडियो में उसकी कुटी ढूढ रहा था तो उसको बहुत ज़ोर की भूख लग रही थी। दीमोव अपनी बीवी के साथ बैठकर खाने और फिर बिस्तर में लेट आनन्द लेने के ध्यान में मग्न हो गया था।

अपने हाथ की पारसल को देखकर जिसमें कैवियोर, पनीर और भुनी हुई मछली थी, उसे खुशी हो रही थी।

सूरज ढल चुका था, जबकि वह तलाश करके अपनी बीवी की कुटी पा सका। बूढी नौकरानी ने उसे बताया कि मालिकिन घर पर

नही है, लेकिन शायद थोडी देर में वापस आ जाय। बदनुमा बनावट नीची छतो, दिवालो पर लगे सादे कागज़, ऊचे-नीचे खड्डे पडे फर्शवाली कुटी में सिर्फ तीन कमरे थे। एक कमरे में एक बिस्तर, दूसरे में तस्वीर बनाने की किरमिच, रग की कूची, मैले कागज़ का एक टुकडा, कुर्सियो और खिडकियो पर आदमियो के कोट और टोप और तीसरे कमरे में दीमोव की भेंट तीन अजनबी आदमियो से हो गयी। दो तो सावले और दाढिया रखे हुए थे और तीसरा दाढी मूछहीन मोटा व्यक्ति था, वह अभिनेता प्रतीत होता था। मेज़ पर समोवार उबल रहा था।

"तुम क्या चाहते हो?" दीमोव की तरफ अप्रसन्न भाव से देखते हुए, अभिनेता ने भारी आवाज़ में पूछा, "ओल्गा इवानोव्ना से मिलना? ठहरो। वह आती ही होगी।"

दीमोव बैठकर इन्तिज़ार करने लगा। सावले व्यक्तियो में से एक ने उसकी ओर नीद भरी थकी थकी आखो से देखते हुए थोडी-सी चाय उडेली और पूछा—"थोडी चाय पीजिये?"

दीमोव भूखा-प्यासा था। लेकिन उसने चाय से इन्कार कर दिया ताकि चाय पीने से भूख की तीव्रता कम न हो जाय। थोडी ही देर में कदमो की और परिचित हसी की आवाज़ सुनाई पडी। धमाके से दरवाज़ा खुला और चौडे किनारे वाला टोप लगाये एक पेटी लिये ओल्गा इवानोव्ना कमरे में तेजी से घुसी। उसके पीछे बडा छाता और मुडनेवाला स्टूल लिये, र्याबोवस्की आया। वह बहुत उमग में था और उसके गाल सुर्ख हो रहे थे।

"दीमोव" खुशी से गद्‌गद्‌ होते हुए ओल्गा इवानोव्ना चीखी, "दीमोव" उसकी छाती पर दोनो हाथ और अपना सिर रखते हुए उसने दोहराया, "तुम हो! तुम इतने लम्बे समय तक यहा क्यो नही आये? क्यो? क्यो?"

"मै कब आ सकता था, मम्मो? मैं हमेशा व्यस्त रहता हू, और जब मेरे पास थोडी फुरसत होती भी है, तो हमेशा ऐसा होता है कि कोई ठीक रेलगाडी ही नही मिलती।"

"ओह! तुम्हे देखकर मैं कितनी खुश हू! सारी रात, सारी रात मैं तुम्हारा स्वप्न देखती रही। मैं डर रही थी कि तुम बीमार हो गये हो, तुम्हे कुछ हो गया है। काश तुम्हे पता होता कि तुम कितने प्यारे हो, और यह कितने सौभाग्य की बात है कि तुम आ गये हो! तुम मेरे उद्धारक हो! सिर्फ तुम्ही अकेले ऐसे हो, जो मुझे बचा सकते हो! कल यहा एक बिल्कुल मौलिक शादी होने जा रही है," हसते हुए अपने पति की टाई ठीक करते हुए उसने कहा। "तारघर के कर्मचारी की शादी हो रही है, चिकेलदेयेव उसका नाम है, अक्लमद और खूबसूरत लडका है। उसके चेहरे में कुछ शक्ति, कुछ भालूपन, तुम तो जानते हो । वह एक नौजवान नार्मन योद्धा का चित्र बनवाने के लिए नमूना बन सकता है। गरमियो में यहा आये हम सबने उसमें दिलचस्पी ली है और उसकी शादी मे शामिल होने का पक्का वादा किया है वह आर्थिक कठिनाई में है, एकाकी और शर्मीला, उससे सहानुभूति न करना पाप होगा। जरा सोचो, शादी प्रार्थना के फौरन बाद होगी और सब लोग गिरजे से सीधे दुलहन के घर पैदल जा रहे है । उपवन, गाती हुई चिडिया, घास पर सूर्य की किरणें, तुम समझो, चमकीली हरी पृष्ठभूमि पर हम सब रगीन धब्बे - कितना मौलिक, बिल्कुल फ्रासीसी अभिव्यक्तिवादियो की तरह। लेकिन, दीमोव, मैं गिरजे मे पहनूगी क्या?" व्यथाकुल चेहरा बनाते हुए ओल्गा इवानोव्ना ने कहा। "यहा मेरे पास कुछ नही है, वाकई कुछ नही है, न पोशाक, न फूल, न दस्ताने तुमको मुझे बचाना ही

पडेगा। इस वक्त तुम्हारे यहा आने के मानी है कि यह भाग्य की इच्छा थी कि तुम मुझे बचाओ। मेरी चाभिया ले लो, प्यारे, घर जाओ और कपडो की अलमारी से मेरी गुलाबी पोशाक ले आओ । तुम समझ गये? यह बिल्कुल सामने ही लटक रही है और वक्सो वाले कमरे के फर्श पर दायी ओर तुम्हे दो दफ्ती के बक्स मिलेगे, जब तुम ऊपर वाला बक्स खोलोग तो तुम्हे सिवा टूल, टूल टूल और दुनिया भर के टुकडो के और कुछ नही दीख पडेगा और उसके नीचे फुलवर। जितनी फुलवर हो, उनको होशियारी से निकाल लेना और कोशिश करना कि गिजगिजाये नही। मै बाद में उनमें से कुछ चुनूगी और मेरे लिए एक जोडा दस्ताना खरीद लेना।

"बहुत अच्छा," दीमोव ने कहा, "मै कल जाकर उन्हे भेज दूगा।"

"कल?" उसकी ओर स्तब्धता से देखते हुए ओल्गा इवानोव्ना ने कहा। "कल तो तुम्हारा ठीक वक्त में आना सम्भव ही नही है। पहली गाडी कल नौ बजे छूटती है और शादी ग्यारह बजे है। नही, प्यारे तुम्हे आज ही जाना है, जरूर आज! अगर तुम खुद कल नही आ सकते हो, तो सब चीज़ अरदली के ज़रिये भेज देना। जाओ, अभी गाडी अब आती ही होगी । मेरे दुलारे, देर मत करो।"

"अच्छी बात है।"

"ओह, तुम्हे भेजते हुए मुझे कितना क्षोभ हो रहा है।" ओल्गा इवानोव्ना ने कहा और उसकी आखो में आसू भर आये। "तारघर के कर्मचारी से वादा करके मैने कितनी बडी बेवकूफी की है।"

चाय का गिलास निगलकर, एक बिस्कुट उठाते हुए दीमोव दीनता से हसा और स्टेशन चला गया। कैव्योर, पनीर और भुनी हुई मछलियो को उन दो सावले आदमियो और मोटे अभिनेता ने खाया।

४

जुलाई की एक निस्तब्ध चादनी रात में, ओल्गा इवानोव्ना वोल्गा नदी में एक स्टीमर पर खडी वारी वारी से पानी और नदी का सुन्दर किनारा देख रही थी। उसके पीछे र्‌यावोवस्की खडा हुआ उसे वता रहा था कि पानी की सतह पर पडनेवाली काली छायाए, छाया नही, स्वप्न है। अच्छा हो कि हर चीज भुला दी जाय, मर जाया जाय और इस जादूभरे चमकीले पानी से घिरी हुई एक यादगार वन जाया जाय! यह असीम आकाश, यह उदास और चिन्ताकुल किनारे, सब हमसे हमारे जीवन की निस्सारता वता रहे है और किसी महान, अविनाशी और आनन्दकारी चीज का अस्तित्व सिद्ध कर रहे हैं। अतीत तुच्छ था, रागहीन भविष्य निर्विकार और यह नैसर्गिक, कभी फिर न आनेवाली रात शीघ्र समाप्त हो जायगी और अनादि अनन्त का अग वन जायेगी। क्यो, तो फिर जिन्दा क्यो रहे?

ओल्गा इवानोव्ना वारी वारी से र्‌यावोवस्की की आवाज और रात की खामोशी सुन रही थी और अपने आपसे कह रही थी कि वह अमर है और वह कभी नही मरेगी। पन्ना-सा चमकनेवाला जल, जैसा कि उसने पहले कभी नही देखा था, आकाश, नदी के किनारे, काली छायाए और अज्ञात आनन्द जिससे उसकी आत्मा विभोर हो उठी थी, सव चीजे उससे कह रही थी कि एक रोज वह महान कलाकार वनेगी और कही दूर चादनी मे जगमगाती रात असीम आकाश के पार सफलता, यश, और जनता का प्रेम उसकी प्रतीक्षा में है जब टकटकी लगाये देर तक अधकार में घूरते घूरते उसे लगा कि जैसे भीड, रोशनी, गभीर सगीत की ध्वनि, प्रोत्साहन देनेवाली शावाशिया, सफेद पोशाक में वह स्वय अपने ऊपर चारो ओर से फूलो की वर्षा देख रही हो। उसने अपने मे कहा भी कि उसके पीछे रेलिग पर झुका हुआ व्यक्ति दरअसल

महान है। विलक्षण प्रतिभावान है, ईश्वर का प्रिय पात्र है अभी तक का उसका कार्य आश्चर्यजनक, ताज़ा, अनोखा है और जब समय के साथ उसकी असाधारण प्रतिभा परिपक्व हो जायेगी, तब उसका काम आकर्षक और अत्यन्त उच्च श्रेणी का होगा और उसके चेहरे में, अपने को व्यक्त करने के ढग में और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण मे, इन सबकी झाकी दिखाई पडती है। छायाओ, शाम के रगो, चादनी की चमक का वर्णन करने की उसकी अपनी विशेप भापा है, प्रकृति के ऊपर उसकी शक्ति का जादू अभिभूत कर लेता है। वह सुन्दर भी है और मौलिक भी, स्वतत्र, स्वच्छन्द, ससारिक बधनहीन उसका जीवन, पक्षियो के जीवन के समान है।

"ठढक हो रही है।" ओल्गा इवानोव्ना ने कहा और उसे कपकपी आ गयी।

र्याबोवस्की ने अपना कोट उसके शरीर में लपेट दिया और दुख भरे शब्दो में बोला

"मुझे लगता है कि म तुम्हारे कब्ज़े में हू। मै गुलाम हू। तुम आज इतनी मोहिनी क्यो हो?"

वह लगातार उसकी ओर बिना नज़र हटाये देखता रहा। उसकी आखो में कुछ ऐसा डरावना था कि ओल्गा इवानोव्ना को उसकी ओर देखने में डर लग रहा था।

"मै तुम्हारे प्रेम में पागल हू " उसके गाल पर सास छोडते हुए वह फुसफुसाया, "तुम सिर्फ एक शब्द कह दो और मै ज़िन्दा नही रहूगा, कला त्याग दूगा " वहुत विकल होकर वह वुदबुदाया—"मुझे प्यार करो, मुझे प्यार करो "

"इस तरह से बात मत करो," आखें बन्द करते हुए ओल्गा इवानोव्ना ने कहा। "यह वहुत वुरा है। और दीमोव का क्या होगा?"

"दीमोव की क्या परवाह? दीमोव क्यो? मुझे दीमोव से क्या लेना-देना है? वोल्गा, चाद, सुन्दरता, मेरा प्यार, मेरा आह्लाद, लेकिन कोई दीमोव नही   आह! मैं कुछ नही जानता   मुझे अतीत नही चाहिए, मुझे केवल एक क्षण दे दो   एक छोटा सा क्षण!"

ओल्गा इवानोव्ना का दिल ज़ोर-ज़ोर मे धड़क रहा था। उसने अपने पति के बारे में सोचने की चेष्टा की लेकिन पूरा अतीत, उसकी शादी, दीमोव, बुधवार की शामें, सब कुछ अब उमे तुच्छ, नगण्य, भद्दा, बेकार और दूर, बहुत दूर लग रहा था   और आखिरकार दीमोव की क्या परवाह है? दीमोव क्यो? दीमोव से उसे क्या मतलब? क्या वास्तव में ऐसा कोई व्यक्ति था, क्या वह स्वप्न नही था?

"उसको जितनी खुशी मिली है वह उस जैसे मामूली आदमी के लिए काफी है," चेहरे को अपने हाथो से ढाकते हुए उसने अपने आपको समझाया। "वे मेरा फैसला करे, मुझे शाप दें। मैं अपने नाश की ओर जाऊगी, हा, अपने नाश की ओर, सिर्फ उन सबसे बदला लेने के लिए   जीवन में हर चीज़ आजमानी चाहिए। हे ईश्वर, कितना भयानक और कितना मोहक है यह।"

"क्या? क्या?" उसको बाहो से घेरते हुए और आवेश से उसके हाथो को चूमते हुए जिनसे वह हल्के से उसे दूर हटा रही थी, कलाकार बुदबुदाया, "तुम मुझे प्यार करती हो न? क्या हा? कहो हा! वाह! क्या रात है! कैसी स्वर्गिक रात है!"

"हा, कैसी सुन्दर रात है!" आसुओ से चमकती हुई उसकी आखो में आखें डालकर वह फुसफुसायी। फिर फौरन दूसरी ओर आखें फेरकर उसने उसे बाहो में भर लिया और उसके होठो को चूम लिया।

"हम एक मिनट में किनेश्मा पहुच जायेंगे," डेक की दूसरी तरफ से किसी ने कहा।

भारी कदम सुनाई पडे। यह जलपान गृह के कर्मचारी के गुजरने की ग्रावाज़ थी।

"सुनो," ग्रानन्द से हसते ग्रौर रोते हुए ग्रोल्गा इवानोव्ना ने उसे पुकारा, "हमारे लिए थोडी शराब ला दो।"

कलाकार उद्वेग से पीला पड गया। वह वेंच पर बैठ गया ग्रौर ग्रोल्गा इवानोव्ना को प्रशसा ग्रौर कृतज्ञता के भाव से देखते हुए उसने ग्रपनी ग्राखें बन्द कर ली, क्लान्त हसी से उसने कहा—"मैं थक गया हू।"

ग्रौर उसने ग्रपना सिर रेलिग पर रख लिया।

५

दूसरी सितम्बर को दिन गर्म था, हवा स्थिर थी, पर कोहरा छाया हुग्रा था। सवेरे तडके वोल्गा के ऊपर हल्का कुहासा छाया हुग्रा था ग्रौर नौ बजे के बाद बूदें पडना शुरू हो गयी ग्रौर ग्रासमान साफ हो जाने की बिल्कुल ही ग्राशा न रही। नाश्ते पर र्‌याबोवस्की ने ग्रोल्गा इवानोव्ना से कहा कि चित्रकारी सब कलाग्रो से ग्रधिक कृतघ्न ग्रौर उबा देनेवाली कला है। वह कलाकार है ही नही, ग्रौर बेवकूफो को छोडकर ग्रौर किसी को उसकी प्रतिभा में विश्वास नही है। ग्रचानक, रचमात्र भी चेतावनी दिये विना उसने चाकू उठा कर ग्रपने सबसे सफल चित्र को फाड डाला। नाश्ते के बाद वह ग्रन्यमनस्क-सा खिडकी पर बैठा नदी की ग्रोर देखता रहा। ग्रब वोल्गा चमक नही रही थी, वह धुधली, मद्धिम ग्रौर ठढी लग रही थी। हर चीज उदास, सूने पतझड के ग्रागमन की ग्रोर इगित करने लगती थी।

ऐसा लग रहा था जैसे किनारे की चमकीली हरी दरिया, सूर्य की किरणो का हीरो जैसा प्रतिविम्व, नीली पारदर्शी दूरी और समस्त सुन्दर वसन प्रकृति ने वोल्गा से छीन कर अगले वसन्त तक के लिए सन्दूक में वन्द कर दिया हो। और, नदी के ऊपर कौवे उसे चिढाते हुए उड रहे थे—"नगी! नगी!" र्‌यावोवस्की उनकी काव काव सुनता रहा और अपने से कहता रहा कि चित्र वनाते-वनाते मेरी प्रतिभा लुप्त हो गयी, कि इस ससार में सव कुछ रूढिग्रस्त, आपेक्षिक और मूर्खतापूर्ण है, कि मुझे इस औरत के चक्कर में नही आना चाहिए था मतलव यह कि वह व्यथित और उदास वैठा था।

ओल्गा इवानोव्ना आड के पीछे खाट पर वैठी अपने सुन्दर सुनहले वालो में उगलिया फिरा रही थी और कल्पना में देख रही थी कि वह अपने दीवानखाने, सोने के कमरे, अपने पति के अध्ययन के कमरे में पहुच गयी है। उसकी कल्पना ने उसे थियेटर, दर्जिन की दूकान और अपने नामी मित्रो के पास पहुचा दिया। वे इस समय क्या कर रहे होगे? क्या उन लोगो को कभी उसकी भी याद आयी होगी? पर्व तो आ गया था और उसके लिए अपनी वुधवार की शामो का सोच स्वाभाविक था। और दीमोव? प्यारा दीमोव! कितनी नम्रता और वच्चो जैसी सरलता के साथ रट लगाकर वह अपने पत्रो मे उससे घर लौट आने की लगातार प्रार्थना किये जा रहा था! हर महीने वह उसको पचहत्तर रूवल भेजता था और जव उसने लिखा कि मैंने कलाकारो से सौ रूवल उधार लिये है, तो उसने सौ रूवल और भेज दिये थे। कितना अच्छा, उदार पुरुष है वह! यात्रा ने ओल्गा इवानोव्ना को थका दिया था, वह ऊव गई थी, वह वेचैन थी कि किसानो के वीच से, नदी से उठनेवाली नमी की इस गध से किसी प्रकार वच कर भाग जाय, और उस शारीरिक गन्दगी की भावना को झाड कर फेंक दे जिससे किसानो की झोपडियो में रहते

रहते, गाव गाव फिरने में भी कभी उसका पिन्ड नही छूटता था। यदि र्याबोवस्की ने कलाकारो को बीस सितम्बर तक साथ रहने को वचन न दे दिया होता तो वे दोनो आज ही चले जाते। कितनी बढिया बात होती यह!

"हे भगवान!" र्याबोवस्की ने ठढी सास भरते हुए कहा, "यह सूरज पता नही कब निकलेगा? मैं सूरज की रोशनी से दमकते प्राकृतिक दृश्य का चित्र कैसे बनाता जाऊ जब खुद सूरज का ही पता न हो।"

"तुम्हारे पास एक स्केच (चित्र) है जिसमें आकाश पर बादल छाये है," ओल्गा इवानोव्ना ने आड के बाहर निकलते हुए कहा, "क्या तुम्हे याद नही?—जिसमें सामने ही दाहिनी ओर एक जगल है और गायो और बत्तखो का झुड बाईं ओर है। तुम उसे पूरा न कर डालो अब!"

"भगवान के लिए," कलाकार ने मुह बनाते हुए कहा, "पूरा कर डालो! क्या तुम सचमुच मुझे इतना मूर्ख समझती हो कि मैं अपना बुरा-भला नही जानता?"

"तुम मेरे लिए कितने बदल गये हो!" ओल्गा इवानोव्ना ने ठढी सास भरते हुए कहा।

"अच्छा ही हुआ।"

ओल्गा इवानोव्ना का मुह फडकने लगा, वह जल्दी से अलावघर के पास पहुच गयी और वही खडी होकर रोने लगी।

"और अब ये आसू भी—मानो कोई कसर रह गयी थी। बस, अब बन्द करो। मेरे पास भी रोने के हज़ार कारण मौजूद हैं, पर मैं तो नही रोता!"

"कारण!" ओल्गा इवानोव्ना ने सिसकी लेते हुए कहा, "सब से बडा कारण तो यह है कि तुम मुझसे ऊब गये। हा हा, तुम ऊब गये हो।" और उसकी सिसकिया और भी बढ गयी। "असली बात यह है कि तुम हमारे प्रेम पर लज्जित हो। तुम डरते हो कि कलाकारो

को कही पता न चल जाये यद्यपि यह बात कही छिपाये नही छिपती है और वह लोग तो सब कुछ जानते है।"

"ओल्गा, मेरी तुमसे एक ही प्रार्थना है," कलाकार ने अनुनय-विनय के स्वर में, अपनी छाती पर हाथ रखते हुए कहा, "केवल एक ही बात कि मुझे परेशान मत करो। मैं तुमसे बस, यही चाहता हू!"

"तो कसम खाओ कि तुम्हें मुझसे अब भी प्रेम है!"

"यह तो बडी मुसीबत है!" कलाकार ने दात मीच कर कहा, और एकदम से उठ खडा हुआ। "इसका परिणाम यही होगा कि म या तो वोल्गा में कूद पडूगा या पागल हो जाऊगा। मुझे अपने हाल पर छोड दो!"

"मुझे मार डालो, हा, हा, मुझे मार डालो," ओल्गा इवानोव्ना चिल्लायी, "मुझे मार डालो!"

वह फिर फूट-फूट कर रोने लगी और आड के पीछे चली गयी। फूस की छत पर वर्षा की बूदें खडखडाने लगी। र्याबोवस्की अपने सिर पकडे कमरे में कुछ देर तक टहलता रहा और तब उसके मुख पर दृढ निश्चय के लक्षण झलक पडे मानो वह किसी से बहस में कोई बडा तर्क दे रहा हो, उसने टोपी पहनी, बन्दूक कन्धे पर डाली और झोपडी से बाहर चला गया।

उसके जाने के पश्चात, ओल्गा इवानोव्ना बडी देर तक रोती हुई खाट पर पडी रही। पहले उसने सोचा कि कितना अच्छा हो कि वह जहर खाकर सो रहे और जब र्याबोवस्की लौटे तो वह मरी पडी हो। परन्तु क्षण भर में ही उसके विचार अपने दीवानखाने, अपने पति के अध्ययन के कमरे तक पहुंच गये और उसने देखा कि वह चुपचाप दीमोव के पास बैठी शान्ति और स्वच्छता की भावनाओ का आनन्द ले रही है और फिर नाट्यशाला में बैठी माज़िनी का सगीत सुन रही है। और

सभ्यता, नगर के कोलाहल, नामी व्यक्तियो के लिए तडप से उसके हृदय में टीस उठी। गाव की एक औरत झोपडी में आयी और भोजन की तैयारी के लिए धीरे-धीरे चूल्हे की आच तेज करने लगी। लकडी जलने की दबी दबी गन्ध फैली और हवा धुए से नीली हो गयी। कलाकार अपने कीचड मे सने भारी बूट चढाये हुए आये। उनके मुख वर्षा से भीगे हुए थे। वे स्केचो को देख रहे थे और अपने मन को यह कहकर बहला रहे थे कि वोल्गा इस क्रूर ऋतु में भी आकर्षक होती है। दीवाल पर टगी सस्ती घडी का लटकन टिक-टिक कर रहा था। सर्द मक्खिया कोने में मूर्तियो के चौखटे के पास भीड लगाये भनभना रही थी और बेंचो के नीचे उभरी हुई फाइलो के अन्दर तिलचटे रेग रहे थे।

र्याबोवस्की सूर्यास्त के समय झोपडी में लौटा। उसने अपनी टोपी मेज़ पर पटकी और कीचड भरे बूट सहित थकावट से चूर पीला पडा, बेंच पर धम से गिर पडा और अपनी आखें बन्द कर ली।

"मैं थक गया हू" उसने कहा, पलके ऊपर उठाने के प्रयत्न में उसकी भौहे फडक रही थी।

ओल्गा इवानोव्ना उसको मनाने और यह दिखलाने की आकुलता में कि वह उससे सचमुच क्रुद्ध नही है, एकदम से उसके पास पहुच गयी, चुपचाप उसका चुम्बन किया और उसके भूरे बालो में कघी चलायी। उमके जी में आया कि उसके बालो में कघी करे।

"अरे, यह क्या?" उसने चौंकते हुए कहा मानो कोई चिपचिपी वस्तु उसे छू गयी हो। और अपनी आखें खोलते हुए बोला—"यह क्या है? मुझे चैन से रहने दो, मैं तुम्हारे हाथ जोडता हू।"

उसने उसको अपने पास से हटा दिया और स्वय हट गया और ओल्गा को लगा कि उसके मुख से घृणा और क्रोध की भावना टपक रही थी। ठीक उसी समय वह देहाती औरत र्याबोवस्की के निकट बदगोभी के

शोरवे की थाली दोनो हाथो में सभाले हुए आयी और ओल्गा इवानोव्ना ने देखा कि उसके मोटे अगूठे शोरवे से भीगे हुए थे। पेट के ऊपर साया कसे हुए वह गन्दी औरत, वह शोरवा जिस पर र्‌यावोवस्की टूट पडा, वह झोपडी, यह जीवन जो शुरू में अपनी सरलता और कलात्मक वेढगेपन के कारण इतना आनन्ददायक प्रतीत होता था, अव उसे भयकर रूप से असह्य लगने लगा। एकदम अपमानित-सी होकर उसने रुखाई से कहा

"हमें कुछ समय के लिए साथ छोडना होगा नही तो ऊव और खीज में हम आपस ही में लड वैठेंगे। मै परेशान हो गयी हू। आज ही मैं चली जाऊगी।"

"कैसे? झाडू पर चढकर?"

"आज वृहस्पतिवार है और स्टीमर साढे नौ वजे जायेगा।"

"अच्छा? तो ठीक ही है फिर चली ही जाओ" र्‌यावोवस्की ने नैपकिन न होने पर तौलिये से ओठ पोछते हुए धीरे से कहा, "तुम्हारा मन यहा नही लगता और मैं इतना स्वार्थी नही हू कि तुम्हे रोके रखने का प्रयास करू। जाओ, हम फिर २० तारीख के वाद मिलेगे"।

ओल्गा इवानोव्ना के मन का वोझ उतर गया और वह अपना सामान वाधने लगी। उसका मुख सन्तोष से दमक उठा। "क्या यह सचमुच सभव है?" उसने अपने मन से प्रश्न किया— "मै शीघ्र ही अपने दीवानखाने में वैठकर चित्र वनाऊगी, अपने सोने के कमरे में सोऊगी और कपडा विछे हुए मेज़ पर भोजन करूगी?" उसके कन्धो से एक वोझ-सा उतर गया था और वह कलाकार से रुष्ट नही थी।

"मैं अपने रग और चित्र वनाने की कूची तुम्हारे लिए छोड जाऊगी, र्‌यावूशा," उसने पुकार कर कहा, "यदि कुछ वच जाये, तो तुम उन्हें साथ लेते आना अच्छा देखो जव मैं न रहू तव तुम आलसी

न वन जाना, मन उदास कर न बैठ रहना काम करना! बड़े प्यारे हो तुम, र्याबूशा!"

नौ बजे र्याबोवस्की न बिदाई का चुम्बन किया, ओल्गा के ख्याल में इसलिए कि जिसमें उसे स्टीमर पर कलाकारो के सामने चुम्बन न करना पड़े। फिर वह उसको जहाज़ की गोदी तक पहुचाने गया। स्टीमर शीघ्र ही आया और उसे लेकर चल पड़ा।

ढाई दिन में वह घर पहुच गयी। अपना हैट और बरसाती उतारे बिना, घबड़ाहट से हाफते हुए वह दीवानखाने में घुस गयी और वहा से खाने के कमरे में। दीमोव कमीज़ पहने, वास्कट के बटन खोले मेज़ पर बैठा चाकू एक काटे के दान्तो पर तेज़ कर रहा था। उसके सामने प्लेट में भुना हुआ मुर्गा रखा हुआ था। ओल्गा इवानोव्ना घर में यह निश्चय को लेकर आयी थी कि उसे सारी बात अपने पति से छिपाये रखनी चाहिए और ऐसा करने की योग्यता और शक्ति उसमें थी भी। परन्तु अपने पति की खुली, नम्र, प्रसन्न मुसकान और उसकी आखो में चमकते हुए सुख को देखकर उसे ऐसा लगा कि ऐसे मनुष्य को धोखा देना उसके लिए उतना ही नीचतापूर्ण, घृणित और असभव होगा जितना कि कलक लगाकर बदनाम करना, चोरी अथवा हत्या करना। उसने उसी क्षण निश्चय किया कि जो कुछ बीती है, पूरी कह सुनाये। अपने पति को चुम्बन करने और गले मिलने का अवसर प्रदान करके, वह उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गयी और अपना मुख दोनो हाथो से छिपा लिया।

"यह क्या? अरे यह क्या? मम्मो," उसने स्नेहपूर्वक पूछा, "क्या मै बहुत याद आता था?"

उसने अपना मुह उठाया, जो शर्म से लाल हो उठा था, और अपराधी की भाति विनती भरी दृष्टि अपने पति पर डाली परन्तु शर्म और डर ने उसको सच बात बताने से रोक दिया।

"कुछ भी नही " उसने कहा, "मैं तो "

"अच्छा बैठा जाय," उसने उसको उठाकर मेज पर बैठाते हुए कहा, "अब ठीक है थोडा सा मुर्ग लो। तुम्हे भूख लगी है, मेरी जान।"

उसने उत्सुकतापूर्वक अपने परिचित वातावरण में सास ली, कुछ मुर्ग खाया और वह स्नेहपूर्वक उसे घूरता और आनन्द से हसता रहा।

६

जाडा सम्भवत आधा बीत चुका था जब दीमोव को सन्देह होने लगा कि उसे धोखा दिया जा रहा है। वह अब अपनी पत्नी से आखें नही मिला सकता था मानो स्वय उसकी अन्तरात्मा दूषित हो गयी हो। अब वह उससे मिलता तो प्रसन्नता से मुस्कराता भी नही था, और उसके साथ एकान्त में जितना कम हो सके, रहने के लिए वह छोटे बालो और झुर्रीदार चेहरे वाले अपने एक मित्र कोरोस्तेल्योव को बराबर अपने साथ भोजन के लिए लाने लगा। वह मित्र ओल्गा इवानोव्ना के सम्बोधित करते ही घबडाहट में अपने कोट के बटन खोलने और बन्द करने लगता और फिर अपनी बाईं मूछ पर दाहिने हाथ से ताव देने पर उतर आता। भोजन के समय डाक्टर बात किया करते कि उदर को वक्षस्थल से अलग करनेवाली झिल्ली बहुत ऊची हो तो कभी किसी को दिल धड़कने का दौरा पडता है, या इधर मानसिक रोग अधिक फैलने लगे है, या दीमोव को कल एक रोगी की शव-परीक्षा करने में, जिसकी मृत्यु पीलिया में हुई थी, पित्ते की थैली में कैन्सर का पता चला था। ऐसा लगता था कि वे इस प्रकार की डाक्टरी बातचीत केवल इसलिए करते रहते थे कि ओल्गा इवानोव्ना को बोलने

अर्थात झूठ बोलने का अवसर न मिले। खाना खाने के बाद कोरोस्तेल्योव पियानो पर बैठ जाता और दीमोव ठण्ढी सास भर कर पुकारता—

"अरे भाई, क्या करे ? कोई विषादभरी धुन बजाओ।"

कन्धे ऊचे उठाये अपनी उगलिया फैलाकर कोरोस्तेल्योव एक दो सुर बजाता और पूरी शक्ति से ऊचे स्वर में गाने लगता—"दिखा दो वह जगह मुझ को जहा इस देश में रूसी किसान पीडा से नही कराहता।" और दीमोव एक और ठण्ढी सास लेकर अपना सिर अपनी बन्द हथेली पर टिका लेता और विचारो में डूब जाता।

ओल्गा इवानोव्ना अब अत्यन्त असावधानी से रहने लगी थी। वह रोज़ प्रात उठती तो उसका चित्त अधिक से अधिक बिगडा होता। उस समय उसका निश्चय होता कि अब वह र्‌यावोवस्की से प्रेम नही करती। खुदा का शुक्र है कि दोनो के बीच सम्बन्ध का अन्त होगा। परन्तु एक प्याला कहवा पीने के बाद वह अपने को याद दिलाती कि र्‌याबोवस्की ने उसके पति को उससे छीन लिया है और अब वह बिना पति और बिना र्‌यावोवस्की के रह गयी है। उसे याद आता कि उसके मित्र किसी अद्‌भुत चित्र की बात कर रहे थे जिसे र्‌याबोवस्की प्रदर्शन के लिए तैयार कर रहा था जो चित्रकार पोलेनोव की शैली में प्राकृतिक दृश्य और समस्यामूलक चित्र का सम्मिश्रण सा था और जो कोई भी उसके स्टूडियो में गया था उसकी प्रशसा की झडी लगा देता था। परन्तु ओल्गा ने अपने मन को समझाया कि उसने यह चित्र मेरे ही प्रभाव से बनाया है और मेरे ही प्रभाव मे उसकी कला का इतना महान विकास हुआ है। मेरा प्रभाव इतना लाभप्रद, इतना वास्तविक रहा है कि यदि मै उसे छोड दू तो वह धूल में मिल जायगा। उसे यह भी याद आता कि जब वह पिछली बार मिलने आया तो उसने भूरा कोट पहन रखा था जिसमें चादी के धागे बिने थे, टाई नयी

थी, और उसने वडे करुणमय स्वर में पूछा था, "मै सुन्दर हू ?" वह लम्वे घुघराले वालो और नीली आखो के कारण वहुत सुन्दर था। कम से कम वह तो ऐसा समझती थी ही और वह उसपर अपना प्रेम-भाव प्रदर्शित कर रहा था।

यह सव और इसी प्रकार की और वाते याद करती, स्वय परिणाम निकालती हुई, वह जल्दी-जल्दी कपडे पहनती और वडी वेचैनी लिये र्‌यावोवस्की के स्टूडियो पहुच जाती। वह उसे प्राय प्रसन्नचित्त और अपने चित्र की प्रशसा करते हुए पाती, जो वास्तव में अत्यन्त सुन्दर था। वह तरग में होता, हमी ठट्ठे की वाते करता और गभीर प्रश्नो को हमी में टाल देता। ओल्गा इवानोव्ना को चित्र से ईर्ष्या और घृणा थी, परन्तु वह सदैव ही पाच मिनट तक उसके सामने शिष्ट मौन में खडी रहती, और तव जिस प्रकार लोग मन्दिर मे ठण्ढी सासे भरते है, भरकर कहती– "हा तुमने ऐसी चीज़ अव तक नही वनायी। तुम जानते हो, मुझे तो उससे डर लगने लगता है।"

तव वह उससे प्रेम करते रहने के लिए प्रार्थना करती और विनती करती कि उसे ठुकरा न दे और उस दुखी दीन जीव पर दया करे। वह रोती, उसके हाथ चूमती, उससे प्रेम का आश्वासन प्राप्त करने का प्रयत्न करती और यह वतलाती कि उसके विना, वह भटक कर खो जायेगा। तव उसे पूरी तरह वौखला देने और अपना अपमान करा चुकने के वाद वह दर्ज़िन की दूकान पर या एक जान पहचान की अभिनेत्री के यहा नाटक के टिकट लेने के लिए चली जाती।

जिस दिन वह स्टूडियो में न मिलता, वह उसके लिए धमकी का एक परचा छोड जाती कि तुम आज ही न आये तो ज़हर खाकर मर जाऊगी। डर के मारे वह मिलने जाता और भोजन के लिए रुका रहता।

उसके पति के उपस्थित होते हुए भी उसे कोई लाज न आती और वह उसके लिए अपमानजनक शब्दो का प्रयोग करता, और वह भी उसका उत्तर उन्ही शब्दो में देती। दोनों एक दूसरे को अपने मार्ग में बाधक समझते थे, और समझते थे कि दोनो अत्याचारी और शत्रु हैं। उससे उन्हें और भी क्रोध आता था और क्रोध में उन्हे इस बात का ध्यान भी नही रहता था कि उनका व्यवहार कितना अभद्र है। यहा तक कि छोटे बालो वाला कोरोस्तेल्योव भी सब कुछ समझ जाता था। भोजन के बाद र्याबोवस्की जल्दी से बिदा होकर चल देता।

"कहा जा रहे हो?" ओल्गा इवानोव्ना उससे ड्योढी पर घृणा की दृष्टि से देखती हुई पूछती।

त्योरिया चढाते हुए आखें आधी बन्द करके वह किसी ऐसी महिला का नाम ले लेता जिसे वह दोनो जानते थे। स्पष्ट होता कि वह उसकी ईर्ष्या की हसी उडाना और उसे चिढाना चाहता था। वह अपने सोने के कमरे में जाकर लेट जाती। ईर्ष्या, क्रोध, अपमान और लज्जा के कारण वह तकिया दात से फाडती और ज़ोर ज़ोर से सिसकिया भरने लगती। तब दीमोव कोरोस्तेल्योव को दीवानखाने ही में छोड, सोने के कमरे में धीरे धीरे जाता और कुछ झेंपते, कुछ घबडाते हुए धीमे स्वर में कहता –

"इतने ज़ोर से मत रोओ, मम्मो रोना किसके लिए? इस मामले में तुम्हे तो चुपचाप रहना चाहिए लोगो को इसका पता क्यो देती हो जो हो गया उसे सुधारना असम्भव है।"

अपनी ईर्ष्या दबा न पाने पर जिससे कि उसकी कनपटिया तक फडकने लगती थी और अपने मन को यह समझाते हुए कि अभी भी गुत्थी को सुलझाया जा सकता है, वह उठ पडती, मुह हाथ धोती, अपने आसू भरे मुख पर पाउडर थोपती और जिस महिला का नाम

र्यावोवस्की ने वताया होता उसी के घर की ओर चल पड़ती। र्यावोवस्की को वहा न पाकर वह दूसरे घर को, फिर तीसरे घर को भागती पहले पहल तो उसे इन यात्राओ पर लज्जा आती थी। परन्तु शीघ्र ही वह इसकी आदी हो गयी। कभी कभी वह एक ही शाम को अपनी जान-पहचान की सभी स्त्रियो के घर र्यावोवस्की की खोज में हो आती और वह सभी उसके उद्देश्य को समझती थी।

एक वार उसने र्यावोवस्की से अपने पति के विषय में कहा—

"वह आदमी मुझे अपनी महान उदारता से दवा रहा है।"

यह वाक्य उसे इतना प्रिय लगा कि जव कभी उसकी भेंट उन कलाकारो में से किसी से होती, जो र्यावोवस्की से उसके सम्वन्ध का रहस्य जानते थे, वह अपने पति का ज़िक्र वड़े प्रवल सकेत से करते हुए कहती—

"वह आदमी मुझे अपनी महान उदारता से दवा रहा है।"

उनके जीवन का ढर्रा पिछले वर्ष की भाति ही चलता रहा। वुधवार की सध्या को भोजन होते। अभिनेता कविता सुनाता, कलाकार चित्र वनाते, वादक वायलिन वजाता, गायक गीत गाता और ठीक साढे ग्यारह वजे खाने के कमरे का द्वार खुल जाता और दीमोव मुसकराते हुए कहता—

"महाशयो, खाने के लिए चलिये।"

ओल्गा इवानोव्ना सदैव की भाति ही वड़े लोगो को खोजती रहती, उनका पता लगाती और तव भी उसे सन्तोष नहीं होता और वह दूसरो की खोज में लग जाती। सदैव की भाति ही, वह रोज़ रात को देर से घर लौटती, पर जव वह आती तो उसे दीमोव कभी भी सोया हुआ न मिलता जैसा कि पिछले साल हुआ करता था।

वह अपने अध्ययन के कमरे मे बैठा काम कर रहा होता। वह तीन बजे सोता और आठ बजे उठ जाता था।

एक दिन सध्या समय जब वह नाट्यशाला जाने से पहले शीशे में अन्तिम बार अपने को देख रही थी, दीमोव लम्बा कोट पहने और सफेद टाई लगाये सोने के कमरे में आ गया। वह बडे दीन भाव से मुसकराया और पहले की भाति खुशी से पत्नी की आखो में आखें डाल दी। उसका चेहरा चमक रहा था।

"मैंने अभी अभी अपना प्रबन्ध प्रस्तुत किया है," उसने मुडे घुटनो पर पतलून ठीक करते हुए कहा।

"सफलता मिली?" ओल्गा इवानोव्ना ने पूछा।

"हा, हुई तो।" वह हसा और अपनी गर्दन ऊची उठा ली, जिसमें वह अपनी पत्नी का मुह शीशे में देख सके क्योकि वह अभी भी उसकी ओर पीठ किये खडी हुई अपने बालो को ठीक कर रही थी। "तो, फिर और क्या होता?" उसने फिर कहा, "इसकी भी बडी सभावना है कि वह मुझे रोगविज्ञान विभाग में 'दसेन्त' बना दें। तुम जानती हो, रग ढग तो ऐसा ही है।"

उसके प्रसन्न मुख और प्रफुल्लित भाव से स्पष्ट था कि यदि ओल्गा इवानोव्ना उस के आनन्द और विजयोल्लास में सम्मिलित हो जाती तो वह उसका सब कुछ क्षमा कर देता। भूत और भविष्य दोनो ही और सब कुछ भुला देता। परन्तु वह न तो यही समझी कि दसेन्त कौन होता है और न वह यही जानती थी कि रोगविज्ञान किस चिडिया का नाम है। साथ ही उसे खटका लगा था कि कही नाट्यशाला पहुचने में देर न हो जाये। इसलिए उसने कुछ भी नही कहा।

वह कुछ मिनट तक वहा बैठा रहा और फिर इस प्रकार मुसकराते हुए मानो क्षमा माग रहा हो, उठकर चल दिया।

वह वडी ही वेचैनी का दिन था।

दीमोव के सिर में भयकर पीडा थी। उसने प्रात न कुछ भोजन किया और न अस्पताल गया, वल्कि सारे दिन अपने अध्ययन के कमरे में कोच पर पडा रहा। ओल्गा इवानोव्ना सदैव की भाति ही, वारह वजे के वाद ही र्‌यावोवस्की के पास चली गयी। उसे अपना वनाया हुआ फलो-फूलो के चित्र का प्रारूप दिखाना था और यह पूछना था कि वह उससे मिलने क्यो नही आया। वह जानती थी कि उसका प्रारूप वहुत घटिया है और उसने केवल इसीलिए वनाया है कि जाकर कलाकार से भेंट करने का वहाना मिल जाय।

वह घन्टी वजाये विना भीतर चली गयी और जिस समय कि वह ड्योढी में अपने ऊपर वाले रवड के जूते उतार रही थी, तो उसे ऐसा लगा कि स्टूडियो में पाव की दवी दवी आहट सुनायी दे रही है जिसके साथ किसी औरत के कपडो की सरसराहट भी सुनायी पड रही है। जव उसने जल्दी भीतर ताका तो उसे एक तेज़ छिपते भूरे साये की झलक दिखायी पडी जो एक क्षण के लिए चमक कर एक लम्वे किरमिच के चित्र के पीछे लुप्त हो गया, जिस पर चित्र रखने के चौखटे का फर्श तक एक काला कपडा पडा हुआ था। इसमें कोई सन्देह नही था कि कोई औरत उसके पीछे छिपी हुई है। कितनी वार स्वय ओल्गा इवानोव्ना को इस पर्दे के पीछे छिपने का स्थान मिला था! स्पष्ट था कि र्‌यावोवस्की वडे पसोपेश में पड गया, अपने दोनो हाथ उसकी ओर फैला दिये मानो उसके आने पर उसे वडा आश्चर्य हो रहा हो। उसने वनावटी मुस्कराहट से कहा—

"आ आ हा! खुशी हुई तुमसे मिलकर कहो क्या खबर है?"

ओल्गा इवानोव्ना की आखो में आसू डबडबा आये। उसे अपने अपमान और विवशता का अनुभव हुआ और चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाये, वह अपनी बात उस दूसरी स्त्री के सामने नही कह सकती थी, जो उसकी प्रतिद्वन्दी थी, वह धोखेबाज़ जो इस समय परदे के पीछे खडी थी और निस्सन्देह उसपर हस रही थी।

"मै बस तुमको अपना प्रारूप दिखलाना चाहती थी," उसने ऊचे डर भरे स्वर में कहा और उसके ओठ कापने लगे। "यह फल-फूल का चित्र है।"

"आ आ हा, स्केच "

कलाकार ने चित्र अपने हाथो में ले लिया, और उसपर आखें गडाये मानों अन्यमनस्कता से दूसरे कमरे में चला गया। ओल्गा इवानोव्ना उसके पीछे पीछे गर्दन झुकाये चली गयी।

"फल-फूल चित्र, जोड नही अन्यत्र," वह यन्त्रवत् तुक मिलाते हुए बडबडाने लगा "अन्यत्र, चित्र-विचित्र, यत्रतत्र, पुत्र-कलत्र "

स्टूडियो से जल्दी जल्दी पग उठाने की चाप और साये की सरसराहट सुनायी पडी। इसका अर्थ यह था कि 'वह' जा चुकी है। ओल्गा इवानोव्ना के मन में एकदम से यह इच्छा हुई कि ज़ोर ज़ोर से चिल्लाये, कलाकार के सिर पर कोई भारी चीज़ दे मारे और भाग जाय परन्तु उसे आसुओ ने अधा और अपमान ने दलित बना दिया था, और उसे ऐसा लग रहा था मानो अब वह कलाकार ओल्गा इवानोव्ना नही रही बल्कि कोई तुच्छ जीव बनकर रह गयी है।

"मै तो थक गया" कलाकार ने स्केच को देखते हुए और अपने सिर को झटका देकर अपनी थकावट का बोझ उतार फेंकने का प्रयत्न

करते हुए मुरझाये स्वर में कहा, "यह अच्छा तो है, परन्तु प्रारूप मात्र यह आज भी है, पिछले साल भी था, एक महीने वाद भी प्रारूप ही होगा क्या तुम्हारा मन इनसे ऊवता नही? तुम्हारे स्थान पर मैं होता तो कला छोडकर सगीत या ऐसे ही किसी कार्य को गभीरता से पकडता। तुम कलाकार नही हो, तुम्हे इसका पता है, तुम सगीतकार हो। परन्तु सच मानो मैं वहुत थक गया हू। अच्छा मै कुछ चाय मगवाता हू, मगवाऊ?"

वह कमरे से वाहर चला गया और ओल्गा इवानोव्ना ने उसको अपने नौकर से वाते करते सुना। विदाई के झगडे से वचने और विशेपकर अपने को रो पडने से वचाने के लिए जव तक र्‌यावोवस्की वापस आये, वह ड्योढी में भाग आयी, अपने जूते पहने और वाहर निकल पडी। गली में वाहर पहुचते ही उसने स्वतन्त्रता से सास ली और उसके मन को यह अनुभव हुआ कि उसने र्‌यावोवस्की को, कला को और उस असह्य अपमान की भावना को जो उसे स्टूडियो में सहना पडा था, एक झटके में सदैव के लिए झाड कर फेंक दिया है। यह अध्याय समाप्त!

वह अपनी दर्जिन के यहा गयी, तव वरनई के पास जो अभी अभी लौटा था, फिर वरनई के यहा से स्वरलिपियो की एक दुकान पर सारे समय वह सोचती रही कि कैसे र्‌यावोवस्की को एक निष्ठुर कठोर, पर मर्यादापूर्ण पत्र लिखेगी और फिर वह वसन्त या गर्मी में अपने वीते काल को सदैव के लिए उतार फेंकने और नया जीवन आरम्भ करने के लिए दीमोव के साथ क्रीमिया चली जायेगी।

वह घर वहुत देर से पहुची, परन्तु कपडा वदलने के लिए अपने कमरे में जाने के वदले वह सीधे दीवानखाने में पत्र लिखने के लिए चली गयी। र्‌यावोवस्की ने उससे कहा था कि तुम कलाकार नहीं हो, और

अब बदले में वह उसे बतायेगी कि वह हर साल एक ही चित्र लगातार बनाता रहा और एक ही बात को लगातार हर रोज़ कहता रहा है, वह अब चुक गया और जो कुछ विकास उसका हो चुका है, अब उससे अधिक कभी भी प्राप्त नही कर सकता। वह यह भी जोड देना चाहती थी कि उसके अच्छे प्रभाव का ऋण उस र्याबोवस्की पर लदा हुआ है और अब जो उसका व्यवहार बिगड गया है, उसका कारण यह है कि उसके प्रभाव को, हर प्रकार के घृणित जीवो ने जिनमें से एक ने चित्र के पीछे आज मुह छिपाया था, चौपट कर दिया है।

"मम्मो!" दीमोव ने अपने अध्ययन के कमरे से दरवाज़ा खोले बिना ही आवाज़ लगायी "मम्मो!"

"कहो, क्या चाहिए?"

"मेरे पास मत आना, मम्मो, बस दरवाज़े पर आ जाओ। यह ठीक है। मुझे डिप्थीरिया, एक दो दिन पहले अस्पताल में लग गयी है और अब मेरा जी बहुत खराब है। ज़रा कोरोस्तेल्योव को बुलवाओ।"

ओल्गा इवानोव्ना अपने पति को सदैव उसे दीमोव कहकर कुल नाम से पुकारती थी, जैसा कि वह अपने सभी पुरुष मित्रो के साथ करती थी। उसका नाम ओसिप था, यह नाम उसे पसन्द नही था क्योकि उससे प्रसिद्ध रूसी लेखक गोगोल वाले ओसिप की याद आ जाती थी, इसके अतिरिक्त ओसिप और आर्खीप के नामो में बचकाना श्लेषालकार भी होता था। परन्तु इस समय वह चिल्ला उठी—

"अरे ओसिप, नही, नही, ऐसा नही हो सकता!"

"उसको बुलवा लो। मेरा जी बिगड रहा है" दीमोव ने कमरे के भीतर से कहा और ओल्गा इवानोव्ना को सुनायी पडा कि

वह चलकर कोच के पास पहुचा और लेट गया। "उसको बुलवा दो!" ऐमा लग रहा था मानो उसका स्वर खोखला हो गया।

"क्या मचमुच ऐसा हो सकता है?" ओल्गा इवानोव्ना ने भयभीत होकर मोचा। "अरे यह तो भयकर है!"

उसे पता नही था कि उसने ऐसा क्यो किया परन्तु वह एक मोमवत्ती लेकर अपने कमरे में चली गयी और अभी वह इमी सोच में थी कि क्या करे कि उमे अपनी प्रतिछाया शीशे में दिखायी पड गयी, अपना पीला भयभीत मुख, ऊची फूली फूली आस्तीनो वाले जाकेट देख जिसमें आगे पीली झालर लगी हुई थीं और साये पर आडी आडी धारिया वनी हुई थी, उमने अपने आपको भयकर डरावने तथा घृणित जीव के रूप में पाया। उसके मन के भीतर दीमोव के लिए, अपने प्रति उसके अगाध प्रेम, उसके तरुण जीवन, यहा तक कि उसकी सूनी खाट के लिए जिमपर वह एक लम्बे समय से नही सोया था, करुणा का एक महासागर उमड पडा और उसी नम्र चिरस्थायी आज्ञाकारी मुस्कान की उसको याद आ गयी। वह फूट-फूट कर रोने लगी और उसने कोरोस्तेल्योव को एक वडा कारुणिक पत्र लिखा। रात के दो वजे थे।

८

ओल्गा इवानोव्ना का सिर नीद न आने से भारी था, उसके वाल उलझे हुए थे और उसके मुख से अपराधी की भावना सी झलक रही थी। वहुत माधारण सी लगती हुई वह जव प्रात सात वजे अपने मोने के कमरे से वाहर निकली तो एक काली दाढी वाले मज्जन, जो देखने में डाक्टर लगते थे, ड्योढी में उसके पाम से गुज़रे। दवाओ की गध फैली हुई थी। कोरोस्तेल्योव अध्ययन के कमरे के दरवाज़े पर खडा अपनी वाईं मूछ को दाहिने हाथ से ऐंठ रहा था।

"क्षमा कीजिये, परन्तु मैं आपको उनके पास नही जाने दूगा," उसने उदास स्वर में ओल्गा इवानोव्ना से कहा, "कही बीमारी आपको भी न लग जाय। फिर, उसके पास आपका जाना व्यर्थ ही है, उसे तो अब सन्निपात हो गया है।"

"क्या उसे सचमुच डिप्थीरिया है?" ओल्गा इवानोव्ना ने धीरे से पूछा।

"जो कोई भी अपने आपको अकारण जोखिम में डालता है, मेरा बस चले तो उसे जेल भिजवा दू," कोरोस्तेल्योव उसके प्रश्न का उत्तर दिये बिना ही बडबडाया, "क्या तुम्हे पता है, उसे छूत कैसे लगी? उसने डिप्थीरिया के रोगी, एक छोटे लडके के गले की पीप चूस ली थी। और यह सब किस कारण? निरी मूर्खता पागलपन "

"क्या यह बहुत खतरनाक है?" ओल्गा इवानोव्ना ने पूछा।

"हा, कहते तो यही है कि बहुत खराब केस है। अब किसी प्रकार श्रेक को बुलवाना है।"

लाल बालो, लम्बी नाक और यहूदियो की बोली वाला एक छोटा-सा आदमी आया और उसके पीछे लम्बा, झुकी कमर और बिखरे बालो वाला व्यक्ति, जो बडा पादरी-सा लग रहा था और फिर उससे कम आयु का एक तगडा लाल मुह का व्यक्ति जो चश्मा लगाये था। वे सभी डाक्टर थे जो अपने साथी को बारी बारी देखते रहने और उसकी तीमारदारी के लिए आये थे। कोरोस्तेल्योव अपनी बारी खत्म हो जाने पर भी अपने घर नही गया और कमरो में पागलो की भाति फिरता रहा। नौकरानी डाक्टरो के लिए चाय लायी और बारबार दौड कर दवा की दूकान जाती थी, इसलिए कमरो को साफ करनेवाला कोई नही था। चारो ओर सन्नाटा था और उदासी छायी थी।

श्रोल्गा इवानोव्ना श्रपने सोने के कमरे में बैठी श्रपने मन में मोच रही थी कि भगवान उसे श्रपने पति को धोखा देने के लिए दण्ड दे रहा है। वह मौन, शान्त, गूढ व्यक्ति, जिसके व्यक्तित्व को मधुर स्वभाव ने सुखा दिया था, जो हर बात मानने को तैयार रहता, दयालुता की अधिकता ने जिसे कमज़ोर कर दिया था, इस समय खाट पर पडा मौन ही इस पीडा को सहन कर रहा था। यदि वह शिकायत करता, या सन्निपात में ही कुछ बडबडाता, तो उसकी देख-भाल करनेवाले डाक्टरो को पता चल जाता कि विपत्ति केवल डिप्थीरिया की लाई हुई नही है। वे अगर कोरोस्तेल्योव से पूछते, वह तो मव कुछ जानता था श्रौर यह अकारण ही नही था कि वह श्रपने मित्र की पत्नी को ऐसी निगाह से देखता था जो यह कहती प्रतीत हो रही थी कि श्रमली दुष्टात्मा वही थी श्रौर डिप्थीरिया तो केवल उसका सहयोगी मात्र था। वोल्गा की चान्दनी रात, प्रेम के श्राश्वासन, किसान की झोंपडी का काव्यपूर्ण जीवन सव कुछ वह भूल गयी श्रौर उमे केवल एक ही वात याद रही कि वह किसी गन्दी चिपचिपी वस्तु में पडी है श्रौर कभी भी घोकर इस गन्दगी को साफ नही कर सकती श्रौर यह कुछ कोरी चचलता श्रौर घटिया मौज उडाने के लिए

"श्रोह, मैं कितनी झूठी रही हू!" उमने र्‌याबोवस्की श्रौर श्रपने बीच के अशान्त प्रेम को याद करते हुए श्रपने मन से कहा, "भस्म हो जाय यह सब कुछ!"

चार वजे वह कोरोस्तेल्योव के साथ खाने पर वैठी। कोरोस्तेल्योव ने कुछ नही खाया, वस थोडी लाल शराब पीता श्रौर मुह वनाता रहा। उमने भी कुछ नही खाया। वह ईश्वर से मौन प्रार्थना करती श्रौर मनौती मनाती रही कि दीमोव अच्छा हो जाय तो मैं उसमे फिर प्रेम करूगी श्रौर पतिव्रता स्त्री वन कर रहूगी। तव श्रपने सारे दुख

को क्षण भर के लिए भूलकर, वह कोरोम्तेल्योव की ओर देखती और उसे आश्चर्य होता, इस प्रकार का महत्वहीन, चुचुके हुए मुह और अशिष्ट व्यवहार वाला, गुमनाम व्यक्ति होना तो सचमुच बडा ही दुखदायी होगा। फिर उसे ऐसा लगा मानो अभी अभी ईश्वर का प्रकोप उस पर आ पडेगा क्योकि छूत लगने के डर से वह अपने पति के अध्ययन के कमरे में एक बार भी नही गई थी। उसपर सताप की भावना छायी हुई थी और उसे इस विश्वास ने पीडित कर रखा था कि अब उसका जीवन ऐसा नष्ट हो गया है कि अब उसे कभी सुधारा नही जा सकता

भोजन समाप्त होने पर शीघ्र ही अधेरा हो गया। जब ओल्गा इवानोव्ना दीवानखाने में गयी तो उसे कोरोस्तेल्योव सोफे पर सोता मिला। उसका सिर रुपहले धागे से कढे रेशमी गद्दे पर पडा था। "खर्र खर्र," वह खर्राटे ले रहा था, "खर्र, खर्र "

डाक्टर जो खाट के पास आते और चले जाते थे, वे इस सारी अव्यवस्था पर कोई ध्यान नही देते थे। दीवानखाने में खर्राटे लेता हुआ कोई मनुष्य, दीवालो पर टगे हुए चित्र, बेढगा फरनीचर, घर की मालकिन का उलझे बाल लिये घूमना और उसके कपडे की दुर्दशा, अब कोई बात भी किसी का ध्यान आकर्षित नही करती थी। एक डाक्टर किसी बात पर हस पडा, परन्तु उसकी हसी अत्यन्त अजीब लगी और सभी बेचैन-से हो गये।

ओल्गा जब दूसरी बार दीवानखाने में गयी तो कोरोस्तेल्योव आखें खोले सोफे पर बैठा पाइप पी रहा था।

"डिप्थीरिया के कीटाणु नाक के गढो में भर गये है," उसने दबे स्वर में कहा। "अब हृदय भी थकान के लक्षण प्रकट करने लगा है। हालत बुरी है।"

"फिर श्रेक को क्यो नही बुलवाते?" ओल्गा इवानोव्ना ने पूछा।

"वह आया था। उमी ने तो देखा कि डिप्थीरिया नाक तक पहुच गया है। अब श्रेक भी क्या है? श्रेक ग्रेक से कुछ नही होता। वह श्रेक है और मै कोरोस्तेल्योव हू और वस।"

समय अत्यन्त कष्टदायक मन्द गति से वीतता रहा। ओल्गा इवानोव्ना पूरे कपडे पहने अपने विस्तर पर, जो सवेरे से उलझा पडा था, ऊघ रही थी। ऐमा लगता था कि पूरा घर फर्श से लेकर छत तक लोहे के एक भारी ढेर से भरा हुआ है और उसे ऐसा लगता था कि वस यह ढेर हटा दिया जाय तो सभी खिल उठेंगे। चौंककर वह उठी तो उमने अनुभव किया कि यह लोहे का ढेर नही वल्कि दीमोव की वीमारी है।

"फल-फूल, चित्र-मित्र," उसने अपने मन में कहा और फिर ऊघते हुए–"चित्र मित्र, विचित्र और यह श्रेक कौन है? श्रेक, ट्रेक, रेक क्रेक। अरे मेरे सारे मित्र कहा गये? क्या उन्हे पता नही कि हम विपत्ति में फसे है? हे भगवान, हमें वचाओ, दया कर श्रेक ट्रेक "

फिर वही लोहे का ढेर ममय घिसटता जा रहा था और उसका कोई अन्त नही था, यद्यपि नीचे की मञ्जिल में घडी वरावर घण्टा वजाती लग रही थी। रह-रहकर घण्टी वजती थी, डाक्टर लोग दीमोव के पास आते थे नौकरानी थाली में एक खाली गिलाम लिये कमरे में आयी।

"आपका विस्तर ठीक कर दू, मालकिन?" उसने पूछा।

कोई उत्तर न मिलने पर वह फिर वाहर चली गयी। नीचे घडी ने घण्टा वजाया। ओल्गा इवानोव्ना ने स्वप्न में देखा कि वोल्गा पर वर्षा हो रही है और फिर उसके कमरे में कोई अपरिचित-सा व्यक्ति आ गया। दूसरे ही क्षण में उसने कोरोस्तेल्योव को पहचान लिया और खाट पर से उठ खडी हुई।

"क्या समय होगा?" उसने पूछा।

"लगभग तीन।"

"वह कैसे है?"

"कैसे? मैं तुम्हे बताने आया था कि वह मर रहा है "

उसने सिसकी दबा ली और खाट पर उसके पास अस्तीन से आसू पोछते हुए बैठ गया। पहले तो वह समझ ही नही पायी अचानक उसे काठ मार गया और धीरे धीरे उसने सलीब का चिह्न अपने सीने पर बनाया।

"मर रहा है " कोरोस्तेल्योव ऊचे स्वर में दुहराया और फिर सिसकने लगा। "मर रहा है क्योकि उसने आप को बलिदान कर दिया विज्ञान को कितनी बडी क्षति पहुची।" उसने कटुता भरे जोश से कहा—"हम सब की तुलना में वह एक महान मनुष्य एक अद्‌भुत मनुष्य था! कैसी प्रतिभा थी उसमें! हम सबको कितनी आशायें थी उससे।" कोरोस्तेल्योव अपन हाथ मलते हुए बोलता रहा। "हे भगवान! हे भगवान! वह कितना बडा वैज्ञानिक होता! कितना महान वैज्ञानिक! ओसिप दीमोव, ओसिप दीमोव! तुमने क्या कर लिया? हे भगवान!"

निराशा में कोरोस्तेल्योव ने अपना मुह दोनो हाथो से छिपा लिया।

"हाय कितनी बडी नैतिक शक्ति थी उसकी!" वह कहता रहा और किसी पर उसका क्रोध बढता गया—"दयालु, पवित्र स्नेहमय, निर्मल आत्मा! उसने विज्ञान की सेवा की और विज्ञान ही के लिए प्राण दिये। बैल की तरह काम करता दिन-रात। किसी ने भी उसे नही बख्शा और वह, तरुण विद्वान, भविष्य का प्रोफेसर, प्राइवेट डाक्टरी और रात रात बैठकर अनुवाद करने को विवश हुआ इन सब चिथडो का दाम चुकाने के लिए!"

कोरोस्तेल्योव ने ओल्गा इवानोव्ना की ओर घृणा की दृष्टि से

देखा, चादर को दोनो हाथो मे पकडा और क्रोध से उसे नोच डाला मानो अपराध उसी चादर का हो।

"उसने भी स्वय अपने को नही बख्शा और किसी ने भी उसे नही बख्शा। पर अब बात करने से क्या लाभ है?"

"हा, वह एक अद्भुत मनुष्य था।" दीवानखाने से गहरे स्वर में सुनायी पड़ा।

ओल्गा इवानोव्ना को उसके साथ अपना पूरा जीवन प्रारम्भ से अन्त तक विस्तार से याद आ गया। हर छोटी-बडी बात याद आ गयी और एकदम से उसे लगा कि वह सचमुच एक अद्भुत मनुष्य था, उसकी जान-पहचान के सभी लोगो की तुलना मे एक महान व्यक्ति था। उसे अपने स्वर्गीय पिता और उनके सभी मित्रो का उसके प्रति व्यवहार याद आया और उसे अनुभव हुआ कि सभी उसको भविष्य का एक महान व्यक्ति समझते थे। दीवाले, छत, लैम्प और फर्श की दरी सभी उसको ताना देते लग रहे थे, मानो कह रहे हो—"तू चूक गयी!" वह सोने के कमरे से रोती हुई दौड़ी और दीवानखाने में किसी अपरिचित व्यक्ति से आख बचाकर बढी और लपककर, अपने पति के कमरे में पहुच गयी। वह पलग पर निश्चल पडा था और कम्बल से उसकी कमर तक का शरीर ढका हुआ था। उसका मुख भयानक ढग से खिचा और पतला हो गया था और उस पर ऐसा भूरा पीलापन छा गया था, जो किसी जीवित मनुष्य के ऊपर नही होता। केवल उसके माथे, उसकी काली भौहो और उसकी परिचित मुस्कान से पता चलता था कि वह दीमोव है। ओल्गा इवानोव्ना ने उसकी छाती, माथा और हाथो को जल्दी जल्दी छुआ। छाती अभी तक गरम थी परन्तु माथा और हाथ अप्रिय ढग से ठण्डे हो चुके थे। और अधमुदी आखे घूर रही थी, ओल्गा को नही बल्कि कम्बल को।

"दीमोव!" उसने ज़ोर से पुकारा "दीमोव!"

वह उसे समझाना चाहती थी कि जो कुछ हुआ गलत हुआ और अभी सब कुछ नष्ट नही हुआ है, जीवन को अभी भी सुन्दर और आनन्दमय बनाया जा सकता है, वह एक असाधारण, अद्भुत, महान व्यक्ति है और वह जीवन भर उसकी पूजा करेगी, उसके आगे सिर झुकायेगी और सदैव उसका पवित्र भय मानेगी

"दीमोव!" उसने उसका कधा हिलाते हुए पुकारा। उसे विश्वास नही होता था कि वह अब फिर कभी नही उठेगा। "दीमोव, दीमोव, मै कहती हू।"

उधर दीवानखाने में कोरोस्तेल्योव नौकरानी से कह रहा था—

"अब पूछने को रह ही क्या गया? गिरजाघर जाओ और वही पूछ लेना कि भिखारिने कहा रहती है। वे शव को नहला देंगी और सब कुछ ठीक कर देंगी। वही सारा काम कर देंगी।

१८६२

वार्ड नम्बर छः

१

अस्पताल के अहाते में एक छोटी सी इमारत है जिसके चारो ओर जगली कटीले फूलो, चुभीली बिच्छुआ झाडी और जगली भाग का जगल सा है। इसकी छत बेरौनक और मोरचा खायी, चिमनी टूटती हुई, जीर्ण बरामदे की सीढिया घास से लदी हुई है और दिवालो के पलस्तर के हल्के अवशेष ही अब शेष हैं। यह इमारत अस्पताल के सम्मुख पडती है और इसका पृष्ठ भाग एक खेत की ओर है, जो कीले लगे बदरग घेरे से विभाजित होता है। ऊपर को उठी कीले, घेरा और स्वय यह इमारत वही उदासी भरी, मनहूस शक्ल उपस्थित करती है जो हमारे अस्पताल और जेल भवनो की विशेषता है।

यदि आप बिच्छुआ के झाड से भयभीत न हो, तो आप मेरे साथ उस सकरे मार्ग से आइए, जो इस इमारत तक चला गया है और तब इसके भीतर झाकिये। सामने का दरवाजा खोलते ही हम अपने को एक गलियारे में पाते है। दिवालो तथा चूल्हे के बराबर अस्पताल के कूडे करकट के ढेरो का अम्बार लगा हुआ है या जीर्ण-शीर्ण, अनुपयोगी कूडे का ढेर, गद्दे पुराने चोगे, बनियाइन, जाघिये, धारीदार नीली कमीजें, फटे हुए बूट, यह सब अडगडाकर बदबूदार अम्बार के रूप में पडा हुआ है।

चौकीदार निकीता, जो अपने कोट की वाह पर बावा आदम के ज़माने की पट्टिया लगाये रहनेवाला पुराना सिपाही है और जो बराबर अपने दातो के बीच पाइप दाबे रहता है, कूडे के इस ढेर पर आराम करता रहता है। उसकी बडी घनी भौहे, कठोर और नशे से तमतमाये चेहरे को भेडो की रखवाली करनेवाले स्तेपी कुत्ते की सी आकृति प्रदान करती है, उसकी नाक लाल है। छोटा, दुवला और इकहरे बदन का होते हुए भी उसकी चालढाल में एक रोव है, और उसकी मुट्ठिया वहुत बडी वडी है। वह उन एकनिष्ठ विश्वासपात्र, कार्यकुशल और बुद्धू लोगो में से है जो ससार की हर चीज़ से व्यवस्था को सर्वोपरि मानते है और यह विश्वास करते है कि मरीज़ो के लिए अच्छी पिटाई के मुकावले और कोई चीज़ नही है। यह विश्वास रखते हुए कि व्यवस्था को बनाये रखने के लिए इसके सिवा कोई चारा नही है वह मुह, सीने और पीठ पर अधाधुध रूप मे मुक्को की बर्षा करता रहता है।

यहा से हम उस विस्तृत कमरे मे प्रवेश करते है जो सिवाय उस जगह के जो गलियारे ने ले रखी है, इस पूरी इमारत को घेरे हुए है। दीवाले मटियाले नीले रग से रगी हुई है, चिमनी-विहीन पुराने झोपडे की तरह छत धुए से काली पड गयी है, जिससे यह सकेत मिलता है कि चूल्हे जाडो में कमरे को अपने विषाक्त धुए से भरते होगे। खिडकिया भीतर की ओर को लगे लोहे के छडो सहित घिनौना रूप प्रकट करती है। फर्श की लकडी की खपच्चिया मैली और छिली हुई है। यह स्थान सडी हुई गोभियो की महक, धुआ उगलती लैम्पो, खटमलो और अमोनिया से महकता रहता है। यहा पहुचते ही यहा की दुर्गन्ध से आपको यह ख्याल होता है कि आप किसी जगली जानवरो के लिए बने घर में घुस आये हैं।

चारपाइया फर्श मे जडी हुई है। अस्पताल के नीले चोगो में

लिपटे हुए तथा रात की टोपिया पहने हुए आदमी इन पर बैठे हुए एव लेट हुए मिलेगे। ये मानसिक रोगी हैं।

यहा ये पाच रोगी हैं। इनमें से केवल एक ही उच्चवर्ग से सम्वन्धित है, शेप सव साधारण जन है। वह, जो दरवाज़े के बिल्कुल समीप है, एक लम्वा दुवला आदमी है, जिसकी मूछें लाल रग की और आखें रात मे लाल हैं, यह मुट्ठियो पर सिर रखे हुए बैठा है और नज़र गडाकर सामने की ओर ही घूरता रहता है। रात और दिन वह गम मनाता रहता है, वह सिर हिलाता रहता, उसास भरता और मुह मोडते हुए मुस्कराता। वातचीत में वह शायद ही कभी हिस्सा लेता और उससे वोलने पर वह कभी जवाव न देता। जव उसके लिए खाना पानी आता है तो वह उन्हे यत्रवत ग्रहण करता है। उसकी पीडा निरन्तर खासी और गालो पर छा जानेवाली ललाई से लगता है कि वह तपेदिक की शुरू की मजिल मे है।

दूसरी चारपाई पर एक छोटे-से फुर्तीले और जानदार वूढे आदमी ने अधिकार कर रखा है, जिसकी दाढी नुकीली और वाल किसी नीग्रो के समान काले घुघराले हैं। दिन में वह या तो इस खिडकी से उस खिडकी तक फुदकता फिरता या चारपाई पर पलथी मारकर वैठा रहता। इस वीच वारी वारी से वह या तो चिडियो की तरह अथक रूप से सीटी वजाता, धीमे स्वर में गाता या फिर केवल दवी आवाज मे हसता। रात में भी वह वालको जैसी चपलता और खुशमिज़ाजी का प्रदर्शन किया करता, प्रार्थना करने के लिए वह उठ खडा होता, यानी अपने सीने को अपने दोनो मुक्को से पीटने लगता और दरवाजे पर खटर-पटर करने लगता। वह टोप वनानवाला यहूदी मोज़ेज़ है और वीस वरस पहले जव उसकी दुकान जली तवसे वह पागल है।

वार्ड नम्वर छ का वही एक मात्र निवासी है, जिसको भवन से वाहर अस्पताल के अहाते में और वाहर सडक पर जाने की अनुमति

है। वर्षों से वह इस विशेषाधिकार का आनन्द लेता रहा है, सभवत इस कारण कि वह अस्पताल में इतने लम्बे समय से रहता आया है और ऐसा शान्त एव निरापद पागल है कि नगर के परिहास का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है, जिसको छोटे बच्चो की भीड और कुत्तो से घिरा हुआ देखना प्रतिदिन के जीवनक्रम का एक अग बन गया है। अपने अस्पताल के चोगे, रात की बेतुकी टोपी और स्लीपरो को पहने हुए या कभी कभी नगे पाव और चोगे के नीचे बिल्कुल नगा हो, वह बाज़ारो मे घूमता फिरता और छोटी दुकानो के सामने और फाटको पर एक कोपेक मागते हुए रुकता जाता, कही से उसे खमीरे की रोटी का टुकडा और कही से थोडी सी क्वास या एक कोपेक मिलता और इसके बाद वह अपने अस्पताल में सन्तुष्ट और धनी होकर लौट जाता। जो कुछ भी लेकर वह लौटता है उसे निकीता निकाल लेता है। इस काम को सिपाही लट्ठमार ढग से और गुस्से से करता है, वह उसकी जेबो की तलाशी लेते हुए उन्हे उलट देता और ईश्वर को साक्षी बनाते हुए कहता कि वह अब भविष्य में कभी भी उस यहूदी को बाहर बाज़ारो में जाने की इजाज़त नही देगा और कहता कि अव्यवस्था से बढकर निकम्मी बात कुछ नही है।

मोज़ेज़ परमार्थी व्यक्ति है। वह अपने कमरे के साथियो के लिए जब वे प्यासे रहते, पानी ले आता, जब वे सो जाते, उन्हे ओढना उढा देता, प्रतिज्ञा करता कि वह हर एक के लिए एक एक कोपेक ले आयेगा और सबके लिए नयी टोपिया बना देगा। वही है जो अपने बाई ओर के पडोसी को जिसको लकवा मार गया है चम्मच से खाना खिलाता है। यह काम वह किसी दया की, अथवा मानवीय भावना की दृष्टि से नही करता, वल्कि केवल उदाहरण के अनुसरण स्वरूप अज्ञात ही अपने दाहिनी ओर के पडोसी ग्रोमोव के प्रभाव में आकर करता है।

लगभग ३३ वर्षीय इवान दिमीत्रिच ग्रोमोव, जो अच्छे परिवार का है और जो कभी नाज़िर और प्रान्तीय सरकार के कार्यालय में सेक्रेटरी के पद पर था, हमेशा सताये जाने की भावना से पीडित, मानसिक रोगी है। वह या तो सिकुडा हुआ अपनी चारपाई पर लेटा रहता या आगे पीछे टहलता रहता जैसे वह व्यायाम कर रहा हो। वह शायद ही कभी बैठा हुआ मिलता। वह निरन्तर उत्तेजना और आवेश की स्थिति में रहता है। हमेशा उसकी मुद्रा अस्पष्ट और अनिश्चित बात होने की प्रतीक्षा की उत्कण्ठा से तनी रहती है। गलियारे में ज़रा-सी मरमराहट या अहाते में आवाज़ होने पर वह अपना सिर ऊचा कर लेता और सुनने लग जाता कि क्या वे उसी को पकडने के लिए आये है? क्या वे उसी को ढूढ रहे है? ऐसे क्षणो में उसका चेहरा अपार व्यग्रता और घृणा की अभिव्यक्ति करता है।

उसका ऊची उठी हुई गाल की हड्डियोवाला चौडा, पीला और व्यथित चेहरा मुझे अच्छा लगता है। यह दर्पण के सदृश्य एक ऐसा चेहरा है जिस पर निरन्तर सघर्ष और भय से प्रताडित आत्मा का विम्ब प्रतिलक्षित होता रहता है। उसके मुह बनाने का ढग विचित्र और रुग्ण है। लेकिन वे हल्की रेखाए, जिन्हे गहरे और वास्तविक कष्ट ने उसके चेहरे पर खीच दिया है, भावात्मक और विचारपूर्ण है और उसकी आखो में सुखद एव विवेकपूर्ण प्रकाश है। मै इस आदमी को पसन्द करता हू जो निकीता को छोडकर सदैव सबके साथ नम्र, दयालु और सहिष्णु है। यदि किसी का कोई बटन या चम्मच नीचे गिर जाता है, तो वह अपने बिस्तर से कूद कर उसे उठाकर रख देता है। वह सुबह उठते ही सबको अभिवादन करते हुए शुभ प्रभात और सोने से पहले शुभ रात्रि कहता है।

उसके मुह बनाने के ढग और उस तनाव खिचाव को छोडकर

जिसके निरन्तर दवाव से वह पीडित रहता है, उसकी विक्षिप्तता निम्नलिखित रूपो में प्रदर्शित होती है। सन्ध्या के समय कभी कभी वह अपने चोगे को अपने चारो ओर लपेट लेता और बरावर कापते हुए, दातो को किटकिटाते हुए वह तेज़ी से कमरे के इस सिरे से उस सिरे तक और चारपाइयो के बीच आता-जाता रहता। ऐसी हालत में उसकी दशा किसी तेज बुखार चढे हुए व्यक्ति की जैसी हो जाती है। अपने कमरे के साथियो के सामने जिस तरीके से ठहरकर उन्हे देखने लगता है उससे यही आभास मिलता है कि उसे कोई बहुत महत्वपूर्ण बात उनसे कहनी है, लेकिन स्पष्टत यह समझते हुए कि कोई उसे न सुनता या न समझता वह अपना सिर अधीरता से हिलाता है और फिर अपना घूमना जारी कर देता है। किन्तु शीघ्र ही बात करने की इच्छा और तमाम विचारो पर हावी हो जाती है और वह मुक्त रूप से भाषण शुरू कर देता है। आकुल, भावोत्तेजक प्रवाह ज्वरग्रस्त रोगी के प्रलापो की तरह उसकी निर्वन्ध और असम्बन्धित वक्तृता हर वक्त समझ में नही आती। लेकिन उसके शव्दो और सुरो में ऐसा कुछ है कि वह अत्यन्त ही हृदयग्राही है। वह जब बोलता है तो उसमें आप एक विवेकपूर्ण मानव और पागल व्यक्ति दोनो को एकसाथ पाते हैं। लिखावट में उसके निर्वन्ध प्रलापो को उतारना कठिन होगा। वह मानव की नीचवृत्ति पर भाषण करता, उस उत्पीडन पर वोलता जो सत्य को नष्ट करता है, उस सुन्दर जीवन पर वोलता जिसका इस विश्व में एक दिन उदय होगा और खिडकियो पर लगे हुए उन लोहे के छडो के सम्वन्ध में कहता जो बरावर उसको उत्पीडको की मूर्खता और निर्दयता का स्मरण कराते रहते है। इन सवका परिणाम है तारतम्यविहीन ऐसी अनगढ शैली के गीत, जो यद्यपि पुराने हो गये हैं, फिर भी अभी अन्त तक नही गाये गये है।

२

आज से वारह या पन्द्रह वर्ष पूर्व नगर के मुख्य वाजार में कोई एक ग्रोमोव नाम का अधिकारी अपने ही मकान में रहता था, वह ठोस और सम्पन्न आदमी था। उसके दो लडके थे, सेर्गेइ और इवान। विश्वविद्यालय में तीन वर्षों तक अध्ययन करने के पश्चात सेर्गेइ को तेज़ गति से वढने-वाला यक्ष्मा हुआ और वह मर गया। यह मृत्यु विपत्तियो के क्रमो का आरम्भ थी जिसने ग्रोमोव परिवार को पराभूत कर दिया। सेर्गेइ की अन्तिम क्रिया के एक सप्ताह वाद उस वृद्ध पर जालसाज़ी और गवन का मुकदमा चला और इसके कुछ ही समय वाद वह टाईफस से जेल-अस्पताल में मर गया। उसके मकान और जायदाद को नीलाम कर दिया गया और इवान दिमीत्रिच और उसकी मा निराश्रित हो गये।

जव उसका वाप जीवित था इवान दिमीत्रिच पीतरवूर्ग में रहते हुए विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा था। वह तव घर से ६० या ७० रूवल प्रतिमाह पाता रहता था, जिससे उसे कभी भी अभाव का ज्ञान नही हुआ था। लेकिन अव अपने जीवन में उसे कठोर परिवर्तन करने के लिए वाध्य होना पडा। सुवह से लेकर रात तक उसे काम करना पडता। कुछ पैसो पर उसे पढाना पडता, दस्तावेज़ो की नकल उतारनी पडती और तव भी वह भूखा ही रह जाता था क्योंकि जो कुछ वह कमाता वह अव अपनी मा को भेज देता था। इवान दिमीत्रिच इस तरह के जीवन के लिए उपयुक्त नही था। उसका दिल टूट गया। वह वीमार पडा और विश्वविद्यालय छोडकर घर चला गया। यहा, छोटे-से नगर के जिला स्कूल मे प्रभावशाली मित्रो के ज़रिये उसे अध्यापक का काम मिला। लेकिन यह देखते हुए कि वह सहयोगियो के साथ मेल रखने के अयोग्य है, और अपने शिष्यो की सहानुभूति वह प्राप्त नही कर पा

रहा है, उसने शीघ्र ही यह नौकरी त्याग दी। उसकी मा मर गयी। वह लगभग छ महीनो तक सिर्फ रोटी और पानी पर जीवित रहते हुए बेकार रहा और तब उसने नाज़िर की जगह प्राप्त कर ली। इस अन्तिम पद को वह तब तक लिये रहा जब तक स्वास्थ्य के कारणो से वह हटा नही दिया गया।

वह कभी भी, यहा तक कि अपने छात्र जीवन में भी स्वस्थ नही दिखाई दिया था। वह हमेशा निस्तेज और दुबला था। जुकाम उसे होता रहता था, वह थोडा ही खाता पीता था और उसे नीद अच्छी नही आती थी। शराब के एक जाम से उसे चक्कर आने लगते थे और वह मदहोश हो जाता था। वह अपने सगी साथियो की ओर आकृष्ट होता था, लेकिन अपने चिडचिडे और शक्की स्वभाव के कारण ऐसा कोई नही था जिसके साथ उसका घनिष्ठ व्यवहार हो, ऐसा कोई नही था जिसे वह अपना मित्र कह सके। वह प्राय नगर के लोगो का ज़िक्र घृणा के साथ करता। वह कहता रहता कि मैं उनके घोर अज्ञान और आलस्यपूर्ण पशुवत् जीवन से उकता गया हू। उसकी आवाज़ तेज़ थी और वह ज़ोर से एव भावावेश में बोलता था, हमेशा ही वह या तो आक्रोशपूर्ण भाव में या भावविह्वल और आश्चर्यचकित होकर बोलता था। आप किसी भी विषय की उससे चर्चा छेडें, वह वार्तालाप को अपने प्रिय विषय पर ले आता था—हमारे शहर में वातावरण दम घोटनेवाला है, जीवन निस्सार है, समाज उच्च हितो से वञ्चित है, बोझिल और व्यर्थ अस्तित्व को जैसे तैसे घसीट रहा है, समाज में हिसा, सस्ती कामुकता और कपटता का बोलबाला है, धूर्त अच्छी तरह से खाते पहिनते है, जबकि ईमानदार लोग मुश्किल से दो जून की रोटिया जुटा पाते है, जरूरत स्कूलो, एक स्थानीय प्रगतिशील समाचारपत्र, एक थियेटर, सार्वजनिक भाषणो और बौद्धिक शक्तियो के सहयोग की

है, समाज को इन वातो के प्रति सजग करना है, उसे यह वताया जाना चाहिए कि स्थिति कितनी भीषण है। लोगो पर निर्णय देने में रग की वह मोटी पर्त चढाता था, लेकिन उसकी तूलिकाए केवल काले और सफेद रग की ही होती थी। वीच के रगो के लिए उनमें स्थान नही था। उसके अनुसार मानव जाति में दो ही तरह के लोग है, धूर्त और ईमानदार। वीच का कोई वर्ग नही है। स्त्रियो और प्रेम के वारे में वह अत्यधिक उत्साह से वाते करता यद्यपि वह कभी भी प्रेम में नही पडा था।

उसके नुक्ताचीनी करनेवाले और चिडचिडे स्वभाव के वावजूद हमारे शहर में लोग उसे पसन्द करते थे, उसकी पीठ पीछे वडे प्यार से उसे वान्या कहकर पुकारते। उसकी कोमलता, लोगो को सहायता पहुचाने मे उसकी तत्परता, उसके ऊचे आदर्श और नैतिक दृढता, उसके भद्दे कोट, उसकी वीमार आकृति और उसके परिवार पर पडी हुई विपत्तिया ये सव साथ मिलकर उसके लिए व्यथा-मिश्रित सहृदयतापूर्ण मैत्री की भावना वनाते थे, फिर वह सुशिक्षित और सुपठित भी था, उसके साथी नागरिक कहा करते थे कि ऐसी कोई वात नही थी, जिसे वह नही जानता था। हर कोई उसे चलता-फिरता ज्ञानकोश मानता था।

वह खूब पढनेवाला था। क्लव में जाकर वह घटो वैठ अपनी छोटी-सी दाढी को सहलाते हुए पुस्तको और मासिक पत्रो इत्यादि के पन्ने उलटता रहता। उसका चेहरा प्रकट करता था कि वह पढता नही, किताबो की वाते हडप रहा है, शायद ही वह इन वातो को दिमाग में उलटने-पलटने का समय पाता हो। स्पष्ट था कि पढना उसके लिए एक अस्वस्थ आदत वन गयी थी, क्योकि जो कुछ उसके हाथ लग

जाता उसे वह उसी दिलचस्पी से पढने लगता था, चाहे वह पिछले साल के समाचारपत्र और पचाग ही क्यो न हो। घर पर वह सदैव लेटे हुए पढता रहता।

३

पतझड के एक प्रात काल इवान दिमीत्रिच अपने कोट के कालर को ऊपर उठाये और गली कूचो और पिछवाडो की कीचड से गुज़रते हुए किसी नागरिक को डिगरी की दस्तावेज़ देने जा रहा था। वह बदमिज़ाज हो रहा था जैसा कि वह सबेरे के वक्त हमेशा होता था। एक गली में उसे दो आदमी मिले जो हथकडियो में थे और चार सशस्त्र पहरेदारो की निगरानी में चल रहे थे। ऐसी स्थितियो से इवान दिमीत्रिच अभ्यस्त था। इन बातो से उसके अन्दर दया और सकोच की भावनाए पैदा होती थी। लेकिन इस बार वह आश्चर्यजनक ढग से अकारण ही बहुत प्रभावित हुआ। किसी कारण से सहसा उसके मस्तिष्क में यह बात प्रविष्ट हो गयी कि ऐसा कुछ नही था जो उसे भी इन बन्दियो की तरह हथकडी पहने कीचड भरी गलियो से होते हुए जेल पहुचाने में रुकावट डाल सके। दस्तावेज़ देने के बाद वह जब घर लौट रहा था, उसे उसका एक परिचित दारोगा डाकखाने के पास मिल गया, दुआ सलाम होने के बाद इस्पेक्टर कुछ दूरी तक उसके साथ चला और इस बात से ग्रोमोव को शका हो गयी। जब वह घर लौटा तो बन्दियो और सिपाहियो का ख्याल दिन भर उसे परेशान करता रहा और एक अजीब मानसिक अशान्ति से उसे पढने और अपने विचारो को स्थिर करने में बाधा होती रही। शाम को उसने अपना लैम्प भी नही जलाया और यह सोचते हुए कि वह भी तो गिरफ्तार किया जा सकता है, हथकडी लगाकर जेल में डाला जा सकता है वह सो न सका। वह जानता था कि वह

किसी अपराध का दोषी नही है और इस वात का वह आश्वासन दे सकता था कि वह न तो कभी कत्ल करेगा, न आगजनी, न चोरी, लेकिन अनजाने सयोगवश अपराध होने की आशका क्या नही थी? इसके अलावा जालसाज़ी की वाते अथवा न्यायविहीन निर्णय क्या नही होते? क्या यह प्रसिद्ध लोकोक्ति कि "भिक्षापात्र से या जेल से कोई भी सुरक्षित नही है" युगो के अनुभवो को प्रतिविम्वित नही करती थी? और वर्तमान कानूनी कार्रवाइयो में अन्याय होने के अलावा, हो ही क्या सकता था? न्यायाधीश, पुलिस अधिकारी एव डाक्टरो जैसे लोग जो मानव-व्यथा को ज़ाब्ते की रोशनी में ही देखते हैं, समय गति के साथ और आदत मे इतने हृदयहीन वन जाते है कि चाहने पर भी अपने मुवक्किलो के साथ सिवा औपचारिक ढग के अन्य किमी तरह का व्यवहार नही कर मकते। इस सम्वन्ध में उनमें और उस किसान के व्यवहार मे कोई अन्तर नही होता, जो अपने मकान के पिछवाड़े भेडो तथा वछडो को उनके खून से अनजान वना मारता है। एक वार जव यह औपचारिक और हृदयहीन दृष्टिकोण वन जाता है तव फिर किमी न्यायाधीश के लिए किसी निर्दोष व्यक्ति को उसके अधिकारो से वचित कर उसे कडी कैद की सज़ा देने की मनोवृत्ति वनाने में केवल एक ही वात की आवश्यकता रह जाती है—समय। इतना ही आवश्यक समय चाहिए कि चन्द औपचारिक वातो को पूरा किया जा सके जिनके लिए न्यायाधीश को वेतन मिलता है, और वस, फिर सव कुछ खत्म। तव आप रेलवे स्टेशन मे डेढ सौ मील दूर मे इस छोटे-मे गदे शहर में न्याय और सुरक्षा पाने की कोशिश किया करें। फिर क्या यह वेवकूफी भरी वात नही है कि न्याय की वात को सोचा भी जाय जवकि उत्पीडन का हर काम समाज द्वारा तर्क-सगत और आवश्यक माना जाता है तथा रिहाई जैसे रहम के हर काम का असन्तुष्ट, प्रतिशोधभरी भावनाओ के विस्फोट से स्वागत किया जाना है?

दूसरे दिन सुबह इवान दिमीत्रिच अपने बिस्तर से घोर आतक की स्थिति में जगा। उसके माथे पर ठढे पसीने की बूदें झलक रही थी और यह विश्वास उसमें घर कर गया था कि वह किसी भी मिनट गिरफ्तार किया जा सकता है। चूकि पिछले दिन की उत्पीडक भावनाओ से उसे मुक्ति नही मिल पा रही थी, उसने सोचा कि इन बातो के लिए कोई वास्तविक कारण होगा ही। आखिर विना किसी विशेष कारण के ये बाते दिमाग में घुस नही सकती थी।

एक पुलिसमैन अभी उसकी खिडकी के सामने से हौले हौले गुज़रा था, इसका क्या अर्थ हो सकता था? दो आदमी उसके मकान के दूसरी तरफ रुककर चुपचाप खडे हो गये थे। वे चुपचाप क्यो थे?

दारुण व्यथा में इवान दिमीत्रिच के दिन-रात कटने लगे। जो कोई उसकी खिडकी के सामने से गुज़रता था, उसके सहन में आता, उसे वह भेदिया या खुफियागिरी करनेवाला मान बैठता। ज़िला पुलिस इस्पेक्टर की यह आदत थी कि वह दो घोडेवाली गाडी में बैठकर दोपहर को उस बाजार से होकर गुज़रता था। वह देहात के अपने इलाके से दफ्तर जाया करता था, लेकिन इवान दिमीत्रिच को यही प्रतीत होता कि वह वहुत तेजी से गाडी को हाके ले जा रहा है और उसके चेहरे पर किसी अर्थपूर्ण बात की छाप है, वह सभवत यह घोपणा करने के लिए कि नगर मे एक खतरनाक अपराधी रह रहा है, तेज़ी से जा रहा है। जब कभी दरवाज़े की घण्टी बजती या फाटक पर किसी की दस्तक पडती वह चौंक उठता। यदि कोई ऐसा व्यक्ति जिसे उसने पहले न देखा हो उसकी मकान मालिकिन के पास आता तो उसे बेचैनी मालूम होने लगती थी। जब कभी वह किसी पुलिसमैन अथवा राजनीतिक पुलिस के मामने पड जाता तो मुस्कराने लगता और किसी गीत की कडी गुनगुनाने लगता जिससे कि वह सुचित्त मालूम पडे।

गिरफ्तार हो जाने के भय से वह सारी रात जगता रहता लेकिन अपनी मकान मालिकिन को यह जताने के लिए कि वह सोया हुआ है ज़ोर ज़ोर से नाक बजाता रहता और खर्राटे छोड़ता रहता। क्योंकि यदि वह सोया हुआ न रहता तो क्या इससे यह मतलब नही निकल सकता था कि किसी कारण से उसकी अतरात्मा पर बोझ है और क्या ही बढ़िया सुराग यह होता। तथ्यों और सहज बुद्धि से उसे आश्वासन मिलता था कि उसके भय व्यर्थ और नैराश्यजन्य है। वस्तु स्थितियो पर व्यापक दृष्टिकोण से विचार करने पर यह स्पष्ट था कि जब तक आत्मा निर्दोष हो गिरफ्तारी अथवा बन्दी बनाये जाने में भयानक बात कुछ भी नही थी। लेकिन जितना वह इस बात पर विवेक और तर्क से विचार करता, उतनी ही तीव्रता से उसकी बेचैनी भी बढ़ती। वह उस साधु की तरह था जो जगल मे अपने लिए एक स्थान बनाने के प्रयत्नो में उसे साफ करता जाता था, लेकिन जितना ही वह पेड़ पौधो और झाड़ झखाड़ो को अपनी कुल्हाड़ी से साफ करता उतनी ही अधिक तेज़ी से वे फिर पैदा हो जाते। इवान दिमीत्रिच ने अतत तर्क बुद्धि त्याग दी और अपने को भय और निराशा के हवाले कर दिया।

उसने एकान्त ढूढना और समाज से बचना आरम्भ कर दिया। अपना काम जिसे कि वह सदैव नापसन्द करता था अब उसके लिए बिल्कुल असह्य हो गया। उसे यह भय हो गया कि कोई कही उसके साथ कोई गन्दी हरकत न कर दे, बिना उसके जाने ही उसकी जेब में घूस के रूप में कुछ डाल न दे और तब उसका भड़ाफोड़ कर बैठे। कही किसी तरह से सरकारी कागज़ात मे उससे कोई गलती न हो जाय जो जालसाज़ी समझी जाय या ऐसा न हो जाय कि वह उस धन को खो बैठे जो उसका न हो। यह बात ध्यान देने योग्य थी कि उसका दिमाग कितना तेज़ और सर्वतोमुखी हो गया था, अब वह प्रतिदिन हज़ारो तरीके सोच

निकालता था कि क्यो उसे अपने सम्मान और स्वतन्त्रता के लिए भयाकुल रहना चाहिए। दूसरी ओर वाह्य ससार से और पढने में उसकी दिलचस्पी कम होती जा रही थी। उसकी स्मरणशक्ति काफी घट चुकी थी।

बसन्त में, वर्फ पिघल जाने के बाद कब्रगाह के बाहर नाले में एक वूढी औरत और एक लडके की लाशें मिली। यह दोनो लाशें सडी गली दशा में थी और उन पर ऐसे निशान थे जिनसे यह स्पष्ट था कि दोनो की हत्या हुई है। सारे नगर में इन लाशो और अज्ञात कातिलो की चर्चा के अलावा कोई दूसरी बात ही न रह गयी। लोगो को यह सोचने से रोकने के लिए कि वह कातिल है, इवान दिमीत्रिच अपने चेहरे पर मुस्कराहट लिये गलियो में घूमता रहता। जब कभी वह अपने परिचितो से मिलता तो अपने चेहरे पर बारी बारी से आवेश और उद्वेग लाकर समझाता कि कमज़ोर और अरक्षित लोगो को कत्ल करने से बढकर कोई दूसरा नीच कर्म नही हो सकता। लेकिन शीघ्र ही वह इस स्थायी बहानेबाज़ी से ऊब गया और उसने यह निश्चय किया कि उसकी स्थितिवाले व्यक्ति के लिए यही सबसे अच्छा है कि वह अपने तहखाने में छिपकर पडा रहे। उसने इस तरह एक दिन एक रात और एक दूसरा दिन बिता दिया। और सर्दी उसकी हड्डियो तक घुस गयी, जैसे ही अन्धेरा हुआ चोर की तरह वह अपने कमरे में घुस आया। सुबह होने तक वह कमरे के बीच में खामोश खडा सुनता रहा। सुबह होने से पहले कुछ चूल्हे बनानेवाले मकान-मालिकिन के पास आये। इवान दिमीत्रिच को अच्छी तरह से ज्ञात था कि ये रसोईघर के चूल्हे की मरम्मत करनेवाले हैं। लेकिन भय ने उससे चुपके से कहा कि चूल्हे बनानेवालो के वेश में ये पुलिसवाले हैं। वह चुपके से घर के बाहर, विना कोट और टोप लिये खिसक गया और भय से आक्रान्त गलियो में तेज़ी से भागा। कुत्ते भोकते हुए उसके पीछे दौडने लगे। एक आदमी

ने उसके पीछे से चिल्लाकर आवाज़ लगायी, हवा उसके कानो में सनसनाहट भर गयी और इवान दिमीत्रिच को यह प्रतीत होने लगा कि ससार की सारी हिंसा सिमटकर उसके पीछे आ गयी है और उसका पीछा कर रही है।

उसको रोका गया और उसे घर पहुचा दिया गया। उसकी मकान-मालिकिन डाक्टर बुलाने भेजी गयी। डाक्टर आन्द्रेई येफीमिच ने, जिसके बारे में आगे अधिक बतलाया जायेगा, ठढे फाये और खुशबूदार तेल का नुस्खा बताया और दुखित होकर सर हिलाते हुए चला गया। मकान-मालिकिन से उसने जाते जाते कहा कि वह अब आगे नही आयेगा, क्योकि लोगो को पागल होने से रोकना नही चाहिए। चूकि इवान दिमीत्रिच के पास गुजर-बसर के लिए भी पैसा नही था और वह इलाज का खर्च नही उठा सकता था, उसे अस्पताल में भेज दिया गया जहा उसे उस वार्ड मे जहा गुप्त रोगो के मरीज़ रहते है, जगह दे दी गयी। वह रात को सोता नही था, चिडचिडा रहता था और दूसरे मरीजो को परेशान करता रहता था, शीघ्र ही आन्द्रेई येफीमिच की आज्ञा से वह वार्ड नम्बर छ में बदल दिया गया।

एक साल के भीतर ही नगर के लोग उसे भूल गये। और उसकी किताबो को जिन्हे मकान-मालिकिन ने छप्पर के नीचे एक गाडी में ढेर कर दिया था, पडोस के लडके उठा ले गये।

४

इवान दिमीत्रिच के बाई ओर का पडोसी जैसा कि पहले ही बताया गया है यहूदी मोजेज था और उसके दायें हाथ का पडोसी गोल-मटोल कुप्पा-सा एक किसान था जिसका चेहरा शून्य और अर्थहीन

आकृति का आभास देता था। वह क्रियाशून्य, पेटू एव गन्दे पशु के सदृश्य ही था जो बहुत पहले से ही यह भूल चुका था कि सोचना अथवा महसूस करना क्या होता है। उसके तन बदन से दम घोट देनेवाली तीखी बदबू आती रहती थी।

निकीता, जिसका कर्तव्य इसकी देख-भाल करने का था, उसको अपनी शक्ति भर बुरी तरह से पीटता और इस काम में वह अपनी मुट्ठियो का भी ख्याल न करता। यह बात इतनी भयानक नही थी, कि वह पीटा जाता था--ऐसी बातो से अभ्यस्त होना ही पडता है-जितनी कि यह थी कि उस चेतनशून्य जानवर पर मार की कोई प्रतिक्रिया नही होती थी, न तो वह मार पडने पर कराहता, न भाव में अन्तर लाता, न पलक झपकाता, वह बस एक भारी भरकम पीपे की तरह एक ओर से दूसरी ओर लुढकता रहता।

वार्ड नम्बर छ का पाचवा और अन्तिम निवासी एक शहरी आदमी है जो कि यहा आने के पहले डाकघर मे डाक छाटता था। यह दुबला-पतला, सुनहरे बालोवाला, दयालु किन्तु एक तरह से थोडा-सा धूर्त दीखनेवाले चेहरे का व्यक्ति है। उसकी सौम्य और समझदार आखो की प्रसन्नतामयी आकृति से यह मालूम पडता है कि वह चलता-पुर्जा है और कोई महत्वपूर्ण एव प्रसन्नता भरा रहस्य अपने अन्दर सजोये हुए है। वह अपने तकिये या गद्दे के नीचे कुछ चीज छिपाकर रखता है। इसलिए नही कि कोई उसे उठा लेगा या चुरा लेगा, बल्कि इसलिए कि वह शरमाता है। कभी कभी वह उठकर खिडकी तक चला जाता और वहा अपनी पीठ औरो की ओर करके किसी चीज को अपने सीने से लटका लेता और उसे घूरने लगता, ऐसे क्षणो में अगर कोई उसके पास आ जाता तो वह उस वस्तु को नोच कर दूर कर लेता और झेंप जाता। लेकिन उसके रहस्य को जान लेना कोई मुश्किल बात नही है।

"तुम मुझे बधाई दे सकते हो," वह कभी कभी इवान दिमीत्रिच से कहता, "स्तानिसलाव के दूसरी श्रेणी के सितारेवाले तमगे के लिए मेरी सिफारिश की गयी है। यह खिताब प्राय विदेशियों को ही दिया जाता है, लेकिन किसी वजह से वे मेरे पक्ष में इस नियम में अपवाद बनाना चाहते हैं।" वह मुस्कराता हुआ अपने कधों को हिलाते हुए कहता–"मैं कहता हू मैंने कभी इसकी आशा नही की थी।"

इवान दिमीत्रिच उत्तर देता–"इन बातो के सम्बन्ध में मैं कुछ नही जानता।"

"किन्तु तुम यह तो जानते हो कि देर-सबेर मैं होने क्या जा रहा हू?" काइयापन से अपनी आखो को कुछ सिकोड़ता हुआ, यह भूतपूर्व डाक छाटनेवाला कहता जाता–"मैं निश्चित रूप से जानता हू कि मुझे स्वेडन के ध्रुव तारेवाला तमगा प्राप्त होगा। ऐसे खिताब के लिए कुछ कष्ट उठाना उपयुक्त ही है। सफेद क्रास और काला फीता! बहुत सुन्दर लगेगा!"

जीवन कहीं भी इतना नीरस नही होगा जितना कि अस्पताल की इस छोटी-सी इमारत में। सवेरे लकवे के बीमार और मोटे किसान को छोडकर सभी मरीज़ गलियारे में निकलकर वहा काठ के बने बरतन में रखे पानी से मुह हाथ धोते है तथा आपने चोगो के पल्लो से उन्हे पोछते हैं। इसके बाद वे निकीता द्वारा मुख्य भवन से लाये गये टीन के कटोरो से चाय पीते है। हर एक को एक कटोरा भर कर चाय दी जाती है। दोपहर को उन्हे खट्टी गोभियों का शोरबा और दलिया मिलता है। रात के भोजन में उन्हे दोपहर के भोजन से बचा दलिया ही मिलेगा। खानो के बीच वे अपनी चारपाइयो पर लेटे रहेगे, सोते रहेगे, खिडकियो से बाहर देखते रहेगे अथवा कमरे में एक छोर से दूसरे छोर तक चहलकदमी करते रहेगे। ऐसे ही दिन

कटते जाते है। यहा तक कि भूतपूर्व डाक छाटनेवाला भी खिताबो की वही बाते सारे समय करता रहेगा।

कोई नया चेहरा वार्ड नम्बर छ में प्राय नज़र नही आता। डाक्टर ने लम्बे अर्से से और ज्यादा मानसिक रोगियो को अस्पताल में भर्ती करना बन्द कर दिया है और बाहरी दुनिया के अधिकाश लोग पागलखानो को देखना गवारा नही करते। हर दो महीनो पर एक बार नाई सेम्योन लाज़रिच वार्ड नम्बर छ आता है। हम इस बात का वर्णन नही करेगे कि वह बीमारो के बाल किस तरह काटता है और किस तरह निकीता इसमें उसकी मदद करता है। हम यह भी नही बतायगे कि बीमारो में किस तरह का आतक इस शराबी और मुस्कराते हुए नाई के दीखने पर ही फैल जाता है।

नाई के अलावा और कोई इस इमारत में पदार्पण नही करता। रोगियो को प्रतिदिन निकीता की उसी अप्रिय सगत में निर्वाह करना पडता है।

लेकिन कुछ समय से एक अनोखी अफवाह अस्पताल में फैलनी शुरू हो गयी है।

लोगो का कहना है कि डाक्टर ने नित्य वार्ड नम्बर छ में जाना शुरू कर दिया है।

५

यह वास्तव में अजीब अफवाह है। डाक्टर आन्द्रेई येफीमिच रागिन अपने तरीके के अनोखे आदमी हैं। ऐसा सुना जाता है कि वह अपने युवा काल के आरम्भ में बहुत धार्मिक थे और उन्होने अपना जीवन धर्म क्षेत्र में ही लगाने का हृदय से निश्चय कर लिया था। सन् १८६३ में हाई स्कूल पास कर लेने के बाद वह इसी इरादे

से धार्मिक शिक्षा-सस्था में प्रवेश करना चाहते थे, परन्तु उनके पिता ने जो कि उपाधि प्राप्त डाक्टर थे और एक सर्जन थे, उनकी इस वात का मखौल उडाया, उन्होंने घोपणा कर दी कि अगर वह पादरी वने तो वह उन्हे अपना पुत्र नही मानेगे। मै नही कह सकता इन सब वातो में कहा तक मत्यता है, लेकिन मैंने आन्द्रेई यफीमिच को यह कई वार स्वीकार करते सुना है कि डाक्टरी अथवा विज्ञान की किसी भी विशेप शाखा को पेशे के रूप मे ग्रहण करने की उनकी इच्छा नही रही।

जैसा भी हो, डाक्टरी विभाग से स्नातक वनने के वाद वह पुरोहिताई की ओर नही गये। वह अपनी धार्मिक वृत्ति के लिए प्रख्यात नही थे और न अपने डाक्टरी जीवन के आरम्भ में और न अब वह पादरी लगते है।

वह भारी भरकम और किसान की तरह ही गवार दिखायी देनेवाले है। उनका चेहरा, दाढी, खडे और सख्त वाल, वेढगा ढाचा, उन्हे किसी राह के किनारे स्थित सराय के खाये पिये, हठी और कठोर मालिक का रूप देते है। उनका गभीर चेहरा नीली नसो से ढका हुआ है, आखें छोटी है और नाक लाल। वह लम्बे और चौडे कधोवाले है जिनके हाथ पाव वडे-वडे हैं और ऐसा मालूम पडता है मानो वह किसी वैल को अपने मुक्को के जोर से ही धराशायी कर देंगे। लेकिन वह आहिस्ता से चलते और उनकी चाल में सावधानी व घवराहट-सी रहती है, गलियारे में किसी से सामना हो जाने पर वही सबसे पहले रुकते है और "माफ कीजिए" कहते हुए रास्ता देते है। उन की आवाज जैसा कि आपका ख्याल होगा भारी नही वल्कि वासुरी मी सुरीली होगी। उनकी गरदन पर एक छोटी-सी वतडी है जिसकी वजह से वह कडा कालर नही पहनते और वह सूती या

मुलायम कपडे की कमीजें पहने हुए ही आते-जाते दिखाई देते। वह डाक्टर की तरह कपडा कतई नही पहनते। उनका सूट दस साल तक चलता है और जब कभी वह नये सूट में भी होगे जिसे कि वह साधारणत किसी यहूदी द्वारा सचालित घटिया किस्म की दुकान पर खरीदते है तो वह भी उसी तरह जीर्ण दिखाई देगा जैसा कि कोई पुराना सूट होता है। वह उसी कोट को पहने हुए रोगियो को देखते हैं, उसी को पहने हुए भोजन करते है और उसी में दोस्तों से मिलते है। इसमें कोई कजूसी नही, व्यक्तिगत पहनावे-दिखावे के प्रति उनकी बिल्कुल उपेक्षा भर है।

जब आन्द्रेई येफीमिच अपने पद पर इस नगर में आये थे, तब यह "धर्मार्थ सस्था" बहुत ही गिरी हुई दशा में थी। तब दुर्गन्ध के कारण वार्डों के कमरो मे आने-जाने के रास्तो मे अथवा अस्पताल के आगन मे सास लेना भी दुश्वार था। अस्पताल के नौकर, नर्सें और उनके परिवार रोगियो के साथ ही वार्डों में सोया करते थे। हर किसी को शिकायत रहती थी कि तिलचट्टे, खटमल, और चूहो की वजह से जीवन दूभर हो गया है। चीरफाड के विभाग में चर्मरोग हमेशा बना रहता था। सारे अस्पताल मे केवल दो नश्तर थे और थर्मामीटर एक भी नही था। नहाने के टबो का इस्तेमाल आलुओ को रखने के लिए होता था। सुपरिण्टेण्डेण्ट, बडी नर्स और सहायक डाक्टर रोगियो की खुराको मे लूट मचाते रहते थे। आन्द्रेई येफीमिच के स्थान पर जो डाक्टर पहले काम करता, उसके सम्बन्ध में तो यह भी कहा जाता था कि अस्पताल के लिए निर्धारित शरावो से वह सट्टेबाजी का व्यापार चलाता था और नर्सों तथा बीमार औरतो का एक पूरा हरम रखे हुए था। नगर के निवासी इस अपमानजनक स्थिति से अच्छी तरह परिचित थे, और कभी कभी वह इस स्थिति मे सम्बन्धित कहानियो को अतिशयोक्तिपूर्ण

ढग से भी कहते थे, लेकिन इस वात का उन्होंने कभी बुरा नही माना। कुछ तो इसको क्षम्य भी समझते थे, उनका कहना था कि इस अस्पताल मे केवल किमान तथा निम्न वर्गों के रोगी ही दाखिल होते है। घर पर उनकी यहा से भी वुरी स्थिति है, अतएव उनके लिए शिकायत करने का कोई कारण नही हो सकता, यहा क्या उन्हें मुर्ग खिलाया जाता? दूसरे लोगो का कहना यह था कि ज़ेम्स्त्वो की सहायता के विना नगर से एक अच्छी तरह के सुव्यवस्थित अस्पताल चलाने की आशा नही की जा सकती। वुरा सही, एक अस्पताल तो हो गया है और लोगो को इसके लिए कृतज्ञ होना चाहिए। और ज़ेम्स्त्वो जो कि स्वय बहुत पहले नही खुला था, न तो नगर में और न इसके पास-पडोस में ही कोई अस्पताल खोलने के पक्ष में था, क्योकि जैसा वे कहते थे, एक अस्पताल पहले से ही मौजूद है।

आन्द्रेई येफीमिच अपने प्रथम निरीक्षण के पश्चात इस नतीजे पर पहुचने के लिए वाध्य हो गये कि यह सस्था एक अनैतिक सस्था है जिसका समाज के स्वास्थ्य पर वहुत ही वुरा असर पड रहा है। उनकी राय में सवमे वुद्धिमत्तापूर्ण वात यह थी कि रोगियो को हटा दिया जाय और अस्पताल वन्द कर दिया जाय। लेकिन उन्होंने सोचकर तय पाया कि यह वात तो उनकी इच्छा शक्ति मात्र से पूरी होगी नही। फिर इससे लाभ क्या? कोई नैतिक और भौतिक दोनो तरह की गन्दगियों को एक स्थान से बुहार कर हटाता है तो निश्चित रूप से वह किसी दूसरे स्थान पर एकत्रित हो जाती है। इस गन्दगी के स्वय ही अदृश्य होने की प्रतीक्षा करनी पडेगी। इसके अलावा चूकि लोगो ने अस्पताल खोला था और उसको वर्दाश्त कर रहे है, इसलिए इसका अभिप्राय ही यह है कि इसकी उन्हे आवश्यकता है। मूर्खतापूर्ण अन्धविश्वास व प्रतिदिन की यह सव गन्दगी एव वीभत्सता आवश्यक वस्तुए है। समय

आने पर यही सब बाते उपयोगी वस्तुओ में परिवर्तित हो जायेंगी, जैसे कि गोबर उर्वरा मिट्टी बन जाता है। दुनिया में ऐसी कोई भी अच्छी वस्तु नही है जो कभी गन्दगी से उत्पन्न नही हुई हो।

आन्द्रेई येफीमिच ने जब अपना पद सभाला तो ऐसा मालूम पडता था कि इस सम्पूर्ण अव्यवस्था के प्रति उन्होने कोई बडा बवाल नही उठाया। उन्होने अस्पताल के सहायको तथा नर्सो से इतना ही भर कहा कि वे रात में वार्डों में न रहा करे और चीरफाड के औज़ारो से भरी दो अलमारिया लगवा दें। सुपरिण्टेण्डेण्ट, बडी नर्स तथा चर्मरोग उसी तरह रहते रहे जिस तरह कि पहले।

आन्द्रेई येफीमिच बहुत तीव्रता के साथ विवेक और ईमानदारी की सराहना करते हैं लेकिन उनमें चरित्र की न वह शक्ति है और न अपने अधिकारो में वह विश्वास कि जिससे वह अपने चारो ओर के जीवन को ईमानदारी और सुसगत आधार पर सगठित कर सके। वह ऐसे आदमी नही जो आज्ञाए दे सके, प्रतिबन्ध लगा सके तथा किसी बात पर अड सके। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे उन्होने इस बात की प्रतिज्ञा कर रखी हो कि कभी भी वह चिल्लायेंगे नही, न आज्ञासूचक क्रिया का प्रयोग करेगे। उनके लिए "मुझको दो" या "लाओ" कहना कठिन पडता है। जब भूख का अनुभव करेगे तो हिचकिचाहट से खासते हुए अपने रसोइये से कहेगे—"अगर मुझे थोडी-सी चाय मिल जाय तो " या "अगर मुझे भोजन मिल जाय तो " जहा तक सुपरिण्टेण्डेण्ट से चोरी न करने के लिए कहना अथवा उसे हटाना अथवा इस अनावश्यक पद को समाप्त कर देने की बात का सम्बन्ध है, यह सब उनकी शक्ति के बाहर की बाते है। लोग जब आन्द्रेई येफीमिच से झूठ बोलते हैं या उनकी खुशामद करते हैं या किसी बिल्कुल झूठे हिसाब पर हस्ताक्षर करने के लिए कहते हैं तो वह

शर्म से लाल हो उठते हैं व अपराधी की तरह हस्ताक्षर कर देते हैं। जब रोगी उनसे भूखे रखे जाने अथवा अभद्र व्यवहार की शिकायत करते हैं तो वह पसोपेश में पडे हुए जान पडते हैं। इस पर वह क्षमासूचक तरीके से गुनगुनाते हुए कहते हैं–

"ठीक है। मैं इसकी ओर ध्यान दूंगा कही कोई गलतफहमी हो गयी होगी . "

आरम्भ में तो आन्द्रेई येफीमिच ने बडी लगन से काम किया। सुबह से दोपहर के भोजन के समय तक वह रोगियो को देखते रहते थे, चीरफाड करते रहते थे, और यहा तक कि बच्चा जनाने का काम भी खुद कर लेते थे। महिलाओं का यह कहना था कि वह बडे ध्यानपूर्वक देख-रेख करते थे और बीमारी का बहुत ही अच्छा निदान करते थे, खास तौर पर स्त्रियो और बच्चो का। लेकिन जैसे जैसे समय गुज़रता गया वह भी इस काम की नीरसता तथा इसकी स्पष्ट अकार्यकुशलता से हार गये। आज उनके पास ३० रोगी आये तो कल ३५ और इसके दूसरे दिन ४० और इसी तरह प्रति वर्ष रोज़ इनकी सख्या का क्रम बढता जायेगा। नगर की मृत्यु-सख्या में कोई कमी नही होती थी और नये बीमारो का ताता बना ही रहता था। सुबह के समय बाहर से आनेवाले ४० बीमारो की उचित चिकित्सा करना असम्भव था। अतएव वह चाहे जितना कुछ भी प्रयत्न करे उनका काम एक अनिवार्य धोखा ही था। मान लीजिये, यदि किसी वर्ष उनके पास बाहर से आनेवाले बीमारो की सख्या १२,००० हुई तो साधारण गणना से इसका यही अर्थ हुआ कि १२,००० स्त्री और पुरुषो को धोखा दिया गया है। ज्यादा बीमार लोगो को अस्पताल में भर्ती करना और विज्ञान के नियमो के अनुकूल उनकी चिकित्सा करना असभव ही था, क्योकि यद्यपि नियम बहुतायत से थे, विज्ञान का कही पता नही

था। दार्शनिक रूप से विचार न भी करे फिर भी अन्य डाक्टरो की तरह से कठमुल्लापन से यदि नियमो के पालन की बात की भी जाती, तो सबसे पहला और महत्वपूर्ण नियम है स्वच्छता का, शुद्ध वायु का, न कि गन्दगी का। आवश्यकता थी अच्छे प्रकार के उपयोगी भोजन की, न कि खट्टी गोभियो के बदबू देनेवाले शोरबे की। ज़रूरत थी ऐसे सहायको की जो कि वास्तव में सहायक हो, न कि चोरो की।

इसके अतिरिक्त प्रश्न यह भी तो था कि लोगो को मरने से क्यो रोका जाय जबकि मृत्यु जीवन का स्वाभाविक और न्यायोचित अन्त है? इससे क्या बन जायेगा कि किसी दुकानदार अथवा क्लर्क की आयु की अवधि पाच या १० साल ज्यादा बढ गयी? और यदि चिकित्सा का उद्देश्य दवाओ के सहारे कष्ट कम करना है तो आवश्यक रूप से यह प्रश्न उठता है कि कष्ट को कम ही क्यो करना चाहिए? अव्वल तो कष्ट पूर्णता प्राप्त कराने में आदमी का सहायक होता है और दूसरे, यदि मानव जाति गोलियो एव चूर्णों के साधनो के द्वारा कष्ट को कम करना सीख जाती है तो लोग धर्म और दर्शन शास्त्र को त्याग देंगे। किन्तु ये ऐसे विषय हैं जिनमें मानव जाति आज तक न केवल सब सन्तापो से रक्षा पाती रही है, बल्कि उसे इनसे आनन्द भी प्राप्त होता रहा है। अपनी मृत्यु शैय्या पर पुश्किन घोर कष्ट सहता रहा। अपनी मृत्यु से पूर्व जर्मन कवि हाइने वर्षों तक लकवा से पीडित पडा रहा। तब फिर क्यो एक आन्द्रेई येफीमिच या मात्र्योना साविश्ना ही रोगमुक्त किये जाय जिनकी ओछी ज़िन्दगी इस रोग के सिवा उसी तरह महत्वहीन है जिस तरह कि एक कीटाणु का जीवन होता है।

ऐसे ही तर्कों से परेशान होकर आन्द्रेई येफीमिच के हृदय का उत्साह समाप्त हो गया और उन्होंने प्रति दिन अस्पताल जाने का क्रम छोड दिया।

६

उनके प्रतिदिन का यह क्रम है—वह प्राय आठ बजे सुबह उठेंगे, कपडे पहनेंगे और इसके बाद चाय पीयेंगे। इसके बाद वह अपने अध्ययन कक्ष में बैठ जाते है और पढ़ते रहते हैं अथवा अस्पताल चले जाते हैं। अस्पताल के अंधेरे तग गलियारे में उन्हे डाक्टरी जाच की प्रतीक्षा करते हुए बाहरी बीमार मिलते। अस्पताल के पुरुष और नर्सें इनके आगे ईंटो के फर्श पर अपने बूटो को बजाते हुए निकल जाती। अस्पताल के अन्दर रहनेवाले निर्बल बीमार अपने चोगो में लिपटे हुए यू ही इधर-उधर टहलते रहते है। लाशें तथा टट्टी-पेशाब के बरतनो को बाहर किया जाता है। बच्चे चीखते-चिल्लाते है और तेज़ हवा गलियारे को झकझोरती रहती है। आन्द्रेई येफीमिच इस बात से अवगत है कि ऐसी चीज़ें ज्वर-पीडित, यक्ष्मा के तथा केवल स्नायविक कमज़ोरी के बीमारो के लिए यातनापूर्ण होती है। लेकिन इस सम्बन्ध में हो ही क्या सकता है? मुआयने के कमरे में उनका सहायक सेर्गेइ सेर्गेइच उनका अभिवादन करता है जो कि छोटे कद का मोटा, गोल-मटोल, अच्छी तरह धुले हुए सफाचट चेहरे का और नम्र तौर तरीको का आदमी है। वह नया ढीला-ढाला सूट पहने रहता है और उसके रग-ढग से वह एक सहायक डाक्टर की बनिस्बत ज्यादा ससद-सदस्य-सा लगता है। नगर मे उसकी डाक्टरी बडे पैमाने पर चलती है। वह सफेद टाई पहिनता है और समझता है कि डाक्टर की बनिस्बत जिसकी कि कोई प्रेक्टिस नहीं, वह अधिक

जानकारी रखता है। मुग्रायने के कमरे के कोने में एक मूर्ति मडप है जिसमें एक बडी-सी मूर्ति है जिसके सामने ही एक भारी दीप लटकता है। इसके पास ही मोमवत्तिया रखने की पीठिका है जोकि सफेद कपडे से ढकी रहती है। पादरियो के चित्र, स्व्यातोगोर्स्क मठ के दृश्यचित्र तथा सूखे फूलो की मालाग्रो से इस कक्ष की दीवारे सजी हुई है। सेर्गेइ सेर्गेइच धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति है ग्रौर धार्मिक नियमो पर दृढ रहने की उसकी ग्रादत है। ग्रस्पताल में मूर्ति रखवानेवाला वही था। इतवार को वह किसी एक बीमार को प्रार्थना पढने का ग्रादेश देता ग्रौर इसके बाद धूपपात्र को ग्रागे पीछे हिलाता हुग्रा एव सुगधि बिखेरता हुग्रा वह वार्डो का भ्रमण करता।

बीमारो की सख्या वहुत बडी होती है ग्रौर समय कम। ग्रतएव डाक्टर को प्रत्येक वीमार से कुछ सवाल करके ही सन्तुष्ट होना पडता है, इसके वाद वह कुछ न कुछ दवाई का नुस्खा ग्रधिकाशत मालिश का तेल या ग्ररडी का तेल (जुलाब की दवा) देकर छुट्टी कर लेते है। ग्रान्द्रेई येफीमिच ग्रपने गालो को ग्रपनी हथेली पर लेकर वैठ जाते ग्रौर फिर वह विचारो में डूब जाते। वीमारो से इस बीच वह यत्रवत सवाल करते रहेगे। सेर्गेइ सेर्गेइच भी ग्रपने हाथो को रगडते हुए वही वैठा रहता ग्रौर बीच बीच में एकाध जुमला कहता जाता।

"हमे वीमारी का कष्ट उठाना ग्रौर गरीवी भुगतनी पडती है, क्योकि हम ग्रपने दयालु प्रभु की प्रार्थना नही करते। हा, वात यही है।"

ग्रान्द्रेई येफीमिच ग्रस्पताल के मुग्रायने के घण्टो में ग्रापरेशन (चीरफाड) का काम नही करते। काफी समय से वह ग्रापरेशन करने की ग्रादत से मुक्ति पा चुके है। खून देखते ही वह विकल हो जाते है। जव कभी किसी वच्चे के गले को देखने के लिए उसका मुह खोलना पडता है ग्रौर इस पर वच्चा चिल्लाने ग्रौर ग्रपनी छोटी छोटी

मुट्ठियो से उन्हे हटाने का प्रयत्न करने लगता है तो उसके इस शोरगुल से डाक्टर को चक्कर-से आने लगते हैं और उनकी आखो में आसू आ जाते है। वह जल्दी से नुस्खा लिख देगे और अपनी वाह को हिलाते हुए वच्चे की मा से उसे ले जाने का इशारा कर देगे।

वह जल्दी ही वीमारो की कातरता और मूर्खता, कर्मकाड प्रिय सेर्गेइ सेर्गेइच की उपस्थिति, दिवारो पर टगी तस्वीरो तथा अपने ही प्रश्नो से, जिनमें पिछले २० सालो से भी अधिक समय के भीतर कोई परिवर्तन नही आया है, ऊव जाते है। पाच या छ वीमारो को देख लेने के वाद वह घर लौट आते हैं। शेप वीमारो को उनके सहायक ही देखते हैं।

इस वात की आनन्ददायक चेतना के साथ कि काफी समय से, भगवान की दया समझो, उनकी प्रेक्टिस छूट चुकी है और कोई व्यक्ति उन्हे वाधा पहुचानेवाला नही है, वह घर पहुचते ही अपनी पुस्तक पढने में जुट जाते है। वह वहुत पढते है और पढने में आनन्द लेते है। उनका आधा वेतन कितावा पर ही खर्च हो जाता है और उनके आवास के छ कमरो में से तीन कमरे तो कितावो और पुरानी पत्रपत्रिकाओ से ही भरे हुए हैं। उनके अध्ययन के प्रिय विपय है इतिहास और दर्शन-शास्त्र। उनके पास चिकित्सा शास्त्र सम्वन्धी केवल एक ही पत्रिका "चिकित्सक" आती है जिसे वह सदैव अन्त मे पढना शुरू करते है। वह लगातार घण्टो तक पढते रहते हैं और इसमे वह जरा-सी भी थकान का अनुभव नही करते। इवान दिमीत्रिच की तरह तेजी और व्यग्रता के साथ वह नही पढते। उनका पढने का तरीका धीरे-धीरे विचार करते हुए और उन स्थलो पर जो उन्हे आनन्द देते है अथवा समझने में कठिन होते है रुककर पढने का है। हमेशा ही उनकी पुस्तक के पास ही वोद्का की वोतल और

नमकीन खीरे रखे रहते है या कपडा लगी उनको मेज पर तश्तरी के बग़ैर खडे मसालेदार सेव पडे होते है। हर आध घण्टे पर बिना पुस्तक से दृष्टि हटाये वह वोद्का का एक जाम पीते रहते, खीरा टटोलते और उसका एक टुकडा मुह मे रख लेते।

तीन बजे वह सावधानी के साथ रसोईघर के दरवाज़े पर जाकर थोडा-सा खासते हुए कहते—

"दार्या, अगर मुझे भोजन मिल जाय तो "

भोजन के बाद, जो कि बुरी तरह से परसा हुआ और निस्वाद होता है, वह अपनी बाहो को एक दूसरे से बाधे हुए एक कमरे से दूसरे कमरे में टहलते हुए सोचते जाते। घडी चार, फिर पाच बजा देती लेकिन वह उसी तरह से टहलते और सोचते रहते। प्राय रसोईघर का दरवाज़ा चरमर की आवाज़ से खुलता रहता और उससे दार्या का अस्तव्यस्त लाल चेहरा दिखायी देता।

"आन्द्रेई येफ़ीमिच! क्या अभी आपके बीयर लेने का समय नही हुआ?" वह आकुलता से कहती।

"अभी नही" वह उत्तर देते, "थोडी देर बाद, बस थोडी।"

सन्ध्या होते ही पोस्टमास्टर मिखाइल अवेर्यानिच पहुच जाते। नगर में यही एक आदमी है जिसकी सगत आन्द्रेई येफीमिच को उबाने-वाली नही मालूम पडती। अपने दिनो में मिखाइल अवेर्यानिच कभी धनी ज़मीदार थे और घुडसवार सेना में अफसर रह चुके थे, लेकिन भाग्य ने उनका साथ नही दिया और गरज़ ने उन्हे बुढापे में डाकखाने की नौकरी स्वीकार करने पर मजबूर किया। वह भले चगे दिखायी देते है, सुन्दर घनी सफेद गलमूछें रखते है अच्छे तौर तरीको के आदमी है और ऊची, लेकिन प्रिय लगनेवाली आवाज में बोलते है। वह दयालु और भावुक हृदय व्यक्ति है, यद्यपि यह भी सही है कि वह

गरम मिजाज आदमी है। यदि कभी कोई आदमी डाकखाने जाकर शिकायत करता है, वात नही मानता है या सिर्फ कोई तर्क पेश करता है तो अवेर्यानिच लाल पीले होकर और वहुत आवेश में आकर कापने लगते है और गरजते हुए चिल्ला पडते है–"चुप रहो!" इस प्रकार डाकखाने की एक डरावने स्थान के रूप में वहुत दिनो से वदनामी है। मिखाइल अवेर्यानिच आन्द्रेई यफीमिच को उनकी विद्वत्ता तथा उच्च विचारो के लिए पसन्द करते है और उनका सम्मान करते है। लेकिन अन्य नागरिको के प्रति उनकी धारणा उपेक्षा की रहती है और उनके साथ उनका व्यवहार भी वैसा ही होता है जैसा अपने मातहतो के प्रति।

"यह रहा मै!" कमरे में प्रवेश करते ही वह चिल्ला पडते है– "तुम कैसे हो, मेरे दोस्त? हा। शायद मुझसे ऊव चुके हो। ऐं?"

"अरे। नही भई! विल्कुल नही," डाक्टर उत्तर देते है–"मै तुमसे मिलकर हमेशा ही प्रसन्न होता हू।"

दोनो मित्र फिर सोफा पर वैठ जाते और कुछ देर चुपचाप धूम्रपान करते रहते।

"दार्या, अगर कुछ वीयर मिले तो " डाक्टर पूछ वैठते।

पहली वोतल उसी तरह निस्तब्धता में पी जाती। डाक्टर कुछ विचारमग्न मे दीखते जव कि मिखाइल अवेर्यानिच खूव खुश, ठीक उस व्यक्ति की तरह जिसके पास कोई विनोदपूर्ण सूचना व्यक्त करने के लिए हो। हमेशा डाक्टर ही वार्तालाप को आरम्भ करते।

"क्या यह दुख की वात नही है" वह शान्त और धीमे स्वर से अपने सिर को आहिस्ता हिलाते हुए कहना आरम्भ करते है (इस वीच वह अपने मित्र के चेहरे की ओर दृष्टि नही उठाते। वह कभी भी किसी के चेहरे की ओर नही देखते)–"क्या यह दुख की वात

नही है, मेरे प्यारे मिखाइल अवेर्यानिच, कि इस नगर में कोई भी व्यक्ति ऐसा नही है जिसको दिलचस्प और बुद्धिमत्तापूर्ण वार्तालाप में कोई रुचि हो अथवा इसके लिए उसमें क्षमता हो। हमारे लिए तो यह बडे ही सताप की बात है। शिक्षित लोग भी साधारण बातो के स्तर से ऊचे नही उठते। मै तुम्हे इसका विश्वास दिलाता हू कि उनका मानसिक विकास किसी भी तरह निम्न श्रेणी के लोगो से अधिक नही है।"

"सही कहा, मैं आपसे सहमत हू।"

"आप इस बात से तो अवगत ही है," डाक्टर अपनी शान्त बाणी में कहते जाते, "कि इस विश्व में मानव मस्तिष्क की उच्चतर आध्यात्मिक प्रक्रियाओ के अलावा और सब चीज महत्वहीन तथा अरुचिकर हैं। मस्तिष्क ही है जो मानव और पशु के बीच की सीमा बनाता है। इसी के द्वारा हमें मानव के दैवी स्वभाव की झाकी प्राप्त होती है और कुछ सीमा तक अस्तित्वहीन अमरत्व का स्थान यह ग्रहण कर लेता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं, मस्तिष्क ही एक मात्र साधन है जिससे हम आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। हम अपने चारो ओर किसी ऐसी वस्तु को न तो देखते है और न सुनते हैं जिसे हम मस्तिष्क कह सके और इसका अर्थ हुआ कि हम आनन्द से वचित हैं। यह सही है कि हमारे पास पुस्तके हैं, लेकिन वह वार्तालाप एव व्यक्तिगत सम्पर्क का स्थान नही ले सकती। अगर आप मुझे एक उपमा इस्तेमाल करने की इजाज़त दें, जो कि मुझे डर है बहुत सुन्दर नही है, तो मै यही कहूगा कि पुस्तके छपा हुआ सगीत हैं और वार्तालाप गाना।"

"बिल्कुल सही।"

फिर निस्तब्धता छा जाती। दार्या अपने चेहरे पर मौन दुख की छाप लिये रसोईघर से बाहर आ जाती और दरवाज़े पर खडी

होकर अपने सिर को मुट्ठी से थामे भीतर चलनेवाले वार्तालाप को सुनने लगती।

"आह!" अवेर्यानिच सास छोडते हुए कहते, "और आप समझते हैं आजकल लोगो के दिमाग भी है?"

इसके वाद वह पुराने समय की वाते जव जीवन स्वस्थ, सुखी और खुशियो मे भरपूर था कहने लगते। पुराने रूस के शिक्षित लोग सम्मान और मित्रता के प्रति कितनी ऊची मान्यताए रखते थे, लोग एक दूसरे को विना रसीद लिये रुपये उधार देते रहते थे और आवश्यकता के समय किसी मित्र के प्रति सहायता का हाथ न वढाना अपमान की वात समझी जाती थी। और उन धावो, साहसी कृत्यो, भिडन्तो, मित्रता और स्त्रियो का कहना ही क्या! काकेशस क्या ही अद्भुत है! एक वटालियन कमाडर की पत्नी, जो कि कुछ सनकी स्वभाव की स्त्री थी, आफिसर की तरह कपडे पहिनकर और विना किसी पथ प्रदर्शक को साथ लिये हर सन्ध्या को पहाडो में घोडे पर चढकर घूमने जाया करती थी। लोगो का कहना था कि किसी एक पहाडी गाव के राजा के साथ उसकी प्रेम लीला चल रही थी।

"हे भगवान!" दार्या सास भरती हुई कहती।

"और हम लोग खाते-पीते कितना थे! हम लोग कैसे उदार विचारो के थे!"

आन्द्रेई येफीमिच उनके शव्दो के अर्थो पर ध्यान दिये विना सुनते रहते। वह अपनी वीयर पीते हुए कुछ और ही वातो के सम्वन्ध में सोचते रहते।

"मैं प्राय समझदार लोगो से स्वप्न में भेंट करता और उनसे वार्तालाप करता हू," वह सहसा मिखाइल अवेर्यानिच की वातो को वीच मे काटते हुए कहते। "मेरे पिता जी ने मुझे अच्छी शिक्षा प्रदान की।

लेकिन गत् सन् १८६० के विचारो से प्रभावित होकर मुझे डाक्टरी के पेशे में आने के लिए बाध्य किया। मैं कभी सोचता हू कि अगर मैं उनकी बात न मानता तो सभवत अब तक किसी बौद्धिक आन्दोलन के केन्द्र मे होता। मैं सभवत किसी विश्वविद्यालय का आचार्य हो गया होता। यह सही है कि मस्तिष्क भी अन्य वस्तुओ की तरह अमर नही है और वह परिवर्तित होता रहता है, लेकिन मैं पहले ही इस बात को स्पष्ट कर चुका हू कि क्यो मैं इसको और सब चीजो से बढकर मानता हू। जीवन केवल एक बुरा जाल भर है। जैसे ही कोई सोचने विचारनेवाला व्यक्ति परिपक्वता को प्राप्त करता है और सजग विचार की क्षमता रखने के योग्य होता, वैसे ही वह इस बात को महसूस करने से बच नही सकता कि वह ऐसे जाल में फस गया है जिससे छुटकारे का कोई भी मार्ग नही रह गया है। सच पूछो तो वह अपनी इच्छाओ के प्रतिकूल अस्तित्वहीन स्थिति से बिल्कुल आकस्मिक कारणो से उत्पन्न होने को बाध्य हुआ है किसलिए? अगर वह अपने अस्तित्व के अभिप्राय और उद्देश्य को जानने के प्रयत्न करता है तो या तो उसे कोई उत्तर ही नही मिलता और अगर मिलता भी है तो वह तमाम मूर्खताओ से भरा हुआ। वह दरवाजे खटखटाता जाता है और कही से कोई दरवाजा उसके लिए नही खुलता। तब मौत, और वह भी उसकी इच्छा के प्रतिकूल, उसके पास आ जाती है। जिस प्रकार समान दुर्भाग्य से जुडे हुए बन्दी एक-दूसरे के साथ रह सकने पर ज्यादा खुशी महसूस करते है, ठीक उसी प्रकार विश्लेषण और सामान्य सिद्धान्त-निर्धारण करने की प्रवृत्ति रखनेवाले लोग भी परस्पर खिच आते है। इस बात पर उनका ध्यान नही जाता कि वे एक जाल में फसे हुए है और वे ऊचे और निर्बाध विचारो के आदान-प्रदान की व्यवस्था के द्वारा अपना समय व्यतीत कर लेते है। इस रूप में मस्तिष्क अतुलनीय सतोष का स्रोत है।"

"बिल्कुल सत्य।"

आन्द्रेई येफीमिच साथी से आख मिलाये बगैर कोमल, हिचकती वाणी में समझदार लोगों और उनके साथ वार्तालाप के आनन्दों का वर्णन करते रहते। मिखाइल अवेर्यानिच बडे ध्यानपूर्वक उनको सुनता रहता और बीच में कभी कभी अपनी ओर से "बिल्कुल सही" का वाक्याश दुहराता रहता।

"लेकिन क्या तुम आत्मा के अमरत्व में विश्वास नही रखते?" सहसा पोस्टमास्टर कहते।

"मेरे प्रियवर मिखाइल अवेर्यानिच! नही भई! न तो मैं इसमें विश्वास करता हू, और न ऐसे विश्वास के लिए मेरे पास कोई कारण ही है।"

"सत्य कहू तो इस सम्बन्ध में मुझे स्वय भी सन्देह है। दूसरी ओर तुम जानते हो, मुझे लगता है कि मैं कभी नही मरूगा। अरे भले आदमी, मैं कभी कभी अपने से कहता हू, अब मरने का समय है। लेकिन एक महीन आवाज़ तभी गुनगुना जाती है, 'इसका विश्वास मत करो, तुम कभी नही मरोगे!'"

नौ बजने के बाद शीघ्र मिखाइल अवेर्यानिच विदा हो जाते है। ड्योढी में अपने भारी कोट को अपने ऊपर डालते हुए वह सासे भरते हुए कहते—

"भाग्य ने भी हमें किस कोने में पटक दिया है! और सबसे बरा तो यह है कि मरना भी हमें यही होगा। आह, हाय!"

७

अपने दोस्त को बाहर तक पहुचाने के बाद आन्द्रेई येफीमिच अपनी मेज़ पर आकर बैठ जाते और फिर पढने लग जाते। रात की

निस्तब्धता को भग करती हुई कोई भी आवाज़ नही होती, ऐसा प्रतीत होता जैसे समय की गति ही रुक गयी हो, तथा डाक्टर और उनकी पुस्तक को देख रही हो, मानो इस विश्व में सिवाय इस पुस्तक और हरे शेड वाले लैम्प के और कोई वस्तु ही नही हो। डाक्टर की कर्कश और ग्रामीण दिखाई देने वाली आकृति शनै शनै मानव मस्तिष्क की अभिव्यक्तियो के प्रति स्नेह और आदर के लिए मुस्कान से प्रकाशमान हो जाती है। "क्यो नही, ओह क्यो नही, इसान अमर होता ?"—वह सोचते है। "मस्तिष्क के ये सब केन्द्र और उनकी प्रक्रियाए, दृष्टि, वाणी, चेतना, प्रतिभा क्या धूल में मिलने के लिए ही है ? और यही नियति है ? और फिर इसके बाद बिना किसी उद्देश्य या कारण के अरबो वर्षों तक पृथ्वी की सतह के साथ निष्क्रिय होकर सूर्य के चारो ओर चक्कर काटने के लिए ही है ? निश्चित रूप से ऐसा तो आवश्यक नही था, कि सिर्फ शीतल पडने और चक्कर काटते रहने के लिए ही मनुष्य को उसके ऊचे, प्राय दिव्य मस्तिष्क को विस्मृति के गर्भ से बुलाया जाय और फिर मानो निष्ठुर उपहास कर उसे मिट्टी में मिला दिया जाय।"

"परिवर्तनवाद ! एक कायर के सिवा दूसरा कौन इस तरह के अमरत्व के प्रतिरूप से सान्त्वना प्राप्त कर सकता है ? अचेतन रूप से प्रकृति में जो क्रियाए होती रहती है वह मानव-मूर्खता के स्तर से भी निम्नतर है, क्योकि मूर्खता में चेतनता तथा इच्छा शक्ति का कुछ न कुछ समावेश ही है, जबकि उन क्रियाओ में इस तरह की कुछ भी तो बात नही है। एक कायर ही, जिसके भय की भावना उसके आत्म-सम्मान की भावना से बढकर है, इस विचार से अपने को सान्त्वना दे सकता है कि उसका शरीर घास के तिनके के रूप में, पत्थर में, मेढक के रूप में जीवित रहेगा परिवर्तनवाद में अमरत्व को देखना ऐसा ही उपहासास्पद है जैसा कि वायलिन केस के सुन्दर भविष्य की

भविष्यवाणी करना जबकि मूल्यवान वाद्य ही टूट गया हो और व्यर्थ पडा हो।"

घडी जब जब टन टन कर घण्टो के बीतने की सूचना देती है तो आन्द्रेई येफीमिच अपनी आराम-कुर्सी पर पीछे की ओर टेक लगा देते है और थोडी देर के लिए अपने विचारो को केन्द्रित करने के लिए आखें मूद लेते है। अभी अभी जिस पुस्तक को वह पढ रहे थे उसमें लिखित भव्य विचारो के प्रभाव के अन्तर्गत वह अनजाने ही अपने बीते और वर्तमान जीवन क्रम का विश्लेपण करने लगते है। गुज़रा जमाना उन्हें घृणित लगता है और वह यही चाहते है कि इसके सम्बन्ध में सोचा ही न जाय और वर्तमान भी ठीक भूतकाल की तरह ही है। वह जानते है कि जब उनके विचार सूर्य के चारो ओर पृथ्वी की ठडी होती हुई सतह के साथ चक्कर काटते होते है, तो उससे कुछ ही दूरी पर डाक्टर के कमरो से हटकर उस बडे भवन मे लोग बीमारी और गन्दगी में घुलघुल कर मर रहे होते है, इसी क्षण सभवत कोई कीडो से लडता जग रहा होगा, दूसरे को अभी चर्मरोग की छूत लगी होगी, अथवा कसकर बधी हुई पट्टी से घाव पर पीडा बढ रही होगी, शायद कुछ रोगी नर्सों के साथ ताश खेल रहे हो अथवा वोद्‌का पी रहे हो। बारह हजार स्त्री पुरुषो के साथ पिछले साल छल हुआ था, सम्पूर्ण अस्पताल का जीवन, चोरी, गप्पबाजी, झगडा, पक्षपात और लज्जाहीन पोगापथी पर आधारित है, ठीक उसी तरह जिस तरह कि वह आज से बीस वर्ष पूर्व था। और आज भी अस्पताल एक अत्यन्त अनैतिक संस्था है जिसका कि नागरिको के स्वास्थ्य पर हानिप्रद प्रभाव पड रहा है। वे जानते है कि वार्ड नम्बर ६ में निकीता रोगियो को पीटता रहता है और मोजेज़ बाज़ार की गलियो में भीख मागने के लिए रोज निकल जाता है।

इसके साथ ही वह यह भी जानते है कि गत् पचीस वर्षों में चिकित्सा विज्ञान ने आश्चर्यजनक विकास किया है। विश्वविद्यालय मे अध्ययन करते समय उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ था कि शीघ्र चिकित्सा शास्त्र का भी वही भविष्य होनेवाला है जो कि कीमियागीरी या आध्यात्मवाद का हुआ। लेकिन अब रातो में पढते हुए वही चिकित्सा शास्त्र उन पर गहरा प्रभाव डालता है और उनमें आह्लादपूर्ण आश्चर्य की भावना को जाग्रत करता है। कैसा दिव्य चमत्कार रहता है! कैसी क्रान्ति इस क्षेत्र में हुई है! महान पिरोगोव भी जिन आपरेशनो को भविष्य मे भी असभव समझता था, वे आज कीटाणु निरोधात्मक प्रणाली के द्वारा सम्पन्न हो रहे हैं। जेम्स्त्वो के साधारण डाक्टर भी घुटने के जोडो को ठीक से बैठाने में अब निर्भय रहते है। पेट की चीरफाड की क्रिया में सौ में एक बीमार की मृत्यु होती है। पथरी निकालना तो इतनी मामूली बात रह गयी है कि उसका कोई जिक्र तक नही करता है। आतशक तो पूर्णतया निर्मूल की जा सकती है। वशानुक्रम सिद्धान्त, हिप्नाटिज्म, पास्चर और कोह के आविष्कार, हाईजीन, आकडे और हमारे रूसी जेंस्त्वो का चिकित्सा-सगठन! मनोरोग-चिकित्सा और इस रोग के आधुनिक वर्गीकरण, रोग पहिचानने के नये तरीके एव उसकी चिकित्सा, यह सब उस गुज़रे हुए जमाने की बातो से कितनी ऊची उठ गयी है, बिल्कुल पहाड की तरह। मानसिक रोगियो को अब ठढे पानी से नहलाते नही, बाधकर रखना नही पडता। उनके साथ मानवो के सदृश्य ही व्यवहार किया जाता है। हम समाचारपत्रो में यह पढते ही रहते हैं कि उनके मनोविनोद के लिए वास्तव में थियेटर और नाच गानो की व्यवस्था की जा चुकी है। आन्द्रेई येफीमिच जानते है कि आधुनिक दृष्टिकोण और रुचि के सामने वार्ड नम्बर छ की तरह के घृणित स्थान, रेल स्टेशन

मे सवा सौ मील की दूरी पर स्थित कस्बे में ही सभव है, जहा कि वहा के मेयर और नगरपालिका के सदस्य अर्ध-शिक्षित आदमी है, यह डाक्टर को पुजारी के सदृश मानते है जिसका अन्धानुकरण ही किया जाना चाहिए चाहे वह किसी बीमार के मुह में जलता हुआ सीसा क्यो न उडेल दे। यही बात अगर किसी दूसरी जगह हुई होती तो वहा लोग और अखबार कभी के इस छोटे-से बैस्टिली (कैदखाना) जमीन में मिलाकर ध्वस्त कर गये होते।

"लेकिन इससे क्या लाभ?" आन्द्रेई येफीमिच आखो को पूरा खोलते हुए अपने से ही यह प्रश्न कर बैठते है। "इस सबसे हुआ क्या? कीटाणुनिरोध, कोह और पास्चर के होने से भी तो कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नही आया। मृत्यु-सख्या और बीमारिया वैसी ही बनी हुई है जैसी कि पहले थी। मानसिक रोगियो के लिए थियेटर और नाच गानो का प्रबन्ध तो हुआ है, लेकिन उन्हे बद चिकित्सालय से मुक्त तो नही किया गया है। अतएव यह सब मूर्खता और आडम्बर है और वियना के किसी सबसे अच्छे अस्पताल और मेरे इस अस्पताल में कोई खास अन्तर नही है।"

फिर भी, दुख और ईर्षा से मिलती-जुलती भावना उन्हें उदासीन होने से रोकती है। लेकिन सभवत यह भावना थकान से उत्पन्न हुई समझी जानी चाहिए। वह अपने भारी सिर को पुस्तक के पृष्ठ पर रख देते है और अपने हाथो को अपने गालो के नीचे कर लेते है। इससे उन्हे अधिक आराम मिलता है और वह सोचना जारी रखते है—

"मै दुष्टता भरे काम में लगा हू और अपने इस काम के लिए उन्ही लोगो से वेतन पाता हू जिनको मै धोखा देता हू। मै बेईमान हू। लेकिन अपने में मै कुछ भी नही हू। मै तो अनिवार्य सामाजिक बुराई का एक कण मात्र हू, सभी जिला अधिकारी बुरे है और कुछ न

करने के लिए वेतन लेते रहते है अतएव, मेरे बेईमान होने का दोष तो युग के ऊपर है, न कि मेरे ऊपर अगर मै आज से दो सौ साल बाद पैदा होऊ तो निश्चय मै एक भिन्न आदमी होऊगा।"

घडी के तीन बजाने पर वह अपने लैम्प को बुझाकर अपने सोने के कमरे में चले जाते है। लेकिन वह ज़रा-सी भी नीद महसूस नही करते।

८

दो वर्ष पूर्व ज़ेंस्त्वो ने अपनी उदारता के आवेश में नागरिक अस्पताल के मेडिकल कर्मचारी बढाने के लिए, जब तक कि ज़ेंस्त्वो का अस्पताल खुल सके, ३०० रूबल प्रति वर्ष देने का निश्चय किया था। म्युनिसिपैलिटी ने ज़िला मेडिकल अधिकारी येवगेनी फेदोरोविच खोबोतोव को आन्द्रेई येफीमिच को सहायता देने के लिए आमन्त्रित किया। नया डाक्टर तीस वर्ष से कम का नौजवान था। लम्बा और सावला, गाल की चौडी हड्डियो और छोटी आखोवाला व्यक्ति था। सभवत मूलत गैर रूसी जाति का था। हमारी बस्ती मे वह अपनी जेब में विना एक पैसा लिए एक छोटे ट्रक और असुन्दर नवयुवती के साथ जिसकी गोद में बच्चा था, पहुचा। उस नवयुवती को वह अपनी रसोईदारिन बताता था। वह फुराश्का टोपी और ऊचे जूते पहनता है और सर्दियो में भेड की खाल से बने कोट को पहनकर निकलता है। सेर्गेइ सेर्गेइच मेडिकल सहायक और खज़ाची से उसकी शीघ्र ही मित्रता हो गयी। बाकी अधिकारियो को वह किसी कारण रईसज़ादे कहकर उनसे दूर ही रहता। पूरे घर भर में उसके पास एक ही किताब है–"वियना अस्पताल के सन् १८८१ के नवीनतम नुस्खे"। अपनी इस किताब को साथ लिये विना वह किसी भी रोगी को देखने नही

जाता। शाम को वह क्लब में बिलियर्ड खेलता है, लेकिन ताश उसे पसन्द नही। "दीर्घसअता," "अरे आओ भई," "सिरका लगा फटीचर," "मस्त रहो यही तो जिन्दगानी है" – ऐसे फिकरो को बडे चाव से कहने का वह आदी है।

वह हफ्ते में दो बार अस्पताल जाता है। वहा वार्डों का चक्कर लगाकर बाहरी बीमारो को देखता है। यह बात कि यहा कीटाणुनाशक दवाए तो कतई नही हैं और फस्द खोलने के गिलासो की भरमार है, उसे नाराजी से भर देती है। लेकिन आन्द्रेई येफीमिच के बुरा मानने के भय से वह कोई भी नया तरीका चालू नही करता। उसे इस बात का विश्वास है कि उसका सहयोगी आन्द्रेई येफीमिच एक धूर्त है। उसको यह सन्देह बना हुआ है कि वह अत्यन्त धनी है और गुप्त रूप से उनसे ईर्ष्या करता है। वह खुशी से उनकी जगह लेने को तैयार है।

६

मार्च के अन्त मे वसन्त की एक सन्ध्या को जब कि ज़मीन पर बर्फ पिघल चुकी थी और चिडिया अस्पताल के बगीचे में चहचहा रही थी, डाक्टर अपने मित्र पोस्टमास्टर को छोडने फाटक तक गये। ठीक उसी वक्त यहूदी मोज़ेज़ अहाते में दाखिल हुआ, वह अपने सामान्य चक्करो से लौट रहा था। उसके सिर पर टोपी न थी और नगे पावो मे उसने ऊपर के रबड के जूते चढा रखे थे। अपने हाथ मे वह एक छोटा-सा झोला लिये हुए था, जिसमे कि उसकी भीख से प्राप्त वस्तुए थी।

"एक कोपेक दो!" ठड से कापते हुए, लेकिन मुस्कराते हुए उसने डाक्टर से आग्रह किया।

आन्द्रेई येफीमिच ने, जो नही जानता कि इनकार कैसे किया जाता है, उसे दस कोपेक का सिक्का दे दिया।

"कितना दारुण है!" भिखमगे की नगी टागो और पतले कमजोर टखनो पर देखते हुए उन्होंने विचार किया—"इस तरी के मौसम में "

दया और घिन की मिली-जुली भावना से प्रेरित होकर उन्होंने उस छोटी इमारत तक उस यहूदी का अनुसरण किया। उसके गजे सिर और उसके टखनो को वह निहारते जाते थे। डाक्टर के पदार्पण करने पर निकीता कूडे-कबाड के ढेर पर से कूदकर सीधा खडा हो गया।

"नमस्ते, निकीता," आन्द्रेई येफीमिच ने अपनी कोमल वाणी में कहा—"उस यहूदी को एक जोडा जूता या इसी तरह कुछ दिये जाने की बात कैसी रहेगी? उसे जुकाम हो सकता है।"

"बहुत अच्छा, हुजूर। मै सुपरिण्टेण्डेण्ट से इस बात की रिपोर्ट कर दूगा।"

"हा, जरूर, मेरे नाम से उनसे कह देना। उन्हे कह देना कि यह मैंने कहा था।"

गलियारे से लगा वार्ड का दरवाज़ा खुला था। इवान दिमीत्रिच खाट में अपनी एक कुहनी पर जोर दिये हुए बहुत उत्सुकता से अपरिचित वाणी को सुन रहा था। तभी सहसा उसने डाक्टर को पहचान लिया। गुस्से से कापता हुआ वह कूद पडा। उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया था और आखें ऐसी हो गयी कि जैसे आगे निकल रही हो। वह भागता हुआ कमरे के मध्य में जाकर खडा हो गया।

"डाक्टर आ गये है!" वह चिल्लाया और ठहाका मारकर

हसने लगा। "सज्जनो, आखिरकार! मैं आपको बधाई देता हू! अन्तत डाक्टर तशरीफ ले आये! लुच्चा, बदमाश!" प्राय पिपयाती हुई आवाज़ में और रोष में भरकर पैर पटकते हुए जैसा कि पहले वार्ड में कभी भी देखने को नही मिला था वह कहता गया, "इस बदमाश को मार डालो, नही, नही इसको मार डालना भी इसके लिए कम ही होगा। फेंक दो इसको किसी पाखाने में!"

यह सुनकर आन्द्रेई येफीमिच ने दरवाजे के भीतर झाकते हुए शान्ति से पूछा

"किसलिए?"

"किसलिए?" इवान दिमीत्रिच चिल्लाया। भयानक चेहरा बनाये हुए तथा अपने चोगे के पल्लो को अपने चारो ओर समेटकर वह कापता हुआ डाक्टर के पास गया। "किसलिए? तुम चोर हो!" घृणा से भरकर और अपने होठो को सिकोडते हुए, मानो वह थूकने जा रहा हो, उसने चिल्लाते हुए कहा, "ठग, जल्लाद!"

"आवेश में मत आओ" आन्द्रेई येफीमिच ने झेंपकर मुसकराते हुए कहा। "मै तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि अपने जीवन में मैंने कभी कोई चीज़ नही चुरायी और शेष बातो के लिए सभवत तुम अतिशयोक्ति से काम ले रहे हो। मैं जानता हू तुम मुझसे नाराज़ हो। कोशिश करो और शान्त होकर तथा बिना उत्तेजित हुए मुझे बताओ कि क्या बात है जिससे तुम इतने क्रोधित हो गये हो?"

"तुम मुझे यहा क्यो रखे हो?"

"इसलिए कि तुम बीमार हो।"

"हा मैं बीमार हू। लेकिन बीसियो, सैकडो पागल अपनी स्वतत्रता का उपभोग कर रहे हैं, सिर्फ इसलिए कि तुम इतने नासमझ हो कि

उनमें व स्वस्थ साधारण आदमियो में फर्क नही कर पाते। फिर मै ही और यह अभागे ही क्यो औरो के पापो के लिए यहा पटक दिये गये हैं बलि के बकरो की भाति? स्वय तुम, तुम्हारा सहायक, इस्पेक्टर और अस्पताल के तमाम लफगे—हम में से हर व्यक्ति के मुकाबले बहुत नीचे है, नैतिकता में भी। तब फिर हम ही क्यो यहा हो और तुम क्यो न रहो? यह किस प्रकार का तर्क है?"

"इस बात से नैतिक मान्यताओ और तर्क का कोई सम्बन्ध नही है। हर बात सयोग पर निर्भर करती है। जिनको यहा रखा जाता है वह यहा रहते हैं और जिनको नही रखा गया है वे अपनी स्वतत्रता का आनन्द लेते है। बस बात यही है। इस तथ्य में कि तुम मानसिक रोगी हो और मै एक डाक्टर हू न तो कोई नैतिकता है और न तर्क। यह तो सिर्फ एक आकस्मिक घटना भर है।"

"मै ऐसी मूर्खता की बाते नही समझता"—इवान दिमीत्रिच ने अपने बिस्तर पर बैठते हुए खोखली आवाज़ में कहा।

मोज़ेज़ ने जिसकी तलाशी लेनें का साहस निकीता डाक्टर की उपस्थिति में न कर सका था, भीख में पाये हुए टुकडो, कागज़ो और हड्डियो को बिस्तर पर फैलाकर रख दिया। अभी भी सर्दी से कापते हुए वह अपनी भाषा में गुनगुनाती हुई ध्वनि में बोलने लगा। शायद वह सोच रहा था कि उसने एक दुकान खोल ली है।

"मुझे बाहर जाने दो।" इवान दिमीत्रिच ने टूटती आवाज़ में कहा।

"मै ऐसा नही कर सकता।"

"लेकिन तुम क्यो नही कर सकते? क्यो नही?"

"इसलिए कि यह मेरी शक्ति में नही है। स्वय अपने से पूछो कि मेरे तुम्हे बाहर छोड देने से तुम्हारा क्या लाभ होगा?

मान लो कि मैं ऐसा कर भी दू फिर भी वस्ती के लोग या पुलिस तुम्हे रोककर पकड लेगी और यहा लौटा लायेगी।"

"हा, हा! तुम ठीक कहते हो," अपने माथे को रगडते हुए इवान दिमीत्रिच ने कहा—"भयानक है यह! मैं क्या करू? क्या?" मुह वनाने के वावजूद, उमकी वाणी और उसका नौजवान, वुद्धिमान चेहरा आन्द्रेई येफीमिच को जच गया। उम नौजवान मे कुछ आशा भरी वात कहने और उमे शान्त करने को वह ललचा उठे। वह उसकी वगल में चारपाई पर वैठ गये और एक क्षण सोच लेने के वाद कहने लगे—

"तुम पूछते हो कि तुम क्या करो? तुम्हारे लिए सवसे अच्छी वात यह होती कि तुम यहा से भाग जाते। दुर्भाग्य से यह व्यर्थ होगा। तुम पकड लिये जाओगे। समाज जव अपराधियो, मानमिक रोगियो और दूसरे अडचन पैदा करनेवाले लोगो से अपने को सुरक्षित रखने का निश्चय कर लेता है, तो वह अजेय है। अव तुम्हारे लिए एक ही रास्ता है, तुम यह मान लो कि तुम्हारी उपस्थिति यहा आवश्यक है।"

"इससे किमी का भला नही होगा।"

"जेलखाने और पागलखाने जैमी चीजे है, इसलिए इनको भरने के लिए भी लोग चाहिए। तुम न सही, तो मैं सही, और अगर मैं नही तो कोई दूसरा होगा। प्रतीक्षा करो, उस सुदूर भविष्य की जव न तो जलखाने रहेगे और न पागलखाने तव फिर न तो सीखचो से वन्द खिडकिया होगी और न अस्पताल के चोगे। वह ममय अवश्य आयगा, चाहे देर से आये चाहे जल्दी।"

इवान दिमीत्रिच व्यगपूर्वक मुस्कराया—

"तुम्हारा यह मतलव तो है नही," अपनी आखें मिकोडते हुए उसने कहा। "तुम और तुम्हारे महायक निकीता जैमे सज्जनो के लिए भविष्य कैसा है? लेकिन तुम निश्चय जानो कि अच्छा ममय

आनेवाला है। मेरी बाते, घिसी पिटी मालूम हो सकती हैं और तुम हस सकते हो, लेकिन जीवन का नया प्रभात अपनी सम्पूर्ण आभा के साथ फूटेगा, सत्य की विजय होगी और हम भी उस प्रकाश को देखेंगे। मैं नही देख सकूगा तब तक मैं मर जाऊगा, लेकिन और लोगो के नाती पोते उस प्रभात को देखेंगे। अपने हृदय के अन्तरतम से मैं उनका अभिनन्दन करता हू और खुशी मनाता हू, खुशी मनाता हू उनकी खातिर! आगे बढो, दोस्तो, भगवान तुम्हारी सहायता करे!"

अपनी चमकती हुई आखो के साथ इवान दिमीत्रिच उठा और खिड़की की ओर हाथ बढाया। भावावेश में वह कहता रहा—

"इन सीखचो के पीछे से मैं तुम्हे आशीष भेजता हू! सत्य चिरजीवी हो! मैं खुशी मनाता हू!"

"मैं खुशी मनाने का कोई विशष कारण नही देखता," आन्द्रेई येफीमिच ने कहा। वह इवान दिमीत्रिच की घोषणाओ को कुछ कुछ नाटकीय समझते रहने के बावजूद उन्हे पसन्द कर रहे थे। "तब तो जेलखाने और पागलखाने नही होगे, और जैसा कि जनाब फरमाते हैं, सत्य विजयी होगा। लेकिन चीज़ो का तत्व नही बदलेगा और प्रकृति के नियम ऐसे ही बने रहेंगे। जिस तरह आज है उसी तरह तब भी लोग बीमार पडेंगे, बूढे होगे और मर जायेंगे। प्रभात चाहे कितनी ही चमक से तुम्हारा जीवन आलोकित करे, अन्त में तुम्हे ताबूत में बन्द होना ही पडेगा और ज़मीन के भीतर एक गड्ढे में तुम डाल दिये जाओगे।"

"और अमरत्व?"

"व्यर्थ।"

"तुम इसमें विश्वास नही करते लेकिन मैं करता हू। दोस्तोयेवस्की या शायद वोल्तेयर की किसी रचना में एक पात्र ने कहा था कि यदि ईश्वर न होता तो भी इसान उसका आविष्कार कर

लेता और यह मेरा दृढतम विश्वास है कि अमरत्व के सदृश अगर कोई वस्तु नही है तो देर-सवेर से महान मानव मस्तिष्क उसका आविष्कार कर लेगा।"

"बहुत खूब कहा," प्रसन्नता से मुस्कराते हुए आन्द्रेई येफीमिच बोले, "तुममें निष्ठा है, यह अच्छी बात है। तुम्हारी तरह विश्वास लेकर चहारदीवारियो से घिरकर भी कोई आनन्द से रह सकता है। लेकिन मैं समझता हू तुम शिक्षित आदमी हो?"

"हा। मै विश्वविद्यालय में पढता था यद्यपि मैंने पढाई पूरी नही की।"

"मै समझता हू तुम चिन्तनशील और समझदार व्यक्ति हो। किसी भी परिस्थिति में तुम अपने विचारो से सात्वना प्राप्त कर सकते हो। जीवन के सम्पूर्ण बोध के लिए निर्बन्ध, गहन, प्रयत्नशील विचार और दुनिया के मूर्खतापूर्ण कोलाहल के लिए घृणा ये ऐसे वरदान हैं जो मानवता को प्राप्त हुए वरदानो में श्रेष्ठ है। दुनिया भर की सीखचेदार खिडकियो के बावजूद ये वरदान तुम्हारे हो सकते हैं। डायोजेनीज़ एक पीपे के अन्दर रहता हुआ भी राजाओं के मुकाबिले ज्यादा खुश था।"

"तुम्हारा डायोजेनीज़ मूर्ख था," इवान दिमीत्रिच ने मुह फुलाकर कहा। "तुम डायोजेनीज़ या उसके सदृश किसी न किसी चीज़ के बोध की बाते मुझसे क्यो करते हो?" एकाएक अपने पैरो पर क्रोध से खडे होते हुए उसने कहा। "मै जीवन को प्यार करता हू, मै इससे प्रचण्ड रूप से प्रेम करता हू! मुझे वहम है कि मुझे सताया जा रहा है, मेरा पीछा किया जा रहा है। मै निरन्तर दुखदायी भयो से पीडित हू, लेकिन जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं जब मै उसकी प्यास से आकुल हो जाता हू और तभी मुझे भय होता है कि कही मै पागल न हो जाऊ। मै जीवित रहना चाहता हू। ओह, मुझे ज़िन्दगी चाहिए!"

अपने आवेश में वह कमरे के एक छोर से दूसरे तक गया और फिर आवाज़ धीमी करते हुए कहने लगा—

"अपने सपनो में कभी कभी मैं प्रेतो को देखता हू। लोग मेरे पास आते है, मै उनकी वाणियो और सगीत को सुनता हू और मै सोचने लगता हू कि मै कही वनस्थली अथवा सागर तट पर हू और तभी मैं शोरगुल और चिन्ताओ की कामना करने लगता हू   मुझे बताओ, बस वहा क्या हो रहा है?" सहसा वह बाते बदलकर कहने लगा, "बाहर जगत में क्या हो रहा है?"

"तुम क्या जानना चाहते हो? बस्ती के बारे में या आम तौर पर दुनिया के सम्बन्ध में?"

"ठीक है, शुरू करने के लिए बस्ती को ले ले और फिर इसके बाद विश्व की आम रूप से चर्चा हो।"

"वहुत खूब! बस्ती में सिवाय नीरसता के और कुछ नही है ऐसा एक भी व्यक्ति नही मिलेगा जिससे वात की जा सके और जिसे सुना जा सके। कोई नये लोग नही है। तथ्य की वात तो यह है कि अभी हाल ही में हमारे पास एक नया डाक्टर खोबोतोव भेजा गया है।"

"जब वह पहुचा था मै वही था। क्या वह कमीना है?"

"खैर। वह कोई सभ्य आदमी नही है। यह वडी मजेदार बात है जानते हो? जो कुछ सुनने में आता है उससे लगता है कि मास्को व पीतरबूर्ग में कोई गतिहीनता नही है, वहा बौद्धिक क्रियाशीलता है और इसका यह मतलव हुआ कि वहा सच्चे मनुष्य रहते है। लेकिन न जाने क्यो वे हमारे पास ऐसे लोगो को भेजते हैं जिन्हे देखने को जी नही चाहता। वस्ती का दुर्भाग्य!"

"दुर्भाग्य! वास्तव में!" इवान दिमीत्रिच ने सास भरते हुए कहा और फिर हसा। "और दुनिया का क्या हाल है? पत्र-पत्रिकाओ तथा समाचारपत्रो में लोग क्या लिख रहे है?"

वार्ड में अब तक अधेरा हो गया था। डाक्टर उठ खडा हुआ और खडे खडे ही वह इवान दिमीत्रिच को वतलाता रहा वहा के विदेशो के और रूसी अखवारो में क्या चर्चा हो रही है और आधुनिक विचारधाराए किस ओर जा रही है। इवान दिमीत्रिच वहुत ध्यानपूर्वक उन्हे सुनता रहा। वीच वीच में वह कभी कभी एकाध सवाल भी कर लेता। फिर तभी सहसा जैसे उसे किसी भयानक वात की स्मृति हो आयी हो उसने अपने सिर को अपने हाथो में जकड लिया और डाक्टर की ओर पीठ कर अपनी चारपाई पर लेट गया।

"तुम्हे क्या हुआ?" आन्द्रेई येफीमिच ने पूछा।

"तुम मुझसे एक शब्द भी न सुनोगे," इवान दिमीत्रिच ने उजड्डता से कहा, "मुझे अकेले रहने दो!"

"क्यो? क्या वात हुई?"

"मै तुमसे कह रहा हू, तुम मुझे अकेला छोड दो। क्या आफत है!"

उसास लेते हुए तथा कधो को झटका देते हुए आन्द्रेई येफीमिच वार्ड से विदा हुए। गलियारे से गुजरते हुए उन्होने कहा—

"निकीता! अच्छा होता यदि इस जगह को थोडा-सा साफ रखा जाता यहा वहुत वुरी तरह से दुर्गन्ध आ रही है।"

"वहुत अच्छा, हुजूर!"

"एक वढिया नौजवान," आन्द्रेई येफीमिच घर लौटते हुए मार्ग मे सोचते रहे, "इतने तमाम वर्षो के वाद मै समझता हू यह पहला व्यक्ति है जिससे मै वातचीत कर सकता हू। वह वुद्धिमानी से वाते

कर सकता है और केवल उन्ही बातो में रुचि रखता है जो ध्यान देने योग्य है।"

उस रात पढते हुए और बाद में चारपाई में लेटे हुए वह इवान दिमीत्रिच के सम्बन्ध में सोचते विचारते रहे। दूसरे दिन सुबह उठते ही उन्हे याद पडा कि एक समझदार और दिलचस्प व्यक्ति से परिचय हो गया और निश्चय किया कि मौका पाते ही उससे दुवारा मिलने जायगे।

१०

इवान दिमीत्रिच अपने बिस्तर पर उसी तरह से लेटा हुआ था जिस तरह कि वह कल लेटा हुआ था। उसके हाथ उसकी कनपटियो को ज़ोर से ढापे हुए थे और घुटने सिकोडकर वह पडा था। उसका मुह दीवाल की ओर था।

"तुम कैसे हो, मेरे दोस्त!" आन्द्रेई येफीमिच ने कहा, "तुम सो तो नही रहे?"

"पहली बात तो यह है कि मै तुम्हारा दोस्त नही हू," इवान दिमीत्रिच ने तकिये में पडे पडे कहा। "और दूसरी बात यह है कि तुम्हे कष्ट करने की ज़रूरत नही है। तुम मुझसे एक भी शब्द नही सुन सकोगे।"

"विचित्र " कुछ हतप्रभ हुए आन्द्रेई येफीमिच फुसफुसाये। "कल हमारी बढिया बाते हुई थी। तभी तुम सहसा रुष्ट हो गये और आगे बाते करना बन्द कर दिया मैंने अच्छी तरह से अपनी बातो को व्यक्त नही किया होगा अथवा कुछ ऐसी बात कह दी होगी जो तुम्हारे विश्वासो के विपरीत रही हो "

"क्या तुम वास्तव में ऐसी आशा करते हो कि तुम्हारा विश्वास

किया जाय?" इवान दिमीत्रिच ने बठते हुए और तुरन्त डाक्टर की ओर व्यग्य व व्यग्रता से देखते हुए कहा। उसकी आखो की पुतलिया लाल थी। "अच्छा होता कि तुम खुफियागिरी करने तथा जिरह करने के लिए कही दूसरी जगह जाते। तुम मुझसे कुछ भी नही पा सकोगे। मुझे तो कल ही मालूम हो गया कि तुम यहा क्यो आये थे।"

"वाह क्या अजब ख्याल है!" मुस्कराते हुए डाक्टर ने कहा। "क्या तुम्हारे कहने का अभिप्राय यह है कि मै कोई भेदिया हू?"

"हा, मैं यही समझता हू या तो भेदिया, या मेरे ऊपर निगरानी रखने के लिए आये डाक्टर हो, बात एक ही है।"

"अच्छा! मुझे माफ करना पर तुम लेकिन तुम बडे मसखरे हो।"

बिस्तर के पास ही एक स्टूल पर डाक्टर बैठ गये और झिडकने की मुद्रा में अपना सर हिलाया।

"अच्छा, मान लो कि तुम सही हो," उन्होंने कहना शुरू किया, "मान लो जैसा कि तुम कहते हो, मैं तुमसे कुछ बात का पता लेना चाहता हू ताकि तुम्हे पुलिस के हवाले किया जा सके। तुम गिरफ्तार किये जाओगे और तुम पर मुकदमा चलेगा। लेकिन क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे लिए अदालत अथवा जेलखाना इस जगह से भी बुरा होगा? और यदि तुम्हे निर्वासित कर दिया गया या कडी क़ैद की सजा मिली तो क्या वह इस छोटी इमारत में पडे रहने से भी अधिक दुखदायी होगा? मेरा विश्वास है, ऐसा नही होगा तब तुम्हारे डरने की बात कहा रह जाती है?"

इन शब्दो ने स्पष्टत इवान दिमीत्रिच को प्रभावित किया। वह आश्वस्त होकर उठ बैठा।

शाम को चार बजने के थोडी देर के बाद का वक्त था जब प्राय आन्द्रेई

येफ़ीमिच रोज़ कमरों के इस सिरे से उस सिरे तक टहलते थे और दार्या आकर उनसे पूछती थी कि क्या वह अपनी बीयर पीने के लिए तैयार हैं। शाम उनकी और शान्त थी।

'मैं भोजनोपरान्त घूम रहा था और तभी मैंने यह सोचा कि मैं तुम्हें देखने चला जाऊं,' डाक्टर ने कहा। 'वसन्त का बढ़िया दिन है।'

'यह कौनसा महीना है? मार्च?'

'हां, मार्च का अन्त है।'

'क्या बाहर बहुत गन्दा है?'

ज़्यादा तो नहीं। बगीचे के रास्ते सूख चुके हैं।

ऐसे दिन बस्ती से बाहर गाड़ी में घूमना कितना अच्छा हो इवान दिमीत्रिच ने अपनी लाल आंखों को मलते हुए कहा, मानो वह अभी अभी जगा हो "और फिर अपने घर लौट आना, ऐसे घर में जहां गर्म आरामदेह पढ़ाई का कमरा हो ऐसा डाक्टर मिले जो मेरे सिरदर्द की दवा कर दे मैं तो भूल गया हूं कि इन्सान की तरह जीवन कैसे बिताया जाता है। यहां कितनी गन्दगी है! असह्य रूप से गन्दा है!'

वह कल के आवेश से क्लान्त और थका हुआ था और उसके शब्द अनिच्छापूर्वक निकल रहे थे। उसकी उंगलियां कांप रही थीं और उसके चेहरे पर देखने से ही मालूम हो जाता था कि उसका सिर भयानक रूप से दर्द कर रहा था।

गर्म आरामदेह अध्ययन-कक्ष और इस वार्ड में कोई अन्तर नहीं है आन्द्रेई येफ़ीमिच ने कहा। 'लोगों को चाहिए कि वे शान्ति और सन्तोष के लिए बाह्य जगत की ओर न मुड़ें, बल्कि अपने भीतर ही उन्हें प्राप्त करें।

"क्या मतलब है तुम्हारा?

"साधारण व्यक्ति अच्छाई बुराई, कमरे या गाडी जैसी बाहर की चीज़ो की ओर देखता है, विचारशील व्यक्ति इनके लिए अपने अन्दर देखता है।"

"अपना ज्ञान का उपदेश यूनान में जाकर दो, जहा सदैव गर्मी रहती है और हवा नारगियो के फूलो की महक से भरी रहती है। इस तरह की बाते हमारी जलवायु के लिए उपयुक्त नही है। डायोजेनीज़ के सम्बन्ध में बाते किससे कर रहा था? तुम से?"

"हा! कल!"

"डायोजेनीज़ को अध्ययन-कक्ष या गर्म कमरे की ज़रूरत ही नही थी। वहा हर तरह गर्मी तो थी ही। वह अपने पीपे में नारगिया और ज़ैतून खाता हुआ अलसाता रह सकता था। अगर वह रूस में रहता होता तो न केवल दिसम्बर में ही बल्कि मई में भी किसी मकान में पहुचाये जाने के लिए अनुरोध करने लगता, यहा सर्दी ने उसे जकड लिया होता।"

"बिल्कुल नही। सर्दी की भी, हर अन्य पीडा की तरह उपेक्षा की जा सकती है। मार्कस औरेलियस ने कहा—'पीडा की सजीव कल्पना ही पीडा है। अपनी इच्छा शक्ति की सहायता से तुम इसको बदल सकते हो, इसको दूर कर सकते हो, पीडा की शिकायत करना रोक सकते हो और अब पीडा ही दूर हो जायगी।' वह सही कहता है। सन्त या सिर्फ विचारशील व्यक्ति भी पीडा के लिए उपेक्षा की भावना से ही जाना जाता है। वह सदैव सन्तुष्ट रहता है और कोई भी बात उसे आश्चर्यचकित नही करती है।"

"तब तो मै मूर्ख ही हुआ क्योंकि मुझे कष्ट होता है, मैं असन्तुष्ट हू और मैं बराबर ही लोगो की नीचता पर अचम्भा करता रहता हू।"

"तुम यहा गलती कर रहे हो। अगर तुम चीज़ो की जड तक

पहुचने की कोशिश किया करो तो बहुधा तुम्हे मालूम होगा कि वास्तव में वह बाहर की चीजें कितनी छोटी और उपेक्षा योग्य है जो हमें परेशान किया करती हैं। जीवन को समझने के लिए प्रयास करने चाहिए। वही एकमात्र वरदान है।"

"समझने के लिए " इवान दिमीत्रिच ने पीडा-सी अनुभव करते हुए कहा। "बाह्य, आन्तरिक मुझे क्षमा करना, लेकिन इस तरह की बाते मै नही समझ पाता। जो कुछ मै जानता हू," उसने उठ कर और डाक्टर पर गुस्से से देखते हुए कहा, "यह सही है कि ईश्वर ने मुझे गर्म खून और स्नायुयो से निर्मित किया था। हा! और यदि प्राणितत्व की कोई सशक्त क्षमता है तो उसको छेडने पर उसकी प्रतिक्रिया होनी ही चाहिए! और मुझमें जरूर ही प्रतिक्रिया होती है! पीडा के प्रति मेरी प्रतिक्रिया आसुओ और चीखो से प्रकट होती है, नीचता के प्रति क्रोध से और कुटिलता के प्रति घिन से। और वही मेरी राय में जीवन है। प्राणी जगत में जितने ही नीचे स्तर का जीवन होगा उतने ही नीचे स्तर की उसकी चेतना होगी और उतनी ही निर्बल छेड के प्रति उसकी प्रतिक्रिया। प्राणी का स्तर जितना ही ऊचा होगा उतनी ही अधिक वास्तविकता के प्रति सशक्त और सचेतन उसकी प्रतिक्रिया। यह क्या बात है कि तुम यह बात नही जानते? डाक्टर इतनी प्रारम्भिक बातो से भी अनभिज्ञ हो! किसी के लिए कष्टो के प्रति घृणा का भाव रखने के योग्य होने, सदैव सन्तुष्ट रहने और किसी बात पर आश्चर्य न करने के लिए उसे इस स्थिति पर पहुचना होगा," इतना कह कर इवान दिमीत्रिच ने मोटे किसान की ओर सकेत किया। "या फिर कष्टो के कारण वह इतना मुरदा हो गया हो कि किसी तरह की चेतना का अनुभव ही न कर सके या दूसरे शब्दो में वह जीवित रहना समाप्त कर चुका हो। मुझे माफ करना," वह तीव्रता से कहता

गया, "मै न सन्त हू और न दार्शनिक। मैं ऐसी बातो के सम्बन्ध में कुछ नही जानता। तर्क करने की मेरी मानसिक स्थिति नही है।"

"उलटे, तुम तो बहुत अच्छी तरह तर्क करते हो।"

वैराग्य या तपस्या की सीख देनेवाले, जिनकी शिक्षा का तुम विकृत रूप प्रस्तुत कर रहे हो, वे निस्सन्देह उल्लेखनीय लोग थे, लेकिन इन दो हजार वर्षों के दौरान में उनका दर्शन जहा का तहा स्थिर रहा है और वह एक इच भी आगे नही बढ पाया है और बढ भी नही सकता, क्योकि यह एक अव्यावहारिक और अवास्तविक दर्शन है। यह उन अल्पसख्यको को प्रिय रहा है जिन्होने अपना जीवन अध्ययन और विभिन्न उपदेशो को ग्रहण करने में ही व्यतीत किया, लेकिन बहुसख्यक जनता इसको कभी भी नही समझ सकी। अधिकाश जनता के लिए ऐसा दर्शन बिल्कुल दुरूह हो रहा है जो धन दौलत और आरामो के प्रति उदासीनता का उपदेश दे और कष्ट और मृत्यु को उपेक्षणीय बताये। क्योकि बहुसख्यको को कभी भी धन दौलत अथवा आरामो का ज्ञान ही नही हो पाया, उनके लिए कष्ट के प्रति घृणा का भाव रखना ऐसा है जैसे स्वय जीवन से घृणा करना हो, क्योकि मनुष्य का सम्पूर्ण अस्तित्व इसी बात में सीमित रहा है कि वह भूख, ठढ, अपमान, हानि और हेमलेट के सदृश मृत्यु के भय से भरा हो। सम्पूर्ण जीवन इन्ही चेतनाओ से निर्मित है और जीवन बोझो से दबा हुआ तथा घृणित है, पर तब भी कभी कोई उसका तिरस्कार नही कर सकता। हा, इसीलिए मैं यह बात दोहराता हू कि वैराग्य के उपदेशको का कोई भविष्य नही है, और विस्मृति के गर्भ में छिपे कल से लेकर आज तक केवल उन्ही वस्तुओ में प्रगति दिखायी देती है, जिनमें सघर्ष की शक्ति, पीडा के प्रति चेतनता और छेड के प्रति प्रतिक्रिया करने की योग्यता होती है "

एकाएक इवान दिमीत्रिच अपनी तर्क-शृंखला ही भूल गया और वह रुक कर खीज में अपने माथे को रगडने लगा।

"मै कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात कहना चाहता था, लेकिन वह मेरी पकड से बाहर हो गयी है," उसने कहा। "मैं किस सम्बन्ध में बात कर रहा था? अरे हा! यही बात थी जो मै कहना चाहता था तपस्वियो में मे किसी एक ने अपने पडोसी को छुडाने की खातिर गुलामी के लिए अपने को बेच दिया। अतएव, तुम समझ रहे हो न कि तपस्वी मे भी किसी छेडवाली बात की प्रतिक्रिया हुई, क्योकि दूसरे को बचाने की खातिर अपने को ही स्वय नष्ट करने जैसी उदारता का चमत्कार करने के लिए आवश्यक है कि आत्मा ऐसी हो जिसमें घृणा और दया की भावना अनुभव करने की क्षमता हो। यहा, इस जेल में, मैं वह सब कुछ भूल गया हू जिसे मैं कभी जानता था, नही तो मै अन्य उदाहरणो को याद भी कर पाता। चाहो तो ईशु का ही उदाहरण ले लो। वास्तविकता के प्रति ईशु रोने, हसने, शोकाकुल होने, क्रोधातिरेक में होने तथा दुख मनाने के द्वारा अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते थे। हसते हुए वह कष्ट को गले लगाने नही गये, उन्होने मृत्यु की उपेक्षा नही की, लेकिन गेट्समैन के बगीचे में उन्होने प्रार्थना की थी कि वह प्याला उनसे हटा लिया जाय।"

इतना कह कर इवान दिमीत्रिच हसा और बैठ गया।

"मान लो, तुम सही भी हो और शान्ति एव सन्तोष आदमी के भीतर ही होता है, बाहर नही," उसने कहा। "मान लो कि य सही है कि कष्टो की उपेक्षा की जाय और किसी बात पर भी आश्च न किया जाय। लेकिन ऐसी विचारधारा का उपदेश देने का तु क्या अधिकार? क्या तुम सन्त हो, दार्शनिक हो?"

"नही, मै दार्शनिक नही हू, लेकिन हर एक को इसी विचारध की शिक्षा देनी चाहिए क्योकि यही ठीक है।"

"— बात? लेकिन मै यह जानना चाहता हू कि बोध

की उपेक्षा रखने आदि पर तुम अपने को अधिकारी क्यो समझते हो? क्या तुमने कभी कष्ट उठाये है? क्या तुम्हे इस वात का जरा सा भी आभास हुआ है कि कष्ट क्या होता है? मुझे माफ करना इस वात को पूछने के लिए लेकिन क्या कभी वचपन में तुम्हारे ऊपर वेंत पडे थे?"

"नही। मेरे माता-पिता शारीरिक दड देने से घृणा करते थे।"

"और मेरा वाप मुझे निर्दयता से पीटता था। वह क्रोधी स्वभाव के थे, अफसर थे। उनकी लम्वी नाक, पीली गरदन थी और ववासीर से पीडित रहते थे। लेकिन हम तुम्हारे ही वारे मे वात करे। तुम्हारी सारी ज़िन्दगी में किसी ने तुम्हें उगली उठा कर छुआ तक नही, किसी ने तुम्हे धमकाया नही, किसी ने सताया नही और तुम साड की तरह मज़वूत भी हो। तुम अपने पिता की छत्रछाया में वढते रहे, उन्ही के पैसो पर तुम शिक्षा प्राप्त करते रहे और तव तुम्हे उत्तरदायित्वहीन तथा भारी वेतन वाला यह पद मिल गया। वीस वर्षों मे भी अधिक समय से तुम गर्म, अच्छी तरह प्रकाशमान और नि शुल्क घर का उपभोग करते आये हो, तुम नौकर रखते हो और तुम्हे इस वात का पूरा अधिकार है कि जव तुम चाहो तभी काम करो या काम विल्कुल भी न करो। तुम स्वभाव से ही एक आलसी और निष्क्रिय व्यक्ति हो और इसीलिए तुमने अपने जीवन को ही इस तरह ढाल लिया है जिससे तुम अपने को कष्टो एव फालतू दौडधूप से वचा सको। तुमने अपने सव काम को अपने सहायक और दूसरे वदमाशों के हवाले कर रखा है और स्वय शान्ति और आराम का आनन्द लेते हो, धन वचाते हुए, पढते हुए और अपने मस्तिष्क को वडी दिखाई देनेवाली झकझक से वहलाते हुए और (इवान दिमीत्रिच ने डाक्टर की लाल नाक पर निगाह डाली)

पीते हुए। एक शब्द में तुमने जीवन को कुछ भी नही देखा है, तुम इसके बारे में कुछ नही जानते हो और वास्तविकता के सम्बन्ध में तुम्हारे पास केवल सैद्धान्तिक ज्ञान है। और अगर तुम कष्ट की उपेक्षा करते हो और यह नही होने देते कि कोई चीज तुम्हे चकित कर दे, इसका सीधा सादा कारण यह है कि तुम्हारा सब गर्व जीवन के प्रति बाह्य और आन्तरिक उपेक्षा की भावना, कष्ट और मृत्यु, बोध, सच्चे वरदान—यह सब दार्शनिकता रूसी अकर्मण्य को औरो के मुकाबले ज्यादा अच्छी तरह उपयुक्त पडती है। उदाहरण के लिए तुम किसी किसान को अपनी पत्नी पीटते हुए देखते हो। क्यो दखल दिया जाय? उसको उसे पीटने दो, वे दोनो जल्दी या देर से मर ही जायेंगे। इसके अलावा आक्रामक स्वय अपने को पतित बनाता है न कि उसे जो पीडित होता है। दरअसल शराब पीना मूर्खतापूर्ण और अभद्र है, लेकिन जो पीते हैं और जो नही भी पीते सभी को एक ही तरह मरना है। कोई स्त्री अपने दात का दर्द लेकर तुम्हारे पास आती है अच्छा, तो इससे क्या हुआ? पीडा की धारणा कल्पना के सिवा कुछ नही है। इसके अलावा हम कभी भी बीमार हुए बिना जीने की आशा नही कर सकते, हममें से सबको मरना होगा, इसलिए, अपनी राह लग छोकरी! और मुझे सोचते रहने दे और शान्ति के साथ वोद्का पीने दे। कोई नौजवान तुम्हारे पास राय लेने पहुचता है, वह जानना चाहता है कि वह क्या करे, किस तरह रहे। कोई दूसरा व्यक्ति उसको उत्तर देने के पूर्व सोचने के लिए ठहरेगा, लेकिन तुम्हारे पास तो जवाब तैयार रखा है—जीवन के बोध या सच्चे वरदान के लिये प्रयास करते रहो। लेकिन यह रहस्यमय "सच्चा वरदान" है क्या? यथार्थ में इसका कोई उत्तर है ही नही। यहा हम सीखचो के पीछे बन्द रखे जाते हैं, हमें पीटा जाता है, हमे

सडने दिया जाता है लेकिन यह सब वहुत सुन्दर और तर्कसगत है क्योकि इस वार्ड और आरामदेह अध्ययन-कक्ष में कोई अन्तर नही है। सच ही, वहुत सुविधाजनक दर्शन है यह! इस सम्वन्ध मे कुछ करने के लिए नही है, तुम्हारी अन्तरात्मा साफ है और सोचते हो कि तुम तो सन्त हो नही, महाशय। यह दर्शन नही है, विचार नही है, वह कोई व्यापक दृष्टिकोण नही है, यह तो केवल अकर्मण्यता, नियतिवाद और मानसिक निद्रा है हा, वात यही है।" इवान दिमीत्रिच फिर झुझलाया। "तुम कष्ट को तो उपेक्षणीय समझते हो, लेकिन अगर दरवाजे में तुम्हारी उगली दव जाय तो जरूर तुम सवसे ऊची आवाज में चिल्ला पडोगे!"

"सभवत मैं नही चिल्लाऊगा," आन्द्रेई येफीमिच ने मधुरता से मुस्कराते हुए कहा।

"नही चिल्लाओगे? अव अगर कही तुम को सहसा लकवा मार गया या कोई मूर्ख या वदमाश अपने पद और सामाजिक स्थिति का लाभ उठाकर तुम्हें सार्वजनिक रूप मे अपमानित करे और तुम्हे यह मालूम रहे कि वह दड पाये विना वच निकलेगा, तव तुम्हे मालूम होगा कि लोगो को जीवन के वोध व वरदानो की तलाश में भेजने का क्या मतलव होता है।"

"यह वात विल्कुल अनोखी है," आन्द्रेई येफीमिच ने प्रसन्नतापूर्वक हसते और अपने हाथो को मलते हुए कहा। "जिस ढग से तुम सामान्य सिद्धान्तो की वात करने लगते हो, उसपर मै मुग्ध हू, जिस कुशलता से तुमने मेरे चरित्र का वर्णन किया है वह वहुत प्रतिभापूर्ण है। विश्वास मानो, तुमसे वात करने मे अत्यधिक आनन्द प्राप्त होता है। अच्छा, मैंने तुम्हे सुना, अव मेहरवानी करके मेरी वात को भी सुनो "

वे प्राय एक घण्टे तक बाते करते रहे और इस वार्ता ने आन्द्रेई येफीमिच पर बडा प्रभाव डाला होगा। वह अब प्रतिदिन उस छोटी इमारत में जाने लगे। वह वहा सुबह जाते थे, फिर दोपहर के भोजन के बाद जाते थे और प्राय इवान दिमीत्रिच के साथ बाते करते करते अधेरा हो जाता था। आरम्भ में इवान दिमीत्रिच उनसे दूर रहा, उसको उनकी नीयत बुरी होने का सन्देह था और खुले रूप से वह अपनी नापसन्दगी प्रकट करता था। लेकिन बाद में वह उनका अभ्यस्त हो गया और उसने अपने तीखे लहजे को सहिष्णुतापूर्ण व्यग्य में बदल दिया।

शीघ्र ही अस्पताल में यह अफवाह फैल गयी कि डाक्टर आन्द्रेई येफीमिच आदतन वार्ड नम्बर छ में आने जाने लगे हैं। कोई भी न तो सहायक, न निकीता, न नर्स ही, यह समझ सके कि वह वहा क्यो जाते हैं, वह वहा घटो तक क्यो रहते है, वहा बात करने के लिए वह क्या पाते है, और क्यो वह कभी भी कोई नुस्खा नही लिखते। उनका व्यवहार अनोखा मालूम देने लगा। वह अब प्राय जब मिखाईल अवेर्यानिच भी आता था तो बाहर ही होते थे और दार्या को मालूम नही था कि इस सबका क्या अर्थ लगाया जाय, क्यो डाक्टर अपने बीयर के सम्बन्ध में अनियमित हो गये थे और कभी कभी तो भोजन के लिए भी वह देर से ही पहुचते थे।

जून के अत में, एक दिन डाक्टर खोबोतोव किसी सम्बन्ध में आन्द्रेई येफीमिच से मिलने गया। अपने मकान में उन्हे न पाकर वह उन्हे देखने अहाते में गया। वहा उसे बताया गया कि बूढे डाक्टर मानसिक रोगियो के वार्ड में है। छोटी इमारत में पहुचने पर और गलियारे में रुकते हुए खोबोतोव ने निम्नलिखित वार्ता सुनी—

"हम कभी भी एकमत नही होगे और तुम कभी भी मुझे अपने विचार वाला न कर सकोगे," इवान दिमीत्रिच झगड़ते हुए कह रहा था। "तुम वास्तविकता के बारे में कुछ नही जानते, तुमने कभी कष्ट नही उठाया। एक जोंक की तरह तुम केवल दूसरो के कष्टों पर ही पलते रहे, जब कि मैं अपने जन्म के दिन से अबतक बराबर कष्ट ही कष्ट भोग रहा हू। अतएव, मैं तुमसे स्पष्ट रूप से बात करूगा मैं महसूस करता हू कि मैं तुमसे ऊचे दर्जे पर हू और अपने को सब तरह से तुमसे अधिक योग्य मानता हू। तुम मुझे नसीहत नही दे सकते।"

"मेरे मन में जरा भर भी इच्छा नही है कि मैं तुम्हे अपने विचारो में परिवर्तित करू," आन्द्रेई येफीमिच ने शान्तिपूर्वक और दुख भरे शब्दो में कहा, जैसे कि वह गलत समझे जाने पर व्यथित हो गये हो। "और यह बात भी नही है, मेरे मित्र, कि मैंने कष्ट नही उठाया है और तुमने कष्ट उठाये है, प्रश्न यह नहीं है। कष्ट और आनन्द दोनो ही क्षणभगुर, परिवर्तनशील हैं। हम उनकी उपेक्षा कर सकते है, उनकी कोई महत्ता नहीं है। महत्व की बात यह है कि तुम और मैं सोच सकते हैं। हम एक दूसरे में ऐसे व्यक्तियो को देखते है जो विचार करने और तर्क करने की क्षमता रखते है और ये हमारे बीच, चाहे हमारे दृष्टिकोण कितने ही भिन्न क्यो न हो, सहानुभूति पैदा करते हैं। काश, तुम इस बात को मालूम कर सकते, मेरे दोस्त, कि मैं इस सार्वभौमिक पागलपन, मूर्खता और घटिया दिमाग से कितना ऊबा हुआ हू और तुम से हर बार बात करने में मुझे कितना आनन्द प्राप्त होता है! तुम बुद्धिमान हो और इसीलिए मुझे तुम्हारे साथ से आनन्द मिलता है।"

जोबोतोव ने इच भर दरवाजे को खोलते हुए भीतर झाका—इवान दिमीत्रिच अपनी गान की टोपी पहने अपनी चारपाई पर बैठा

हुआ था और उसकी बगल में डाक्टर थे। पागल चेहरा बनाता और लगातार चौंकता, और घबरा घबराकर अपने चोगे को अपने चारो ओर लपेटता जाता जबकि डाक्टर चुपचाप बैठे थे। उनका सिर झुका हुआ, चेहरा लाल, असहाय दुखी और कातर था। खोबोतोव ने अपने कधो को झझोडा, हसा और निकीता को आख मारी। निकीता ने भी अपने कधे झझोडे।

दूसरे दिन खोबोतोव अपने साथ मेडिकल सहायक को भी ले आया। वे दोनो गलियारे में खडे हुए बातचीत सुनते रहे।

"मालूम होता है, हमारे बूढे के दिमाग की पेचे ढीली हो गयी है।" खोबोतोव ने छोटी इमारत से बाहर होते हुए कहा।

"ईश्वर हम जैसे पापियो को क्षमा करे!" पवित्रात्मा सेर्गेइ सेर्गेइच ने सास भरते हुए और सावधानी के साथ अहाते के छोटे छोटे गड्ढो से बचते हुए जिससे कि उसके सुन्दर चमकते हुए जूते गन्दे न हो जायें, कहा। "प्रियवर येवगेनी फेदोरोविच! तुमसे सच कहता हू, मैं बहुत पहले से ही इसकी आशका कर रहा था।"

१२

इसके बाद से आन्द्रेई येफीमिच को अपने चारो ओर एक रहस्यमय वातावरण का आभास होने लग गया। अस्पताल के नौकर, नर्सें तथा रोगी उनको मतलब भरी दृष्टि से देखने लगे और जब वह उनके पास से गुजर जाते तो आपस में कानाफूसी करने लगते थे। सुपरिण्टेण्डेण्ट की छोटी लडकी माशा जिससे वह अस्पताल के बाग मे बडे उत्साह और स्नेह से मिलते थे, अब जैसे ही वह मुस्कराते हुए उसके बालो को सहलाने के लिए आगे बढते, न जाने

क्यो भाग जाती। पोस्टमास्टर मिखाईल अवेर्यानिच भी अब उनके व्याख्यानो के बीच मे यथापूर्व "बिल्कुल सही" कहकर उत्तर नही देते थे, बल्कि अकारण घबडाहट में बुदबुदाता, "हा, हा, हा " और विचारमग्न और दुखी होकर उनकी ओर देखता रहता था। न जाने क्यो वह अपने मित्र को बीयर और वोद्का न पीने की सलाह देने लगा, यद्यपि वह इस बात को घुमा फिराकर कहता था, जैसा कि उसकी भद्रता के अनुकूल था। वह सकेत में कहता और कभी एक बटालियन के कमाडर की जिसको वह बहुत अच्छा आदमी बतलाता था और कभी अपने रेजीमेंण्ट के पादरी की चर्चा करता, जिसे वह बहुत खुशमिज़ाज बतलाता था कि दोनो ने पी पीकर अपने को बीमार बना डाला था और जैसे ही उन्होने पीना छोड दिया, वे चगे हो गये। एक या दो बार उनका सहयोगी खोबोतोव उनके पास आया। उसने भी आन्द्रेई येफीमिच को यही सलाह दी कि शराब पीना छोड दें और बिना किसी स्पष्ट कारण के सुझाव दिया कि वह पोटेशियम ब्रोमाइड इस्तेमाल करना शुरू कर दें।

अगस्त में आन्द्रेई येफीमिच को मेयर की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें उन्हे किसी बहुत ही महत्वपूर्ण बात के लिए बुलाया गया था। जब वह नगर भवन पहुचे तो फौजी प्रधान, ज़िला शिक्षा निरीक्षक, परिषद् के एक सदस्य, खोबोतोव और एक सुनहरे बालो वाले मोटे भद्र पुरुष को जिनका उनसे डाक्टर कह कर परिचय कराया गया, वहा एकत्रित पाया। यह डाक्टर जिसका कोई कठिन पोलिश नाम था, २० मील दूर एक अश्वपालन फार्म में रहता था और इस नगर से होकर केवल गुज़र रहा था।

दुआ सलाम होने के बाद जब हर कोई मेज के आगे और अपने अपने स्थान पर बैठ चुका, परिषद् के सदस्य ने आन्द्रेई येफीमिच की

ओर मुडते हुए कहा – "हमारे पास यहा एक आवेदनपत्र आया है जिसका आपसे सम्बन्ध है। इन येवगेनी फेदोरोविच का कहना है कि मुख्य भवन में दवाखाने के लिए पर्याप्त स्थान नही है और इसको किसी छोटी इमारत में बदल देना चाहिए। इसको बदलने में वास्तव में हमारी कोई परेशानी नही है। लेकिन तथ्य यह है कि किसी इमारत में उसे ले जाने पर उसकी मरम्मत करनी होगी।"

"हा, मरम्मतो की बडी आवश्यकता है," आन्द्रेई येफीमिच ने एक क्षण सोचने के लिए रुकने के बाद कहा। "उदाहरणस्वरूप यदि हम दवाखाने के लिए उस किनारे की इमारत को लेते है तो मैं समझता हू इसके लिए हमें ५०० रूबल खर्च करने की आवश्यकता होगी। व्यर्थ का खर्च।"

कुछ देर तक हर कोई चुप रहा।

"दस वर्ष पूर्व मुझे आपको यह बताने का गौरव प्राप्त हुआ था," धीमे स्वर में आन्द्रेई येफीमिच कहते रहे, "अपने वर्तमान स्वरूप में अस्पताल इस नगर के बूते के बाहर की एक विलासपूर्ण आवश्यकता है। यह १८४१–१८४६ के आसपास बना था और तब परिस्थिति भिन्न थी। नगर परिपद अनावश्यक भवनो और निरर्थक पदो में बहुत ज्यादा खर्च करती है। अगर भिन्न ढग से काम लिया जाय तो मुझे विश्वास है कि उतने ही धन से हम दो आदर्श अस्पताल चला सकते है।"

"अच्छा, तब फिर हम भिन्न तरीके से काम चलायें," सभा के सदस्य ने व्यग्रता से कहा।

"मुझे अपनी राय व्यक्त करने का गौरव पहले ही प्राप्त हो चुका है–जेम्स्त्वो को मेडिकल सगठन का भार अपने ऊपर लेने दीजिये।"

"हा, जरूर, ज़ेम्स्त्वो को अपना कोष सौंप दीजिये, ताकि वह इस धन को चुरा सके," सुनहरे वालो वाले डाक्टर ने हसते हुए कहा।

"निस्सन्देह, निस्सन्देह," परिषद के सदस्य ने भी हसते हुए अपनी सहमति प्रकट की।

आन्द्रेई येफीमिच ने अपनी निस्तेज और पीलिया छायी आखो मे सुनहरे वालो वाले डाक्टर की ओर देखते हुए कहा—

"हमें निष्पक्ष होना चाहिए।"

इसके वाद फिर निस्तव्धता छा गयी। चाय लायी गयी। फौज के प्रधान ने किसी कारण मे वहुत ही परेशान होते व शरमाते हुए अपनी वाहे मेज़ पर फैलाते हुए आन्द्रेई येफीमिच के हाथ को छुआ।

"ऐसा मालूम होता है, डाक्टर, तुम हमें विल्कुल भूल गये," उसने कहा। "लेकिन मैं जानता हू तुम तो सन्यासी हो। तुम ताश नही खेलते और स्त्रियो के प्रति उदासीन हो। हम तुम्हारे लिए ऊवा देनेवाले साथी हैं।"

हर कोई कहने लगा कि जो भी व्यक्ति ज़रा भी किसी काविल है, उसे यह कस्वा ऊवा देनेवाला ही लगेगा। यहा न थियेटर है, न सगीत और क्लव में हुए पिछले नाच के अवसर पर वीस महिलाए थी जिनके साथ नाचने के लिए केवल दो ही सगी थे। युवक नाचना नही पसन्द करते, वे जलपानगृह मे भीड लगाना अथवा ताश खेलना अधिक पसन्द करते हैं। विना किसी की ओर देखे आन्द्रेई येफीमिच अपनी धीमी, शान्त वाणी में कहने लगे कितनी दुखद वात है कि नागरिक अपनी शक्तियो को, अपनी आत्माओ और अपने मस्तिष्क को ताश खेलने तथा गप लडाने में लगाते हैं और अपने समय को दिलचस्प वार्ता में अथवा पढने में लगाने में असफल

होने के कारण वे मानसिक आनन्द को अस्वीकार करते हैं। केवल मस्तिष्क ही दिलचस्प और उल्लेखनीय है, शेष सब बाते क्षुद्र और मामूली है। खोबोतोव अपने सहयोगी की बातो को बडे ध्यान से सुनता रहा और तब सहसा उसकी बात काटते हुए सवाल पूछ बैठा—

"आन्द्रेई येफीमिच, आज कौन सी तारीख है?"

उत्तर मिलने पर वह और सुनहरे बालो वाला डाक्टर आन्द्रेई येफीमिच से पूछते रहे कि आज सप्ताह का कौनसा दिन है, साल में कितने दिन होते है और क्या यह सही है कि वार्ड नम्बर छ में एक आश्चर्यजनक मसीहा पहुचा हुआ है। उनकी ध्वनि ऐसे परीक्षको की थी, जो स्वय अपनी अयोग्यता के प्रति सजग है।

अन्तिम प्रश्न पर आन्द्रेई येफीमिच का रग कुछ लाल हो गया और उन्होंने कहा—

"हा, वह एक रोगी आदमी है, लेकिन बहुत दिलचस्प है।"

उसके बाद और कोई प्रश्न नही किया गया।

जिस वक्त वह ड्योढी में अपना कोट पहन रहे थे, फौजी प्रधान उनके पास आया और पीठ थपथपाते हुए गहरी सास भर कर उसने कहा—

"समय आ गया है कि जब हम जैसे बूढे लोग आराम करने की सोचे।"

नगर भवन से रवाना होते ही आन्द्रेई येफीमिच को लगा कि वह एक ऐसे कमीशन के सामने बुलाये गये थे जिसका काम उनकी मानसिक दशा की परीक्षा करना था। उन प्रश्नो की याद करते हुए जो उनसे पूछे गये थे वह लज्जा से लाल हो गये और जीवन में पहली बार चिकित्सा-विज्ञान के प्रति दया की तीव्र भावना महसूस करने लगे।

"हे भगवान!" जिम तरह मे डाक्टरो ने उनकी परीक्षा की थी उसको याद करते हुए उन्होंने सोचा, "मनोरोग-चिकित्सा की कक्षा में इन्होंने अभी हाल में हाजिरी दी थी और अपनी परीक्षाए पाम की थी। क्यो, फिर क्यो, इतना घोर अज्ञान वना हुआ है? उन्हे जरा भर भी तो ज्ञान नही है कि मनोरोग-चिकित्सा क्या होती है।"

और जीवन में पहली वार उन्हे अपमानित और क्रोधित होने का आभास हुआ।

उस दिन शाम को मिखाईल अवेर्यानिच उनमे मिलने आया। उनको अभिवादन करने के लिए रुके विना ही वह उनके पास चला गया। उनके दोनो हाथो को अपने हाथों में लेकर वह वडी ही सहानुभूतिपूर्ण वाणी में कहने लगा—

"मेरे सवमे प्यारे दोस्त! विश्वाम दिलाओ कि तुम मेरी भावनाओ की सच्चाई में विश्वास करते हो और मुझे अपना मित्र समझते हो। प्यारे दोस्त!" आन्द्रेई येफीमिच को वोलने का कोई अवसर दिये विना वह आवेशपूर्ण रूप से कहता गया—"मै तुम्हे तुम्हारी विद्वत्ता और आत्मा की उच्चता के लिए प्यार करता हू। अव मेरी वात सुनो मेरे दोम्त! पेशे की नैतिकता डाक्टरो को तुमसे सच वात कहने से रोकती है। लेकिन मै एक सिपाही हू और इमलिए स्पष्ट कहूगा— तुम स्वस्थ नही हो। मुझे माफ करना, मेरे मित्र, लेकिन सत्यता यही है और इम वात का उन्हे काफी समय से पता लग चुका था जो इतने समय से तुम्हारे चारो ओर रहते थे। येवगेनी फेदोरोविच ने मुझ से अभी अभी कहा है कि तुम्हारे स्वास्थ्य के हित में तुम्हे आराम और मनवहलाव की आवश्यकता है। वहुत सही है! अति उत्तम! चन्द दिन में मै छुट्टी पर जाना चाहता हू और कुछ ताजी हवा खाना चाहता हू। मुझे अपनी मित्रता का प्रमाण दो मेरे साथ चलो! आओ और हम अपने यौवन को लौटा लायें।"

"मैं बिल्कुल स्वस्थ अनुभव कर रहा हू," आन्द्रेई येफीमिच ने कुछ रुक कर कहा। "और मैं तुम्हारे साथ नही चल सकता। मुझे किसी दूसरे तरीके से तुम्हारे प्रति अपनी मित्रता का प्रमाण देने दो।"

बिना किसी कारण के उठ कर चला जाना, अपनी किताबो को और दार्या एव बीयर को छोड देना, पिछले बीस वर्षों से जीवन का जो क्रम बन गया था उसको छोड देना, पहले तो पागल और मूर्खतापूर्ण विचार मालूम हुआ। लेकिन तभी उन्हे टाउन हाल में उनसे क्या कहा गया था और घर लौटते समय रास्ते में वह कितने उदास हो गये थे, यह सब याद पडा। कुछ समय के लिए नगर से बाहर हो जाने का विचार उस नगर से जहा मूर्ख लोग उन्हें एक पागल आदमी समझ रहे थे, सहसा उन्हे भला लगने लगा।

"तुम कहा जाने का इरादा कर रहे हो?" उन्होंने पूछा।

"मास्को, पीतरबूर्ग, वारसा मैंने वारसा में पाच वर्ष बिताये थे और वे मेरे जीवन के सबसे सुखद वर्ष थे। क्या ही अनोखा शहर है! प्रिय मित्र! चलो, चले।"

१३

एक सप्ताह बाद आन्द्रेई येफीमिच को आराम करने का अवकाश दे दिया गया। दूसरे शब्दो में कहना चाहिए उनसे त्यागपत्र दिलवाया गया, जिसको उन्होंने बडी उपेक्षा की भावना से दे दिया। दूसरे सप्ताह वह सबसे निकट के रेलवे स्टेशन जानेवाली घोडा गाडी में मिखाईल अवेर्यानिच के साथ बैठे हुए थे। मौसम ठढा और शान्त था। आसमान नीला और हवा पारदर्शक थी। स्टेशन के १५० मील के रास्ते को उन्होंने दो दिनों में तय किया। रास्ते में उन्हे दो राते गुज़ारनी पडी।

रास्ते में घोडे बदलने के स्टेशनो पर ठीक न धुले गिलासो में चाय मिलने पर या उसके घोडो को तुरन्त जोतने में देर होने पर मिखाईल अवेर्यानिच लाल हो जाता और सर से पाव तक कापते हुए वह चिल्लाता – "चुप रहो! वहम न करो!" गाडी में वह बराबर काकेशस और पोलैण्ड में अपनी यात्राओ का वर्णन करता रहता। क्या ही सुन्दर घटनाए घटी थी उसके साथ। अहा, क्या लोग थे वे जिनसे वह इस बीच मिला था! वह इतनी जोर से बोलता था और उसकी आखें आश्चर्य से इतनी गोल हो जाती थी कि कोई भी यह सोच सकता था कि वह झूठ बोल रहा है। सबसे बढकर बात तो यह थी कि वह आन्द्रेई येफीमिच के ठीक मुह पर सास छोडता और उनके कानो में हसता। इससे डाक्टर परेशान हो गये और अपने विचारो को केन्द्रित करने मे उन्हे बाधा पडने लगी।

बचत के ख्याल से उन्होंने तीसरे दरजे के एक ऐसे डिब्बे में सफर किया, जिसमें धूम्रपान करने की इजाजत नही थी। आधे मुसाफिर उन्ही के वर्ग के थे। मिखाईल अवेर्यानिच की जल्दी ही सबसे दोस्ती हो गयी और वह एक बेंच से दूसरे बेंच पर जाते हुए सबको ऊची आवाज में यह आश्वासन दिलाता फिरता था कि उन्हे ऐसी कष्टदायक रेल्वे पर भ्रमण करने से इनकार कर देना चाहिए। चारो ओर धोखादेही! घुडसवारी कितनी भिन्न है। इसमें एक ही दिन में ६० मील चलते थे और इसके बाद पडाव पर पहुचने मे कितनी ताजगी और स्वस्थता का अनुभव होता था। पीन्स्क की दलदलो के सुखा दिये जाने से ही हमारी फसले खराब होने लगी थी। हर ओर अव्यवस्था थी। वह उत्तेजित हो जाता और जोर से बोलने लगता और किसीको भी एक शब्द न बोलने देता। इसकी लगातार बातचीत ने, जिसके बीच बीच में जोर की हसी गूज उठती आन्द्रेई येफीमिच को थका दिया।

झुझलाते हुए वह सोचने लगे–"हममें से किसको पागल समझा जाना चाहिए? मुझको जो कि अपने साथी मुसाफिरो के लिए भार नही बनना चाहता या इस अहकारी को जो समझता है कि इस रेलगाडी में वही सबसे अधिक दिलचस्प और समझदार आदमी है और यह किसी दूसरे को एक क्षण भी चैन नही लेने देगा।"

मास्को पहुचने पर मिखाईल अवेर्यानिच ने बिना उपाधि-बिल्लो का एक फौजी कोट और नीचे की सीवन पर लाल फीते से सिली पतलून पहन ली। फौजी टोपी व कोट पहने हुए वह घूमता और सिपाही बाजारो में उसे सलामी देते। आन्द्रेई येफीमिच को अब पता लगा कि इस आदमी ने अपनी कुलीन भद्रता की तमाम खूबिया नष्ट कर दी है और अब सिर्फ उसकी बुराइयो को ही लिये हुए है। जरूरत न भी हो तब भी वह चाहता था कि कोई उसकी खिदमत करता रहे। दियासलाई की डिबिया मेज़ पर पडी होती और वह भी इस बात को जानता होता, फिर भी वह चिल्ला कर नौकर को आवाज देता कि वह उसे दियासलाई की डिब्बी दे दे। नौकरानी के सामने जाघिया पहने ही निकल जाने में उसे किसी तरह लज्जा नही होती थी। सब नौकरो को वह तू कह कर पुकारता। जब वह गुस्से में होता तो चाहे नौकर बूढे ही क्यो न हो वह उन्हे बेवकूफ और छोकरा कह कर पुकारता था। आन्द्रेई येफीमिच को लगा कि कुलीन भद्रजनो की यह विशेषता थी, लेकिन इससे उन्हे घृणा ही होती।

पहले पहल मिखाईल अवेर्यानिच ने अपने मित्र को "ईवेरस्काय गिरजे" में प्रार्थना करने के लिए ले गया। वह बडी ही भावुकता से आखो में आसू भरकर बिल्कुल ज़मीन तक सिर झुकाता हुआ प्रार्थना करता रहा और जब प्रार्थना कर चुका तो बहुत ही गहरी उसास भरता हुआ बोला–

"ईश्वर में चाहे कोई विश्वास न भी करे, लेकिन प्रार्थना से लाभ ही होता है। मूर्ति को चूमो, भले मानस!"

आन्द्रेई येफीमिच ने भोंडे तरीके से मूर्ति को चूमा। लेकिन मिखाईल अवेर्यानिच ने अपने होंठ भींच लिये, अपने सिर को एक ओर से दूसरी ओर हिलाया और एक प्रार्थना आहिस्ते से कही, इस वक्त फिर उसकी आंखों में आंसू भर आये। इसके बाद वे क्रेमलिन गये, जहां उन्होंने ज़ार-तोप और ज़ार-घंटा देखा। इनको उन्होंने वास्तव में अपनी उंगलियों से छुआ भी। नगर के दृश्य की प्रशंसा की और उद्धारक के गिरजाघर एवं रूम्यान्त्सेव के संग्रहालय को देखा।

तेस्तोव के रेस्तरां में बैठकर उन्होंने भोजन किया। मिखाईल अवेर्यानिच अपनी गलमूछों को सहलाते हुए भोजन की लम्बी सूची पढ़ता रहा और इसके बाद उसने नौकर से ऐसे पेटू के स्वर में जो रेस्तरां से अभ्यस्त हो, कहा—

"यार! देखें, तुम आज क्या खिलाना चाहते हो।"

१४

डाक्टर हर जगह जाते रहे, हर चीज़ देखते रहे, खाते पीते रहे, लेकिन मिखाईल अवेर्यानिच के साथ उन्हें केवल खिजलाहट ही मालूम होती। वह अपने मित्र के सतत साथ से ऊब गये थे और चाहते थे कि उससे दूर भाग कर छिप जायं। लेकिन मिखाईल अवेर्यानिच इसको अपना कर्तव्य समझता था कि उनके साथ चिपका रहा जाय और उनका हर संभव तरीके से दिल बहलाव किया जाय। जब कोई चीज़ देखने को नहीं होती थी तो वह उन्हें बातचीत में लगाये रहना चाहता था। दो दिनों तक तो आन्द्रेई येफीमिच इसको सहते रहे,

झुझलाते हुए वह सोचने लगे–"हममें से किसको पागल समझा जाना चाहिए? मुझको जो कि अपने साथी मुसाफिरो के लिए भार नही बनना चाहता या इस अहकारी को जो समझता है कि इस रेलगाडी में वही सबसे अधिक दिलचस्प और समझदार आदमी है और यह किसी दूसरे को एक क्षण भी चैन नही लेने देगा।"

मास्को पहुचने पर मिखाईल अवेर्यानिच ने बिना उपाधि-बिल्लो का एक फौजी कोट और नीचे की सीवन पर लाल फीते से सिली पतलून पहन ली। फौजी टोपी व कोट पहने हुए वह घूमता और सिपाही बाजारो में उसे सलामी देते। आन्द्रेई येफीमिच को अब पता लगा कि इस आदमी ने अपनी कुलीन भद्रता की तमाम खूबिया नष्ट कर दी है और अब सिर्फ उसकी बुराइयो को ही लिये हुए है। ज़रूरत न भी हो तब भी वह चाहता था कि कोई उसकी खिदमत करता रहे। दियासलाई की डिबिया मेज़ पर पडी होती और वह भी इस बात को जानता होता, फिर भी वह चिल्ला कर नौकर को आवाज़ देता कि वह उसे दियासलाई की डिब्बी दे दे। नौकरानी के सामने जाघिया पहने ही निकल जाने में उसे किसी तरह लज्जा नही होती थी। सब नौकरो को वह तू कह कर पुकारता। जब वह गुस्से में होता तो चाहे नौकर बूढे ही क्यो न हो वह उन्हे बेवकूफ और छोकरा कह कर पुकारता था। आन्द्रेई येफीमिच को लगा कि कुलीन भद्रजनो की यह विशेषता थी, लेकिन इससे उन्हे घृणा ही होती।

पहले पहल मिखाईल अवेर्यानिच ने अपने मित्र को "ईवेरस्काय गिरजे" में प्रार्थना करने के लिए ले गया। वह बडी ही भावुकता से आखो में आसू भरकर बिल्कुल ज़मीन तक सिर झुकाता हुआ प्रार्थना करता रहा और जब प्रार्थना कर चुका तो बहुत ही गहरी उसास भरता हुआ बोला–

"ईश्वर मे चाहे कोई विश्वास न भी करे, लेकिन प्रार्थना से लाभ ही होता है। मूर्ति को चूमो, भले मानस!"

आन्द्रेई येफीमिच ने भोंडे तरीके से मूर्ति को चूमा। लेकिन मिखाईल अवेर्यानिच ने अपने होठ भीच लिये, अपने सिर को एक ओर से दूसरी ओर हिलाया और एक प्रार्थना आहिस्ते से कही, इस वक्त फिर उसकी आखो में आसू भर आये। इसके बाद वे क्रेमलिन गये, जहा उन्होंने ज़ार-तोप और ज़ार-घटा देखा। इनको उन्होंने वास्तव मे अपनी उगलियो से छुआ भी। नगर के दृश्य की प्रशसा की और उद्धारक के गिरजाघर एव रुम्यान्त्सेव के सग्रहालय को देखा।

तेस्तोव के रेस्तरा मे बैठकर उन्होंने भोजन किया। मिखाईल अवेर्यानिच अपनी गलमूछो को सहलाते हुए भोजन की लम्बी सूची पढता रहा और इसके बाद उसने नौकर से ऐसे पेटू के स्वर में जो रेस्तरा मे अभ्यस्त हो, कहा—

"यार! देखें, तुम आज क्या खिलाना चाहते हो।"

१४

डाक्टर हर जगह जाते रहे, हर चीज़ देखते रहे, खाते पीते रहे, लेकिन मिखाईल अवेर्यानिच के साथ उन्हे केवल खिजलाहट ही मालूम होती। वह अपने मित्र के सतत साथ से ऊब गये थे और चाहते थे कि उससे दूर भाग कर छिप जाय। लेकिन मिखाईल अवेर्यानिच इसको अपना कर्तव्य समझता था कि उनके साथ चिपका रहा जाय और उनका हर सभव तरीके से दिल बहलाव किया जाय। जब कोई चीज़ देखने को नही होती थी तो वह उन्हे बातचीत मे लगाये रहना चाहता था। दो दिनो तक तो आन्द्रेई येफीमिच इसको सहते रहे,

लेकिन तीसरे दिन उन्होने अपने मित्र से कहा कि वह स्वस्थ नही है और सारे दिन घर पर ही रहना चाहेगे। उनके मित्र ने कहा कि उस दशा में वह भी घर पर ही रहेगा। उसने बिल्कुल यही राय प्रकट की कि उन्हे आराम की आवश्यकता है, नही तो दोनो चलते चलते पाव घिस डालेगे। आन्द्रेई येफीमिच अपनी पीठ को कमरे की ओर करके सोफे पर लेट गये और दातो को भीच कर अपने मित्र को सुनते रहे जो कि उन्हे ज़ोर से बता रहा था कि देर या सवेर फ्रास जर्मनी को ध्वस्त कर देगा, मास्को धोखेबाजो से भरा है और घोडे को केवल उसकी बाहरी खूबियो से ही नही पहचाना जा सकता। डाक्टर अपनी धडकन तेज़ होने और कानो में भनभनाहट की गूजो से अवगत थे, लेकिन वह इतने नम्र थे कि अपने मित्र से जाने के लिए या बाते बन्द करने के लिए नही कह पा रहे थे। सौभाग्य से मिखाईल अवेर्यानिच घर में ही बैठे रहने से उकता गया और वह दोपहर को भोजन के बाद घूमने चला गया।

आन्द्रेई येफीमिच ने एकाकी होकर अपने को शान्ति की अनुभूति के हवाले कर दिया। कितना अच्छा था कि निष्पन्द हो कमरे में एकाकी सोफे पर लेटे रहा जाय! बिना एकान्त के सच्चे आनन्द की कल्पना भी नही हो सकती। पतित देवदूत ने इसी एकान्त की कामना से ईश्वर से द्रोह किया होगा, एकान्त जो फरिश्तो को नसीब नही। आन्द्रेई येफीमिच ने पिछले दिनो जो कुछ देखा और सुना था उस पर सोचना चाहते थे लेकिन मिखाईल अवेर्यानिच को वह अपने मस्तिष्क से दूर न क सके।

"और ज़रा सोचो कि उसने छुट्टी ली और मेरे साथ केवल मित्र और उदारता के कारण चला आया है," डाक्टर ने चिडचिडेपन सोचा। "इस तरह के मित्रतापूर्ण सरक्षण से बढकर बुरी चीज़ ह

हो सकती है। वह दयालु और उदार और खुशमिजाज है, लेकिन असलियत यह है कि उसका साथ ऊबा डालनेवाला है। वह बेहद ऊबानेवाला आदमी है। ऐसे लोग होते हैं जो विवेक या अच्छाई की बातों के अलावा कुछ भी नही बोलते और जो यह सब होते हुए भी तुम्हे यह महसूस करवाते है कि वे बडे मूर्ख है।"

आनेवाले कई दिनो तक अस्वस्थता का बहाना बना कर वह कमरे मे बाहर नही निकले। उनका मित्र जब बातचीत से उनके मन को बहलाने का प्रयास करता तो उस वक्त वह दीवाल की ओर मुह करके चुपचाप व्यथा झेलते लेटे रहते और जब वह अनुपस्थित रहता तो आराम करते। वह इस यात्रा की जहमत मोल लेने के लिए अपने मे और दिन ब दिन बातूनी और अन्तरग बनते जाने के कारण अपने मित्र से कुपित थे। इसका नतीजा यह होता कि वह गभीर और महान् विचारो के लिए अपना मन एकाग्र न कर पाते।

साधारण परिस्थिति से ऊपर उठने की अपनी असमर्थता मे नाराज़ होकर वह सोचते—"मैं उस यथार्थ से परेशान हू, जिसका जिक्र इवान दिमीत्रिच ने किया था। लेकिन यह सब बकवास है मैं जैसे ही घर पहुचूगा, सब बाते पहले की तरह होने लगेंगी "

पीतर्बूर्ग मे भी वही क्रम रहा। कई दिनो तक वह होटल के कमरे में सोफे पर लेटे रहे। केवल बीयर पीने के लिए ही वह उठते थे।

मिखाईल अवेर्यानिच बराबर यह कहता रहा कि वारसा जाने के लिए जल्दी करनी चाहिए।

"मैं वारसा क्यो जाऊ, मेरे दोस्त?" आन्द्रेई येफीमिच ने अनुनय से कहा, "तुम मेरे बिना चले जाओ। और मुझे घर जाने दो। कृपा कर जाने दो!"

"सारी दुनिया मुझे दे डालो तो भी ऐसा नही हो सकता।" मिखाईल अवेर्यानिच ने विरोध में कहा। "वारसा आश्चर्यजनक नगर है। मैंने अपने जीवन के पाच सबसे सुखद वर्ष वहा बिताये है।"

आन्द्रेई येफीमिच जिनमें इतनी शक्ति नही थी कि वह अपनी बात पर डटे रहते, मन मार कर अपने मित्र के साथ वारसा गये। यहा वह कमरे में ही सोफे पर पडे रहते। वह स्वय अपने से, अपने दोस्त से और होटल के नौकरो से जिन्होने रूसी न समझने की जिद्द कर रखी थी, क्रोधित थे। जबकि स्वस्थ व प्रसन्न मिखाईल अवेर्यानिच सदैव की तरह सुबह से लेकर रात तक अपने पुराने दोस्तो के घरो का चक्कर काटता फिरता था। कभी कभी वह रात रात भर गायब रहता। एक बार कही किसी अज्ञात स्थान पर रात गुज़ारने के बाद वह बहुत तडके ही बडी उत्तेजित स्थिति में पहुचा। उस वक्त उसका मुह लाल और तन बदन अस्त व्यस्त हो रहा था। बडी देर तक कमरे में वह अनमेल रूप से बडबडाता रहा, फिर रुका और कहा—

"इज्ज़त बडी चीज़ है।"

कुछ देर तक टहलते रहने के बाद उसने अपने सिर को कसकर थामते हुए दुख भरे स्वर में कहा—

"हा इज्ज़त सबसे बडी बात है। इस बाबुल में आने का जिस घडी मैंने विचार किया, उस घडी का नाश हो। मेरे दोस्त," डाक्टर की ओर मुडते हुए उसने कहा, "तुम मुझसे घृणा करो। मैंने जुआ खेलने में अपने धन को लुटा दिया है। मुझे ५०० रूबल दो।"

आन्द्रेई येफीमिच ने ५०० रूबल गिने और चुपचाप उन्हे अपने दोस्त के सुपुर्द कर दिया। उनके मित्र ने जो अभी तक शर्म और गुस्से से लाल था, अनर्गल और व्यर्थ के वादे दोहराते हुए अपनी टोपी पहनी और कमरे से बाहर हो गया। दो घटे बाद लौट कर आराम कुर्सी में पसरते हुए, गहरी सास भर कर उसने कहा—

"मेरी इज्जत बच गयी। चलो, यहा से चलें, मित्र! अब इस शापित नगर में मैं एक क्षण भी ठहरना नही चाहता। ठग! आस्ट्रिया के भेदिये!"

नवम्बर का महीना था और जिस समय दोनो मित्र अपनी यात्राओं से लौटे सडकों पर गहरी वर्फ जमी हुई थी। डाक्टर खोबोतोव ने उस स्थान की पूर्ति कर ली थी जिस स्थान पर इसके पूर्व आन्द्रेई येफीमिच का अधिकार था। वह अभी तक अपने पुराने कमरो में ही रह रहा था और प्रतीक्षा कर रहा था कि आन्द्रेई येफीमिच के आते ही अस्पताल का आवास खाली हो जायेगा। वह असुन्दर औरत जिसको कि वह अपनी रसोईदारिन बतलाता था अभी अस्पताल के एक भाग में रह रही थी।

अस्पताल के सम्बन्ध मे ताजी अफवाहो से नगर उत्तेजित हो रहा था। लोग कह रहे थे कि उस असुन्दर औरत का इन्स्पेक्टर से झगडा हो गया था और इन्स्पेक्टर को उसके सामने घुटने टेक कर माफी मागनी पडी थी।

पहुचने के दिन ही आन्द्रेई येफीमिच को कमरो की तलाश में घूमना पडा।

"प्रिय मित्र," पोस्टमास्टर ने डरते हुए उससे कहा, "मेरे अविवेक के लिए मुझे क्षमा करना, लेकिन यह बताओ तुम्हारे पास कितना धन है?"

आन्द्रेई येफीमिच ने अपने रुपयो को गिन कर कहा– "८६ रूबल।"

"मेरे कहने का तात्पर्य यह नही था," मिखाईल अवेर्यानिच ने डाक्टर के उत्तर से परेशान और सकोच में पडकर कहा। "मैं जानना चाहता था तुम्हारे पास कुल मिलाकर कितना रुपया है?"

"और मैं कह तो रहा हू, ८६ रूबल   धन यही रह गया है।"

यद्यपि मिखाईल अवेर्यानिच डाक्टर को ईमानदार और उच्च विचारक मानता था, फिर भी उसे इस बात का भरोसा था कि डाक्टर ने कम से कम बीस हज़ार रूबल बचा कर कही रख लिये होगे। अब यह मालूम होने पर कि आन्द्रेई येफीमिच बिल्कुल निर्धन है और जीवित रहने के लिए उसके पास कोई साधन नही है, वह जाने क्यो एकाएक रो पडा और अपनी बाहे अपने मित्र के गले में डाल दी।

१५

आन्द्रेई येफीमिच निम्न मध्यम श्रेणी की एक औरत बेलोवा के घर रहने चले गये। रसोई छोडकर उस छोटे मकान में कुल तीन कमरे थे। सडक की ओर खुलनेवाले दो कमरो में डाक्टर का आधिपत्य था और दार्या, मकान-मालिकिन और उसके तीन बच्चे तीसरे कमरे में तथा रसोई में रहते थे। कभी कभी मकान-मालिकिन का प्रेमी रात बिताने वहा आ पहुचता। वह पियक्कड आदमी था, जो प्राय बहुत उत्पाती हो जाता था जिससे दार्या और बच्चे भयभीत हो जाते थे। रसोई में कुर्सी पर बैठ कर जिस वक्त वह वोद्का मागता था, वह स्थान बहुत छोटा मालूम पडने लगता था। डाक्टर चिल्लाते बच्चो को दयावश अपने कमरे में ले जाते और वहा फर्श पर उनके लिए बिस्तर बिछा देते। इससे उन्हे बडा सन्तोष मिलता था।

वह हमेशा की तरह आठ बजे उठते, चाय पीते और इसके बाद अपनी किताबो और पुरानी पत्र-पत्रिकाओ को पढने बैठ जाते। उनके पास नये पत्र-पत्रिकाए खरीदने के लिए पैसे नही थे। या तो किताबो के पुराने होने के कारण या सभवत परिवर्तित वातावरण के कारण पढने मे उन्हे अब शान्ति न मिलती बल्कि वास्तव में इससे

उन्हें थकान हो जाती थी। बेकार न बैठने के उद्देश्य से उन्होंने अपनी किताबों की एक लम्बी सूची तैयार की, उनकी जिल्दों पर पर्चियां चिपकायी और इस तरह के यन्त्रवत् कार्य में पढने की बनिस्बत उनका चित अधिक लगा। नीरस, शारीरिक श्रम, न जाने कैसे उनके विचारों को शान्त करता लगता था। वह कार्य में लगे रहते, उनका मस्तिष्क शून्य होता और समय तेज़ी से गुज़रता जाता। रसोई में दार्या के साथ आलू के छिलके उतारने या अनाज को छानने का काम तक उन्हें अब रुचिकर प्रतीत होने लगा। शनिवार और इतवार को वह गिरजाघर जाते। आखें बन्द कर दीवाल के सहारे टेक लगाते, वह प्रार्थना-संगीत को सुनते रहते और अपने पिता, माता, विश्वविद्यालय तथा विभिन्न धर्मों की बाते सोचते रहते, इससे वह शान्ति व उदासी का अनुभव करते और जब वह गिरजाघर से बाहर जाते होते तो पछताते कि प्रार्थना इतनी जल्दी ही समाप्त हो गयी।

दो बार वह अस्पताल में इवान दिमीत्रिच को देखने और उससे बाते करने के लिए गये। लेकिन दोनो बार उन्होंने उसे असाधारण रूप मे उत्तेजित और गुस्से मे पाया, उसने यह कहते हुए कि खाली बात से वह ऊब चुका है, अकेले छोड दिये जाने के लिए अनुरोध किया। वह कहता रहा कि वह जितने भी कष्टों से गुज़र चुका है, उनके प्रायश्चित्त में बदमाश और नीच लोगों से एक ही बात यह चाहता है कि उसे तनहाई मिले, एकान्त में रहने दिया जाय, क्या उससे भी उसे वञ्चित किया जायेगा? दोनो बार उनसे विदा लेने पर आन्द्रेई येफीमिच ने जैसे ही उसे अभिवादन किया, इवान दिमीत्रिच ने चीख़ते हुए कहा—

"जहन्नुम में जाओ।"

आन्द्रेई येफीमिच इस बात का निश्चय न कर सके कि उन्हें उसके पास तीसरी बार भी जाना चाहिए या नहीं, यद्यपि ऐसा करने की उनकी बडी चाह थी।

पहले, भोजन के बाद का समय आन्द्रेई येफीमिच फर्श पर टहलते हुए और सोचते हुए बिताते थे। अब वह दीवाल की ओर मुह कर सोफे पर पडे रहते जब तक कि शाम की चाय का समय न आ जाता, अति साधारण विचारो से वह अपना पिड नही छुडा पाते थे। उन्हे इस बात से बडी ग्लानि थी कि बीस वर्षों तक सेवा करने के बाद भी उन्हे कोई पेंशन या एक मुश्त रकम नही दी गयी। यह सही है कि वह नही समझते थे कि उन्होने ईमानदारी से काम किया था लेकिन जिन्होने भी नौकरी की हो, चाहे ईमानदार रहे हो या नही वे पेंशन के अधिकारी होते ही है। आधुनिक न्याय का यही सिद्धान्त है कि पद, सम्मान तथा पेंशन किन्ही नैतिक गुणो अथवा योग्यताओ के लिए नही दी जाती, बल्कि सर्विस के लिए, चाहे वह किसी भी तरह की क्यो न रही हो। तब फिर वही एकमात्र अपवाद क्यो बनाये जाय? उनके पास पैसा नही रह गया था। वह दूकान के सामने से गुजरने में और दूकानदारिन से आख मिलाने में शर्माते थे। बीयर के उन्हें बत्तीस रूबल देने थे। मकान मालिकिन बेलोवा का भी कर्जा उनके सिर पर था। दार्या गुप्त रूप से उनके पुराने कपडे और किताबें बेचती रहती और मकान-मालिकिन से कहती रहती कि डाक्टर एक बडी धनराशि की प्रतीक्षा में है।

वह इस बात से अपने ऊपर अत्यन्त कुपित थे कि उन्होने उस यात्रा पर क्यो एक हजार रूबल खर्च कर दिये—अपनी बचत का सारा धन! इस वक्त वह एक हजार रूबल उनके कितने काम आते। वह इस बात से भी परेशान थे कि उन्हे अकेले नही रहने दिया जाता था। खोबोतोव इस बात को अपना कर्तव्य समझ रहा था कि अपने बीमार सहयोगी को देखने वह जब तब आ जाया करे। आन्द्रेई येफीमिच को उसकी हर चीज से झल्लाहट हो गयी थी उसका खूब खायापीया दिखायी देनेवाला चेहरा, उसका बेढगा तरीका, दया दिखानेवाला

स्वर, उसका "सहयोगी" कहने का ढग, उसके ऊचे बूट, इस सबसे तो उन्हे नफरत थी ही, लेकिन इन सबसे बढकर क्रोधित करनेवाली बात तो यह थी कि खोबोतोव इसको अपना कर्तव्य समझता था कि आन्द्रेई येफीमिच की देखभाल की जाय और समझता था कि वह वास्तव में उनकी चिकित्सा कर रहा है। जब भी वह आता था वह अपने साथ पोटेशियम ब्रोमाइड की शीशी तथा जुलाब की दवा लेता आता था।

मिखाईल अवेर्यानिच भी इसको अपना कर्तव्य मानता था कि अपने मित्र से मिलता रहे और उनके दिल बहलाने का प्रयास करता रहे। वह आन्द्रेई येफीमिच के कमरे में बडी ही बेतकल्लुफी की हवा बाधते हुए तथा जबर्दस्ती की खुशी दिखाते दाखिल होता था। वह उन्हे आश्वासन दिलाता कि वह अच्छे स्वस्थ दिखाई दे रहे है और ईश्वर को धन्यवाद है कि वह निश्चय ही सुधार की ओर प्रगति कर रहे है, जिसका अभिप्राय यही था कि वह उनके मामले को निराशाजनक समझता है। वारसा में उधार लिए रूबलो को उसने लौटाया नही था और भारी शर्म और दबाव के बोझ से लदा हुआ वह जोर से हसने की कोशिश करता और पहले से भी अधिक विचित्र कहानिया सुनाता रहता। उसकी विचित्र कहानिया और बातचीत अब अन्तहीन-सी लगती और आन्द्रेई येफीमिच व खुद उसके लिए यत्रणा के समान थी।

उसके आगमन के दौरान में आन्द्रेई येफीमिच प्राय उसकी ओर पीठ करके सोफे पर लेटे रहते और दात भीच कर उसे सुनते रहते। उन्हे ऐसा लगता जैसे उनकी आत्मा पर मैल की सतह पर सतह जम रही है और हर बार जब भी उनका मित्र उनसे मिलने आता वह ऐसा समझते कि मैल की परते ऊची से ऊची होती जा रही है, यहा तक कि उन्हे अपना दम घुटता हुआ मालूम होने लगता।

इन निम्न भावनाओ को दूर करने के लिए वह इस बात पर सोचा करते कि कभी न कभी उन्हे, खोबोतोव और मिखाईल अवेर्यानिच को, बिना किसी तरह का निशान अपने पीछे छोडे नष्ट होना ही पडेगा। यदि कोई कल्पना करे कि कोई आत्मा आज से दस लाख वर्ष बाद इस पृथ्वी के आकाश से गुज़रती है तो उसे सिवाय मिट्टी और चट्टानो के कुछ भी नही दिखाई देगा। सस्कृति, नैतिक कानून सब कुछ नष्ट हो चुकेगे और एक घास का तिनका तक नही उगेगा। तब फिर उसकी ग्लानि, दूकानदार के सामने उनकी शर्म, तुच्छ खोबोतोव, मिखाईल अवेर्यानिच की उत्पीडक मित्रता का महत्व क्या? यह तो घटिया बात है। बिल्कुल कूडा है।

लेकिन इस तरह का तर्क अब उन्हे किसी तरह की सान्त्वना नही पहुचा पाता था। दस लाख वर्ष बाद की पृथ्वी की कल्पना करते ही खोबोतोव का चित्र उसके ऊचे बूटो के साथ ही किसी नगी चट्टान के पीछे से उभर उठता था या फिर बेतरह हसता मिखाईल अवेर्यानिच उस काल्पनिक चित्र के साथ उपस्थित हो जाता था। यहा तक कि वह उस लज्जा भरी फुसफुसाहट को भी सुनने लगते कि "वारसा मे लिये ऋण का जहा तक सम्बन्ध है, मेरे मित्र, मै कुछ ही दिन में लौटा दूगा   मै वास्तव में दे दूगा।"

१६

एक दिन मिखाईल अवेर्यानिच दोपहर के खाने के बाद आन्द्रेई येफीमिच को देखने आया जबकि वह सोफे में लेटे हुए थे। खोबोतोव भी साथ साथ ही पोटेशियम ब्रोमाइड लेकर पहुचा। आन्द्रेई येफीमिच बडी कोशिश से हाथो पर बोझ डाल कर उठ बैठे।

"यार! कल से आज तुम कहीं ज्यादा स्वस्थ दिखाई दे रहे हो," मिखाईल अवेर्यानिच ने कहा, "तुम बहुत अच्छे, कसम से बहुत अच्छे दिखाई पड रहे हो।"

"बिल्कुल ठीक, समय आ गया है, सहयोगी, कि तुम अपने स्वस्थ होने की बात सोचो," खोबोतोव ने भी जमुहाई लेते हुए बात जोडी। "तुम्हें खुद ही अब बीमारी से ऊब चुकना चाहिए।"

"अरे, हम बहुत जल्दी ही चगे हो जायेंगे!" मिखाईल अवेर्यानिच ने प्रसन्नतापूर्वक चिल्ला कर कहा। "हम सौ वर्ष और जीवित रहेंगे। बस, देखते रहो!"

"सौ वर्षो की बात तो मैं नही जानता लेकिन अगले बीस वर्षो के लिए निश्चय ही वह स्वस्थ है," खोबोतोव ने पुन आश्वस्त करते हुए कहा। "अरे, अरे, सहयोगी, साया उचा रखो—उदास मत होओ। मस्त रहो, यही तो जिन्दगानी है।"

"ही-ही," मिखाईल अवेर्यानिच जोर जोर से हसते हुए कहने लगा, "हम अभी बतायेंगे कि हम किस धातु के बने है। ईश्वर ने चाहा तो अगली गर्मी में हम काकेशस की ओर कूच करेंगे और उसके पर्वत-प्रदेश में घोडे पर चढते हुए फिरेंगे—खटाखट खटाखट। और जब हम काकेशस से लौट आयेंगे तो कौन जानता है कि हमें बारात में जाना पड," मिखाईल अवेर्यानिच ने धीमे से आख मारते हुए कहा, "अरे भले आदमी, हम तुम्हारी शादी करवा देंगे। देखना अगर न करे तो ..."

आन्द्रेई येफीमिच ने सहसा अनुभव किया कि मैल की परत उठ कर उनके गले तक आ गयी है, उनका दिल भयावह रूप से धडकने लगा।

"यह सब कितनी बेहूदी बात है।" उन्होंने यकायक उठते हुए और खिडकी की ओर जाते हुए कहा, "क्या तुम यह नहीं देख सकते कि तुम कितनी बेहूदी बातें करते हो?"

वह नम्रता श्रौर भद्रता से कहना चाहते थे, लेकिन श्रपनी कोशिश के बावजूद उनकी दोनो मुट्ठिया उनके सिर से ऊपर उठ गयी।

"मुझे श्रकेले छोड दो।" वह चीखे। इस वक्त उनका चेहरा लाल हो गया था श्रौर सारा शरीर काप रहा था। "निकल जाश्रो! तुम दोनो! बाहर! दोनो!"

मिखाईल श्रवेर्यानिच श्रौर खोबोतोव दोनो उठ खडे हुए श्रौर उनकी श्रोर घूर घूर कर देखने लगे, पहले तो परेशानी में श्रौर फिर श्रातकित होकर।

"निकलो, बाहर हो जाश्रो। तुम दोनो।" श्रान्द्रेई येफीमिच चिल्लाते हुए कहते रहे। "बेहूदे लोग! बेवकूफ! न तो मै तुम्हारी मित्रता चाहता हू श्रौर न तुम्हारी दवा ही। बेवकूफ! श्रभद्र! घृणास्पद!"

श्रचम्भे में एक दूसरे को ताकते हुए खोबोतोव श्रौर मिखाईल श्रवेर्यानिच दरवाज़े तक मुडे बिना चले श्राये श्रौर गलियारे में निकल श्राये। श्रान्द्रेई येफीमिच ने पोटेशियम ब्रोमाइड की बोतल खीचकर उसे उनके पीछे दे मारी। बोतल दरवाज़े से टकरा कर टूट गयी।

"जहन्नुम में जाश्रो!" वह रुश्रासी श्रावाज में चिल्लाते हुए गलियारे तक उनके पीछे दौडे। "जहन्नुम में जाश्रो!"

जब उनके मिलनेवाले चले गये, जैसे ज्वर से कापते हुए वह सोफे पर लेट गये। बार बार वह कहते जाते थे—

"उजड्ड लोग! मूर्ख।"

वह जब शान्त हो गये तो एकबारगी उन्होने सोचा कि बेचारे मिखाईल श्रवेर्यानिच इस समय कितना बुरा मान रहा होगा। यह सब कितनी शर्मनाक श्रौर भद्दी बात थी। ऐसी घटना, इसके पूर्व, उनके

साथ कभी नही हुई थी। उनकी बुद्धिमत्ता और निपुणता, उनकी समझदारी और दार्शनिक उदासीनता कहा गायब हो गयी थी?

डाक्टर रात भर शर्म और अपने से खीज के मारे सो न सके। सुबह दस के लगभग वह डाकखाने में पोस्टमास्टर से क्षमायाचना करने चले गये।

"जो हो चुका है, उस बात पर ज्यादा क्यो ध्यान दिया जाय," मिखाईल अवेर्यानिच ने अत्यत द्रवित होकर सास भरते हुए और उनके हाथ को बडे स्नेह से दबाते हुए कहा। "जो हो गया सो हो गया, उसे भूल जाओ। ल्यूबावकिन!" वह इतनी जोर से चिल्लाया कि डाकखाने के तमाम क्लर्क और अपने काम से आये लोग स्तम्भित हो गये। "एक कुर्सी लाओ। तुम क्या ज़रा रुक नही सकती, तुम?" वह एक गरीब महिला पर जो कि एक रजिस्टरी-पत्र खिडकी की राह भीतर दे रही थी, झल्ला पडा। "क्या तुम देखती नही हो कि मै व्यस्त हू? जो हो गया सो हो गया।" आन्द्रेई येफीमिच की ओर मुडते हुए वह स्नेहपूर्ण ढग से कहने लगा, "बैठ जाओ, प्रिय मित्र, मै अनुरोध करता हू, बैठ जाओ!"

पूरे एक मिनट तक वह चुपचाप अपने घुटनो को रगडता रहा, फिर बोला—

"मैने उस बात का एक क्षण के लिए भी बुरा नही माना। मै जानता हू बीमार होना क्या होता है। डाक्टर और मै कल तुम्हारे दौरे से घबरा गये थे। हम बडी देर तक तुम्हारे बारे में बाते करते रहे। प्रिय मित्र, तुम अपनी बीमारी का गभीरतापूर्वक इलाज क्यो नही करते? तुम्हे उस तरह से उपेक्षा नही करनी चाहिए, हा सच! एक मित्र की हैसियत से मेरी स्पष्टवादिता क्षमा करना," मिखाईल अवेर्यानिच ने आवाज धीमी करते हुए कहा, "लेकिन तुम बहुत ही

अनुचित वातावरण में रहते हो तग जगह, चारो ओर गदगी, कोई परवाह करनेवाला नही, चिकित्सा का कोई साधन नही मेरे प्यारे दोस्त! डाक्टर और मैं दोनो तुमसे अनुरोध करते है कि तुम हमारी राय मान लो। अस्पताल चले जाओ। वहा खाना अच्छा मिलता है और तुम्हारी देखभाल की जायेगी और तुम्हारी बीमारी का इलाज होगा। येवगेनी फेदोरोविच गलत ढग का आदमी होने के बावजूद—और हम तुम यह बात जानते है—चतुर डाक्टर है और कोई भी उसका विश्वास कर सकता है। वह तुम्हारी देख-भाल करने का वचन देता है।"

आन्द्रेई येफीमिच हार्दिक आसक्ति के स्वर से तथा उन आसुओ से जो सहसा पोस्टमास्टर के गालो पर से लुढकने लगे द्रवित हो गये।

"मेरे बडे प्यारे दोस्त! उनका विश्वास मत करो।" उन्होने धीमे से, अपने हाथ को अपने दिल पर रखते हुए कहा। "उनका विश्वास मत करो! यह सब झूठ है। मेरी गलती यही है कि २० वर्षो के दौरान मे अपने नगर में मुझे केवल एक ही बुद्धिमान आदमी मिला और वह पागल है। मैं जरा भी बीमार नही हू। मैं एक कुचक्र में फस गया हू जिससे बाहर होने का कोई रास्ता नही है। मुझे किसी चीज की चिन्ता नही है। जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करो।"

"अस्पताल मे जाओ, मेरे दोस्त।"

"मुझे इसकी परवाह ही नही है कि मुझे कहा जाना है। अगर तुम्हारी यही इच्छा हो तो मुझे जीवित भी गाड दे सकते हो।"

"मुझसे वादा करो कि तुम येवगेनी फेदोरोविच की हर बात मानोगे, मेरे भले दोस्त!"

"अच्छी बात है, मैं वचन देता हू। लेकिन मै तुमसे फिर कह

रहा हू कि मैं कुचक्र में फस गया हू। अब से हर चीज़ यहा तक कि शुभाकाक्षियो की हार्दिक सहानुभूति भी मुझे मेरी बरबादी की ओर ले जा रही है। मैं विनष्ट हो रहा हू और मुझमें इसको समझने का साहस है।"

"लेकिन, भाई। तुम तो अच्छे हो जाओगे।"

"इस तरह बात करने से क्या लाभ?" आन्द्रेई येफीमिच ने तप कर कहा। "अपने जीवन के अतिम भाग में प्राय हर एक को इस तरह की घटना से गुज़रना ही पडता है। चाहे यह कहा जाय कि तुम्हारा गुर्दा खराब है या तुम्हारे हृदय की गति ठीक नही है तो तुम्हे डाक्टरी इलाज करवाना चाहिए चाहे लोग यह कहे कि तुम पागल अथवा अपराधी हो—सक्षेप में लोगो का ध्यान जैसे ही तुम्हारी ओर आकर्पित हो तुम निश्चित समझ लो कि अब ऐसे कुचक्र मे पड गये हो जिसमे निकलना तुम्हारे लिए नामुमकिन है। जितना ही तुम इससे बाहर होने की कोशिश करोगे उतना ही तुम इसमें फसते जाओगे। अच्छा यही है कि तुम कोशिश छोड दो क्योकि कोई भी मानव प्रयास तुमको बचा नही सकता। कम से कम मेरी यही राय है।"

इस बीच डाकखाने की खिडकी के दूसरी ओर लोगो की भीड इकट्ठी हो चुकी थी। उनको ज़्यादा देर रोकना उचित न समझकर आन्द्रेई येफीमिच उठ खडे हुए और विदाई का नमस्कार कहने लगे। मिखाईल अवेर्यानिच ने उनसे वादा फिर से दोहरवाया और उन्हे दरवाजे तक पहुचा दिया।

उसी रोज़ शाम को अचानक खोबोतोव भी अपने भेड़ रोएदार चमडे के जैकट और ऊचे बूटो को डाटे, जैसे कुछ हुआ ही न हो, उनके पास आया।

'मैं काम से तुम्हारे पास आया हू, सहयोगी! मैं चाहता हू कि तुम मेरे साथ मरीज़ को देखने चलो। क्या आना चाहोगे?"

यह सोचकर कि सभवत खोबोतोव घूम कर उनका मन बहलाना चाहता हो या उन्हे कुछ थोडा-सा धन कमाने का अवसर देना चाहता हो, वह अपना कोट और टोपी पहन कर उसके साथ बाहर निकल आये। वह अपने पिछले दिन की गलती पर अफसोस जाहिर करने का मौका मिलने पर प्रसन्न थे और खोबोतोव के प्रति कृतज्ञता का अनुभव कर रहे थे। खोबोतोव ने इस प्रसग में एक भी शब्द नही कहा। वह आन्द्रेई येफीमिच की भावनाओ पर आघात न पहुचाने पर तुला हुआ था। आन्द्रेई येफीमिच इस तरह के बिल्कुल असस्कृत आदमी में इतनी निपुणता पाने पर आश्चर्यचकित थे।

"तुम्हारा मरीज कहा है?" आन्द्रेई येफीमिच ने पूछा।

"मेरे अस्पताल में है। मैं कुछ समय से उसे तुम्हे दिखाना चाहता था बडा अनोखा मामला है।"

वे अस्पताल के अहाते में दाखिल हुए और मुख्य भवन से होते हुए उस छोटी इमारत की ओर गये जहा मानसिक रोगी रखे जाते थे। इस बीच किसी कारणवश दोनो में से कोई भी नही बोला। जैसे ही वह उस कक्ष मे पहुचे, निकीता कूद कर खडा हो गया, और सलाम किया जैसा कि वह बराबर करता आया था।

"उनमें से एक के फेफडो में खराबी आ गयी है।" खोबोतोव ने आन्द्रेई येफीमिच के साथ वार्ड में प्रवेश करते समय गुनगुनाते हुए कहा। "तुम यहा मेरी प्रतीक्षा करो मैं एक मिनट में लौट आऊगा, मैं अपना स्टेथसकोप ले आऊ।

और वह बाहर हो गया।

अंधेरा बढता जा रहा था। इवान दिमीत्रिच अपने बिस्तर में, अपना मुह तकिये मे आधा गाडे हुए लेटा था। लकवे का रोगी निश्चेष्ट हो बैठा था, वह चुपचाप रो रहा था और अपने ओंठों को हिलाता जाता था। मोटा किसान और भूतपूर्व डाक छाटनेवाला सो रहे थे। कमरे में निस्तब्धता छायी थी।

आन्द्रेई येफीमिच प्रतीक्षा में इवान दिमीत्रिच की बगल मे बैठ गये। लेकिन आधा घटा गुज़र जाने के बाद भी खोबोतोव न आया और उसकी जगह निकीता ने वार्ड मे ड्रेसिग गाउन, भीतर पहनने के कपडे और स्लीपरो को अपनी बाह में लिए प्रवेश किया।

"अपने कपडे बदल लीजिये, हुज़ूर!" उसने शान्ति से कहा। "वह आपकी चारपाई है" उसने उस एक खाली चारपाई की ओर जो कि अभी लायी गयी लगती थी, सकेत करते हुए आगे कहा, "ईश्वर ने चाहा तो स्वस्थ हो जायगे। चिन्ता न कीजिये।"

आन्द्रेई येफीमिच यह सब कुछ समझ गये। बिना एक शब्द कहे वह निकीता द्वारा बतायी गयी चारपाई की ओर बढ गये और उसपर बैठ गये। यह महसूस करते हुए कि निकीता उनकी प्रतीक्षा मे है, वह गहरी शर्म अनुभव करते हुए अपने कपडे उतार नगे हो गये फिर उन अस्पताली कपडो को पहनने लगे जाघिया जो बहुत तग था, कमीज़ जो बहुत लम्बी थी और ड्रेसिग गाउन जिससे तली मछलियो की गध आ रही थी।

"ईश्वर ने चाहा तो स्वस्थ हो जायेगे," निकीता ने बात दोहरायी।

आन्द्रेई येफीमिच के कपडो को अपनी बाह में टागे वह दरवाज़ो को बन्द करता हुआ बाहर हो गया।

"सब एक ही बात है," गाउन को अपनी कमर पर सकोच से लपेटते हुए और यह अनुभव करते हुए कि वह कैदी के समान हो गये है, उन्होने सोचा। "सब एक ही बात है, चाहे फ्राक कोट हो, वर्दी, यूनीफौर्म हो या यह गाउन हो "

"लेकिन घडी? वह कापी जिसे वह अपनी बगल की जेब में लिये रहते थे? सिगरेट? निकीता उनके कपडो को कहा ले गया है? वह सभवत अब अपने जीवन में कभी भी पतलून वास्कट और बूट न पहन सकेगे। पहले तो यह सब उन्हे अनोखी और समझ में न आ सकनेवाली बात लगी। आन्द्रेई येफीमिच अभी तक भी अपने इस विश्वास पर दृढ थे कि मकान-मालिकिन बेलोवा के घर और वार्ड नम्बर छ में कोई अन्तर नही है। ससार में हर वात व्यर्थ है, सब अह है, फिर भी उनके हाथ कापने लगे और पाव ठढे पडने लगे, इस विचार के आते ही कि इवान दिमीत्रिच जागते ही उन्हे अस्पताल के लिबास में देखेगा। उनका दिल डूबने लगा। वह उठ खडे हुए, कमरे में कुछ देर चहल कदमी की और फिर वैठ गये।

आधा घटा बीता, फिर एक घटा और वह वहा बैठे रहने से खिन्न हुए और थक गये। इन सब लोगो की तरह क्या यहा सारा दिन, हफ्ता भर व वर्षों गुज़ारना सभव हो सकता था? खैर! वह कुछ देर तक वैठे रहे फिर टहलते रहे और फिर बैठ गये। वह खिडकी तक जाकर वाहर देख सकते थे और फिर एक वार कमरे में चहल कदमी कर सकते थे। और फिर इसके वाद क्या वहा सिर्फ पत्थर की मूर्ति की तरह सारे समय वैठा ही रहना था? नही, नही, यह विल्कुल असभव है।

आन्द्रेई येफीमिच लेट गये, लेकिन फिर तुरन्त ही उठ गये, अपने माथे पर गाउन की आस्तीन से ठढा पसीना पोछते ही उन्हे

अपने चेहरे पर भुनी मछलियो की गध मालूम हुई। उन्होंने कमरे का एक चक्कर लगाया।

"कोई गलतफहमी हो गयी है," उन्होने अपनी बाहो को विभ्रम में हिलाते हुए कहा। "मुझे उनसे कहना चाहिए यह एक गलतफहमी है "

ठीक उसी वक्त इवान दिमीत्रिच जाग पडा। वह अपने गालो को हथेलियो में लिये बैठ गया। उसने जमीन पर थूका। इसके बाद धीरे धीरे उसने डाक्टर पर निगाह डाली। जाहिर था कि वह पहले पहल कुछ नही समझ पा रहा था, लेकिन दूसरे ही क्षण उसके उनींदे चेहरे पर व्यग और क्रूरता का भाव व्याप्त हो गया।

"अच्छा तो तुमको भी वह यहा ले आये है, दोस्त!" उसने एक आख भीचते हुए नीद के कारण भारी आवाज में कहा। "तुम से मिलकर प्रसन्नता हुई। दूसरो का खून चूसने की जगह अब खुद तुम्हारा खून चूसा जायेगा। बहुत खूब!"

"यह कुछ गलतफहमी मालूम होती है " इवान दिमीत्रिच के शब्दो मे भयाकुल हो कर आन्द्रेई येफीमिच ने गुनगुना कर कहा। उन्होंने कधो को हिलाते हुए एक बार फिर बात दोहरायी। "यह किसी तरह की गलतफहमी की बात ही होगी "

इवान दिमीत्रिच ने फिर थूका और उसके बाद वह लेट गया।

"अभिशप्त जीवन!" वह गुनगुनाते हुए कहता रहा। "और व्यथापूर्ण एव अपमानजनक बात यह है कि यह जीवन अपने कष्टो के बदले में किसी क्षतिपूर्ति या नाटको की भाति देवत्व प्राप्ति में अत नही होगा। बल्कि इसका अन्त मृत्यु में होगा। दो नौकर आकर मृत शरीर को उसकी बाहो और टागो से उठा कर ले जायेंगे और तहखाने में पटक देंगे। ऊफ-फ़-फ। चिन्ता मत करो दूसरी

दुनिया में हमारा वक्त आयेगा मेरा प्रेत लौटकर इन सूअरो को डराता रहेगा। मै इनके बालो को भय से सफेद कर दिया करूगा।

तभी मोज़ेज़ लौटकर आ पहुचा और डाक्टर को देखकर उसने अपना हाथ फैला दिया—

"मुझे एक कोपेक दो।"

१८

आन्द्रेई येफीमिच खिडकी तक गये और वहा से बाहर खेतो की ओर झाकने लगे। काफी अधेरा घिरने लगा था और दाहिनी ओर से गहरे लाल रग का वह ठढा चाद आसमान पर उदय हो रहा था। अस्पताल के अहाते से बहुत दूर नही, यही कोई ७०० फीट, इससे अधिक नही, एक ऊची सफेद इमारत खडी थी जो चारो ओर से दीवाल से घिरी हुई थी। यह जेलखाना था।

"तो यही वास्तविकता है।" आन्द्रेई येफीमिच ने सोचा और वह भयाकुल हो गये।

हर वस्तु भयानक थी—चाद, जेलखाना, चहारदीवारी के ऊपर ऊल्टी गडी हुई कीले और दूर हड्डियो के भट्ठो से उठनेवाली लपटें। तभी पीछे से किसी के सास भरने की आवाज़ आयी। आन्द्रेई येफीमिच मुडे और उन्होने एक आदमी को अपने सीने पर खिताब के तमगे और पदविया धारण किये हुए खडा देखा। यह आदमी मुस्करा रहा था और शरारत से आखें मार रहा था। यह भी भयानक था।

आन्द्रेई येफीमिच ने अपने को यह समझाने की कोशिश की कि चाद या जेलखाने के भवन मे कोई असाधारण बात नही और जिन लोगो के दिमाग दुरुस्त होते है वे तमगे पहनते ही है तथा समय आने

पर हर चीज नष्ट हो कर धूल में मिल जायेगी, लेकिन वह सहसा निराशा से पराभूत हो गये और खिड़की के सीखचो को अपने दोनों हाथो मे पकडकर उन्हे हिलाने की कोशिश करने लगे। सीखचे अच्छी तरह गडे हुए थे और वे तनिक भी न हिले।

तब अपने ऊपर छाये आतक को दूर करने की गरज मे वह उठकर इवान दिमीत्रिच की चारपाई के पास चले गये और उनकी बगल में बैठ गये।

"मै निराश हो चुका हू, प्रिय मित्र," वह कापते और अपने माथे के ठंडे पसीने को पोछते हुए कहते रहे। "मेरा दिल टूट चुका है।"

"दर्शन बघारो!" इवान दिमीत्रिच ने मजाक उडाते हुए कहा।

"हे ईश्वर, हे भगवान हा हा, तुमने एक बार कहा था कि रूस में किसी तरह की दर्शन-प्रणाली नही है, फिर भी यहा हर कोई दार्शनिकतापूर्ण बाते करता है, यहा तक कि सर्वसाधारण भी। लेकिन सर्वसाधारण का दर्शन किसी को क्या नुकसान पहुचाता है?" आन्द्रेई येफीमिच की वाणी ऐसी मालूम होती थी कि जैसे वह रोने ही वाले हो अथवा दया जगाना चाहते हो। "तब फिर यह द्वेषपूर्ण हसी क्यो, प्रिय मित्र? और जब सर्वसाधारण सन्तुष्ट नही है, तब सिर्फ दार्शनिकता की बाते करने के अलावा उनके लिए रह ही क्या गया है? एक बुद्धिमान, सुशिक्षित, अभिमानी, स्वतत्र देवता-तुल्य व्यक्ति के लिए इसके अलावा कोई दूसरा चारा नही कि वह किसी बेहूदा गदे, छोटे नगर में डाक्टर बनकर आये और अपनी सारी जिन्दगी फस्द खोलने, जोंक लगाने और मरहमो की पुलटिस चटाने में उत्सर्ग कर दे। पाखण्ड, सकीर्णता, अभद्रता। ओह! मेरे भगवान!"

"तुम बेवकूफी की बाते कर रहे हो। अगर तुम डाक्टर नही होना चाहते हो तो सरकार के मत्री क्यों नही बन जाते?"

"नही, नही, ऐसा कुछ भी नही है जो किया जा सके। हम निशक्त हैं, मेरे मित्र मैं उदासीन था। मै प्रसन्नता से सुचित्त होकर सोचा विचारा करता था। लेकिन जिस क्षण में जीवन की कठोरता मुझे स्पर्श करती है, मेरा दिल बैठ जाता है हम धराशायी हो जाते है। हम कमजोर हैं, दयनीय हैं तुम भी मेरे मित्र! तुम बुद्धिमान और उच्च विचारो के आदमी हो। अपनी मा के दूध के साथ तुमने सुन्दर भावनाओ को ग्रहण किया था। लेकिन जिन्दगी को अभी मुश्किल से ही तुमने शुरू किया था कि तुम थक गये और बीमार हो गये कमज़ोर, कमज़ोर।"

अपने भय और कलक की भावनाओ के अतिरिक्त अधेरा बढने के साथ आन्द्रेई येफीमिच को कोई और बात जोर से खाये जाने लगी। आखिर उन्हे ज्ञात हुआ कि वह उनकी बीयर और सिगरेट पीने की इच्छा ही थी।

"मै एक मिनट के लिए जा रहा हू, मेरे मित्र," उन्होने कहा। "मैं उनसे कहूगा कि वह हमें रोशनी का प्रवन्ध करे मैं इस तरह से नही रह सकता। मै बिल्कुल बरदाश्त नही कर सकता "

आन्द्रेई येफीमिच दरवाज़े तक गये और उसको जैसे ही खोला निकीता कूद कर खडा हो गया और उनका रास्ता रोक दिया।

"तुम कहा जा रहे हो? यह सब कुछ नही चलेगा" उसने कहा। "अब सोने का समय हो चुका है।"

"मै बाहर सिर्फ एक मिनट के लिए, यही ज़रा-सा अहाते में घूमने जाना चाहता हू।" आन्द्रेई येफीमिच ने बिल्कुल स्तम्भित होकर कहा।

"नही, नही, इसकी अनुमति नही है। तुम स्वय इस बात को जानते हो।"

और निकीता दरवाजा बन्द कर उससे पीठ सटा कर खडा हो गया।

"लेकिन मेरा बाहर जाना किसी को भी किसी तरह नुकसान नही पहुचायेगा।" आन्द्रेई येफीमिच ने अपने कंधों को झटकाते हुए कहा। "निकीता, मैं इस बात को नही समझ पा रहा हू। मुझे जरूर बाहर जाना चाहिए।" उन्होंने टूटती आवाज मे कहा। "मुझे जाना चाहिए।"

"अब तुम शान्ति को भग करने की कोशिश मत करो।" निकीता ने डाटा।

"यह शर्मनाक है!" इवान दिमीत्रिच ने एकाएक कूद कर चिल्लाते हुए कहा। "उसे क्या अधिकार है कि वह लोगों को बाहर जाने से रोके? कानून स्पष्ट कहता है, मैं दावे से कह सकता हू कि बिना मुकदमा चलाये किसी की भी स्वतत्रता नही छीनी जा सकती। यह तो सरासर हिसा है! बिल्कुल स्वेच्छाचारिता है!"

"बेशक, यह स्वेच्छाचारिता है!" आन्द्रेई येफीमिच ने सहसा इस आशातीत समर्थन से उत्साहित होकर कहा। "मैं बाहर जाना चाहता हू, मुझे जाना ही है। उसे मुझको रोकने का कोई अधिकार नही है। मैं तुमसे कहता हू मुझे बाहर आने दो! खोलो, तुम्ही को कह रहा हू।"

"ए जानवर! तू सुन रहा है?" इवान दिमीत्रिच ने अपने मुक्के से दरवाजे को पीटते हुए कहा। "दरवाजा खोलो, वरना मै इसे तोड दूगा। ए सूअर।"

"दरवाजा खोलो।" आन्द्रेई येफीमिच ने कापते हुए चिल्ला कर कहा, "मैं कह रहा हू।"

"कहते जाओ फिर।" दरवाजे के दूसरी ओर से निकीता ने उत्तर दिया। "कहते जाओ।"

"कम से कम जाओ और येवगेनी फेदोरोविच को बुलाकर ले आओ। उनसे कहो कि मैं चाहता हू वह एक मिनट भर के लिए इधर आयें।"

"वह बिना बुलाये कल आ जायेंगे।"

"वे कभी भी हम को बाहर नही होने देंगे," इवान दिमीत्रिच ने कहा। "वे हम को यही रखेंगे जब तक हम सडने न लग जाय! ओह भगवान! क्या यह बात सच है कि दूसरी दुनिया में नरक नही है और इन दुष्टो को क्षमा मिल जायगी? न्याय कहा है? ऐ दुष्ट, दरवाज़ा खोलो, मेरा दम घुट रहा है!" उसने भारी गले से चिल्लाते हुए कहा और अपने शरीर के सारे ज़ोर को दरवाज़े में लगा दिया। "मै अपना सर पटक दूगा! हत्यारो!"

निकीता ने एकबारगी दरवाजा खोला और बाहो और घुटने के धक्के से आन्द्रेई येफीमिच को अशिष्टता से एक ओर धकेला और इसके बाद अपनी मुट्ठी तानकर आन्द्रेई येफीमिच के मुह पर घूसा जमा दिया। आन्द्रेई येफीमिच को लगा कि एक बहुत बडी खारे पानी की लहर उनके सिर से लेकर पाव तक दौड गयी है जिसने उन्हे बिस्तर पर पहुचा दिया है। वास्तव में उनके मुह में नमकीन स्वाद आ गया था। स्पष्टत उनके मसूडो से खून बह रहा था। उन्होने अपनी बाहे उठायी मानो तले से उबरने की कोशिश कर रहे हो और किसी के बिस्तर को पकड लिया। इसके साथ ही उन्हे यह भी महसूस हुआ कि निकीता ने उनकी पीठ पर दो बार प्रहार किया।

इवान दिमीत्रिच तेज़ी से चीखा। मतलब यह कि वह भी पीटा जा रहा था।

इसके उपरान्त सब शान्त हो गया। चाद सीखचो से होकर धुधली रोशनी रहा था और फर्श पर एक परछाई पडी जो देखने में जाल की तरह लगती थी। हर एक चीज़ आतकित करनेवाली थी। आन्द्रेई येफीमिच लेट गये और सास न लेने का प्रयत्न करते रहे। वह भयाकुल हो दूसरे घूसे के पडने की प्रतीक्षा कर रहे

थे। उन्हे ऐसा अनुभव हुआ जैसे किसी ने दराती लेकर उनके शरीर में घुसेड दी हो और उनके सीने और पेट में उसे कई बार घुमाया हो। पीडा के कारण उन्होंने तकिये को दातो से काटा और अपने दात भीच लिये, तभी सहसा इस गडबडी के बीच एक विचार भयानक और असह्य रूप से उनके मस्तिष्क मे आया—जिस पीडा को वह इस वक्त महसूस कर रहे थे, उस पीडा को ये लोग, जो कि चाद के प्रकाश मे काली छायाओं की तरह दिखायी दे रहे थे, वर्षों से दिन पर दिन लगातार महसूस करते रहे होंगे। कैसे इन बीस वर्षों की अवधि में वह इस बात को नही जान पाये अथवा उन्होंने जानने की इच्छा ही नही की? उन्होंने यह नही जाना था, उन्हे इस पीडा का कोई अनुमान भी नही था, अतएव दोष उनपर नही हो सकता था। लेकिन कठोर और दुर्दमनीय निकीता की तरह उनकी अन्तरात्मा ने उन्हे कपा डाला। वह कूद कर खडे हो गये और अपनी ऊची आवाज मे चिल्लाना, और दौडकर बाहर हो निकीता, ख्रोबोतोव, अस्पताल के सुपरिण्टेण्डण्ट व मेडिकल सहायक को और फिर अपने को भी मार डालना चाहा। लेकिन उनके मुह से कोई आवाज नही निकली और उनकी टांगें काबू के बाहर थी, हवा के लिए हांफते हुए उन्होंने अपने चोगा और कमीज को मरोड कर, फाडना शुरु किया और उसके उपरान्त अचेतन होकर अपने बिस्तर में लुढक गये।

१९

दूसरे रोज सुबह वह भारी सिर और कानों में सनसनाती हुई आवाज के साथ जगे। उनके शरीर की हर हड्डी में पीडा हो रही थी। इस बार की अपनी निराश्रित अवस्था से उन्हें कोई लज्जा नही हुई। उन्होंने

एक कायर की तरह आचरण किया था, यहा तक कि उन्होंने अपने को चाद से भी भयभीत होने दिया था और पूरी ईमानदारी से उन विचारो और भावनाओ को प्रकट किया था जिनका कभी भी अपने भीतर होने का उन्हे अनुमान भी नही था। उदाहरण के लिए, उनका वह विचार कि असतोष साधारण जनो को दार्शनिक रूप से विचार करने की प्रेरणा देता है। लेकिन अब उन्हे किसी बात की परवाह नही थी।

न तो उन्होने खाया और न पिया, केवल निश्चेष्ट और चुपचाप अपने बिस्तर पर पडे रहे।

"मै परवाह नही करता," उन्होने सोचा लोगो के पूछने पर। "मै उन्हे उत्तर नही दूगा मुझे कोई परवाह नही।"

दोपहर के भोजन के बाद मिखाईल अवेर्यानिच उनसे मिलने आया। वह अपने साथ चाय का एक पैकेट और खाने के लिए आध सेर मीठी टिकिया लाया था। दार्या भी उन्हे देखने आयी थी। वह घटे भर तक उनकी चारपाई की बगल में खडी देखती रही। उसके चेहरे पर वही अव्यक्त वेदना झलक रही थी डाक्टर खोबोतोव उन्हे देखने आया। वह अपने साथ पोटेशियम ब्रोमाइड की एक बोतल लेता आया था और उसने निकीता को वार्ड में किसी वस्तु से धुआ देने के लिए कहा।

साझ होते होते, आन्द्रेई येफीमिच लकवे से मर गये। पहले उन्हे बुखार जैसी सरदी और मतली लगी फिर कुछ ऐसा लगा कि जैसे उनके सारे शरीर में कोई घृणास्पद चीज फैलती जा रही है—उनकी उगलियो की पोरो तक। उन्हे लगा जैसे यह उनके पेट से उठकर उनके सिर में पहुच रही है और उनकी आखो और कानो मे घुस रही है। हर चीज उन्हे हरी नजर आने लगी। आन्द्रेई येफीमिच जान

गये कि यह उनका अन्त है और उन्हे याद आया कि इवान दिमीत्रिच, मिखाईल अवेर्यानिच तथा लाखो और लोग अमरत्व में विश्वास करते है। मान लो ऐसी भी कोई बात हो? लेकिन अमरत्व के लिए उन्हे कोई इच्छा मालूम नही हुई और उन्होने इस ममले पर केवल एक सरसरी तौर से ही विचार किया। बारहसिगो का एक झुड जिसके सम्बन्ध में वह पिछले दिन पढ रहे थे, उनकी स्मृति से गुजरा, यह उन्हे असाधारण रूप से सुन्दर और शोभामय मालूम हुआ। इसके बाद एक देहाती औरत ने एक रजिस्टर्ड-पत्र को लिये हुए अपना हाथ उनकी ओर बढाया मिखाईल अवेर्यानिच ने कुछ कहा। इसके बाद हर वस्तु अदृश्य हो गयी और आन्द्रेई येफीमिच की चेतना सदैव के लिए समाप्त हो गयी।

दो चाकर आये जिन्होने उनकी बाहो और टागो से पकडकर उन्हे प्रार्थनागृह में पहुचा दिया। वहा वह मेज पर आखें खोले पडे हुए थे और रात में चाद की रोशनी उनके शरीर पर पड रही थी। दूसरे दिन सुबह सेर्गेई सेर्गेइच पहुचा। ईसू मसीह के सलीब के समक्ष उसने बडी कर्तव्यपरायणता से प्रार्थना की और अपने पहले के प्रधान की आखें बन्द कर दी।

इसके दो दिन बाद आन्द्रेई येफीमिच दफनाये गये। सिर्फ मिखाईल अवेर्यानिच और दार्या अन्त्येष्टि सस्कार में उपस्थित थे।

१८९२

योनिच

१

"स" नामक नगर में जब नये आये हुए लोग शिकायत करते कि वहा का जीवन बहुत नीरस और उबानेवाला है—तो वहा के पुराने रहनेवाले लोग उसके पक्ष में यही कहा करते कि "स" बहुत ही दिलचस्प शहर है, यहा एक पुस्तकालय है, नाट्यगृह है, क्लब है जहा नृत्य हुआ करते है और सबसे बडी बात यहा यह है कि कुछ परिवार ऐसे रहते है जो दिलचस्प, खुशमिजाज और होशियार है जिनसे परिचय प्राप्त किया जा सकता है, और वे तूरकिन परिवार को सस्कृति और गुणो के उदाहरण के रूप में बताते।

तूरकिन परिवार बडी सडक पर गवर्नर के भवन के पडोस में निजी मकान में रहता था। इस परिवार का बुजुर्ग, इवान पेत्रोविच, हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर काले वालो और गलमुच्छो वाला पुरुष था। वह कभी कभी दान आदि के लिए नाटक आदि करवाता और खुद बूढे जनरल की नकल भली प्रकार करता और ऐसे खासता कि लोग हसी मे लोट पोट हो जाते। उसे अनेक किस्से, कहानिया, कहावते और खेल आते थे। मज़ाक उसे बहुत पसन्द था, सचमुच वह बडा मसखरा था और उसका मुह देखकर यह कहना कठिन था कि वह मज़ाक कर रहा है अथवा गम्भीर है। उसकी पत्नी वेरा योसीफोवना दुबली-पतली,

आकर्षक थी और बिना कमानी वाला चश्मा पहनती थी। वह उपन्यास व कहानिया लिखा करती थी जिन्हे अतिथियो को सुनाने को वह सदैव तैयार रहती थी। उनके एक लडकी थी जिसे येकतेरीना इवानोव्ना कहकर पुकारते थे, वह नवयुवती थी और पियानो बजाती थी। सक्षेप में, इस परिवार के हर सदस्य को भगवान ने कुछ न कुछ गुण अवश्य दिया था। तूरकिन परिवार आतिथ्य-सत्कार मे बडा निपुण था। अपने गुणो की अभिव्यक्ति वे लोग बडी सरलता और हसमुख ढग से करते थे। उनका विशाल पत्थर का बना मकान गर्मियो में भी हमेशा ठडा रहता था, पीछे की खिडकिया एक पुराने सायादार बगीचे में खुलती थी जहा बसत मे बुलबुलें चहका करती थी। जब अतिथि आते तो रसोईघर मे छुरो की खनखनाहट आती और प्याज भूनने की खुशबू से सारा आगन महक उठता, जैसे महक यह विश्वास दिला रही हो कि रात्रि का भोजन भरपूर व स्वादिष्ट होगा।

डाक्टर दिमीत्री योनिच स्तार्त्सेव से, जो हाल ही में ज़ेम्स्त्वो के चिकित्सक नियुक्त हुए थे, जैसे ही वह "स" से लगभग ६ मिल पर स्थित "द्यालिज" में रहने के लिए आये, एक सुसस्कृत व्यक्ति की भाति तूरकिन परिवार से अवश्य जान-पहचान करने के लिए कहा गया। एक दिन जाडो मे उनकी भेंट इवान पेत्रोविच से सडक पर करा दी गयी। मौसम, नाटक और हैजे के प्रकोप पर बात करने के बाद उन्हे निमत्रण भी मिल गया। अत बसत में एक धार्मिक छुट्टी के दिन उस दिन "असेन्शन" (ईसू मसीह के पुनर्जीवित होने के चालीसवें दिन स्वप्नावरोहण का त्योहार") था। अपने रोगियो से निपट कर स्तार्त्सेव मनोरजन की खोज में और साथ ही कुछ आवश्यक खरीदारी करने के लिए नगर की ओर चल पडा। पैदल, धीरे धीरे आराम से चलता हुआ (उसने अभी अपनी गाडी नही ली

थी) व "जीवन घट से अश्रुपेय पीने के पहले " गुनगुनाता हुआ वह नगर की ओर चला। उसने नगर में भोजन किया व पार्क में चहलकदमी की, तथा इवान पेत्रोविच के निमन्त्रण की याद आते ही उसने तूरकिन परिवार के यहा जाने का निश्चय किया ताकि वह देख सके कि वे लोग किस प्रकार के लोग है।

"नमश्कार-दमश्कार ! " ओसारे में ही इवान पेत्रोविच ने उसका स्वागत किया। "आप जैसे अतिथि को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई ! आइये, अन्दर आइये, मै अपनी पत्नी से मिलाऊ। मै इनसे कह रहा हू, वेरोचका, कि" पत्नी से परिचय कराते हुए उसने कहना जारी ही रखा, "काम के बाद अस्पताल में रुकने का इन्हे कोई सासारिक अधिकार नही है। यह इनका कर्तव्य है कि अपना बाकी समय समाज को दें। क्यो प्रिये ! मै ठीक कह रहा हू न ? "

"यहा वैठिये," अपनी बगल की कुर्सी की ओर इशारा करते हुए वेरा योमीफोवना ने कहा। "आप मुझसे मुहब्बत कर सकते है, मेरे पति तो औथेलो की तरह ईर्षालु है पर हम सावधान रहने की चेष्टा करेगे है न ! "

"मेरी प्यारी मुर्गी", इवान पेत्रोविच ने अपनी पत्नी के माथे को चूमते हुए, प्यार भरी आवाज़ मे कहा। "आपने आने के लिए वहुत अच्छा मौका चुना है," अपने अतिथि की ओर मुडता हुआ वह वोला, "मेरी पत्नी ने अभी एक वडा उपन्यास पूरा किया है और आज वह उसे हमें पढकर सुनायेंगी।"

"जानवा," वेरा योसिफोवना ने पति से कहा, और फासीसी में जोडा, "नौकरो से चाय के लिए कहो न ! "

स्तार्त्सेव का परिचय तब अठारह वर्षीय लडकी येकतेरीना इवानोव्ना से कराया गया, जो अपनी मा से विल्कुल मिलती-जुलती थी

तथा उतनी ही दुबली-व-पतली आकर्षक थी। उसके भाव में अभी भी बचपना था और वह नाज़ुक थी। अक्षत उसके यौवन के उठते हुए उभार के स्वास्थ्य व सौन्दर्य से सच्चे वसंत का आभास होता था। इसके बाद सब लोग चाय पीने बैठे। चाय के साथ शहद, जाम, मिष्ठान्न और इतने बढ़िया बिस्कुट भी थे जो मुह में रखते ही घुल जाते थे। शाम होने के साथ ही अतिथि आने लगे और इवान पेत्रोविच ने सबसे आँखों में ख़ुशी भर भर कर कहा—

"नमस्कार - दमस्कार"।

सब लोग बैठक में गम्भीरता के साथ बैठ गये। वेरा योसीफोवना ने अपना उपन्यास पढ़ा। वह इन शब्दों से आरम्भ होता था, "उस समय कड़ाके का जाड़ा था " खिड़कियां खुली थी व रसोई में से छुरियों की खटपट की आवाज़ आ रही थी और उनके साथ प्याज़ भुनने की खुशबू।

मुलायम आराम-कुर्सियों पर बैठे सब लोग शांतिपूर्वक सुन रहे थे, धुंधली रोशनीवाली बैठक में रोशनी मानो आँखें मिचमिचा रही थी और गर्मियों की उस शाम को, जबकि सड़क पर से शोर व हंसने की आवाज़ें आ रही थी तथा बाग से बकाइन की सुगन्ध के झकोरे आ रहे थे, यह विश्वास करना कठिन था कि "उस समय कड़ाके का जाड़ा था और डूबते हुए सूर्य की ठंडी किरणें बर्फीले मैदान और एकाकी पथिक को रोशनी दे रही थी।" वेरा योसीफोवना पढ़ रही थी कि किस प्रकार जवान व सुन्दर राजकुमारी ने अपने गाँव में स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय आदि बनवाये और किस तरह वह उस यायावर कलाकार के प्रेम में पड़ गयी, उन बातों का विवरण देते हुए जो ज़िन्दगी में तो कभी नहीं होतीं हैं, पर तब भी उनको सुनने में इतना शान्तिमय आनन्द आ रहा था कि सब आराम से मज़ा लेते रहे और किसी की उठने की इच्छा न हुई

"अनच्छा नही है!" इवान पेत्रोविच ने धीरे से कहा।

तब एक विचारमग्न अतिथि ने जिसके विचार कही दूर दूर थे, बहुत ही धीरे से कहा, "हा, सचमुच"।

एक घटा बीत गया और एक और। पास में नगर के पार्क में आर्केस्ट्रा बज रहा था तथा कोई भजन मडली गा रही थी। जब वेरा योसीफोवना ने अपनी कापी बन्द की, पाच मिनट तक कोई कुछ नही बोला और सब उस गीत "लुचीनुशका" को सुनते रहे और गीत में वह अभिव्यक्त हुआ जो उपन्यास में नही था जो जीवन की बात थी।

"क्या आप अपनी कृतियो को पत्रिकाओ में छपवाती है"? स्तार्त्सेव ने वेरा योसीफोवना से पूछा।

"नही" उसने उत्तर दिया "मैं उन्हे कतई नही छपवाती। मै उन्हे लिखती हू और एक अलमारी में छिपा देती हू। मै उन्हे क्यो छपवाऊ? हमारे पास गुज़र करने के लिए काफी है," सफाई देते हुए उसने आगे कहा।

और किसी न किसी कारणवश सब ने एक लम्बी सास ली।

"और मुन्नी अब तुम कुछ बजाकर सुनाओ हमें" इवान पेत्रोविच ने अपनी बेटी से कहा।

बडे पियानो का ढक्कन उठा दिया गया, स्वरलिपि सामने लगी तैयार ही थी और सुर छेडा गया। येकतेरीना इवानोव्ना पियानो पर बैठ गयी और उसके हाथ चलने लगे। उसने पूरी शक्ति से उगलिया परदो पर मारी, फिर बार बार उसके हाथ चलने लगे। उसके कधे व छातिया कापने लगी और वह उसी परिश्रम के साथ बजाती रही, बजाती रही जैसे वह पियानो के परदो को उसके अन्दर ठूस देने पर तुली हुई हो। बैठक का कमरा गूज उठा, सब चीजें थर्राने लगी फर्श, छत, फर्नीचर सब येकतेरीना इवानोव्ना ने एक मुश्किल धुन

बजायी जिसकी सारी दिलचस्पी उसकी जटिलता में ही थी। पद लम्बा और उबानेवाला था और सुनते सुनते स्तार्त्सेव ने अपने आप एक ऊचे पहाड की चोटी से चट्टानो के लुढकने की कल्पना की। वे लुढक रही थीं, लुढकती रही, एक के बाद एक, और उसकी इच्छा हुई कि वे रुक जाय, यद्यपि उसको येकतेरीना इवानोव्ना जो थकान से गुलाबी, मजबूत, फुर्तीली थी और बालो की एक लट उसके माथे पर थी, आकर्षक लग रही थी। द्यालिज मे बीमारो और किसानो के बीच जाडे बिताने के बाद एक बैठक में बैठने, इस यौवन, सुरुचि व शायद पवित्रतापूर्ण प्राणी को देखने और इन शोरभरी, थका देनेवाली पर साथ ही परिष्कृत आवाजो को सुनने में उसे बडा भला और नया लग रहा था

"वाह, विल्लो, तुमने आज कमाल कर दिया, खुद अपने आपका मात कर दिया," आखो में आसू भरे इवान पेत्रोविच ने कहा, जब उसकी पुत्री अपना सगीत पूरा करके उठी।

सबने उसे घेर लिया, बधाइया दी, तारीफ की तथा कसम खायी कि ऐसा सगीत उन्होंने सालो से नही सुना था, और वह चेहरे पर हल्की मुस्कान लिये, चुपचाप खडी सुनती रही, उसके पूरे शरीर से विजयोल्लास झलक रहा था।

"बहुत सुन्दर, आश्चर्यजनक।"

तब स्तार्त्सेव ने भी सामूहिक उत्साह के बहाव में कहा—"बहुत सुन्दर।" "आपने कहा पढा है?" उसने येकतेरीना इवानोव्ना से पूछा। "सगीतविद्यापीठ मे?"

"नही, मै तो केवल विद्यापीठ में प्रवेश के लिए तैयारी भर कर रही हू, लेकिन इसी बीच मै मैडम जव्लोव्स्काया से सीख रही हू।"

"क्या आपने स्थानीय हाई स्कूल से सनद ली है?"

"अरे नही" वेरा योसीफोव्ना ने उसकी तरफ से उत्तर दिया।

"हमने उसके लिए घर पर शिक्षक लगा लिये थे, आप इस बात से सहमत होगे कि हाई स्कूल या बोर्डिंग स्कूल में उसपर कुछ बुरा असर भी पड सकता था। बढती हुई लडकी पर उसकी मा के अलावा किसी का असर नही होना चाहिए।"

"मगर मै तो सगीतशाला जानेवाली हू।" येकतेरीना इवानोव्ना ने कहा।

"अरे, नही, हमारी बिल्लो अपनी मा को बहुत प्यार करती है, हमारी बिल्लो अपनी अम्मा और पापा को दुख नही देगी।"

"मैं जाऊगी, मै जाऊगी!" पैर पटकते हुए लाड में मचलने की नकल करते हुए येकतेरीना इवानोव्ना ने कहा।

भोजन के समय इवान पेत्रोविच की अपने गुण दिखाने की बारी आयी। आखो में ही मुस्कराते हुए उसने किस्से सुनाये, मज़ाक किये, हसी की पहेलिया बुझायी जिनको उसने ही हल किया, बराबर अपनी अनोखी भाषा में बोलता रहा जो उसने मसखरेपन के लम्बे अभ्यास मे अपना ली थी और जो अब उसकी आदत बन गयी थी जैसे "बहुत सुन्दरम्, अनच्छा नही है, कृतज्ञताम् से धन्यवादम् देता हू।"

मगर मनोरजन यही खत्म नही हुआ। जब खुश और सन्तुष्ट मेहमान अपने अपने कोट और छडिया लेने ड्योढी में आये तो चौदह वर्षीय लडका दरबान पावेल या जैसा उसे पुकारा जाता था "पावा" जिसके बाल महीन कटे हुए थे और जिसका चेहरा गदबदाया हुआ था, उनके ईर्द-गिर्द मडराने लगा।

"दिखाओ, पावा! दिखाओ!" इवान पेत्रोविच ने कहा।

पावा ने एक मुद्रा बनायी, एक हाथ ऊपर उठाया और दुख भरे स्वर में कहा–

"बदनसीब औरत! बरबाद हो जा!" और सब लोग हसने लगे।

"मज़े की बात !" डाक्टर ने घर से बाहर आते हुए सोचा।

एक रेस्तरा में आकर उसने बीयर पी और द्यालिज वापस लौटा। रास्ते भर वह गुनगुनाता रहा—

"तुम्हारी कोमल आवाज़ के घुल जानेवाले स्वर "

छ मील चलने के बाद भी जब वह सोने के लिए बिस्तर पर पहुचा तो उसे जरा भी थकान नहीं लग रही थी और वह अपने आपसे कह रहा था कि अभी तो मैं सहर्ष बारह मील और चल लूगा।

"अनच्छा नही है " सोने से पहले उसने हसते हुए याद किया।

२

स्तार्त्सेव बराबर तूरकिन परिवार से भेंट के लिए जाने को सोचता रहा किन्तु उसे अस्पताल में बहुत काम रहता और वह कभी एक दो घण्टे खाली नहीं निकाल पाता। एक साल इसी तरह काम और एकान्त में बीत गया। पर फिर एक दिन एक नीले लिफाफे में उसके पास शहर से पत्र आया।

वेरा योसीफोवना को जिसे बहुत दिनों से सिर दर्द की शिकायत थी, किन्तु हाल में किल्लो की रोज़ रोज़ संगीतशाला में जाने की धमकियों से, दर्द का दौरा जल्दी जल्दी पड़ने लगा था। नगर के सब डाक्टर इलाज के लिए तूरकिन परिवार गये और अत में ज़ेम्स्त्वो के डाक्टर का नम्बर भी आया। वेरा योसीफोव्ना ने उसे एक मार्मिक पत्र लिखा जिसमें उनसे आने को तथा उनका कष्ट दूर करने को कहा गया था। स्तार्त्सेव उसे देखने गया और उसके बाद आये दिन प्राय ही तूरकिन

परिवार के यहा जाने लगा। सचमुच ही उसने वेरा योसीफोव्ना की पीडा कुछ कम करने में सहायता की और सब मेहमानो को बता दिया गया कि वह बहुत बढिया, असाधारण, आश्चर्यजनक डाक्टर है। किन्तु अब वह उसके सिरदर्द के कारण तूरकिन निवास नही जाता था

छुट्टी का दिन था। येकतेरीना इवानोव्ना पियानो का लम्बा व मुश्किल अभ्यास खत्म कर चुकी थी। वे सब खाने के कमरे की मेज़ पर बैठे देर तक चाय पी रहे थे। इवान पेत्रोविच कोई मज़ाकिया किस्सा सुना रहा था जब सदर दरवाज़े की घटी बजी और उसे उठकर किसी मेहमान से मिलने के लिए बाहर जाना पडा। स्तार्त्सेव ने हलचल के मौके का फायदा उठाते हुए येकतेरीना इवानोव्ना के कान में भावावेश से फुसफुसाया —

"भगवान के लिए मुझे और न तडपाओ, मैं तुमसे प्रार्थना करता हू। चलो हम लोग बाग में चले।"

उसने अपने कधे उचकाये जैसे वह आश्चर्य में हो और समझी भी न हो कि वह क्या चाहता है, किन्तु वह उठी और बाहर चल दी।

"तुम तीन चार घटे अभ्यास करती हो," उसने उसका पीछा-सा करते हुए कहा, "तब तुम अपनी मा के पास बैठ जाती हो और तुमसे बात करने का कोई मौका ही नही मिल पाता। मैं प्रार्थना करता हू मुझे केवल एक चौथाई घटे का समय दो।"

शरद आ रहा था और पुराना बगीचा शात व उदास था, रास्ते पर गहरे रग की पत्तिया छितरी हुई थी। दिन छोटे हो रहे थे

"मैंने तुम्हे पूरे एक हफ्ते से नही देखा है," स्तार्त्सेव बोलता गया, "काश, तुम मेरे इस कष्ट को समझ पाती! हम कही बैठ जाय। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

बाग में उनका एक प्रिय स्थान था – एक पुराने, घने, छायादार मेपिल वृक्ष के नीचे एक बेंच। और अब वे उसी बेंच पर बैठ गये।

"तुम क्या चाहते हो?" येकतेरीना इवानोव्ना ने रूखी, व्यावहारिक आवाज में पूछा।

"मैंने तुम्हें पूरे एक हफ्ते से नहीं देखा है, तुम्हारी आवाज सुने युग बीत गये। मैं विकलता से इन्तिज़ार करता हू, मैं तुम्हारी आवाज़ सुनने को प्यासा हू। बोलो!"

उसकी ताज़गी, उसकी आंखों के भोलेपन, मासूम गालों से वह अभिभूत हो गया। यहा तक कि उसकी पोशाक की चुस्ती में भी उसे कुछ अनोखा माधुर्य दिखाई दिया, उसकी सादगी और भोली छवि उसे बडी हृदयग्राही लगी। और इस भोलेपन के बावजूद वह उसे अपनी उम्र से अधिक बुद्धिमती और होशियार लगती थी। वह उससे साहित्य, कला या किसी अन्य विषय पर बात करता, लोगों और जिन्दगी के बारे में शिकायत करता, हालांकि कभी कभी वह गभीर बात के दौरान में ही अचानक हस पडती और घर भाग जाती। 'स' नगर की अन्य लडकियों की तरह वह भी पढती बहुत थी ('स' में लोग पढते बहुत कम थे और स्थानीय पुस्तकालय के लोग कहा करते थे कि जवान यहूदियों और लडकियों के लिए ही पुस्तकालय चल रहा है, नहीं तो यह बद हो जाय) और इससे स्तार्त्सेव को बहुत खुशी होती थी। हर बार जब वह उससे मिलता, वह बडी उत्सुकता से पूछता कि तुम क्या पढती रही और जब वह बताती तो मोहित बैठा सुना करता।

अब उसने पूछा – "पिछली भेंट के बाद इस हफ्ते तुम क्या पढती रही? मुझे बताओ न!"

"मैं पीसेम्स्की की किताबें पढती रही।"

"उसकी कौनसी किताब?"

विल्लो ने जवाब दिया—"सहस्र आत्माए" और पीसेम्स्की को नाम भी क्या मज़ेदार मिला है "अलेक्सेई फिओफिलाकतिच!"

"अरे तुम चल कहा दी?" उसे एकाएक उठकर घर की ओर जाते देख, स्तार्त्सेव घबडा कर चिल्लाया। "मुझे तुमसे बहुत ज़रूरी बाते करनी है, मुझे कुछ बताना है तुम्हे मेरे साथ ठहरो, अच्छा, चाहे पाच मिनट के लिए ही सही, पर रुको तो, मै तुमसे विनय करता हू!"

वह ठहर गयी, मानो कुछ कहना चाहती हो, फिर बेढगे तरीके से कागज़ का एक पुरजा उसके हाथ में थमाकर घर भाग गयी और वहा पहुचकर फौरन बैठकर पियानो बजाने लगी।

स्तार्त्सेव ने पुरजा पढा—"आज रात ग्यारह बजे कब्रिस्तान में डिमैटी की कब्र पर पहुचना।"

जब उसका आश्चर्य खत्म हो चुका, वह सोचने लगा—"क्या बेवकूफी है! कब्रिस्तान क्यो? वहा किसलिए?"

बात बिल्कुल साफ थी विल्लो उसे बेवकूफ बना रही थी। जिसमें भी ज़रा-सी समझ होगी वह रात में, शहर से दूर मिलने की बात न करेगा जब सडक पर या म्यूनिसिपैलिटी के पार्क में ही मिला जा सकता था। और क्या उसे, ज़ेम्स्त्वो के डाक्टर को, एक बुद्धिमान, सम्भ्रान्त व्यक्ति को यह शोभा देता था कि वह किसी लडकी के लिए ऐसे सासें भरे, पुरज़े ले, कब्रिस्तानो में घूमे, ऐसी मूर्खता करे जिसपर आजकल के नौजवान हसा करते है? इस सब का फल क्या निकलेगा? अगर उसके साथी जान गये, तो क्या कहेगे? क्लब में कुरसियो के बीच मे गुज़रते हुए स्तार्त्सेव ऐसे ही विचारो मे मग्न था, पर तब भी, साढे दस बजे वह कब्रिस्तान के लिए रवाना हो गया।

अब उसके पास अपनी गाडी और घोडी की जोडी थी, उसका कोचवान जिसका नाम पतेलीमोन था मखमल की वास्कट पहनता था।

चाद आसमान म चमक रहा था। रात खामोश और गर्म थी, पर यह गर्मी पतझड के पहले की गरमी थी। शहर मे बाहर, बूचडखाने के पाम कुत्ते भूक रहे थे। स्तार्त्सेव ने अपनी गाडी शहर के बाहर ही एक गली में रोक दी और पैदल कब्रिस्तान चला। "हर एक में अपना अपना अनोखापन होता है। विल्नो अनोखी लडकी है, और कौन जाने? शायद वह सचमुच ही आना चाहती हो, शायद वह यहा मौजूद हो।" इस तरह सोचते सोचते उसपर इस कमजोर, व्यर्थ की आशा का नशा-सा छा गया।

रास्ते का आखिरी हिस्सा एक खेत में होकर गुजरता था। दूर घनी काली पट्टी, जगल या एक बडे बाग की तरह कब्रिस्तान दिखाई देता था। पत्थर की बनी एक सफेद दीवाल सामने नजर आयी और फिर फाटक फाटक पर यह वाक्य चादनी में भी पढा जा सकता था "तुम्हारा वक्त भी आयेगा।" स्तार्त्सेव ने बगल का लकडी का फाटक ढकेल कर खोल लिया और अपने को एक चौडे रास्ते पर पाया जिसके दोनो ओर सफेद सलीबो, स्मारको व ऊचे पोपलर वृक्षो की कतार थी और उनमें से हर एक का साया रास्ते पर पड रहा था। अलसाये पेडो की शाखें सफेद पत्थरो पर छा रही थी, हर चीज या तो सफेद थी या काली। यहा खेत से ज्यादा रोशनी मालूम हो रही थी। मेपिल की पत्तिया रास्ते के पीले रेत व कब्रो के सफेद पत्थरो पर उभरी हुई मुट्ठियो की तरह लग रही थी। पत्थरो पर लिखे वाक्य साफ नजर आ रहे थे। एकाएक स्तार्त्सेव के मन में विचार आया कि शायद वह जीवन में पहली और आखिरी बार एक चीज देख रहा था। एक ऐसी दुनिया जो दूसरी सभी दुनियाओ से भिन्न थी, ऐसी दुनिया जहा चादनी भी ऐसी मधुर और मुलायम थी मानो यह जगह उसका पालना हो, जहा जीवन नही था, बिल्कुल नही, लेकिन जहा हर अधेरे पोपलर और हर समाधि में रहस्य की मौजूदगी लग रही थी -

रहस्य जिसमें शाश्वत जीवन की आशा लगती थी, शान्त और सुन्दर शाश्वत जीवन की समाधि के पत्थरो, बदरग होते फलो, सडती पत्तियो की पतझड वाली गध सबसे क्षमा, दुख और शान्ति फूटती लगती थी।

हर तरफ सन्नाटा था। सितारे आसमान से नीचे झाक रहे थे मानो अतिशय विनम्रता में और स्तार्त्सेव की पगध्वनि उस शान्ति में असगत और तीखी लगती थी। लेकिन जब गिरजाघर का घडियाल बज रहा था और वह अपने को मरा और हमेशा के लिए दफनाया हुआ होने की कल्पना में तल्लीन था तभी उसे लगा मानो कोई उसे ताक रहा हो और क्षण भर के लिए उसके दिमाग में यह बात कौध गयी कि यह शान्ति और स्तब्धता नही, यह है अस्तित्वहीनता की गभीर उदासी, दबी घुटी निराशा

डिमेंटी का स्मारक छोटे-से गिरजाघर की शक्ल का बना था और उसकी छत पर एक फरिश्ते की मूर्ति बनी थी। पहले कभी इतालवी गीति-नाटक मडली 'स' नगर में आयी थी और मडली की एक गायिका यही मर गयी थी। यह स्मारक उसी की स्मृति में बनाया गया था। नगर में किसी को भी अब उसकी याद नही थी, पर कब्र के द्वार पर लटकती लालटेन चादनी से ऐसे चमक रही थी, मानो जल रही हो।

आस पास कोई नही दिखाई दे रहा था और यहा आधी रात मे आयेगा भी कौन? लेकिन स्तार्त्सेव इन्तिज़ार करता रहा और मानो चादनी मे उसकी कामना जाग उठी हो, वह बेताबी से इन्तिज़ार करता रहा और कल्पना करता रहा आलिंगन की, चुम्बन की कब्र के पास वह लगभग आध घण्टे तक बैठा रहा और फिर वही पास के गलियारे में टहलने लगा, हाथ में टोप लिये, सोचते हुए कि इन कब्रो में लेटी कितनी स्त्रिया, युवतिया सुन्दरी रही होगी, आकर्षक रही होगी, उन्होने

प्रेम किया होगा, रातो में वासना से प्रज्वलित हो उठी होगी जब वे अपने प्रेमियो के प्रणय के समक्ष निढाल हो गयी होगी। मा-प्रकृति भी मनुष्यो के साथ कैसा निष्ठुर परिहास करती है और इसे स्वीकार करने में भी कैसी लाछना है! यह सब सोचते हुए स्तार्त्सेव की तबियत हुई कि वह चिल्लाकर कहे कि मुझे प्रेम चाहिए, मुझे हर हालत में प्रेम मिलना ही चाहिए! उसकी कल्पना में अब सगमर्मर के शिलाखण्ड नही आ रहे थे, वरन्, शरीर, आकार जो लजा लजा कर पेडो की छाया में छिप रहे थे, उसे उन शरीरो की गरमाहट तक महसूस होने लगी और आखिर मे वासना उसके लिए असहनीय हो उठी

और एकाएक, मानो परदा गिरा दिया गया हो, चाद एक बादल के पीछे छिप गया और हर ओर अधेरा छा गया। स्तार्त्सेव को फाटक तक ढूढना मुश्किल हो गया, क्योकि रात शरद की अधेरी रातो की तरह हो गयी थी और वह डेढ घण्टे तक उस गली को ढूढने में भटकता रहा, जहा उसने अपनी गाडी छोडी थी।

"मै इतना थक गया हू कि मेरे लिए खडा होना भी दुर्लभ है," उसने पतेलीमोन से कहा और गद्दी पर आराम से धसकते ही अपने आप कहा—"मुझे इतना मोटा नही होना चाहिए।"

३

अगली शाम वह शादी का प्रस्ताव करने का पक्का इरादा कर तुर्किन परिवार में पहुचा। पर मौका ठीक नही था, क्योकि येकतेरीना इवानोव्ना के कमरे में नाई उसके बाल सम्हाल रहा था। वह क्लब में होनेवाले नाच में शामिल होने जा रही थी।

एक बार फिर खाने के कमरे में चाय पीने में ढेर सारा वक्त बिताना पड़ा। यह देखकर कि मेहमान किसी विचार में खोया हुआ है और बातो में दिलचस्पी नही ले रहा है, इवान पेत्रोविच ने वास्कट की जेब मे कुछ कागज़ निकाले और एक जर्मन कारिन्दे का बहुत ही टूटी-फूटी और वेहद भोडी और हास्यास्पद रूसी भाषा में लिखा पत्र ज़ोर से पढकर सुनाने लगा।

बेमन से उसे सुनते हुए स्तार्त्सेव ने सोचा – "और शायद ये लोग उसे काफी वडा दहेज भी देंगे।"

बिना सोये रात बिता देने के कारण वह भौचक्का और हडबडाया-सा हो रहा था, मानो उसे कोई मीठी नशीली चीज खिला दी गयी हो। एक तरफ उसके दिल में एक स्वप्निल, आनन्दमय, गरमाहट देनेवाली सुखद अनुभूति हो रही थी और दूसरी ओर उसके दिमाग में कोई ठंढी भारी चीज़ तर्क कर रही थी – "सम्हल जाओ! समय रहते सम्हल जाओ! क्या वह तुम्हारे योग्य है? वह लाड से बिगडी हुई, ज़िद्दी लडकी है जो तीसरे पहर दो वजे तक सोती है और तुम गिरजाघर के एक मामूली कर्मचारी के वेटे हो, ज़ेंस्त्वो के डाक्टर हो " उसने सोचा – "अच्छा। तो फिर?"

वह चीज़ दिमाग में तर्क कर रही थी – "इसके अलावा अगर तुमने उससे शादी की तो उसके सवधी तुमसे ज़ेंस्त्वो की डाक्टरी छुडवा कर नगर में आकर वसने को वाध्य करेंगे।"

उसने सोचा – "तो शहर में रहने में क्या हर्ज है? ये लोग उसे दहेज देंगे ही और शहर में घर वसा लिया जायेगा "

आख़िरकार येकतेरीना इवानोव्ना ऐसी तरोताज़ा और नाच की पोशाक में भली लगती हुई निकली कि स्तार्त्सेव उसकी ओर सिर्फ़ ताकता रहा, जी भर ताकता रहा और ताकते ताकते ऐसा आनन्दविभोर

हो उठा कि एक शब्द भी बोल न सका, वह सिर्फ ताकता रहा और हसता रहा।

अपने आस पास के लोगों से वह विदा मागने के लिए नमस्कार करने लगी और स्तार्त्सेव के लिए वहा ठहरने का अब चूंकि कोई काम न था, वह भी उठ खडा हुआ और बोला कि अब मुझे भी घर जाना है, वक्त हो गया, मेरे मरीज़ इन्तिज़ार कर रहे होंगे।

इवान पेत्रोविच बोला—"तो जाना पडेगा। खैर, तो जाओ और तुम किल्तो को पहुचाते ही क्यो न जाओ, अपनी गाडी पर!"

बाहर अधेरा था, बूदा-बादी हो रही थी और उन्हे पतेलीमोन की बैठे गले की खासी की आवाज़ से ही पता चला कि गाडी कहा है। गाडी की छतरी तनी हुई थी।

इवान पेत्रोविच अपनी बेटी को गाडी पर चढाते हुए और उन दोनो से विदा लेते हुए बराबर मज़ाक करता रहा—

"अच्छा जाओ! नमस्कार-दमस्कार!"

वे रवाना हो गये।

"मै कल कब्रिस्तान गया था," स्तार्त्सेव ने कहना शुरू किया, "कितनी निर्दय और अनुदार बात थी तुम्हारे लिए "

"तुम कब्रिस्तान गये थे?"

"हा, गया था और वहा करीब दो घण्टे तुम्हारी राह देखता रहा। मुझे इतनी परेशानी हुई . "

"ठीक हुआ! क्या तुम मज़ाक भी नही समझ पाते?"

येकतेरीना इवानोव्ना अपने प्रेमी को इस सफलता के साथ मूर्ख बनाने और इतनी आतुरता से प्रेम किये जाने पर खुश हुई और ज़ोर ज़ोर से हसने लगी। दूसरे ही क्षण वह घबराकर ज़ोर से चीख पडी क्योंकि घोडे एकदम फाटक की ओर मुडे जिससे गाडी हिचकोला खा गयी। उस

कर वह स्तार्त्सेव के सहारे टिक गयी और वह उसके होठो व ठुड्डी का चुम्वन करने और उसे अपने वाहुपाश में कसकर जकड लेने से अपने को रोक न सका।

वह रुखाई से वोली – "वस, वहुत हुआ।"

क्षण भर वाद वह गाडी मे न थी, क्लव की तेज़ रोशनी से रौशन दरवाज़े पर खडे सिपाही ने घिनौनी आवाज़ में चिल्लाकर पतेलीमोन से कहा – "अवे गधे, खडा क्या देखता है? आगे वढ!"

स्तार्त्सेव घर गया, पर फौरन फिर चल पडा। दूसरे के मागे के टेल-कोट पहने और कडी सफेद टाई लगाये जो एक ओर को फिसल गयी थी, वह क्लव के वैठकखाने में आधी रात को वैठा जोश से येकतेरीना इवानोव्ना से कह रहा था – "अरे, जिन्होने प्यार नही किया वे कितना कम जानते है! मुझे तो लगता है कि आज तक कोई भी प्रेम का सच्चाई और सफलता के साथ वर्णन ही नही कर सका, वास्तव में इस कोमल, सुखद, यातनापूर्ण भावना का वर्णन कर सकना असभव है और जिस किसी को इसका एक वार भी अनुभव हुआ है, वह फिर इस भावना को शव्दो में व्यक्त करने का प्रयत्न ही न करेगा। पर इस वर्णन और भूमिका की क्या ज़रूरत? यह अनावश्यक भापण क्यो? मेरा प्रेम असीम है मैं तुमसे अनुरोध करता हू, अनुनय-विनय करता हू कि तुम मेरी पत्नी वन जाओ।" अत में स्तार्त्सेव ने कह ही दिया।

"दिमीत्री योनिच," वडी गभीर वन कर येकतेरीना इवानोव्ना कुछ रुककर वोली, "इस सम्मान के लिए मै तुम्हारी आभारी हू, मै तुम्हारा आदर करती हू, किन्तु " वह उठकर खडी हो गयी और खडी खडी ही वोलती रही, "लेकिन, मुझे माफ करना, मै तुम्हारी पत्नी नही वन सकती। हम लोग सफाई से काम ले। तुम जानते हो दिमीत्री योनिच, कि मुझे जीवन में कला से सवसे ज्यादा प्रेम है, मै सगीत

पर जान देती हू, इसकी पूजा करती हू। मैं अपना पूरा जीवन इसे अर्पित कर चुकी हू। मै संगीतज्ञ होना चाहती हू प्रसिद्ध नाम, सफलता, स्वाधीनता चाहती हू, और तुम चाहते हो कि मै इस शहर में रहती रहू यहा की बेरौनक, व्यर्थ की ज़िन्दगी बसर करू जो मुझे अभी ही असह्य हो चुकी है। बस किसी की बीवी होऊ, न, धन्यवाद! मनुष्य को जीवन में ऊचा, ज्वलत लक्ष्य बनाना चाहिए और गृहस्थ जीवन मुझे हमेशा के लिए बाध डालेगा, दिमीत्री योनिच! "(वह हलका-सा मुसकरायी क्योंकि दिमीत्री योनिच का नाम लेते ही उसे बरबस अलेक्सेई फिग्रोफिग्नाकतिच की याद आयी।) दिमीत्री योनिच! तुम बडे उदार, कृपालु, बुद्धिमान व्यक्ति हो, बाकी सबसे तुम बहुत अच्छे हो!" यह कहते कहते उसकी आखो में आसू भर आये, "मुझे हृदय से तुम्हारे साथ सहानुभूति है, लेकिन लेकिन, मेरा ख्याल है कि तुम समझ सकोगे "

वह पलट कर बैठकखाने से बाहर निकल गयी ताकि रो न दे।

स्तार्त्सेव का दिल अब घबराहट में नही फडफडा रहा था। क्लब से निकल कर गली में जाते ही उसने पहला काम यह किया कि टाई नोच कर अलग की और एक गहरी सास ली। वह कुछ झेंपा हुआ था, कुछ उसके अह को ठेस पहुची थी—उसने अस्वीकृति की कल्पना भी न की थी और वह विश्वास नही कर पा रहा था कि उसके सारे सपने, यातनाए और आशाए यू इस अति साधारण ढग से खत्म हो जायेंगी, मानो नौसिखुए अभिनेताओं द्वारा खेले गये किसी नाटक के अन्तिम दृश्य से। उसे अपने प्रेम और भावनाओ पर तरस आने लगा और उसका मन रो पडने का होने लगा, या फिर पूरी ताकत से अपना छाता पन्तेलीमोन के चौडे कन्धो पर पटक देने को होने लगा।

तीन दिन तक उसका हर काम उलटा-पुलटा होता रहा, पर

जब उसे खबर मिली कि येकतेरीना इवानोव्ना सगीतविद्यापीठ में भरती होने के लिए मास्को चली गयी है, वह शान्त हो गया और जीवन फिर पुराने ढर्रे पर चल निकला।

बाद में जब उसे याद आता कि किस तरह वह कब्रिस्तान मे घूमा था और कैसे एक कोट के लिए सारा शहर छान मारा था, वह आलस्य से निढाल हो लेट जाता और कहता—

"इतनी परेशानी ?"

४

चार साल गुज़र गये। स्तार्त्सेव की अब शहर में ज़ोरदार डाक्टरी प्रेक्टिस चल निकली थी। रोज़ सवेरे वह द्यालिज में मरीजो को जल्दी जल्दी देख कर अपने शहर के मरीज़ देखने आ जाता। अब वह दो घोडो वाली गाडी पर नही तीन घोडो की शानदार बग्घी पर आता, गाडी के झुनझुने बजा करते, वह घर देर रात गये ही लौटता। वह मोटा भारी भरकम हो गया था और पैदल चलने से वह घबराता था जिससे उसे दिल का दौरा हो जाता था। पन्तेलीमो भी मोटा हो गया था और जितना ही उसका मुटापा बढता था उतने ही दुख से वह सासें भर भर कर अपने भाग्य को कोसता—"हमेशा चलना, चलना, चलना।"

स्तार्त्सेव अनेक लोगो के यहा जाता और बहुत से लोगो से मिलता, पर वह किसी से भी अभिन्नता या मित्रता का रिश्ता न जोडता। शहर के लोगो की बातचीत, विचारो और उनकी शक्ल तक से उसे चिढ थी। उसने धीरे धीरे सीख लिया था कि जब तक वह 'न' नगर मे लोगो के साथ ताश खेलता और भोजन करता है तब तक वे शान्त, प्रसन्नचित व अपेक्षतया बुद्धिमान भी लगते हैं, पर जहा बात खाने मे हट कर राजनीति या विज्ञान जैसे विषयो पर जा

पहुचती है वे या तो हड़बड़ा जाते है या ऐसे मूर्खतापूर्ण और खाम दार्शनिक सिद्धान्त बघारने लगते है कि उन्हे छोड़कर चलते ही बनता है। जब स्तार्त्सेव पढे लिखे किसी व्यक्ति से भी कहता कि खुदा का शुक्र है कि इन्सान तरक्की कर रहा है और एक वक्त आयेगा जब हमें फांसी की सजा से नजात मिल जायेगी और पासपोर्ट की जरूरत न रहेगी तो वह व्यक्ति स्तार्त्सेव की तरफ तिरछी निगाह से देखता जिसमे अविश्वास भरा होता और पूछता—"तब फिर लोग सड़को पर जिसका जी चाहेगा गला काट सकेगे?" जब रात में कही खाना खाते या चाय पीते स्तार्त्सेव कहता कि हर व्यक्ति को काम करना चाहिए और काम के बिना जीवन असम्भव है, तो लोग इसे अपनी निन्दा समझकर जोर जोर से बहस करने लगते। साथ ही ये साधारण लोग न तो कुछ करते थे, बिल्कुल कुछ नही करते थे और न किसी चीज में दिलचस्पी लेते थे, जिससे इन लोगो से बात करने के लिए विषय ढूढ निकालना असम्भव ही हो जाता था। और स्तार्त्सेव बातचीत से बचता, इन लोगो के साथ सिर्फ ताश खेलता या खाना खाता, अगर किसी परिवार में किसी घरेलू उत्सव में भाग लेने के लिए वह आमंत्रित होता तो वह चुपचाप बैठा खाना खाया करता और अपनी थाली की ओर ही देखा करता। ऐसे मौकों पर होनेवाली बातचीत हमेशा गैरदिलचस्प, मूर्खतापूर्ण और अन्यायभरी ही होती और वह खीज कर उत्तेजित हो जाता, इसीलिए वह हमेशा चुप रहता और चूंकि वह अपनी थाली की ओर ही गभीर शान्ति से घूरा करता, शहर में लोग उसे "घमण्डी पोलैण्डवासी" कहते हालाकि पोलैण्डवासी वह कभी न था।

नाच गाने और नाटक जैसे मनोरंजन से वह दूर भागता। हा, हर शाम तीन घण्टे ताश जरूर खेलता और उसमें पूरा मजा लेता।

एक और मनोरजन था जिसमें उसे धीरे धीरे अज्ञात रूप से आनन्द आने लगा था, यह था शाम को अपनी जेबो से दिन भर मरीज़ो से ली गयी फीस के नोट निकालना – इनमें से कुछ पीले होते कुछ हरे, कुछ से इत्र की खुशबू आती और कुछ से सिरके, मछली या धूप की – ये नोट अक्सर सत्तर रूबल तक पहुच जाते। जब उसके पास कई सौ रूबल हो जाते तो वह उन्हे "म्युचुअल क्रेडिट सोसायटी" में जमा करा देता।

येकतेरीना इवानोव्ना के जाने के बाद वह तूरकिन परिवार में चार साल में केवल दो बार ही गया था और वह भी वेरा योसीफोव्ना के आमत्रण पर जिसके सिरदर्द का इलाज अब भी चल रहा था। येकतेरीना इवानोव्ना हर गरमी में अपने माता पिता के पास आ जाती पर स्तार्त्सेव की उससे भेंट नही हुई, ऐसा सयोग ही नही आया।

और अब चार वर्ष गुज़र गये थे। एक दिन सवेरे जब हवा में स्थिरता और गरमाहट थी, अस्पताल में उसे एक पत्र मिला। वेरा योसीफोव्ना ने दिमीत्री योनिच को लिखा था कि उसे उसकी बहुत याद आती है और उसे अवश्य अवश्य आकर उससे मिलना चाहिए और उसका कष्ट दूर करना चाहिए, और यह कि आज उसका जन्म दिन भी है। पत्र के अत में एक पक्ति यह जुडी थी –

"अम्मा के अनुरोध में मैं भी अपना अनुरोध जोडती हू। वि०"

स्तार्त्सेव ने इस मसले पर गौर किया और शाम को तूरकिन के यहा गया। इवान पेत्रोविच ने उसी पुराने ढग से "नमस्कार-दमस्कार" कहकर उसका स्वागत किया। उसकी आखो में मुसकराहट थी, फिर उसने विकृत फ्रांसीसी भाषा में कहा – "बोजुर हो!"

वेरा योसीफोव्ना काफी बूढी हो गयी थी और उसके बाल सफेद हो गये थे, उसने स्तार्त्सेव का हाथ दबा कर बनते हुए सास भरी और कहा –

"डाक्टर। तुम मुझसे मुहब्बत नही करना चाहते, तुम कभी हम से मिलने नही आते, तुम्हारे लिए तो मैं बूढी हुई, पर यह लडकी भी आ गयी है, शायद वह ज्यादा खुशकिस्मत साबित हो।"

और विल्लो? वह और भी दुबली और पीली पड गयी थी, पर अब भी सुन्दर और भी ज्यादा मनमोहक हो गयी थी। अब वह येकतेरीना इवानोव्ना थी, महज विल्लो नही। उसकी ताजगी और बच्चों जैसी निश्छलता की भावभगी खतम हो चुकी थी। अब उसकी आकृति में, निगाह में कुछ नया, कुछ जो सहमा हुआ और अपराधी-सा था, आ गया था मानो तूरकिन परिवार मे वह अब अपनापा महसूस न करती हो।

अपना हाथ स्तार्त्सेव के हाथ मे रखते हुए वह बोली—"हम लोगों को मिले युग बीत गये!" स्पष्ट था कि उसका दिल जोरो से धक धक कर रहा था। उसके चेहरे पर आखें जमाये और जिज्ञासा से उसे घूरते हुए वह बोली—"आप जरा मोटे हो गये है! आप पहले से कुछ काले पड गये है और ज्यादा पुरुषोचित भाव आपके चेहरे पर आ गया है, पर आपमें ज्यादा परिवर्तन नही हुआ है।"

स्तार्त्सेव को वह अब भी आकर्षक, अत्यन्त आकर्षक लगती, पर उसमें अब कही कुछ कमी या कुछ बेशी मालूम पडती थी। वह कह नही सकता था कि क्या है, पर यह कमी या बेशी उसे पहले जैसी भावना धारण करने से रोक रही थी। उसे उसका पीलापन अच्छा नही लगता था, उसका नया भाव अच्छा नही लगता था, उसकी हल्की मुस्कान, उसकी आवाज अच्छी नही लग रही थी और थो देर मे ही उसे उसकी पोशाक, कुरसी जिसपर वह बैठी थी, वि से कुछ, जब वह उससे शादी करते करते रह गया था, सब कुछ नाग लगने लगा। उसे अपने प्रेम, आशाएँ, सारे याद आये जिन्होंने

वर्ष पहले उसे उद्वेलित कर दिया था और उसे कुछ फूहडपन-सा लगने लगा।

चाय और मलाई के केक आये। वेरा योसीफोव्ना ने जोर जोर से अपना उपन्यास पढा, जिसमें उन बातो का ज़िक्र था जो जीवन में कभी होती नही और स्तार्त्सेव उसके सफेद बालो से घिरे सुन्दर चेहरे को देखता सुनता रहा और इन्तिजार करता रहा कि कब उपन्यास खत्म हो।

उसने सोचा—"अनाडी लोग वे नही होते जो कहानी लिख नही पाते वल्कि वे होते है जो कहानिया लिखते है और इस वात को छिपा नही पाते।"

किन्तु इवान पेत्रोविच ने कहा—"अनच्छा नही।"

फिर यकतेरीना इवानोव्ना ने देर तक शोर मचाते हुए पियानो वजाया और जव वह थमी लोगो ने देर तक उसकी प्रशसा की और उसे धन्यवाद दिया।

स्तार्त्सेव ने सोचा—"अच्छा ही हुआ कि मैंने उससे शादी नही की।"

येकतेरीना इवानोव्ना ने स्तार्त्सेव की ओर ताका, स्पष्ट था कि वह आशा कर रही थी कि वह उससे वगीचे में चलने को कहेगा पर वह कुछ नही वोला।

वह उमके पाम जा पहुची और वोली—"आइये हम आप वाते करे। आप कैसे है? कैमा कट रहा है आपका वक्त? इन सारे दिनो मै आपके वारे में ही सोचती रहती थी।" घवराहट मे उसने कहना जारी रखा, "मै आपको पत्र लिखना चाहती थी, आपसे मिलने द्यालिज आना चाहती थी, वहा जाने का तय भी कर लिया था, पर फिर मैंने इरादा वदल दिया—न जाने अव आप मेरे वारे मे क्या मोचते होगे। आज आपके आने की मुझे उत्कट प्रतीक्षा थी। चलिये वाग में चले।"

वे बगीचे मे पहुचे और उसी पुराने मेपिल वृक्ष के तले बेंच पर जा बैठे ये जहा चार वर्ष पहले बैठे थे। अधेरा हो गया था।

"हा, अब बताइये, क्या हाल-चाल है, आपके?" येकतेरीना इवानोव्ना ने पूछा।

"मजे में हू, धन्यवाद" स्तार्त्सेव ने जवाब दिया। वह यही नही सोच पा रहा था कि कहे क्या। दोनो चुप बैठे रहे।

अपने चेहरे पर हाथ रखते हुए येकतेरीना इवानोव्ना ने कहा—"मुझे बडी लहक और उत्तेजना है। कोई ख्याल न कीजियेगा। घर आकर मैं इतनी खुश हू, सब लोगो से मिलकर इतनी खुश हू कि मैं इस खुशी की आदी नहीं हो पाती। क्या क्या यादें है! मैं सोचती थी, हम आप रात भर बातें करते करते एक दूसरे का सिर चाट जाएंगे।"

स्तार्त्सेव को उसका चेहरा और तेजी से चमकती आखें दिखाई पड रही थी और यहा अधेरे में वह कमरे से ज्यादा छोटी लग रही थी, उसके पहलेवाला बच्चों जैसा भाव भी उसके चेहरे पर फिर से आ गया लगता था। सचमुच सरल जिज्ञासा से वह उसकी ओर ताक रही है, मानो और ज्यादा निकट पहुचकर इस व्यक्ति को समझ लेना चाहती है, इस व्यक्ति को जो एक समय उससे इतनी लगन से, ऐसी सुकुमारता से, ऐसी निरर्थकता से प्रेम करता था। उसकी आखें उस प्रेम के लिए स्तार्त्सेव को धन्यवाद दे रही थी। और उसे भी हर बात याद आ रही थी छोटी से छोटी बात भी, कैसे वह कब्रिस्तान मे टहलता रहा था और कैसे भोर होने पर, थकान से चूर हो वह घर लौटा था, और एकाएक वह उदास हो गया और विगत पर उसे खेद होने लगा। उसकी आत्मा में एक लौ उठी। उसने पूछा—

"याद है तुम्हें वह रात जब मैं तुम्हें क्लब ले गया था? पानी बरस रहा था, अधेरा था..."

आत्मा में वह लौ प्रज्वलित हो उठी और अब उसे बात करने, अपने जीवन की नीरसता पर दुख प्रकट करने की लालसा हुई

उसने गहरी सास लेकर कहा—"अरे, मैं! तुम मुझसे मेरी ज़िन्दगी के बारे में पूछती हो। हम यहा रहते ही कहा है? हम ज़िन्दा नही रहते, ज़िन्दगी नही है हम में! हम बूढे होते हैं और मोटे होते हैं, जीवन की रास हम ढीली छोड देते है। दिन आते हैं, गुज़र जाते है, ज़िन्दगी कट जाती है, मैली और बदरग ज़िन्दगी जिसपर विचारो और अनुभूतियो के प्रभाव ही नही पडते दिन रुपया बनाने में गुज़र जाते हैं, शाम शराबियो, गप्पियो, ताश खेलनेवालो के साथ क्लब में, उनमें से हर एक मे मैं नफरत करता हू। यह ज़िन्दगी किस ढब की है, तुम्ही बताओ।"

"पर तुम्हारा काम! वह तो जीवन में एक पवित्र उद्देश्य है। तुम अपने अस्पताल के बारे में इतने चाव से बाते किया करते थे। तब मैं अजीब किस्म की लडकी थी। स्वय बहुत बडी सगीतज्ञ होने की कल्पना करती थी। महान पियानो वादिका बनने की कल्पना में रहती थी। आजकल सभी जवान लडकिया पियानो बजाती है, मै भी औरो की तरह पियानो बजाती हू। मुझमें कोई विशेपता नही है। मैं वैसी ही सगीतज्ञ हू जैसी माता जी उपन्यासकार हैं। हा तब यह बात मेरी समझ में नही आती थी, पर बाद में मास्को में, मै अक्सर तुम्हारे बारे में सोचा करती थी। और किसी के बारे में मैं नही सोचती थी। जेंस्त्वो का डाक्टर होने में कितना आनन्द है, दुखियो की सहायता करने, जनता की सेवा करने मे कितना सुख है, कितना आनन्द है!" बडे उत्साह मे येकतेरीना इवानोव्ना ये बाते दोहरा रही थी। "अब मैं मास्को में तुम्हारे बारे में सोचती थी तो तुम मुझे आदर्श, महान व्यक्ति लगते थे "

स्तार्त्सेव को याद आया कि हर शाम वह किस सन्तोष से नोट अपनी जेब से निकलता है और उसकी आत्मा की लौ बुझ गयी।

वह घर वापस जाने के लिए उठ पड़ा। येकतेरीना इवानोव्ना ने उसका हाथ थाम लिया और अपनी बात जारी रखी—

"जितने लोगों को मैं जानती हू, तुम उन सबसे अच्छे हो। हम लोग एक दूसरे से मिलते और बातचीत करते रहेंगे। क्यों, है न? मुझसे वादा करो। मैं पियानो अच्छा नहीं बजा पाती, मुझे अब ऐसा कोई गुमान नहीं है और मैं कभी तुम्हारे सामने न पियानो बजाऊंगी और न संगीत की बात करूंगी।"

जब वे फिर घर पहुचे और स्तार्त्सेव ने कमरे की रोशनी में उसका चेहरा देखा और उसकी उदास, तीखी, कृतज्ञ निगाह देखी जिससे वह उसकी तरफ ताक रही थी, उसका मन विकल हो गया, पर उसने यह सोचते हुए अपने को आश्वस्त किया—

"अच्छा ही हुआ कि मैंने इससे शादी नहीं की।"

उसने जाने के लिए अनुमति मांगी।

"रात के खाने के पहले जाने का तुम्हें कतई कोई सामाजिक हक नहीं है," इवान पेत्रोविच उसे पहुचाते हुए बोला। "यह तो तुम्हारी चमक-दमकवाली बात है। चलो अब दिखाओ अपनी करामात!" ड्योढ़ी पर पावा की ओर मुड़कर वह चिल्लाया।

पावा अब लड़का नहीं, मूछो वाला जवान था, उसने मुद्रा बनायी, एक हाथ उठाया और दुख भरे स्वर में कहा—

"बदनसीब औरत! बरबाद हो जा!"

उसने अब स्तार्त्सेव को खिजलाहट ही हुई। अपनी गाड़ी में बैठते हुए उसने मकान और बगीचे की ओर देखा, जो एक समय उसे बहुत प्रिय थे और उसे हर बात एकदम याद आ गयी। वेरा

योसीफोव्ना के उपन्यास, बिल्लो का बडा पियानो शोर मचाते हुए बजाना, इवान पेत्रोविच के मज़ाक, पावा की दुखद मुद्रा, वह सोचने लगा कि जब नगर के सर्व गुण सम्पन्न लोग इतने साधारण है, तो नगर से क्या आशा की जाय?

तीन दिन बाद पावा उसके पास येकतेरीना इवानोव्ना की एक चिट्ठी लायी। उसने लिखा था—"तुम हम लोगो से मिलने नही आते। क्यो? मुझे आशका होती है कि तुम्हारा दिल हम लोगो की तरफ से फिर गया है। मुझे डर है और यह ख्याल भर मुझे भयभीत कर डालता है। मुझे आश्वासन दो, आकर मुझसे कह दो कि सब कुछ ठीक है। मुझे तुमसे मिलना ही है तुम्हारी ये० तू०।"

उसने खत पढा, एक मिनट तक सोचा, फिर पावा से कहा "भले आदमी! कह देना कि मैं आज नही आ सकूगा। बहुत व्यस्त हू। मैं दो एक दिन बाद आऊगा।"

पर तीन दिन हो गये, फिर हफ्ता गुज़र गया और वह गया नही। एक बार तूरकिन के घर के पास से अपनी गाडी मे गुज़रते हुए उसे ख्याल आया कि उसे भीतर जाकर मिलना चाहिए, चाहे कुछ मिनटो के लिए ही सही, फिर उसने कुछ देर सोचा और वह गाडी बढा कर चल दिया।

वह फिर कभी तूरकिन के घर नही गया।

५

कुछ साल और गुज़र गये। स्तार्त्सेव और मोटा हो गया था, बिल्कुल तुदियल, जल्दी हाफने लगता था और चलने में उसे सिर पीछे की ओर झुकाना पडता था। लाल लाल, गदबदा स्तार्त्सेव घटिया बजाते तीन घोडो की गाडी पर बैठकर जब गुज़रता और उतना ही

लाल और गदबदा पन्तेलीमोन कोचवान की सीट पर बैठ जाता तो दृश्य देखने काबिल होता, पन्तेलीमोन की गरदन पर चर्बी की परते लटकती होती, बाहे सामने आगे बढी हुई होती, मानो वे लकडी की हो, सामने से आनेवाले गाडीवानो पर वह चिल्लाता "हट्ट्टो दद्-दाहिनी ओर बचो!" ऐसा लगता था कि कोई इन्सान नही जगली लोगो का देवता गुज़र रहा हो। उसकी डाक्टरी इस ज़ोर-शोर से चल रही थी कि उसे दम मारने की फुरसत भी नही मिलती थी, पास देहात में उसने जागीर ले ली थी, शहर में दो मकान खरीद लिये थे और एक तीसरे पर निगाह लगाये हुए था जो और भी बडे मुनाफे का सौदा था। 'म्युचुअल क्रेडिट सोसायटी' के दफ्तर में जब कभी वह सुनता कि किसी मकान का नीलाम होनेवाला है, वह बिना इजाजत लिये घर में घुस जाता, बैठी अधनगी औरतो, बच्चो का ख्याल किये बिना हर कमरे में जाता और हर दरवाजे पर छडी खटखटाते हुए कहता — "यह पढाई का कमरा है? क्या यह सोने का कमरा है? यह कौनसा कमरा है?" मौजूद औरतें और बच्चे उसकी ओर डर से देखते। वह बराबर हाफता रहता और माथे से पसीना पोछता जाता ।

उसकी फिक्रें और काम बहुत बढ गये थे, फिर भी उसने जेंस्त्वो के डाक्टर का पद नही छोडा था, लालच के मारे वह जो कुछ जहा मिलता इकट्ठा करता जाता। अब द्यलिज व शहर दोनो में सब लोग उसे योनिच कहकर पुकारते "योनिच कहा जा रहा है?" या "क्या योनिच को बुलाना ठीक न होगा?"

गले के पास पडे चर्बी की परतो के कारण ही उसकी आवाज तीखी हो गयी थी और मिमियाने लगी थी। उसका मिजाज भी बदल गया था और अब वह चिडचिडा और गुस्सैल हो गया था। मरीज़

देखते वह गुस्सा हो उठता था। अपनी छडी असहिष्णुता से फर्श पर ठोकता और कर्कश आवाज में चिल्ला पडता—"मेहरबानी कर गैरज़रूरी बात न करे, मैं जो पूछता हू, वही बतायें।"

वह अकेला रहता है, उसका जीवन नीरस है, उसे किसी में दिलचस्पी नही है।

द्यालिज में रहते हुए उसके जीवन में अकेली खुशी—शायद आखिरी भी, उसका बिल्लो को प्यार करना थी। शाम को वह क्लब में बैठकर ताश खेलता है और फिर एक बडी मेज़ पर अकेला बैठकर रात का खाना खाता है। क्लब का सबसे पुराना और इज्ज़तदार नौकर इवान ही हमेशा उसे खाना खिलाता है। वह उसके लिए १७ नम्बर की बढिया शराब लाता है और हर एक मैनेजर, रसोइया, दरबान उसकी पसन्द नापसन्द जानते हैं और उसे खुश रखने की पूरी कोशिश करते है, नही तो, ईश्वर न करे, वह एकाएक क्रोध में आ जायेगा और फर्श पर छडी पटकने लगेगा।

खाना खाते खाते कभी कभी वह मुडकर और लोगो की बातो में शामिल हो जाता है—

"आप किसकी वात कर रहे है? ऐं? कौन?" और यदि पास वाली मेज़ पर वातचीत तूरकिन परिवार के वारे में होती तो वह पूछता—

"क्या आप तूरकिन परिवार की वात कर रहे है? वही तूरकिन जिसकी लडकी पियानो वजाती है?"

उसके वारे में कहने को वस यही है।

और तूरकिन परिवार? इवान पेत्रोविच न तो वुढाया ही है और न उसमें कोई परिवर्तन आया है, वह अव भी मज़ाक करता है और हसी की कहानिया सुनाता है। वेरा योसीफोव्ना आगन्तुको को

उसी खुशी और सरलता से अपने उपन्यास सुनाती है। और विल्नो चार घण्टे रोज़ पियानो बजाने का अभ्यास करती है। उसकी बढ़ती हुई उम्र साफ प्रकट होती है। अक्सर बीमार रहती है और हर पतझड में मा के साथ दक्षिण में क्रीमिया चली जाती है। उन्हें पहुचाने जाते ट्रेन छूटते समय आखें पोछते हुए इवान पेत्रोविच कहता है—

"नमस्कार-दमस्कार!" और अपना रूमाल हिलाता है।

१८६८

घोंघा

दो शिकारी जिन्हे शिकार खेलते खेलते देर हो गयी थी, रात बिताने के लिए मिरोनोसित्सकोए गाव के मुखिया प्रोकोफी के खलिहान में ठहर गये। उनमें से एक तो था मवेशियो का डाक्टर इवान इवानिच और दूसरा था बूरकिन–हाई स्कूल का अध्यापक। इवान इवानिच का आखिरी नाम कुछ अजब-सा था–चिमशा-हिमालयस्की। नाम का यह हिस्सा उसे बहुत फवता न था और लोग उसे उसके नाम व पैतृक नाम इवान इवानिच से ही पुकारते थे। वह शहर के पास एक अश्व प्रजनन केन्द्र में रहता था और खुली हवा का मज़ा लेने के लिए शिकार पर निकला था। अध्यापक बूरकिन हर साल गर्मिया काऊट 'प०' की रियासत में गुजारता था और उस जगह के लोग उसे अपना ही-सा समझने लगे थे।

उन्हे नीद नही आ रही थी। इवान इवानिच दरवाज़े के वाहर चादनी में बैठा पाइप पी रहा था, वह वडी मूछो वाला लम्वे कद का दुवला-पतला वूढा-सा आदमी था। वूरकिन अन्दर, भूसे पर लेटा हुआ था और अन्धेरा उसे छिपाये था।

वे एक दूसरे को किस्से सुनाकर वक्त काट रहे थे। दूसरी वातो के वीच में मुखिया की वीवी मावरा का भी जिक्र आया जो विल्कुल

स्वस्थ और समझदार औरत थी। वह औरत अपने गाव के बाहर कभी नही गयी थी। उसने अपनी जिन्दगी में कभी रेलगाडी नही देखी थी, कभी किसी शहर में कदम नही रखा था, पिछले दस वर्ष उसने अगीठी के पास बैठकर गुजार दिये थे और गाव में भी बाहर सडक पर यह सिर्फ रात को ही निकलती थी।

"हालाकि यह कोई आश्चर्य की बात नही है" बूरकिन ने कहा, "इस ससार में ऐसे लोगो की कमी नही है, जो किसी से मिलना-जुलना स्वभावत पसन्द नही करते और घोघे या केकडे की तरह अपने खोल में ही घुसते जाने की कोशिश करते है। शायद यह स्वभाव इस बात का द्योतक है कि हमारे पूर्वजो की प्रवृत्तिया हममें फिर फिर लौट आती है। यह उस काल की देन है जब हमारे पूर्वजो ने सामाजिक जीवन नही सीखा था और हर शख्स अकेला अपनी गुफा में पडा रहता था। या शायद ऐसे लोग भी मनुष्य की अनेक किस्मो में से एक हो, कौन जाने? मैं प्रकृतिविज्ञान से परिचित नही हू और इन समस्याओ को हल करना मेरा काम नही है, मैं तो सिर्फ यह कहना चाहता हू कि इस दुनिया में मावरा जैसे लोग कोई अजूबा नही है। दूर क्यो जाय, यूनानी भाषा के अध्यापक हमारे सहयोगी बेलिकोव को ही ले ले, जिसकी अभी दो एक महीने हुए हमारे शहर में मौत हो गयी। तुमने उसके बारे में अवश्य सुना होगा। उसमे अजीब बात यह थी कि मौसम कितना ही अच्छा क्यो न हो वह हमेशा रबर के ऊपरी बूट और भारी अस्तरदार गरम कोट पहने रहता था और छाता हमेशा अपने साथ रखता था। छाते को वह हमेशा अपने खोल में रखता था। अपनी घडी वह भूरे रग के साबर चमडे के खोल में रखता था और जब कभी वह पेन्सिल बनाने के लिए चाकू निकालता तो वह भी एक खोल में से ही निकालता। यहा

तक कि उसका चेहरा भी एक खोल में ही रखा हुआ लगता क्योंकि वह हमेशा उसके खडे कालर में छुपा रहता था। वह गहरे रग की ऐनक लगाता था और मोटा स्वेटर पहने रहता था, कानो में रुई ठूसे रहता था और जब कभी घोडागाडी में बैठता तो कोचवान से छतरी चढा देने को कहता। वास्तव में उसमें निरन्तर एक ऐसी अदम्य इच्छा पायी जाती कि वह अपने आपको चारो ओर से ढके रखे, जिससे वह तमाम बाहरी प्रभावो से अलग और सुरक्षित रह सके। वास्तविकता से वह झुझला उठता था, घबडा जाता था और डर जाता था और शायद अपनी कायरता और वर्तमान से अपनी अरुचि छिपाने के लिए वह हमेशा विगत काल व उन चीज़ो की प्रशसा करता रहता था, जिनका कभी अस्तित्व ही न था। जो मुर्दा जुबाने वह पढाता था वे वास्तव में महज़ ऊपरी बूट और छाता थी जिनकी आड में वह असली ज़िन्दगी से अपने को छिपाये रखता था।

"वह मिठास भरे लहजे में कहता – 'ओह! कितनी सुरीली, कितनी सुन्दर है यूनानी भाषा!' और सबूत के तौर पर वह अपनी आखें आधी मीच कर एक उगली उठाकर फुसफुसाता "अनथ्रोपोस!"।*

"अपने विचारो को भी बेलिकोव एक खोल में ही छुपा कर रखना चाहता था। सिर्फ वे ही गश्ती चिट्ठिया और अखबारी नोटिस उसकी समझ में आते थे, जिनमें कोई चीज़ गैरकानूनी करार दी गयी हो। जब किसी आदेश द्वारा यह पाबन्दी लगा दी जाती थी कि स्कूली बच्चे रात के नौ बजे के बाद सडक पर न निकले या किसी लेख में वासना की निन्दा की जाती थी तो उसे ये बाते बहुत निश्चित और स्पष्ट लगती – ये बाते गैरकानूनी हो गयी हमेशा के लिए, बस! उसे किसी

---

*अनथ्रोपोस – मनुष्य शब्द का यूनानी पर्याय। – सपा०

भी बात की अनुमति या छूट में कुछ न कुछ अस्पष्टता या शका की गुजाइश नजर आती थी और उसे ऐसा मालूम पडता था कि बात पूरी तरह नही कही गयी है। यदि शहर में कोई नाटक-मडली, वाचनालय या चायखाना खोलने का लाइसेंस मिलता तो वह अपना सिर हिलाता और धीमी आवाज मे कहता—

'हा, यह सब ठीक है, अच्छी चीज है यह, लेकिन इसमें कोई ऐसी-वैसी बात न हो जाय।'

"किसी भी नियम का उल्लघन या उससे चूक जाने से वह हताश हो उठता, चाहे उससे उसका कोई सम्बन्ध न भी हो। यदि उसका कोई साथी गिरजाघर देर से पहुचता या स्कूल के लडको की किसी नटखटी की खबर उसके कानो तक पहुचती या कोई अध्यापिका काफी रात गये किसी अफसर के साथ देखी जाती तो वह बडा परेशान हो जाता और बराबर यही दोहराता रहता कि इससे कोई ऐसी-वैसी बात न हो जाय। अध्यापक-परिषद् की बैठको में वह हम लोगो को अपने चौकन्नेपन, शकाओ, सुझावो व सशयो से (जो खोलबन्द दिमाग के अनुरूप ही होते) तग कर डालता था स्कूलो के छात्र-छात्राओ का व्यवहार शर्मनाक होता है, दरजो में शोर बहुत होता है, अगर यह खबर हाकिमो तक पहुच जाय तो न जाने क्या हो, "इससे कोई ऐसी-वैसी बात न हो जाय", अगर दूसरी कक्षा से पेत्रोव को और चौथी कक्षा से येगोरोव को निकाल दिया जाये तो बहुत अच्छा होगा। और आप क्या समझते है? अपनी आहो और नालो, अपने छोटे से पीले चेहरे—पर आप जानते है, उसका चेहरा गध-बिलाव जैसा था—गहरे रग के चश्मे से उसने हम सब को इतना उदास बना दिया कि हमने उसकी बात मान ली, पेत्रोव और येगोरोव के चाल-चलन के नम्बर काट लिये, उन्हे बन्द करवा दिया और आखिरकार उन्हे स्कूल से निकाल दिया।

"हम लोगो के घरो पर आने की उसकी अजीब आदत थी। वह किसी अध्यापक के घर जाता और चौकन्ना हो चुपचाप बैठ जाता। इसी तरह घटे दो घटे तक ऐसा करने के बाद वह उठकर चला जाता। इसे वह अपने सहयोगियो से अच्छे सबध कायम रखना कहता, और यह बात साफ थी कि इस तरह मिलने जाना उसे अप्रिय लगता था, पर वह हम लोगो से मिलने सिर्फ इसलिए आता था कि अपने साथियो के प्रति इसे अपना कर्तव्य मानता था। हम सब उससे डरते थे। यहा तक कि हेडमास्टर भी उससे डरते थे। ज़रा सोचो तो! हमारे अध्यापक कुल मिलाकर शिष्ट और बुद्धिमान लोग हैं, श्चेद्रीन* और तुर्गेनेव की रचनाओ पर पले हुए हैं लेकिन क्या आप यकीन करेगे कि इस छोटे-से आदमी ने जो हर वक्त रबर के ऊपरी बूट और छाता लिये रहता था, पन्द्रह साल तक पूरे स्कूल को अपने कब्ज़े में रखा और सिर्फ स्कूल ही नही, पूरे शहर को काबू में रखा! हमारी महिलाओ ने शनिवार वाले निजी नाटक-प्रदर्शन बद कर दिये सिर्फ इसलिए कि कही उसको पता न लग जाये। पादरियो की हिम्मत नही होती थी कि उसके सामने गोश्त या घी खा ले या ताश खेल ले। बलिकोव जैसे लोगो के असर में हमारे कस्बे के लोग अब हर चीज़ से डरने लगे है। वे ज़ोर से बात करते हुए डरते है, खत लिखते, किसी से दोस्ती करते, किताबें पढते, गरीबो की मदद करते, अपढ लोगो को शिक्षित बनाते हर बात से डरते है।"

इवान इवानिच ने कोई महत्वपूर्ण बात कहने की भूमिका-सी बाधते हुए गला साफ किया पर पहले उसने अपना पाइप जलाया और चाद की तरफ ताका फिर आहिस्ता आहिस्ता बोला—

---

*मि० ये० साल्तीकोव-श्चेद्रीन, सन्० १८२६-१८८९। महान रूसी व्यग-लेखक और जनतत्रवादी।

"हा, शिष्ट और बुद्धिमान लोग, तुर्गनेव, श्चेद्रीन और बोक्ले तथा दूसरे लेखकों को पढ़नेवाले लोग भी झुक गये और सब कुछ बरदाश्त करते रहे   यही तो है।"

बूरकिन ने फिर कहना शुरू किया—"बेलिकोव और मैं एक ही मकान में, एक ही मजिल पर रहते थे, हमारे दरवाज़े आमने-सामने थे। हम एक दूसरे से बहुत अक्सर मिलते थे और मैं बखूबी जानता था कि उसका घरेलू जीवन कैसा है। यहा वही हाल था ड्रेसिंग गाउन, रात की टोपी, झिलमिली, साकल, चटखनिया, तरह तरह की रोके व पाबन्दिया और वही सकूला—'आह, इससे कोई ऐसी-वैसी बात न हो जाय।' लेण्ट का व्रत उसे मुआफिक नही आता था, लेकिन वह गोश्त इसलिए नही खाता था कि लोग कहेगे कि बेलिकोव लेण्ट का व्रत नही रखता। इसलिए वह मक्खन में तली हुई मछली खाता। यह उपवास नहीं था लेकिन आप उसे गोश्त भी नही कह सकते। वह किसी औरत को नौकर नही रखता था, इस ख्याल से कि लोग उसके बारे में न जाने क्या क्या सोचेंगे और इसलिए उसने एक साठ बरस के बूढे को रसोइया रख लिया था। बूढे का नाम अफानासी था और वह सनकी व शराबी था। वह किसी जमाने मे अरदली रह चुका था और उल्टा-सीधा खाना भी पका लेता था। अफानासी आम तौर पर दरवाज़े पर हाथ बाधे खड़ा और गहरी सास लेकर हमेशा एक ही बात दोहराता दिखाई देता था—'अरे आजकल तो ऐसे लोग खूब दिखाई देते है।'

"बेलिकोव का सोने का कमरा छोटा-सा बक्सनुमा था और उसके पलग पर चदोवा तना हुआ था। जब वह सोने लगता तो चादर सिर पर खीच लेता, गरमी और घुटन होती, हवा बद दरवाजो पर सिर पटकती और चिमनी में साय साय करती रहती, स्टोव से आहो की आवाज आती अपशकुन जैसी आहे

"और वह कम्बल के अन्दर लेटा रहता। उसे भय लगता कि कही कोई ऐसी-वैसी बात न हो जाये, अफानासी उसे कत्ल न कर दे, चोर न घुस आय, उसके सपने भी उन्ही आशकाओ से भरे रहते और सुबह जब हम दोनो साथ साथ स्कूल जाते तो उसका चेहरा उतरा हुआ और पीला होता, स्पष्ट था कि जहा वह जा रहा है वही जगह उसके भय और घृणा का केन्द्र है और उस जैसे एकान्तप्रेमी व्यक्ति को मेरे साथ चलना नागवार है।

"वह कह उठता—'दरजो में कितना शोर होता है,' मानो अपनी उलझन की वजह बयान करने की कोशिश कर रहा हो, 'बडी ही शर्मनाक बात है।'

"ज़रा गौर कीजिए, यूनानी का यह अध्यापक, यह घोघा तक एक बार शादी करते करते रह गया।"

इवान इवानिच ने फुरती से मुडकर खलिहान के अन्दर देखा और कहा—"मजाक तो नही कर रहे हो?"

"हा, बात कुछ अजीब तो जरूर है, लेकिन उसकी शादी बस होते होते ही रह गयी। मिखाईल साविच कोवालेको नामक उक्रइनी हमारे स्कूल में भूगोल और इतिहास पढाने के लिए नया अध्यापक होकर आया था। उसकी बहन वार्या उसके साथ आयी। वह लम्बे कद का, सावला नौजवान था, उसके हाथ बहुत बडे बडे थे और आप उसकी सूरत से ही अन्दाज़ लगा सकते थे कि उसकी आवाज़ बहुत भारी है और उसकी आवाज़ थी भी ऐसी भारी 'भो भो' कि मालूम पडता था कि किसी पीपे में से आ रही हो। उसकी बहन भी जो इतनी जवान तो नही थी उसकी उम्र तो करीब तीस वर्ष के रही होगी, लम्बी छरहरी थी, काली भवें, लाल लाल गाल गज़ब की थी। वह लडकी, चचल, बातूनी, हर वक्त उक्रइनी गाने गाती रहती और हसती रहती थी। ज़रा ज़रा-सी बात पर

उसका कहकहा गूज उठता – ह-ह-ह। जहा तक मुझे याद है कोवालेनको और उसकी बहन से हेडमास्टर की सालगिरह की दावत के अवसर पर हम लोग पहली बार अच्छी तरह परिचित हुए। उन कठोर पिटी-पिटायी लीक पर चलनेवाले मुर्दादिल मास्टरो के बीच जो ऐसी दावतो मे जाना भी बेजान फर्ज बनाये हुए थे, एकाएक लगा कि सौन्दर्य की देवी फेनिल जल मे निकल खडी हुई हो जो अपने हाथ कमर पर रखकर चले, हसे, गाये, नाचे उसने बडी लगन से गाया – "हवाए बह रही है" और फिर उसने कई गीत सुनाये। उसने हम सब पर जादू-सा कर दिया, बेलिकोव पर भी। वह उसके पास जाकर बैठ गया और एक मीठी मुस्कराहट के साथ बोला –

"उक्रइनी भाषा के मिठास और मधुर सुरीलेपन से प्राचीन यूनानी भाषा की याद ताजी हो जाती है।"

इस बात से वह बहुत प्रसन्न हुई और बहुत भावुक ढग से उसे बताने लगी कि गद्याच इलाके में मेरा एक फार्म है – वहा मेरी मा रहती है, वहा ऐसी नाशपातिया, ऐसे खरबूजे और ऐसे कद्दू होते है! उक्रइनी लोग कद्दू को 'कबाक' (गुदेली) कहते है उनका नीले बैगन व लाल मटमिर्च के साथ बहुत जायकेदार शोरबा बनता है, इतना जायकेदार कि बस!"

"हम लोग उसके आसपास बैठे उसकी बाते सुनते रहे और एकाएक ही हम सबको एक साथ एक ही बात सूझी।

'इन दोनों की शादी क्यो न हो जाय,' हेडमास्टर की बीवी ने मेरे कान में कहा।

"न मालूम क्यो हम सबको एकाएक याद आया कि हमारा बेलिकोव कुआरा है, और हम सोचने लगे कि यह बात पहले कभी हमारे ध्यान में क्यो नही आयी, उसके जीवन के इस महत्वपूर्ण पहलू

पर हमने कभी नज़र ही नही डाली। स्त्रियो के विषय में उसके क्या विचार हैं? इस महत्वपूर्ण समस्या को उसने कैसे हल किया? उस समय तक हम लोगो ने कभी इन बातो पर सोचा भी नही था। शायद हमें गुमान भी नही हो सकता था कि ऐसा व्यक्ति जो हर मौसम में रबर का ऊपरी बूट पहनता है और चदोवे के तले सोता है, प्रेम भी कर सकता है।

"हेडमास्टर की बीवी ने अपने प्रस्ताव को स्पष्ट करते हुए कहा—

'वह चालीस से ऊपर है और यह तीस बरस की है। मेरा ख्याल है कि उससे शादी कर लेगी।'

"प्रान्तीय क्षेत्रो में ऊब की वजह से आदमी क्या कुछ नही करता कितनी ही फिजूल और बेमतलब हरकते! यह सब इसलिए होता है कि जो बाते ज़रूरी होती है वह कभी नही की जाती। उदाहरण के तौर पर आप सोचिए, हम लोगो को क्या पडी थी कि इस बेलिकोव की शादी करायें, जिसकी विवाहित व्यक्ति के रूप में कल्पना भी असम्भव थी? हेडमास्टर की बीवी, इन्सपेक्टर की बीवी और स्कूल से सबधित तमाम दूसरी महिलाओ में जैसे एकाएक जान आ गयी, उनकी सूरते भी ज्यादा अच्छी लगने लगी, मानो सहसा उनको जीवन में कोई उद्देश्य मिल गया हो। हेडमास्टर की बीवी ने नाटक में एक बाक्स रिज़र्व करवाया और उसमे थे कौन कौन? वार्या बैठी एक बडा-सा पखा झल रही थी, उसका चेहरा खिला हुआ था, हसी फूटी पड रही थी और उसकी बगल में बेलिकोव साहब तशरीफ रखे थे, छोटे-से, कुछ सिकुडे हुए मानो घर में से चिमटे से खीच कर लाये गये हो। मैने खुद शाम के चायपानी की दावत दी तो महिलाए हठ करने लगी बेलिकोव और वार्या को ज़रूर बुलाऊ। गरज़ यह कि सिलसिला शुरू हो गया। मालूम हुआ कि वार्या को शादी करने में कोई आपत्ति नही है। उसका जीवन अपने भाई के साथ कोई सुख से नही कट रहा था। वे दिन भर एक

दूसरे से बहस करने और लड़ते रहने में बिता देते। यह एक बहुत आम सी बात थी कि कोवालेंको सड़क पर डग भरता हुआ चला आ रहा है। एक लम्बा चौड़ा इन्सान कढ़ी हुई कमीज पहने हुए, बालों की एक लट टोपी से निकल कर माथे पर पड़ी हुई, एक हाथ में किताबों का बंडल, दूसरे में एक मोटी-सी गाठदार छड़ी। उसके पीछे उसकी बहन चली आ रही है वह भी हाथ में किताबें लिये हुए।

"वह जोर से कहती—

'लेकिन, मिखाइलिक, तुमने यह नहीं पढ़ी है, मैं जानती हू। मैं दावे के साथ कह सकती हू कि तुमने यह हरगिज नही पढ़ी।'

"कोवालेंको फुटपाथ पर अपनी छड़ी पटक कर चिल्लाता—

'और मैं तुमसे कहता हू कि मैंने पढ़ी है।'

'ओह, खुदा के वास्ते, मीचिक! तुम इस कदर खफा क्यों होते हो? हम तो सिर्फ सिद्धान्त की बात कर रहे हैं।'

'मैं कहता हू कि मैंने यह पढ़ी है!' कोवालेंको पहले से भी ज्यादा चीख कर कहता।

"और अगर घर पर बाहर का कोई आदमी आता तो निश्चित था कि दोनों लड़ने लगें। वह शायद ऐसी जिन्दगी से तंग आ गयी थी और उसकी इच्छा रही होगी कि उसका अपना घर हो, इसके अलावा उम्र का भी तकाजा था, पसन्द का आदमी ढूंढने और पसन्द करने के लिए वक्त भी कहा रह गया था! वह किसी से भी शादी कर सकती थी, यूनानी भाषा के अध्यापक से भी। वैसे एक बात यह भी है कि हमारी लड़कियों की यही हालत है भी, शादी करनी है तो किसी से भी कर लेगी। खैर, जो भी हो, वार्या भी हमारे बेलिकोव की ओर [illegible] [illegible] लगी थी।

"और बेलिकोव ? वह कोवालेको के यहा भी उसी तरह जाता था जैसे बाकी हम सबके यहा। वह मिलने जाता, बैठ जाता और चुपचाप बैठा रहता। वह चुपचाप बैठा रहता वार्या उसे गाना सुनाती 'हवाए बह रही है ' या गहरी आखो से ताकती और एकाएक कहकहा मारकर हस पडती हा-हा-हा

"प्रेम के मामले में, खासकर शादी के मामले में दूसरो के सुझावो का बहुत बडा हाथ होता है। हर शख्स उसके साथी और महिलाए भी बेलिकोव को इस बात का विश्वास दिलाने लगे कि उसे शादी कर लेना चाहिए और यह कि उसके लिए जीवन में सिवा इसके कुछ भी बाकी नही रह गया है कि वह शादी कर ले, हम सब उसको बधाई देते और बारी बारी से गम्भीर मुद्रा में आम बाते कहा करते जैसे कि शादी मनुष्य के जीवन में बहुत बडा कदम है या ऐसी ही और बाते, इसके अलावा वार्या अनाकर्षक तो थी नही, उसे सुन्दर भी कहा जा सकता था, फिर वह सरकारी अधिकारी की बेटी थी, उसका अपना फार्म और मकान था, इससे भी बडी बात तो यह थी कि वह पहली औरत थी जिसने उससे सहृदयता का व्यवहार किया था। बस, उसका सिर फिर गया और उसने फैसला कर लिया कि शादी कर लेना उसका फर्ज है।"

"उस वक्त तुम लोगो को चाहिए था कि उसके रबर के ऊपरी बूट और छाता उससे ले लेते।" इवान इवानिच ने जोडा।

"अरे, यह तो नामुमकिन था। उसने अपनी मेज पर वार्या की एक तस्वीर रख ली। वह अक्सर मेरे पास आता और वार्या, पारिवारिक जीवन, विवाह की गम्भीरता आदि पर बाते करता। वह कोवालेको के घर भी अक्सर जाता, लेकिन उसने अपनी आदत ज़रा भी नही बदली। बल्कि उल्टे शादी कर लेने के फैसले का उस पर बहुत बुरा असर हुआ,

वह दुबला हो गया और पीला पड गया और लगने लगा कि वह अपने खोल में और अन्दर घुसता जा रहा है।

"मुह जरा-सा टेढा कर एक हल्की-सी मुस्कराहट के साथ वह मुझसे बोला—'वरवारा साविशना मुझे पसद आती है और मैं यह भी मानता हू कि हर शख्स को शादी कर लेनी चाहिए लेकिन तुम तो जानते हो कि यह सब इस कदर अचानक हो रहा है इस पर जरा गौर कर लेना ही ठीक होगा।'

"मैंने उससे कहा—'इसमें गौर क्या करना है? शादी कर डालो, बस किस्सा खत्म हुआ।'

"'नही, नही, शादी एक बहुत महत्वपूर्ण बात है', वह बोला, 'यह पहले से सोच लेना चाहिए कि भविष्य में क्या फर्ज हो जायेगा और क्या जिम्मेदारिया आ पडेंगी ताकि बाद में उससे कोई बुराई न हो जाय। मै तो इतना परेशान हो जाता हू कि रात-रात भर मुझे नींद नही आती। और सच तो यह है कि मै चौकन्ना हो जाता हू। उसके और उसके भाई के सोचने का ढग कुछ ऐसा अनोखा है, उनका दृष्टिकोण ऐसा अजब है—और वह कितने चचल स्वभाव की है। मैंने शादी कर ली और कहीं बाद में ऐसी-वैसी बात हो गयी, तो '

"और उसने वार्या से शादी के लिए प्रस्ताव नही किया। वह शादी का प्रस्ताव करना एक दिन से दूसरे दिन के लिए टालता रहा और इससे हेडमास्टर की बीवी और दूसरी महिलाओं को बडी निराशा हुई, वह अपनी होनेवाली जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को ही नापता तोलता रहता। प्राय रोज ही वह वार्या के साथ घूमने के लिए जाता। शायद उसका विचार था कि इस परिस्थिति में यही मुनासिब है और इसके बाद वह मुझसे पारिवारिक जिन्दगी के सभी पहलुओं पर बात करने के लिए मेरे पास आ जाता। यह बिल्कुल मुमकिन था कि यदि

बड़ी बदनामी की एक बात न हो जाती तो वह वार्या से शादी का प्रस्ताव कर देता और एक वैसी ही बेकार-सी बेवकूफी भरी शादी हो जाती जैसी कि आये दिन हज़ारो सिर्फ इसलिए होती रहती हैं कि इससे बेहतर कुछ और करने को नही होता और बेकार बैठे बैठे तबियत ऊब जाती है।

"मैं यह बतला दू कि वार्या के भाई को बेलिकोव से उसी दिन से नफरत हो गयी थी, जिस दिन वह उससे पहली बार मिला था और वह उसका साथ भी गवारा नही करता था।

"वह कन्धे बिचका कर हम लोगो से कहता—'मेरी तो समझ में नही आता कि आप लोग कैसे उस चुग़लखोर का साथ गवारा करते है उस उल्लू का। आप लोग यहा रहते कैसे हैं? यहा का वातावरण ही विषैला है, उसमें दम घुटता है। आप लोग पढाते है। आप अपने को अध्यापक कहते है? नही, आप लोग नौकरी के इच्छुक हैं, बस। यह स्कूल विज्ञान का मदिर नही, धर्मार्थ सस्था भर है। यहा सिपाही की कोठरी जैसी बदबू आती है। नही, भाई। मैं तो यहा बस कुछ दिन और रहूगा और फिर अपने फार्म पर वापस चला जाऊगा। वहा मछलिया पकड़ूगा और उक्रइनी बच्चो को पढाऊगा। हा, मै तो चला जाऊगा। आप लोग यहा रहिए इस विश्वासघाती के साथ! और वह जाये जहन्नुम में।'

"या फिर कभी वह इतना हसता कि हसते हसते उसकी आखो में आसू आ जाते, उसकी हसी गहरे सुर में शुरू होती और फिर इतनी ज़ोर की हो जाती कि वह पिपियाने लगता, वह कहता—

"'आख़िर यहा आता क्यो है वह? आखिर वह चाहता क्या है इस तरह चुपचाप बैठे बैठे घूर कर?'

"उसने बेलिकोव का एक नाम भी रख छोड़ा था—मकड़ी, खून चूसने वाली मकड़ी।

"हम लोग उससे यह ज़िक्र नहीं करते थे कि उसकी बहन का इरादा उसी 'मकड़ी' से शादी करने का है। एक बार एक हेडमास्टर की बीबी ने इस बात की तरफ़ इशारा किया कि क्या ही अच्छा हो अगर उसकी बहन बेलिकोव जैसे ठोस व इज़्ज़तदार आदमी के साथ अपना घर बसा ले, तो उसने त्योरी चढ़ाई और बिगड़ कर कहा—

"'मुझे क्या लेना देना है। वह चाहे तो किसी सांप से शादी कर ले। मैं दूसरों के मामलों में दखल नहीं देता।'

'अब सुनो आगे क्या हुआ। किसी ने एक व्यंगचित्र बनाया जिसमें उसने दिखाया था कि बेलिकोव अपने रबड़ के ऊपरी बूट पहने, पतलून ऊपर चढ़ाये, सिर पर छाता लगाये वार्या के हाथ में हाथ डाले चला जा रहा है। चित्र के नीचे लिखा था 'एन्थ्रोपोस का प्रेम'। चित्र उसकी हूबहू नकल थी। चित्रकार ने उस चित्र पर कई दिन मेहनत की होगी क्योंकि लड़कों और लड़कियों दोनों के स्कूलों व धार्मिक विद्यालय के हर अध्यापक और हर सरकारी अफ़सर के पास उसकी एक एक प्रति भेजी गयी थी। बेलिकोव को भी उसकी एक नकल मिली। चित्र देखकर वह बहुत उदास हो गया।

"एक दिन हम दोनों मकान से एकसाथ बाहर निकले। मई की पहली तारीख थी और इतवार का दिन, हम सब लोग—तमाम लड़के और अध्यापक—स्कूल के सामने जमा होनेवाले थे और वहां से शहर के बाहर जंगल में जाने की बात तय हुई थी। ख़ैर, जब हम चले उसका चेहरा उतरा हुआ था और काली बदलियों जैसी उदासी छायी हुई थी।

"वह बोला—'कैसे कैसे निर्दय और द्वेषी लोग होते हैं दुनिया में' और उसके होंठ कांपने लगे।

22*

"मुझे उस पर तरस तक आ रहा था। हम चले जा रहे थे एकाएक देखते क्या हैं कि कोवालेको साइकिल दौडाये चला आ रहा है और उसके पीछे वार्या भी साइकिल पर चली आ रही है। हाफती हुई, लाल मुह किये हुए लेकिन मस्त और हसती हुई।

"उसने चिल्लाकर कहा– 'तुम लोगो से पहले हम वहा पहुच जायेंगे। कैसा सुहावना दिन है, कैसा सुन्दर! अद्भुत!'"

"वे दोनो ओझल हो गये। हमारे बेलिकोव का चेहरा पीले से एकदम सफेद फक हो गया। और वह स्तब्ध रह गया। वह ठिठक कर मेरी तरफ घूरने लगा

"उसने आश्चर्य से पूछा–'या खुदा, यह है क्या? क्या मेरी आखो को धोखा हुआ है? स्कूल के मास्टरो के लिए और खास तौर से औरतो के लिए क्या यह मुनासिब है कि वह साइकिल पर चढें?'"

"इसमें हर्ज ही क्या है?" मैंने पूछा, "वे साइकिलो पर क्यो न चढें?"

"'पर यह तो असह्य!' वह चीख उठा, 'तुम कह क्या रहे हो?'

"इस बात से उसको इतना धक्का पहुचा था कि उसने आगे जाने से इन्कार कर दिया और घर वापस चला गया।

"दूसरे दिन मारे घबराहट के लगातार अपने हाथ मलता रहा और चौंकता रहा। उसकी सूरत से मालूम पडता था कि उसकी तबियत ठीक नहीं है। जिन्दगी में पहली बार उस दिन वह छुट्टी होने से पहले ही स्कूल से घर चला गया। उसने खाना भी नही खाया। शाम के वक्त, हालाकि अच्छी खासी गरमी पड रही थी, वह गर्म कपडे पहनकर कोवालेको के मकान की तरफ पैर घसीटता हुआ चल दिया। वार्या कही बाहर गयी हुई थी, मुलाकात उसके भाई से ही हुई।

"'वैठिये,' कोवालेको ने वडे रूखेपन से भवे सिकोडकर कहा, उसके चेहरे पर अभी तक तीसरे पहर की नीद का भारीपन वाकी था। वह वहुत झुझलाया हुआ था।

"वेलिकोव लगभग दस मिनट तक खामोश वैठा रहा, फिर उसने कहना शुरू किया–

"मैं आप के पास अपने दिमाग का वोझ हल्का करने आया हू। मैं वहुत परेशान हू, वहुत ही ज्यादा दुखी हू। किसी अज्ञात व्यग-चित्रकार ने मेरा और दूसरे व्यक्ति का, जो हम दोनो को वहुत प्रिय है, एक व्यग्यचित्र वनाया है। मैं अपना फर्ज़ समझता हू कि आपको इस वात का यकीन दिला दू कि इसमें मेरा कोई हाथ नही है मैंने कोई वात ऐसी नही की, जिसकी वजह से इस किस्म का भोडा मज़ाक किया जाता, वल्कि मेरा व्यवहार तो हमेशा वैसा ही रहा है जैसा कि किसी भी शरीफ आदमी का होना चाहिए।'

"कोवालेको झल्लाया हुआ चुप वैठा रहा। वेलिकोव ने कुछ देर इतज़ार करने के वाद वहुत धीमी, शिकवा-भरी आवाज़ में फिर कहना शुरू किया–

"'मैं आपसे एक वात और भी कहना चाहता हू। मैं कई साल से नौकरी कर रहा हू और आप अभी नये आये हैं। एक अनुभवी सहयोगी की हैसियत से मैं आपको पहले से सचेत कर देना अपना कर्तव्य समझता हू। आप साइकिल पर चढते है। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो नौजवानो को शिक्षा देता हो, मनोरजन का यह तरीका वहुत ही निन्दनीय है।'

"'क्यो?' कोवालेको ने अपनी भारी आवाज़ में पूछा।

"'इसमें वजह वतान की कोई ज़रूरत नही, मिखाईल साविच, मैं समझता हू कि यह तो विल्कुल स्पष्ट है। अगर स्कूल के मास्टर

साइकिल पर चढने लगें तो विद्यार्थियो के लिए सिर के बल चलने के सिवा और क्या बचता है? और फिर यह भी है कि चूकि कभी बाकायदा इसकी इजाज़त नही मिली है, ऐसा करना गलत है। कल जब मैंने आपको देखा तो मै दग रह गया! और जब आपकी बहन को देखा तब तो मुझे चक्कर आ गया। कोई युवती साइकिल पर चढे–हैरत है!'

"'आप आखिर चाहते क्या है?'

"'मैं सिर्फ आपको सचेत करना चाहता हू, मिखाईल साविच। आप नौजवान है, अभी आपको बहुत दुनिया देखनी है। आपको अत्यधिक सतर्कता बरतनी चाहिए। आप इतने लापरवाह हैं, हद से ज्यादा लापरवाह! आप कढी हुई कमीज़ें पहनते हैं, हमेशा हर तरह की किताबें लिये हुए सडक पर जाते हुए पाये जाते है, और अब तो आप साइकिल पर भी चढने लगे है। हेडमास्टर साहब को खबर होगी कि आप और आपकी बहन साइकिल पर चढते हैं, तो बात स्कूल के सरक्षक के कानो तक पहुचेगी और यह अच्छा नही है।'

"कोवालेको ने गुस्से में आते हुए कहा–'अगर मै और मेरी बहन साइकिल पर चढते है तो इसमें किसी का क्या दख़ल? और जो कोई मेरे निजी मामलो में दखल देना चाहे वह जहन्नुम में जाये।'

"वेलिकोव का चेहरा पीला पड गया और वह उठ खडा हुआ।

"'अगर आप मुझसे इस अदाज़ से बातचीत करेगे तो मै और ज्यादा बात नही कर सकता,' उसने कहा। 'और मै आपसे प्रार्थना करता हू कि फिर कभी मेरे सामने अफसरो के बारे में इस तरह अपने विचार ज़ाहिर न कीजिएगा। हाकिमो का लिहाज़ जरूरी है।'

"कोवालेको ने उसे नफरत से घूरते हुए पूछा–'क्या मैंने हाकिमो के बारे में कोई बेजा बात कही है? बराय मेहरबानी आप मुझे मेरे

हाल पर छोड दें। मैं ईमानदार आदमी हू और आप जैसे सज्जनो मे करना पसन्द नहीं करता। मुझे चुगलखोरो से नफरत है।'

"वेलिकोव घवरा कर वगलें झाकने लगा और हडवडी में कोट पहनना शुरू कर दिया। वह हक्का वक्का था, उसकी जिन्दगी में यह पहला मौका था, कि किसी ने उसे इतनी सख्त वात कही हो।

"उसने कमरे से वाहर सीढियो पर निकलते हुए कहा—'आप चाहे जो कहे। मैं आपको सिर्फ इतना सचेत कर देना चाहता हू कि मुमकिन है कि हमारी वाते किसी तीसरे आदमी के कानो में पडी हो और इससे वचने के लिए उन्हे गलत तरह से पेश किया जाय और उसमे कोई ऐसी-वैसी वात न हो जाय, मेरी आपकी जो वातचीत हुई है, उसकी सूचना मुझे हेडमास्टर को देनी होगी उसकी खास खास वाते। यह करना मैं अपना कर्तव्य समझता हू।'

"'क्या? सूचना? जाओ दे लो।'

"कोवालेको ने उसकी गरदन पकड उसे धकेल दिया। वेलिकोव अपने रवड के ऊपरी वूट के साथ खडवडा कर लुढकता नीचे आ रहा। जीना वहुत लम्वा और वहुत ढालू था लेकिन वेलिकोव वखैरियत नीचे आ लगा, खडे होकर उसने अपनी नाक टटोली कि चश्मा सही सलामत है या नहीं। पर जिस वक्त वह सीढियो पर लुढकता नीचे आ रहा था, उसी वक्त वार्या दूसरी दो औरतो के साथ ओसारे में घुसी, वे तीनो नीचे खडी यह सव कुछ देखती रही। और इसी वात से वेलिकोव को सवसे ज्यादा तकलीफ हुई। उसे यह गवारा होता कि उसकी गरदन टूट जाती या उसकी दोनो टांगें टूट जाती वजाय इसके कि उसे इस हास्यजनक दशा में देखा जाता। अव सारे शहर में यह खवर फैल जायेगी, हेडमास्टर के कानो तक वात पहुचेगी और फिर सरक्षक तक। आह, इससे कोई

साइकिल पर चढने लगें तो विद्यार्थियो के लिए सिर के बल चलने के सिवा और क्या बचता है? और फिर यह भी है कि चूकि कभी बाकायदा इसकी इजाज़त नही मिली है, ऐसा करना गलत है। कल जब मैंने आपको देखा तो मैं दग रह गया! और जब आपकी वहन को देखा तव तो मुझे चक्कर आ गया। कोई युवती साइकिल पर चढे—हैरत है!'

"'आप आखिर चाहते क्या है?'

"'मैं सिर्फ आपको सचेत करना चाहता हू, मिखाईल साविच। आप नौजवान हैं, अभी आपको बहुत दुनिया देखनी है। आपको अत्यधिक सतर्कता बरतनी चाहिए। आप इतने लापरवाह है, हद से ज्यादा लापरवाह! आप कढी हुई कमीज़ें पहनते हैं, हमेशा हर तरह की किताबें लिये हुए सडक पर जाते हुए पाये जाते है, और अब तो आप साइकिल पर भी चढने लगे हैं। हेडमास्टर साहब को खबर होगी कि आप और आपकी बहन साइकिल पर चढ़ते हैं, तो बात स्कूल के सरक्षक के कानो तक पहुचेगी और यह अच्छा नही है।'

"कोवालेको ने गुस्से में आते हुए कहा—'अगर मै और मेरी वहन साइकिल पर चढते है तो इसमें किसी का क्या दखल? और जो कोई मेरे निजी मामलो में दख़ल देना चाहे वह जहन्नुम में जाये।'

"वेलिकोव का चेहरा पीला पड गया और वह उठ खडा हुआ।

"'अगर आप मुझसे इस अदाज़ से वातचीत करेगे तो मैं और ज्यादा वात नही कर सकता,' उसने कहा। 'और मैं आपसे प्रार्थना करता हू कि फिर कभी मेरे सामने अफसरो के वारे मे इस तरह अपने विचार ज़ाहिर न कीजिएगा। हाकिमो का लिहाज़ ज़रूरी है।'

"कोवालेको ने उसे नफरत से घूरते हुए पूछा—'क्या मैंने हाकिमो के वारे में कोई वेजा वात कही है? वराय मेहरवानी आप मुझे मेरे

हाल पर छोड दें। मैं ईमानदार आदमी हू और आप जैसे सज्जनो मे करना पसन्द नही करता। मुझे चुगलखोरो से नफरत है।'

"वेलिकोव घवरा कर वगले झाकने लगा और हडवडी में कोट पहनना शुरू कर दिया। वह हक्का वक्का था, उसकी जिन्दगी में यह पहला मौका था, कि किसी ने उसे इतनी सख्त वात कही हो।

"उसने कमरे से वाहर सीढियो पर निकलते हुए कहा—'आप चाहे जो कहे। मै आपको सिर्फ इतना सचेत कर देना चाहता हू कि मुमकिन है कि हमारी वाते किसी तीसरे आदमी के कानो में पडी हो और इससे वचने के लिए उन्हे गलत तरह से पेश किया जाय और उससे कोई ऐसी-वैसी वात न हो जाय, मेरी आपकी जो वातचीत हुई है, उसकी सूचना मुझे हेडमास्टर को देनी होगी उसकी खास खास वाते। यह करना मैं अपना कर्तव्य समझता हू।'

"'क्या? सूचना? जाओ . दे लो।'

"कोवालेको ने उसकी गरदन पकड उसे धकेल दिया। वेलिकोव अपने रवड के ऊपरी वूट के साथ खडवडा कर लुढकता नीचे आ रहा। जीना वहुत लम्वा और वहुत ढालू था लेकिन वेलिकोव वखैरियत नीचे आ लगा, खडे होकर उसने अपनी नाक टटोली कि चश्मा सही सलामत है या नही। पर जिस वक्त वह सीढियो पर लुढकता नीचे आ रहा था, उसी वक्त वार्या दूसरी दो औरतो के साथ ओसारे में घुसी, वे तीनो नीचे खडी यह सव कुछ देखती रही। और इसी वात से वेलिकोव को सवसे ज्यादा तकलीफ हुई। उसे यह गवारा होता कि उसकी गरदन टूट जाती या उसकी दोनो टागें टूट जाती वजाय इसके कि उसे इस हास्यजनक दशा में देखा जाता। अव सारे शहर में यह खवर फैल जायेगी, हेडमास्टर के कानो तक वात पहुचेगी और फिर सरक्षक तक। आह, इससे कोई

ऐसी-वैसी बात न हो जाय। क्या ठीक, कोई एक और व्यग्य-चित्र बना डाले और इस सबका नतीजा यह होगा कि वह नौकरी छोडने को बाध्य हो जायेगा

"जब वह उठा तो वार्या ने उसे पहचाना और उसकी हास्य-जनक सूरत, उसका गिजगिजाया हुआ कोट और उसके रबर का ऊपरी बूट देख कर वह अपने को काबू में न रख सकी और कहकहा मार कर हस पडी, उसे गुमान भी नही था कि यह कैसे हुआ, उसका ख्याल था बेलिकोव का पैर फिसल गया होगा।

"इस गुजते हुए ज़ोरदार कहकहे ने शादी के प्रस्ताव का और बेलिकोव के जीवन का अत कर दिया। उसने यह न सुना कि वार्या क्या कह रही थी और न कुछ देखा। घर पहुच कर उसने जो पहला काम किया, वह मेज़ पर से वार्या की तस्वीर हटाना था। इसके बाद वह विस्तरे पर लेट गया और कभी नही उठा।

"तीन दिन वाद अफानासी मेरे पास आया और पूछने लगा, क्या डाक्टर को बुलाया जाय, क्योकि मेरे मालिक वडे अजब ढग से व्यवहार कर रहे है। मै बेलिकोव को देखने गया। वह चदोवे के नीचे कम्वल ओढ खामोश लेटा हुआ था, कोई वात पूछने पर हा या ना कह देता। वस वह वही लेटा रहा और अफानासी मातमी सूरत वनाये, भवें ताने सर्द आहे भरते भरते शराव की भट्ठी की तरह महकते, चारापाई के आस-पास चक्कर लगाता रहा।

"एक महीना गुज़रा और वेलिकोव मर गया। हम सव लोग उसके जनाज़े में गये। मेरा मतलव है, वह तमाम लोग जो दोनो स्कूलो और धार्मिक शिक्षालय से सम्वन्ध रखते थे। तावूत में लेटे उसका चेहरा वहुत कोमल और आकर्षक और यहा तक कि प्रसन्न भी मालूम

पडता था, मानो वह इस वात पर वहुत प्रसन्न है कि आखिरकार उसे एक ऐसे खोल में रख दिया गया है, जिसमें से उसे अब कभी वाहर नही निकलना पडेगा। हा, सचमुच उसने अपना आदर्श प्राप्त कर लिया था। और मानो उसके सम्मान के लिए, आकाश पर वादल छाये हुए थे, वर्षा हो रही थी और हम सव लोग रवर के ऊपरी वूट पहने हुए थे, और छाते लगाये हुए थे। वार्या भी जमाज़े के साथ थी और जव तावूत कब्र में रखा गया गया उसकी आख से एक आसू ढलक गया। मैंने यह वात देखी है कि उक्राइनी औरते या तो हसती हैं या रोती है, वीच की स्थिति उन्हे मान्य नही।

"मैं यह स्वीकार करता हू कि वेलिकोव जैसे लोगो को दफन कर देना वडी खुशी की वात है। पर हम जव कब्रिस्तान मे लौट रहे थे, हमारे चेहरे गमगीन थे। कोई भी सन्तोप प्रकट नही करना चाहता था। यह सव ऐसी खुशी थी जो हमको वहुत पहले वचपन में होती थी, जव घर के सव लोग कही चले जाते थे और हम लोग घण्टे वाग में खेला करते थे और पूरी आज़ादी वनाते थे। आह! आज़ादी, आज़ादी! इसका इशारा भर, इसकी जरा-सी आशा से, इसके प्राप्त कर सकने की थोडी भी उम्मीद मे हमारी आत्मा खुशी से नाच उठती है, है न?

"कब्रिस्तान से हम लोग खुश खुश लौटे, लेकिन एक हफ्ता भी न वीतने पाया था कि जिन्दगी फिर उसी ढर्रे पर चलने लगी। वही थकानभरी, ऊसर, अर्थहीन जिन्दगी, जिसे न एक गश्ती चिट्ठी से कोई छूट मिली है न दूसरी से उस पर कोई पावन्दी लगी है। परिस्थिति वेहतर नही हुई। यद्यपि वेलिकोव को हमने दफन कर दिया था, लेकिन सोचने पर लगता है कि न जाने कितने ऐसे लोग

शेष है, जो खोल में रहते है और न जाने कितने और पैदा होगे।"

"हा, यह तो है ही," इवान इवानिच ने अपना पाइप सुलगाते हुए कहा।

"न मालूम कितने ही ऐसे लोग और भी पैदा होगे।" बूरिकिन ने फिर कहा।

वह खलिहान के सायबान से बाहर निकल आया। वह छोटे कद का, गठीले शरीर का हट्टा-कट्टा व्यक्ति था। सर बिल्कुल गजा और काली दाढी जो उसकी कमर तक पहुचती थी। उसके साथ ही दो कुत्ते भी बाहर आये।

"कितना खूबसूरत चाद है!" उसने आसमान की तरफ देखकर कहा।

रात आधी बीत चुकी थी। दाहिनी ओर सारा गाव दिखाई पडता था। वह लम्बी-सी सडक जो करीब चार मील तक चली गयी थी। हर चीज़ एक गहन, प्रशान्त नीद में सोयी हुई थी, न कुछ हिलता-डुलता था, न कोई आवाज़ आती थी, विश्वास नही होता था कि प्रकृति इतनी शान्त भी हो सकती है। जब कभी चादनी रात में गाव की चौडी सडक, उसके झोपडो, भूसे के ढेरो और नीद से झुके हुए बेंत के झाडो को देखें तो हमारी आत्मा को शान्ति मिलती है, फिक्र, मेहनत और दुख मे रात के साये में सुरक्षित गाव अपनी स्थिरता में नेक, उदास और खूबसूरत लगता है। सितारे तक उसे बडे प्यार से देखने लगते है, मानो दुनिया में अब कोई बदी बाकी नही रह गयी है और सब कुछ ठीक है। बायी ओर जहा गाव खत्म होता था, खुले खेतो का क्रम आरम्भ हो जाता था, जो सुदूर क्षितिज तक

दिखाई देता, चादनी में नहाये इस विस्तृत में हर चीज़ शात व स्थिर थी।

"हा, यह तो है ही," इवान इवानिच ने फिर कहा, "और हमारा शहरो में घुटे, सकीर्ण कमरो में रहना, बेकार लेख लिखना, ताश खेलना–क्या यह सब भी खोल के भीतर रहना नही है? और निकम्मे लोगो, मुकदमेबाज़ बेवकूफो, फूहड काहिल औरतो के बीच सारी ज़िन्दगी बसर करना, बेकार बाते करना और सुनना–यह सब एक खोल, एक घोघा ही नही, तो और क्या है? अगर तुम सुनो मैं एक बहुत शिक्षाप्रद कहानी सुनाऊ।"

"नही, अब सो जाने का वक्त है।" बूरकिन ने कहा, "उसे कल के लिए रखो।"

वे खलिहान के भीतर चले गये और भूसे पर लेट गये। अभी भूसे में घुसकर दोनो ऊघ ही रहे थे कि बाहर किसी के हल्के हल्के कदमो की आहट सुनाई दी। कोई खलिहान के पास से आ जा रहा था, थोडी दूर चलता था, फिर रुक जाता था, और फिर वही हल्की पदचाप सुनाई पडने लगती थी। कुत्ते गुर्राने लगे।

"मावरा टहल रही है," बूरकिन ने कहा। कदमो की आहट फिर नही सुनाई दी।

"झूठ बोलते हुए चुपचाप देखना और फिर इस झूठ को सहन करने के किए बेवकूफ करार दिया जाना, अपमान और निरादर सहना और खुले आम कहने की हिम्मत न कर पाना कि मैं ईमानदार और आज़ाद लोगो के पक्ष मे हू, खुद भी झूठ बोलना और उसपर मुस्कराना और यह सब कुछ सिर्फ रोटी के टुकडो की खातिर, ज़िन्दगी बसर करने के लिए आरामदेह कोने, एक तुच्छ पद के लिए

—नही, नही, जीवन असह्य है!" इवान इवानिच ने करवट बदलते हुए कहा।

"यह तो तुमने बिल्कुल दूसरी ही बात छेड़ दी, इवान इवानिच।" बूरकिन ने कहा, "अच्छा, अब सो जाय।"

दस मिनट बाद बूरकिन सो गया। लेकिन इवान इवानिच लम्बी सासे भरता और करवटें बदलता रहा, कुछ देर बाद वह उठकर बाहर चला आया, दरवाज़े के पास बैठ गया और उसने अपना पाइप सुलगा लिया।

१८६८

करौंदे

सुवह से ही आसमान में वादल छाये हुए थे। हवा वन्द थी, उसमें शीतलता और घुटन थी, जैसा कि आम तौर पर कुहासे के ऐसे दिनो में होता है जव वादल खेतो पर नीचे नीचे मडलाते रहते हैं और मालूम पडता है कि वर्षा होगी परन्तु होती नही। मवेशियो का डाक्टर इवान इवानिच और स्कूल मास्टर वूरकिन चलते चलते थक कर चूर हो गये थे। उन्हे ऐसा लग रहा था कि खेतो से जाने का सिलसिला कभी भी खत्म न होगा। आगे, वहुत दूर मिरोनोसित्स्कोये गाव की हवा चक्किया दिखाई पड रही थी और दाहिनी ओर पहाडियों का सिलसिला-सा था जो कुछ दूर चल कर गाव के वहुत पीछे खो गया था। वे दोनो जानते थे कि पहाडियो का यह सिलसिला वास्तव में नदी का किनारा था, और आगे चरागाहें, हरी हरी वेंत की झाडिया, जागीरे थी और वे जानते थे कि यदि वे पहाडी की चोटी से देखते तो उन्हें दृष्टि के छोर तक फैला खेतो का वही सिलसिला, तार के खम्भें और रेलगाडी जो दूर से रेगता हुआ एक कीडा लगती थी दिखाई देती और जव मौसम साफ होता था तो शहर भी दिखाई देता था। आज के उस शान्त वातावरण में जव सारी सृष्टि वडी नेक और उदास मालूम पड रही थी इवान इवानिच और वूरकिन

के हृदयो में इस देहात के प्रति अनुरक्ति की भावना उमड पडी और वे सोचने लगे कि उनका कितना विशाल और सुन्दर देश है।

बूरकिन ने कहा—"पिछली बार जब हम मुखिया प्रोकोफी के खलिहान में ठहरे थे तब तुमने एक किस्सा सुनाने का वादा किया था।"

"हा, मैं तुमको अपने भाई के बारे में बाते बताना चाहता था।"

इवान इवानिच ने एक गहरी सास ली और किस्सा शुरू करने से पहले अपना पाइप जलाया। लेकिन इतने ही में पानी बरसने लगा और पाच मिनट भी न हुए थे कि मुसलाधार बारिश होने लगी जिसके रुकने की कोई सम्भावना नही मालूम होती थी। इवान इवानिच व बूरकिन असमजस में पड गये। भीगे हुए कुत्ते अपनी दुम टागो के बीच दवाये प्रार्थना के भाव से उन्हे ताक रहे थे।

"हमको कोशिश कर कही पनाह लेनी चाहिए," बूरकिन ने कहा, "आओ अलेखिन के यहा चले। पास ही है।"

"आओ चलो।"

वे एक खेत पार करके दाहिनी ओर मुडे और बडी सडक पर आ निकले। थोडी ही देर में पापलार के पेड, वाग और खलिहानो की सुर्ख छते दिखाई पडने लगी। नदी का पानी झिलमिला रहा था और पानी का विस्तार, एक चक्की का घर और सफेद पुता स्नानगृह दिखाई पड रहा था। यही स्थान सोफीनो कहलाता था, जहा अलेखिन रहता था।

चक्की चल रही थी। उसकी घडघडाहट में मेह पडने की आवाज़ विल्कुल दव गयी थी और नदी पर का वाध काप रहा था। गाडियो के पाम भीगे हुए घोडे सर झुकाये खडे थे और लोग अपने मिर व कन्धो को वोरो से ढके इधर-उधर आ जा रहे थे। वर्षा, कीचड और उदाम सन्नाटा छा रहा था और पानी ठिठुरन भरा और

मनहूस लग रहा था। इवान इवानिच और बूरकिन अब तक नमी, सीलन, मैल और परेशानी अनुभव करने लगे थे। उनके जूतो पर कीचड जम गयी थी और जब वे बाध के पास से होकर खलिहान की तरफ चले, वे बिल्कुल खामोश थे मानो एक दूसरे से चिढे हो।

एक खलिहान से मडाई करने की आवाज़ आ रही थी। दरवाज़ा खुला था और चारो तरफ गर्द के बादल उड रहे थे। दरवाज़े पर अलेख़िन खुद खड़ा था। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष की होगी। वह एक लम्बा चौडा तन्दुरुस्त आदमी था, लम्बे लम्बे बाल, देखने में ज़मीदार से ज्यादा चित्रकार या प्रोफेसर मालूम होता था। वह एक चीकट कमीज़ पहने था और कमर पर पेटी की जगह रस्सी बाधे हुए था। वह पतलून नही, सिर्फ उसके भीतर पहना जाने वाला पाजामा पहने था। उसके बूट कीचड और पयाल में सने हुए थे। उसकी नाक और आखें गर्द से काली हो रही थी। उसने इवान इवानिच व बूरकिन को पहचान लिया और उसके चेहरे पर खुशी की एक लहर दौड गयी।

"आप लोग मकान में चले," उसने कहा, "मैं अभी एक मिनट में हाज़िर होता हू।"

मकान बडा दुमज़िला था। अलेखिन नीचे के तल्ले में ही रहता था, जहा महराबदार छतो व छोटी छोटी खिडकियो वाले दो कमरे थे। ये कोठरिया कारिन्दो के रहने के लिए बनायी गयी थी। उसकी सजावट मामूली थी और उनमें रोश की रोटी, सस्ती वोद्का और चमडे की बू बसी हुई थी। ऊपर वाले कमरो में वह कभी कभी ही जाता था, केवल उन्ही मौको पर जब मेहमान आते थे। इवान इवानिच और बूरकिन का स्वागत एक नौकरानी ने किया। इतनी खूबसूरत थी वह

छोकरी कि दोनो एक क्षण के लिए अनजाने ही ठिठक गये और एक दूसरे से नजरे मिलाने लगे।

"आप अन्दाज नही लगा सकते प्यारे मित्रो, कि आप लोगो के यहा आने से मुझे कितनी खुशी हुई है," अलेखिन ने उनके पीछे ही हाल में प्रवेश करते हुए कहा।

"मुझे आपके आने का कोई गुमान भी न था। पेलागेया!" उसने नौकरानी से कहा, "उन लोगो के कपडे बदलवा दे। और हा, देख मैं भी कपडे बदलूगा। लेकिन मै तो नहाऊगा भी। महीनो से नही नहाया हू मैं। आप लोग भी नहा लीजिए न! इतनी देर में हमारे कपडे वगैरह ठीक हो जायेंगे।"

सलोनी पेलागेया तौलिये व साबून से आयी और अलेखिन अपने मेहमानो को लेकर नहाने के लिए चल दिया।

"हा," उसने कपडे उतारते हुए कहना शुरू किया, "बहुत दिन हो गये मुझे नहाये हुए। आप देखते हैं कि मेरे पास नहाने के लिए जगह बहुत अच्छी है। मेरे पिता जी ने इसे बनवाया था लेकिन कुछ होता यू है कि मुझे नहाने की फुरसत ही नही मिलती।"

वह सिढियो पर बैठ गया और अपने लम्बे बालो में और गर्दन पर साबुन लगाने लगा। उसके आसपास का पानी मटमैला हो गया था।

"हा, ऐसा ही होता है!" इवान इवानिच ने उसके सर की तरफ अर्थपूर्ण निगाहो से देखते हुए कहा।

"बहुत अरसा हो गया, मुझे नहाये हुए," अलेखिन ने कुछ शरमाते हुए कहा और दुबारा साबुन मलने लगा। उसके पास का पानी गहरे नीले रग का हो गया था, स्याही की तरह।

इवान इवानिच बदघाट में से निकला छप से पानी में कूद पडा और बारिश में तैरता रहा। जब वह हाथ चलाता लहरो के घेरो का एक

सिलसिला तट की ओर बढता, लहरो पर सफेद कुमुद झूम उठते। वह तैरते नदी के बीच में पहुच गया और डुबकी मारकर कही और निकल आया। वह इसी तरह तैरता रहा, डुबकिया मारता रहा, इस कोशिश में कि नदी के तल तक पहुच जाये। "अहा! कसम खुदा की कितना मजा आ रहा है," वह मारे खुशी के चिल्ला उठा "सचमुच बहुत ही मजा आ रहा है " वह तैरते तैरते चक्की तक गया, किसानो से दो बातें की और फिर वापस आ गया। नदी के बीच में पहुच कर वह पीठ के बल तैरने लगा। वर्षा के छीटे उसके चेहरे पर थपेडे मार रहे थे। बूरकिन और अलेखिन कपडे बदल कर चलने को तैयार हो गये थे, लेकिन यह तैरता रहा और डुबकिया मारता रहा।

"बडा मजा आ रहा है " वह प्रसन्नतापूर्वक कहता रहा "खूब मजा, वाह, भगवाना! "

"बस चलो बाहर!" बूरकिन ने चिल्लाकर कहा।

वे घर लौट आये। ऊपर की बैठक में लैम्प जलाया गया। बूरकिन और इवान इवानिच रेशमी ड्रेसिग गाऊन और आरामदेह चट्टिया पहने कुर्सियो पर लेटे अलसा रहे थे। अलेखिन खुद नहाये धोये, बाल बनाये एक नया कोट पहन चहलकदमी कर रहा था, स्वच्छता, सुखद गरमाहट, कपडो व चप्पलो का मजा लेता हुआ। सलोनी पेलागेया कालीन पर दबे पाव चलती खामोशी से एक ट्रे में चाय और उसके साथ मुरब्बे लिये हुए कमरे में दाखिल हुई, एक नर्म हसी उसके होठो पर खेल रही थी। तभी इवान इवानिच ने अपना किस्सा सुनाना शुरू किया। मालूम पडता था कि उसका किस्सा बूरकिन और अलेखिन ही नही बल्कि प्राचीन कालीन वे नवयुवतिया व महिलाए, और वे अफसर भी सुन रहे थे, जो अपने सुनहरे चौखटो में से तीखी नजर से खामोशी के साथ झाक रहे थे।

"हम दो भाई हैं," उसने कहना शुरू किया, "मैं इवान इवानिच और निकोलाई इवानिच, जो मुझसे दो साल छोटा है। मैंने शिक्षा प्राप्त की और मवेशियो का डाक्टर बना। लेकिन निकोलाई उन्नीस वरस की उम्र से ही एक सरकारी दफ्तर में नौकर हो गया था। हमारे पिता चिमशा-हिमालयस्की सिपाहियो के बच्चो के एक स्कूल में पढ थे। सेना में कुछ अर्सा काम करने के वाद वह तरक्की देकर अफसर बना दिये गये थे और उन्हे खानदानी रईस का खिताब और थोडी-सी ज़मीन दी गयी थी। उनके मरने के बाद जागीर तो उनके कर्ज़े अदा करने में चली गयी। फिर भी हमने अपना बचपन गाव की स्वच्छन्दता में ही गुज़ारा। वहा हम बिल्कुल किसानो के बच्चो की तरह खेतो और जगलो में घूमते घोडो को चराने ले जाते। लाइम के पेडो की छाल उतारते, मछलिया पकडते और इसी तरह के दूसरे काम करते जिसने भी एक बार मछली का शिकार किया है या पतझड की खुनुक और साफ हवा में कडाकुलो के गोल मडलाते हुए देखे है, वह कभी शहर का होकर नही रह सकता, मरते दम तक गाव का आकर्षण उसे अपनी ओर खीचता रहता है। मेरा भाई सरकारी दफ्तर में पिसता रहा। सालहा साल वह उसी जगह पर वैठा एक से कागजो की खानापुरी करता रहा, वस एक वात उसके दिमाग पर छायी रहती थी कि कैसे वह गाव पहुच जाय। और धीरे धीरे उसकी इस आकाक्षा ने निश्चित वलवती इच्छा का रूप धारण कर लिया। उसका यह स्वप्न वन गया कि कही, किसी नदी या झील के किनारे थोडी-सी ज़मीन खरीद ले।

"वह वहुत नेक और सीधा आदमी था और मैं उसे प्यार भी वहुत करता था लेकिन मै कभी भी उसकी इस इच्छा से सहमत नही हो सका कि इन्सान अपने आपको अपनी जागीर के साथ जकड ले

और उसी का होकर रह जाय। यह कहावत बहुत आम है कि आदमी को चाहिए ही क्या, बस चार हाथ ज़मीन। लेकिन इतनी ज़मीन तो लाश के लिए चाहिए होती है, न कि इन्सान के लिए। और अब तो मैंने लोगो को यह भी कहते सुना है कि हमारे बुद्धिजीवियो को ज़मीन की धुन सवार होना और देहात में मकान की कोशिश करना अच्छा है, लेकिन ये देहाती मकान भी वही चार हाथ ज़मीन की बात बन कर खत्म हो जाते हैं। शहर छोडकर और ज़िन्दगी के धारे, शोरगुल और सघर्ष से मुह मोडकर खेतीबारी में शरण ढूढना ज़िन्दगी नही, अहकार है, काहिली है, एक प्रकार का वैराग्य है, जो निष्ठाहीन है। मनुष्य को चार हाथ ज़मीन ही नही, एक खेत ही नही बल्कि सारी पृथ्वी की ज़रूरत है, सम्पूर्ण प्रकृति की ज़रूरत है, जहा वह पूरी आज़ादी के साथ अपनी स्वतत्र आत्मा के गुणो और उसकी क्षमता को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त कर सके।"

"मेरा भाई निकोलाई दफ्तर में बैठा बैठा ख्वाब देखा करता कि वह दिन भी आयेगा जब वह अपने घर की पैदा गोभी का शोरबा खायेगा, चारो ओर उसकी खुशबू उडेगी, वह ख्वाब देखता कि वह घर के बाहर खुले में घास के मैदान में बैठकर खाना खायेगा, धूप में सोयेगा, घण्टो फाटक के पास बेंच पर बैठा खेतो और जगलो की ओर देखा करेगा। कृषि के विषय में किताबें और जन्त्रियो में दिये हुए कृषि सम्बन्धी आदेश पढकर वह बहुत खुश होता, और उसकी आत्मा के लिए यही प्रिय पाथेय था। उसे अखबार पढने का भी बडा शौक था लेकिन पढता वह केवल वही विज्ञापन जिसमें बिकाऊ ज़मीनो का ज़िक्र होता था। इतनी ज़मीन बिकाऊ है, इतनी खेती के लायक है और इतनी चराई के लायक, साथ में एक मकान है, पास ही नदी है, बाग है, चक्की है और चक्की के साथ एक पोखर है। उसके दिमाग

में बाग-बग़ीचो, फलो, फूलो, चिडियो के घोसलो, मछलियो भरे तालाबो और इसी किस्म की न जाने कितनी चीज़ो के ख्वाब भरे रहते। उसकी कल्पना की उडान विज्ञापन के अनुसार ही बदलती रहती थी लेकिन और कुछ हो या न हो एक चीज़ उसकी हर योजना में होती थी–करौंदो की झाडी। करौंदो की झाडी के बगैर किसी मकान, किसी सुन्दर स्थान की वह कल्पना भी नही कर सकता था।

"वह कहा करता था–'देहात की ज़िन्दगी के भी क्या क्या फायदे हैं। आप बरामदे में बैठे चाय पी रहे है आपकी बत्तखें तालाब में तैर रही है और हर चीज से एक सुहावनी महक आ रही है और

और फिर पके करौंदे शाखो पर लटक रहे हैं।'

"वह अपनी ज़मीन के बारे में योजना बनाता और हर नक्शे में वही चीजें होती–रहने का एक मकान, नौकरो की एक कोठरी, तरकारियो का एक बगीचा और वही करौदो की झाडिया। वह बहुत कजूसी से रहता था। न कभी पेट भर खाता, न कभी जी खोल कर पीता। खुदा जाने कैसे कपडे पहनता था वह, विल्कुल भिखमगो जैसे। और हमेशा पैसा वचा कर वैंक में जमा करता रहता। वला का कजूस हो गया था वह। उसे देखकर मुझे तकलीफ होती थी। जब कभी मैं उसे पैसे भेजता या त्योहार पर कोई सौगात देता तो वह उन्हे भी जमा कर देता। एक वार किसी के दिमाग में कोई वात जम कर रह जाय, फिर उसका कोई इलाज नही।

"कई साल वीत गये उसकी वदली दूसरे ज़िले में हो गयी। वह चालीस साल का हो गया था लेकिन अव तक अख़वारो में इश्तहार देखता था और पैसे वचाता था। फिर मैंने सुना कि उसने शादि कर ली। इसी एक इरादे से कि ज़मीन खरीदेगा जिसमें एक मकान होगा और करौंदो की झाडियां होगी, उसने एक अवेड उम्र की वदसूरत

विधवा से शादी कर ली। यह बात नही कि उसे उससे प्रेम था, वल्कि सिर्फ इसलिए कि उसके पास पैसा था। शादी के वाद भी वह उसी कजूसी से रहता। उसे आधा पेट खाना देता और उसका पैसा अपने नाम से बैंक में जमा करा लेता। वह पहले एक डाकवावू की पत्नी थी और वढिया खानपान व अच्छे रहन-सहन की आदी थी लेकिन अपने नये शौहर के यहा तो उसे भरपेट मोटी छोटी सूखी काली रोटी भी नसीव न होती। वह इस नयी व्यवस्था में घुलती रही और लगभग तीन साल में ही स्वर्ग सिधार गयी। यह तो सच ही है कि मेरे भाई को एक क्षण के लिए भी यह ख्याल न हुआ कि वह खुद उसकी मौत के लिए जिम्मेदार है। शराव के नशे की तरह पैसा भी आदमी को सनकी बना देता है। हमारे कस्वे में एक सौदागर था। वह अपनी मृत्युशय्या पर पडा था। मरने से पहले उसने थोडा-सा शहद मगाया और तमाम नोट व लाटरी के टिकट वगैरह शहद लगा कर खा गया ताकि वे किसी दूसरे के हाथ न लगने पायें। इसी तरह मैं एक वार एक स्टेशन पर कुछ मवेशियो का मुआइना कर रहा था कि एक दलाल इजिन के नीचे आ गया और उसकी टाग कट गयी। हम लोग उसे उठाकर अस्पताल ले गये। खून लगातार तेजी से वह रहा था—कितना भयानक दृश्य था। सारी देर वह अपनी कटी हुई टाग के वारे में ही पूछता रहा। उसने अपने जूते में वीस रूवल रखे थे और वह किसी भी हालत में उनको खोने के लिए तैयार न था।"

"अच्छा अपना किस्सा शुरू करो, तुम वहके जा रहे हो।" बूरकिन ने कहा।

"हा, अपनी वीवी की मौत के वाद," इवान इवानिच ने एक लम्वे क्षण के वाद वातचीत का क्रम फिर शुरू करते हुए कहा, "मेरे

भाई ने ज़मीदारी की तलाश शुरू कर दी। अब ऐसा तो हो ही जाता है कि आप पाच साल तक खोज किया करे और उसके बाद भी गलती हो जाय, आप ऐसी चीज़ खरीद बैठें जो आपकी कल्पना के बिल्कुल विपरीत हो। दलाल की मार्फत निकोलाई ने किसी की रेहन ज़मीदारी छुड़वा ली और एक मकान, नौकरो के घर और एक पार्क समेत तीन सौ एकड ज़मीन खरीद ली। लेकिन उसमें न तो फलो का बगीचा ही था, न करौंदो की झाडिया और न बत्तखो वाला तालाब ही। वहा एक नदी ज़रूर थी लेकिन उसका पानी कहवे के रग का था, क्योकि उसकी ज़मीन के एक तरफ़ ईटो का भट्ठा था और दूसरी तरफ हड्डिया जलाने का कारखाना। लेकिन मेरे भाई निकोलाई इवानिच को उससे घबराहट न हुई। उसने करौदो की बीस झाडिया मगवा ली और ज़मीदार की ज़िन्दगी बसर करने लगा।

"पिछले साल मैं उससे मिलने गया। मैंने सोचा कि जाकर देखू कि आखिर उसकी जिन्दगी कैसी गुज़रती है। अपने पत्रो में उसने मुझे लिखा था कि उसने अपनी जागीर का नाम 'चुम्बरोक्लोवा पुस्तोश' रखा था। वह उसे 'हिमालयस्कोये' भी कहता था। मैं जब "हिमालयस्कोये" पहुचा, उस समय तीसरे पहर का वक्त था। बडी गर्मी पड रही थी। हर तरफ खाइया, चहारदीवारिया, झाडियो की कतारे, नये लगाये हुए फर के वृक्षो की पक्तिया थी। समझ में न आता था कि अहाते को कैसे पार किया जाय या गाडी कहा खडी की जाय। मकान की ओर जाते समय सोठ जैसा रगवाला एक कुत्ता बाहर निकल आया, जो सुअर की तरह मोटा था। लगा कि वह भोकता अगर इतना काहिल न होता। रसोई मे से बावरचिन नगे पाव बाहर निकाल आयी। वह भी मोटी और सुअर के समान थी। उसने बताया कि खाने के बाद मालिक आराम कर रहे हैं। मै अन्दर अपने भाई के पास

चला गया, मैंने देखा कि वह अपने पाव कम्वल से ढके पलग पर वैठा है। वह वडा मोटा और थलथल हो गया था, उसके गालो का, नाक का और होठो का गोश्त लटक आया था। मुझे एक वार तो ऐसा लगा कि वह अभी कम्वल में से सुअर की तरह गुर्रायगा।

"हम एक दूसरे के गले लिपट गये और हमारी आखो से हर्ष के आसू झलक आये और साथ ही रज के भी, यह सोच कर कि कभी हम जवान थे और अब हम भी वूढे होते जा रहे हैं और हमारी मौत करीव आती जा रही है। उसने कपडे पहने और मुझे अपनी जागीर दिखाने ले चला।

"अच्छा, यह तो वताओ कि तुम हो कैसे?" मैंने पूछा।

"अच्छा हू, खुदा का शुक्र है। मैं वहुत मजे में हू।"

"अव वह पुराना डरपोक दफ्तर का क्लर्क नही था वल्कि सही माने में एक जमीदार था, जिसकी खुद की अपनी हैसियत थी। वह उस जगह का आदी हो चुका था और उत्साह के साथ देहाती जीवन में पैठ रहा था। डट के खाता था, गुस्लखाने में नहाता था और मोटा होता जा रहा था। इतने थोडे दिनो में ही उसकी गाव पचायत, भट्ठे व हड्डियो के कारखाने से मुकदमेवाजी हो चुकी थी। अगर किसान उसे "हुजूर" कह कर न सम्वोधित करे तो उसे वहुत अखरता था। कुलीन जमीदारो की तरह वह जोर शोर से धर्म, कर्म व पूजापाठ करने लगा था। भले कामो के ढोग में भी वह धूम मचाये रहता। और यह भले काम भी क्या थे? किसानो की तमाम वीमारियो का इलाज वह सोडा और रेडी के तेल से किया करता और अपनी सालगिरह के दिन गाव के मैदान में विशेष प्रार्थना करवाता और उसके वाद आधी वालटी वोद्का तमाम गाववालो के लिए देता, वह समझता था कि ऐसे अवसर पर यही उचित है। उफ, वोद्का की वह मनहूस वालटिया! आज मोटा

ज़मीदार किसानो को घसीट कर ज़ेंस्त्वो की अदालत में ले जायगा और अपनी ज़मीन पर भेडे चराने का मुकदमा चलायेगा। और दूसरे ही दिन अगर कोई त्योहार हुआ तो उनको वोद्का की एक बालटी दे देगा। वे और उसकी जयजयकार करेगे और शराब के नशे में उसके पैरो तक पर पडेंगे। किसी भी रूसी को अगर अच्छा खाना खाने को और आराम की निठल्ली ज़िन्दगी बसर करने को मिले तो उसमें दूसरो के प्रति तिरस्कार की तीव्र भावना पैदा हो जाती है। निकोलाई इवानिच जो सरकारी दफ्तर की नौकरी के जमाने में किसी भी समस्या पर अपनी राय रखने के विचार मात्र से डरता था, अब हर बात पर बडे अधिकारपूर्ण ढग से मन्त्रियो जैसी अदा के साथ सिद्धान्त बखानता—'शिक्षा ज़रूरी है, लेकिन जनता अभी इसके योग्य नही है,' 'शारीरिक डड यो तो बुरी चीज़ है लेकिन बाज़ मौको पर लाभदायक ही नही, आवश्यक होता है।'

"वह कहा करता—'मै लोगो को खूब जानता हू और मै यह भी जानता हू कि उनके साथ किस तरह पेश आया जाय । लोग मुझसे मुहब्बत करते हैं। मेरी उगली का इशारा काफी है और वे मेरी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार रहते है।'

"और ध्यान रखिये यह सब बातें कहते वक्त उसके होठो पर हमेशा बुद्धिमान नेक मनुष्य की सी मुस्कराहट रहती थी। वह हमेशा कहता, 'हम शरीफ लोग' या 'मैं बहैसियत एक रईस के'। ज़ाहिर है कि वह यह भूल चुका था कि हमारे दादा किसान थे और हमारे पिता थे एक सिपाही। यहा तक कि हमारा खानदानी नाम चिमशा-हिमालयस्की, जो दरअस्ल एक बेतुका नाम है, उसकी नज़रो में बहुत रोबदार, शानदार और कानो को भला लगनेवाला नाम था।

"लेकिन मैं जो कुछ कह रहा हू उसका सबध उससे इतना ज्यादा नही है जितना कि मुझसे। मैं आपको यह बताना चाहता हू कि उन चन्द घटो में जितनी देर कि मैं अपने भाई के मकान में रहा मुझमें क्या परिवर्तन आ गया। शाम को जब हम चाय पी रहे थे वावर्चिन ने मेज़ पर तश्तरी भर कर करौंदे लाकर रख दिये। वे खरीदे हुए नही थे, वल्कि खुद उसके वाग के थे। झाडिया लगाने के वाद के वे पहले फल थे। निकोलाई इवानिच मारे खुशी के हसने लगा और पूरे मिनट तक आखो में आसू भरे चुपचाप करौंदो की ओर ताकता रहा। फिर उसने एक करौंदा उठाकर अपने मुह में रखा और मेरी ओर विजय गर्व से देखा, उस बच्चे की तरह जिसे आखिरकार अपनी पसन्द का खिलौना मिल गया हो, फिर कहा—

'वहुत स्वादिष्ट है।'

"वह नदीदो की तरह खाता रहा और सारी देर कहता रहा—'वाह वहुत स्वादिष्ट हैं। ज़रा खाकर तो देखो।'

"करौंदे खट्टे भी थे और सख्त भी। लेकिन जैसा कि पुश्किन ने कहा है—'वह झूठ जो हमें प्रसन्नता प्रदान करे हमको हज़ार सत्यो से ज्यादा प्रिय होता है।' मैं एक ऐसे आदमी को देख रहा था, जो सचमुच सुखी था, जिसका सवसे प्रिय स्वप्न सच्चा हो गया था, जिसने अपने जीवन के ध्येय को प्राप्त कर लिया था, जिसे वह सव कुछ मिल गया था, जो वह चाहता था और जो अपने सौभाग्य पर और अपने आप में सन्तुष्ट था। सुख की मेरी कल्पना में गम का भी थोड़ा-सा समावेश हमेशा रहा है। और अव एक खुशहाल आदमी को देखकर मुझे उदासी की एक और भावना घेरने निराशा-सी वेचैन करने लगी। और जैसे रात वढती गयी यह वेचैनी वढती गयी। मेरा विस्तर मेरे भाई के पासवाले कमरे में ही था और मुझे साफ़ सुनाई दे रहा था कि उसे नीद

नही आ रही। वह बार बार उठकर करौंदो की तश्तरी के पास जाता था और एक एक फल लेकर खाता था। मैंने सोचा आखिर कितने लोग इस ससार में सुखी और सन्तुष्ट होगे। कैसी अभिभूत कर लेनेवाली शक्ति है यह! इस जीवन पर जरा गौर करिये ताकतवर लोगो का घमड और निकम्मापन, कमज़ोरो की जहालत और पशुता, हर तरफ भयानक मुफलिसी, तग झोपडे, नैतिक पतन, नशेबाज़ी, मक्कारी, झूठ और फिर भी हर घर में, हर गली में शाति। किसी कस्बे के पचास हज़ार लोगो में से एक भी ऐसा नही होगा जो उठकर चीख पडे और अपना क्रोध चिल्लाकर खुले-आम प्रकट करे। उन लोगो को हम अवश्य देखते है जो रोज़ बाज़ार में अपना खाना खरीदने जाते हैं। वे दिन में खाते है रात को सो जाते है। खुराफात बकते है, शादी करते है, बूढे हो जाते है, मरनेवालो को अतितुष्टि के साथ कब्रिस्तान खींच ले जाते है। पर जो मुसीबते झेलते हैं, उनको न तो कोई देखता है न कोई उनकी सुनता है। और ऐसा मालूम होता है कि जीवन की सारी भयानक घटनाए किसी परदे के पीछे होती रहती हैं। हर चीज़ खामोश है और शातिमय है। इनके खिलाफ केवल आकडो का मूक प्रतिवाद है इतने लोग पागल हो गये, इतने गैलन शराब पी गयी, इतने बच्चे पर्याप्त भोजन के अभाव में मर गये और ज़ाहिर है कि होना भी ऐसा ही चाहिये। ज़ाहिर है कि हर वह शख्स जो खुशहाल है वह केवल इसीलिए कि जो दुखी है, वे अपनी मुसीबते खामोशी से बरदाश्त करते हैं जिसके बग़ैर किसी के लिए सुख की गुजाइश ही न रहेगी। यह एक प्रकार का सार्वभौम सम्मोहन है। हर सुखी व्यक्ति के द्वार के पीछे एक ऐसे आदमी की आवश्यकता है जो एक हथौडे से उसके दरवाज़े को खटखटाया करे और इस बात की याद दिलाया रहे कि इस दुनिया में दुखी लोग भी हैं और यह कि वह कितना

ही सुखी क्यो न हो कभी न कभी वह भी जीवन के पजे में आ जायेगा और इस पर कोई विपत्ति आ ही पड़ेगी—बीमारी, गरीबी या आर्थिक हानि और इस समय उसको भी न कोई देखेगा और न सुनेगा जिस तरह वह इस समय न दूसरो के दुर्भाग्यो को देखता है न उनको सुनता है। लेकिन ऐसा आदमी है कहा जिसके हाथ में हथौडा हो। सुखी लोग मजे से अपनी जिन्दगी बसर करते हैं, जिन्दगी के ओछे उतार चढावो से वे जरा-से हिल भर जाते है जैसा हवा में वृक्ष। और बाकी सब चलता रहता है।

"उस रात मैं समझ सका कि किस तरह मैं भी खुशहाल और सन्तुष्ट रहा हू।"—इवान इवानिच उठ खडा हुआ और कहता रहा, "मैं भी खाने पर या शिकार खेलते समय जिन्दगी के बारे में, धर्म के बारे में, जनता पर शासन करने के बारे में बाते बनाया करता था। मै भी कहा करता था शिक्षा बिना प्रकाश असम्भव है, शिक्षा अनिवार्य है लेकिन सीधे-सादे लोगो के लिए फिलहाल थोडा-सा पढ लिख लेना ही काफी है। मै कहा करता स्वतन्त्रता वरदान है उसके बिना जीवन असम्भव है जैसे कि हवा के बिना, जिसमें कि हम सास लेते है, लेकिन उसके लिए हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए। हा, मै वही कहा करता था। लेकिन अब मैं पूछता हू कि हम किस बात का इतजार करे?" इवान इवानिच ने गुस्से से बूरकिन की तरफ देखा। "हम किसके लिए इतजार करे? मै तुमसे पूछता हू। किस बात का ख्याल करना है? हमसे कहा जाता है, हर बात धीरे धीरे ही पूरी होती है। हडबडी मत करो। पूरा होने में अपना समय लेती है। लेकिन कौन है वे लोग जो ऐसा कहते हैं? क्या सबूत है कि यह बात सही है? आप कहेंगे प्रकृति का यही नियम है। तथ्यो के तर्कसगत क्रम का हवाला देंगे, लेकिन किस नियम के अनुसार क्या प्रकृति का यही नियम और

तर्क है कि मैं एक जीता जागता सोचनेवाला प्राणी एक खाई के किनारे खडा इस बात का इतज़ार करता रहू कि वह खाई धीरे धीरे भर जाय या मट्टी-मलवे से पुर जाय जब मैं उसे फाद सकू या उसपर पुल बना सकू ? फिर बताइए हम क्यो इन्तज़ार करे ? इन्तजार क्यो ? जबकि हम में ज़िन्दा रहने की शक्ति बाकी नही हालाकि ज़िन्दा हमें रहना है और ज़िन्दा रहने की हममें इच्छा है।

"मै अपने भाई के यहा से दूसरे दिन बडे सबेरे चला आया और उस समय से मेरे लिए शहर में आना असह्य हो गया । वहा की खामोशी और व्यवस्था मेरी आत्मा पर बोझ बन जाती हैं। मुझमें मकानो की खिडकियो की तरफ देखने की हिम्मत नही होती क्योकि मेरे लिए इससे ज्यादा भयानक दृश्य कोई नही हो सकता कि एक खुशहाल परिवार एक मेज़ पर बैठा चाय पी रहा है। मै अब बूढा हू मुझमें सघर्ष की शक्ति नही, अब मुझमें घृणा करने की भी शक्ति नही है। मै अपने मन ही मन दुखी हो सकता हू, झुझला सकता हू, कुढ सकता हू। रात के समय मेरा दिमाग मेरे विचारो के प्रवाह से भनभना उठता है, मै सो नही पाता हाय ! काश मैं जवान होता !"

इवान इवानिच बडी बेताबी से कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक टहलता रहा और यही कह रहा था—

"काश मैं अब जवान होता।"

वह एकाएक अलेखिन के पास गया और पहले उसका एक हाथ पकड कर दबाया, फिर दूसरा।

"पावेल कोस्तातीनिच !" उसने विनीत भाव से कहा, "कभी निष्क्रिय न होना ! ऐसा न होने देना कि तुम्हारी अन्तरात्मा नीद में गाफिल हो जाय। अब तक तुम जवान हो, तदुरुस्त हो, क्रियशील हो, नेक काम करने से न चूकना। खुशी का अपना कोई अस्तित्व न है

और न होना चाहिए, यदि जीवन का कोई अर्थ है और उसका कोई ध्येय है तो वे हमारी अपनी छोटी-मोटी खुशियो में नही, वल्कि वे इससे ज्यादा महान और तर्कसगत है। नेकी करो! "

इवान इवानिच ने यह सब विनीत और करुण मुस्कराहट के साथ कहा जैसे अपने लिए किसी एहसान की भीख माग रहा हो।

फिर वे तीनो एक दूसरे से काफी दूर अपनी अपनी आराम कुर्सियो पर खामोश वैठे रहे। इवान इवानिच के किस्से से न तो वूरकिन को कोई सतुष्टि हुई थी और न अलेखिन को। एक गरीव सरकारी नौकर की कहानी जो करौंदे खाता था उनको मनोरजक न लगी। जवकि वडे वडे जनरल और भद्र महिलाए अपने सुनहरे चौखटो में से झाक रही हो और शाम के झुटपुटे में जिन्दा मालूम पड रही हो, ज्यादा दिलचस्प तो यह होता कि शानदार लोगो और सुन्दर स्त्रियो के वारे में वात की जाती। और यह वात कि वे एक ऐसे दीवानखाने में वैठे थे जहा की हर चीज—ढके हुए फानूस, आराम कुर्सिया, फर्श का कालीन—सव इस वात का सवूत दे रहे थे कि वे लोग जो अव अपने फ्रेमो में से झाक कर उनको देख रहे थे एक जमाने में खुद यही चलते-फिरते थे, कुर्सियो पर वैठते थे चाय पीये थे जहा कि अव सुन्दर पेलागेया खामोशी से चल फिर रही थी। यह सव इवान इवानिच के किस्से से कही वेहतर थी।

अलेखिन की आखो में नीद झुक रही थी। वह वहुत सवेरे लगभग तीन ही वजे से उठकर काम पर जाने के लिए उठ वैठा था और अव उसके लिए आखें खोल रखना भी मुहाल था लेकिन उसे डर था कि उसके मेहमान कोई दिलचस्प वात न कहने लगें और वह उसे सुनने से रह जाय, इसी ख्याल से वह उठकर नही जाता था। वह समझ नही पा रहा था कि जो कुछ इवान इवानिच ने अभी कहा वह सही और

समझदारी की बात भी है या नही। वह बस, इतना जानता था कि उसके मेहमान गल्ले, भूसे व तारकोल के नही, कुछ अन्य चीज़ो के बारे में बाते कर रहे थे जिनका उसके दैनिक जीवन से कोई स्पष्ट सबध न था। उसे यह अच्छा लग रहा था और वह चाहता था कि वे ऐसी ही बाते करते रहे

"ख़ैर, अब सोने का वक्त हो गया," बूरकिन ने उठते हुए कहा, "मैं आप लोगो से रात भर के लिए विदा होता हू।"

अलेखिन ने भी विदा ली और नीचे अपने कमरे में चला गया और अपने मेहमानो को वही छोड गया। उन्हें रात के लिए एक कमरा दिया गया था, जो काफी बडा था। उसमें पुराने किस्म के नक्काशीदार लकडी के दो पलग थे और एक कोने में हाथी दात का सलीब रखा था। उसके चौडे शीतल बिस्तरो से जो सलोनी पेलागेया ने अभी बिछाये थे धुले कपडो की खुशबू आ रही थी।

इवान इवानिच ने चुपचाप अपने कपडे उतारे और लेट गया।

"ईश्वर हम पापियो पर कृपा बनाये रख!" उसने सर पर चादर खीचते हुए कहा।

मेज़ पर रखे हुए उसके पाइप से सुलगते हुए बासी तम्बाकू की तेज़ बू आ रही थी और बूरकिन को बडी देर तक नीद नही आयी। वह हैरान था कि आखिर यह दम घुटनेवाली गध कहा से आ रही है।

सारी रात बारिश के छीटें खिडकियो से टकराते रहे।

१८९८

नाले मे

१

उकलेयेवो गाव घाटी में वसा था और प्रधान सडक और रेल के स्टेशन से सिर्फ गाव का घण्टाघर और कपडे की छपाई के कारखाने की चिमनिया ही दिखाई पडती थी। राहगीरो के पूछने पर कि यह कौनसा गाव है, लोग कहते कि "यह वह गाव है जहा पादरी के सहकारी ने मृतकभोज में सारा कैव्योर (मछली के अण्डे) खा डाला था।"

मिल-मालिक कोस्त्युकोव के परिवार के किसी आदमी की मृत्यु पर हुए भोज में गिरजे के वडे पादरी के सहकारी ने खाने की दूसरी वस्तुओ में कैव्योर का एक मर्तवान भी देखा और चाव से उस पर टूट पडा। लोगो ने उसे कोचा, उसकी आस्तीन खीचकर इशारा किया, लेकिन उसने ज़रा भी परवाह न की, वह खाता गया, ऐसे व्यक्ति की तरह खाता चला गया जिस पर जादू कर दिया गया हो। मर्तवान में दो सेर कैव्योर था और वह सारे का सारा खा गया। ये वाते सालो पुरानी हैं, और उस अधिकारी को मरे और दफन हुए भी वहुत दिन हो गये, लेकिन अभी तक कैव्योर वाली घटना हरेक को याद है। समव है कि गाव की ज़िन्दगी इस कदर सुस्त हो कि वहा घटनाए न होती हो, या हो सकता है कि तुच्छ वात को छोडकर जो दस साल पुरानी

है किसी दूसरी बात ने गाववालो का ध्यान आकृष्ट न किया हो। उकलेयेवो गाव के बारे में सिर्फ यही बात बतायी जाती है।

बुखार का यहा बोलबाला था और गर्मियो में भी चिपचिपी कीचड भरी रहती खास तौर पर चहारदीवारियो के नीचे जिनपर पुराने झाड अपनी फैली हुई छाया डाला करते थे। कारखाने के कूडा-करकट और छीट छापने में काम आनेवाले सिरके की बू वहा बसी रहती। चमडे को साफ करने का एक व कपडे के तीन कारखाने गाव के भीतर नही बल्कि गाव की सरहद पर और कुछ तो गाव के बाहर बने हुए थे। ये छोटे छोटे उद्योग थे, जिनमें कुल मिलाकर चार सौ मजदूरो से ज्यादा काम नही करते थे। नदी के पानी में चमडे के कारखाने की सडाध भरी रहती थी, चरागाह कूडे-करकट से घूरे बन गये थे, किसानो के जानवर जूडी महामारी से बीमार रहते और चमडे के कारखाने को बन्द करने का आदेश हुआ। ख्याल था कि कमाई का यह कारखाना बन्द हो चुका है लेकिन देहाती पुलिस के अधिकारी और ज़िला डाक्टर की सहायता से कारखाना गुप्त रूप से चालू था, इनमें से हर एक को कारखाने का मालिक हर महीने दस रूबल देता था। समूचे गाव में टीन की छतोवाले कायदे के पक्के मकान दो थे। एक तो वोलोस्त* के प्रशासकीय बोर्ड का था और दूसरे दोमज़िले मकान में जो गिरजे के ठीक सामने था, ग्रिगोरी पेत्रोविच त्सिवूकिन रहता था। वह येपीफानोवो नगर में एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार का था।

ग्रिगोरी की परचून की दूकान थी, लेकिन यह तो महज़ दिखावा था, उसका असली धधा तो वोद्का, जानवर, उनकी खाले, गल्ला, सुअर—गरज़ यह कि जो चीज़ भी उसके हाथ लग जाती उसका बेचना

*वोलोस्त कई गावो के प्रशासनात्मक समूह को कहते थे। आजकल वोलोस्त का अस्तित्व नही है—मपा०

था, मिसाल के तौर पर जब विदेशो में औरतो के टोपो में मैना के पर लगाने का फैशन था तो वह एक जोडी मैना के तीस कोपेक वसूल करता था। वह जगल खरीद लेता था, पेडो को कटवाकर बेचता था, सूद पर रुपया उधार देता और बहुत चलता पुर्जा बूढा था।

उसके दो बेटे थे। बडा अनीसिम पुलिस के खुफिया विभाग में नौकर था और ज्यादातर बाहर ही रहता था। छोटा स्तेपान व्यापार में लगा और अपने पिता की सहायता करता था, लेकिन उसकी मदद पर ज्यादा निर्भर नही रहा जाता था, क्योकि वह बहरा और रोगी था। उसकी बीवी अक्सीन्या खूबसूरत और फुर्तीली स्त्री थी, वह धार्मिक दिनो को टोपी लगाती और छाता लेकर जाती थी, सबेरे तडके उठती और रात में देर में सोने जाती, घाघरा खुरसे हुए, पेटी में चाबियो का गुच्छा खनकाते हुए, वह दिन भर दौड भाग किया करती, गोदाम से तहखाने और तहखाने से दुकान तक वह चक्कर काटती और बूढा त्सिबूकिन उसको प्रसन्न हो देखा करता। जब कभी वह उसे देखता, उसकी आखें खुशी से भर जाती, साथ ही साथ उसे इस बात का दुख भी था कि अक्सीन्या ने छोटे लडके की जगह बडे बेटे से शादी नही की क्योकि छोटा लडका बहरा था और उससे स्त्री सुन्दरता का सही आदर करने की उम्मीद नही की जा सकती थी।

बूढा घरेलू किस्म का आदमी था और अपने परिवार को वह ससार में सबसे ज्यादा प्यार करता था, खास तौर पर अपने बडे बेटे जासूस और छोटी बहू को। जैसे ही अक्सीन्या उसके बहरे बेटे की बीवी बनी, उसने अपने को एक बहुत व्यापार चतुर औरत के रूप में प्रगट किया। उसे मालूम था कि किस आदमी को चीजें उधार बेची जा सकती है और किसे उधार देने से इन्कार किया जाना चाहिए, चाबिया वह अपने ही पास रखती और इसके बारे में उसे पति का भी विश्वास न था, स्वय गिनती के चौखटे पर हिसाब-किताब करती और एक पक्के

24—948

किसान की तरह घोडो के दात देखकर उन्हे पहचानती और हमेशा हसती या फटकारती रहती थी, और वह जो कुछ भी कहती या करती बूढा सिर्फ प्रशसा ही करता। वह कहता—

"कैसी आदर्श वहू है। कितनी सुन्दर बहू है।"

वह कुछ समय से विधुर था परन्तु अपने लडके की शादी के साल भर बाद वह और ज्यादा न रुक सका और उसने भी शादी कर ली थी। उकलेयेवो से करीब बीस मील दूर रहनेवाली एक लडकी उसके लिए पसद की गयी। उसका नाम वर्वारा निकोलायेव्ना था और वह अच्छे परिवार की लडकी थी, वह उम्र में बडी थी लेकिन खूबसूरत और अभी तक आकर्षक थी। जैसे ही वह मकान के ऊपरी मजिल के कमरे में आकर बसी, मकान रोशन हो गया—मानो खिडकियो में नये शीशे लगा दिये गये हो। मूर्तियो के सामने वत्तिया जलायी जाने लगी हो, वर्फ से उजले सफेद मेज़पोश हर मेज़ पर बिछने लगे, खिडकियो की सिलो पर व सामने के वगीचे में लाल फूल नज़र आने लगे और खाने के वक्त पर हरेक को एक एक तश्तरी अलग अलग मिलने लगी और पहले जैसा एक ही वर्तन से सवके खाने का तरीका खतम हो गया। वर्वारा निकोलायेव्ना की मुस्कान स्नेह व मिठास भरी थी और घर की हर एक चीज़ उसके साथ मुस्कराती लगती थी। परिवार के इतिहास में पहली वार भिखारी, तीर्थयात्री व फकीर मकान के दरवाज़े पर दिखाई देने लगे, खिडकियो के नीचे उकलेयेवो स्त्रियो की सुरीली, शिकायतभरी आवाजें और पिचके गाल वाले वीमार लोगो की, जिन्हे कारखाने से शराबी होने के जुर्म में निकाला गया था, विनती भरी खासी सुनाई पडने लगी। वर्वारा धन, रोटी व पुराने कपडो मे उनका कष्ट दूर करती और वाद में जव वह अपने अधिकारो के सम्वन्ध मे अधिक आश्वस्त हो गयी, दूकान तक से चीज़ें चोरी-छिपे इन लोगो को देने

लगी। एक दिन वहरे लडके ने उसे दूकान से चाय के दो वडल ले जाते देखा और इससे उसे वहुत परेशानी होने लगी। वाद में वह अपने पिता से वोला –

"मा छटाक भर चाय ले गयी है उसे किस खाते में दर्ज करू?"

वूढे ने जवाव नही दिया और थोडी देर चुपचाप सोचता खडा रहा, उसकी भवे फडक रही थी, फिर वह ऊपर अपनी वीवी से वात करने चला गया।

"प्यारी वर्वारा," उसने प्यार से कहा, "अगर तुम्हे कभी भी दूकान से कोई चीज़ लेने की ज़रूरत पडे तो निस्सकोच ले लेना, जो चाहो ले लेना और इसमें दुवारा सोचने की भी तकलीफ न करना।"

और दूसरे दिन अहाते में दौडकर जाते हुए वहरा लडका चिल्लाया–

"मा, जिस चीज़ की ज़रूरत हो ले लेना!"

उसके दान में कुछ अनोखापन था, मूर्तियो के सामने की रोशनी और लाल फूलो की तरह कुछ प्रसन्नचित व दीप्तिमान था। अवटाइड या स्थानीय सरक्षक-सन्त के त्योहारो की तीन दिन की छुट्टिया होती जव किसानो को एक पीपे से खराव व ऐसा वदवूदार गोश्त वेचा जाता जिसके पास खडा होना भी मुश्किल था, शराव पिये लोग दूकान पर खडे अपनी स्त्रियो के शाल, टोपिया व हसिये रेहन रखते, खराव वोद्का के नशे में चूर हो कीचड में लोटते और हर जगह पाप घने कुहासे की तरह वढता-फैलता लगता यह सोचकर अच्छा लगता कि घर में कही एक साफ-सुथरी शान्त स्त्री है जिसका सडे गोश्त और वोद्का से कोई सरोकार नही, ऐसे भीपण कोहरे-पाले के दिनो में उसकी दान-दक्षिणा पूरे यत्र के लिए फालतू आवेग की निकासी का काम करती थी।

त्सिवूकिन परिवार में रात दिन काम लगा रहता। सूरज निकलने के पहले ही अक्सीन्या मुह हाथ घोते और खामती-खखारती

सुनी जाती, रसोई में समोवार उबलता होता और उबलते पानी की घनघनाहट आसन्न सकट की पूर्व सूचना-सी देती लगती। छोटा-सा बूढा ग्रिगोरी पेत्रोविच अपने लम्बेवाले कोट, छपे पाजामे और चमकीले बूट पहने साफ-सुथरा दिखाई पडता और कमरो में वैसे ही घूमता-फिरता जैसे कि किसी मशहूर गीत में ससुर का वर्णन किया गया है। फिर दूकान का ताला खुलता। जैसे ही सवेरा होता और रोशनी फैलती दरवाज़े पर घोडागाडी आ खडी होती और अपनी ऊची टोपी कानो तक खीचते हुए बूढा ग्रिगोरी कूदकर उसमें बैठ जाता। उसे देखकर यह नही लगता कि वह छप्पन वर्ष का है। उसकी पत्नी और बहू उसे ओसारे तक छोडने जाती। ऐसे मौको पर अपना वढिया साफ कोट पहने और तीन सौ रूबल के वढिया काले घोडे की गाडी में बैठा बूढा फरियादें व दर्ख्वास्ते लिये किसानो से मिलना नापसद करता था, किसानो से उसे परहेज़ी नफरत थी और किसी भी किसान को फाटक पर खडे देखकर वह गुस्से मे चिल्लाता—

"तू वहा क्यो खडा है? दूर हो यहा से!"

और यदि कोई भिखारी खडा होता तो वह चीखता—

"तुझे भगवान देगा!"

फिर वह अपने काम पर रवाना हो जाता। उसकी बीवी अपने कपडो पर एक काला झाडन लपेटे कमरो की सफाई करती या रसोई घर में मदद देती। अक्सीन्या दूकान में खडी विक्री किया करती और उसकी हसी या फटकार, उसके ठगने पर गाहको के क्रोध भरे जुमले, पैसो की खनक व बोतलो की झनझनाहट अहाते में सुनाई पडती। यह भी स्पष्ट हो जाता कि दूकान में वोद्का का गुप्त व्यापार* चल रहा है।

---

*रूस में वोद्का के व्यापार पर सरकार का एकाधिकार था। लेकिन लोग छिपे तौर मे वोद्का बनाने-बेचते थे।

वहरा या तो दूकान पर वैठता या गलियो में विना टोपी लगाये झोपडियो या आसमान को ताकते हुए घूमा करता। दिन में छ वार चाय पी जाती और चार वार खाना खाया जाता। और शाम को दिन भर की विक्री का हिसाव हो चुकने और उसके वहीखातो में टक चुकने के वाद सव लोग सोने जाते और गहरी नीद सोते।

उकलेयेवो की तीनो सूती मिलो मे उनके मालिको तक के यहा टेलीफोन लगे हुए थे ख्रीमिन जेठे, ख्रीमिन छोटे व कोस्त्युकोव। टेलीफोन का तार वोलोस्त-वोर्ड के दफ्तर तक भी गया था पर जल्दी ही वहा के टेलीफोन में खटमलो, तिलचटो आदि के घुस जाने के कारण वह वेकार हो गया। वोलोस्त के अगुआ को पढना-लिखना कम आता था और हर शब्द का पहला अक्षर वह वडा वडा लिखता था, पर जव टेलीफोन विगडा, वह बोला –

"हा, हा विना टेलीफोन के काम चलना मुश्किल होगा।"

जेठे और छोटे ख्रीमिनो के वीच वरावर मुकदमेवाजी हुआ करती और कभी छोटे ख्रीमिन परिवार में आपस में भी झगडा होता और आपस में भी मुकदमेबाजी हुआ करती, झगडे के दौरान में उनका मिल एक दो महीने के लिए वन्द हो जाता और समझौते के वाद फिर चालू हो जाता। इस सवसे उकलेयेवो निवासियो का वडा मनोरजन होता, क्योकि हर झगडा वातचीत और गपवाजी के लिए वढिया मसाला दे जाता। छुट्टियो के दिन कोस्त्युकोव व छोटे ख्रीमिन गाडियो पर घूमने निकलते, उनकी गाडिया उकलेयेवो में तेजी से दौडती और वछडो आदि को कुचलती जाती। इन दिनो अक्सीन्या, अपने सवसे सुन्दर वस्त्र पहनकर दूकान के सामने आकर टहलने लगती, उसके कलफदार साये की सरसराहट सुनाई पडती, छोटे ख्रीमिन उसे तेजी से अपनी गाडी में वैठाकर ले जाते, यह वहाना करते हुए कि वे उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध भगाये

लिये जा रहे हैं। फिर बूढा त्सिबूकिन वर्वारा के साथ घूमने निकलता, अपना नया घोडा दिखलाते हुए।

रात में सैर के बाद, लोगो के सोने जाने के बाद छोटे ख्रीमिनो के घर के अहाते में एक कीमती हार्मोनिका बाजे बजने की धुनें सुनाई पडती, अगर चाद निकला होता तो यह सगीत लोगो के दिल खुश एव उद्वेलित करता और उकलेयेवो ऐसी भद्दी जगह न लगती।

२

बडा लडका अनीसिम घर बहुत ही कम आता, सिर्फ बडे त्योहारो पर ही आता, पर सौगाते और चिट्ठिया देहातियो के साथ अक्सर भेजता। पत्र अजनवी, सुन्दर अक्षरो में पूरे कागज़ पर दर्ख्वास्त की तरह लिखें हुए होते। इनमें मुहाविरो का भी इस्तेमाल रहता जो अनीसिम कभी नही वोलता था, "सम्मानित माता-पिता, आपकी भौतिक आवश्यकताओ की परितुष्टि के लिए मैं औपधिक चाय का एक वण्डल प्रेपित करता हू।" हर पत्र के नीचे घसीट में "अनीसिम त्सिवूकिन" लिखा होता, लगता दस्तख़त टूटे निव से किये गये है और दस्तखतो के नीचे, उमी लिपि मे लिखा होता "एजेण्ट"।

हर पत्र ज़ोर ज़ोर से कई कई वार पढा जाता और भावावेश मे अभिभूत वूढा कहता —

"लो वह घर पर नही ठहरा और पढने-लिखने चल दिया। खैर कोई वात नही। मैं कहता हू जिसकी जो मरज़ी हो, वही करे।"

श्रवटाइड त्योहार के ठीक पहले एक दिन ज़ोर की ठडी वर्षा होने लगी और ज़ोर का पाला पडने लगा, वूढा और वर्वारा खिडकी मे वाहर का दृश्य देख रहे थे, एकाएक उन्हे स्टेशन मे स्लेज पर आता अनीसिम

दिखाई पडा। किसी को उसके आने का आशा न थी। वह वडी परेशानी और छिपे भय के साथ कमरे में घुसा, जो एक क्षण के लिए भी कम होता नही लगता था, पर वह अपने व्यवहार में अपनापन और उल्लास का भाव वनाये रहा। उसे लौटने की कोई जल्दी न थी और लगता था मानो उसकी नौकरी छूट गयी है। वर्वारा उसके आने से खुश लगती थी, वह छिपकर उसे ताकती, लम्बी सासे लेती और किसी जानकारी में वारवार अपना सिर हिलाती।

"यह हुआ कैसे, खुदा जाने।" वह वोली, "च-च-च-च, लडका कम से कम सत्ताईस वरस का हुआ और अव तक कुआरा है।"

दूसरे कमरे से लगता था मानो "ओफ च-च-च-च, ओह, च-च-च-च" को एकरसता से धीमे धीमे वार वार दुहराने के अलावा वह और कुछ नही कर रही थी। उसने वूढे और अक्सीन्या से गुपचुप सलाह मशविरे किये और वे भी पडयन्त्रकारियो की तरह भेदभरी रहस्यमय निगाहो से छिपे छिपे ताकने लगे।

तय हो गया कि अनीसिम को शादी कर लेनी चाहिए।

वर्वारा न उससे कहा—"तुम्हारे छोटे भाई ने वहुत दिन पहले शादी कर ली और तुम लड़रे वने विकाऊ मुर्गे की तरह घूमते हो। सुनो, ऐसे काम नही चलेगा। भगवान ने चाहा तो तुम्हारी शादी होगी और फिर अगर तुम चाहते हो तो अपने काम पर चले जाना और तुम्हारी वीवी यहा घर पर रहकर हम लोगो को काम में मदद करेगी। तुम्हारी जिन्दगी में कोई ढव-ढर्रा तो है नहीं, मेरे वच्चे! तुम विल्कुल भूल गये हो कि जिन्दगी में सलीका क्या होता है, अरे ये शहराती लडके, च-च-च।"

जव त्सिवूकिन परिवार में कोई शादी करना चाहता तो उनके रईस होने के कारण सुन्दर से सुन्दर वहू की तलाश की जाती। इस वार भी

अनीसिम के लिए एक सुन्दर लडकी तलाश की गयी। वह खुद तो असुन्दर, पस्त कद का, दुबला-पतला, बीमार ढाचे का तुच्छ-सा व्यक्ति था, उसके गाल मोटे और फूले फूले थे मानो वह उन्हे फुलाता रहता हो। उसकी निगाह पैनी थी और वह पलक झपकाये बिना देखता, उसकी लाल दाढी घनी नही थी और वह कुछ सोचने लगता तो दाढी का सिरा मुह में डाल उसे चबाया करता और मानो इस तसवीर को पूरा करने के लिए वह पियक्कड भी था, जैसा कि उसकी चाल और चेहरे से साफ प्रकट होता था। फिर भी जब उसे बताया गया कि उसके लिए एक बीवी ढूढली गयी है और वह बहुत सुन्दर है, तब वह बोला—

"खैर, मै ही कौन बडा बदसूरत हू? इस बात से कौन इन्कार करेगा कि त्सिबूकिन लोग सुन्दर है।"

कस्बे के पास ही तोर्गूयेवो गाव था। इसका आधा तो इधर हाल में कस्बे का हिस्सा बन गया था जबकि बाकी आधा हिस्सा गाव का गाव ही रहा। शहर वाले आधे हिस्से में, अपने ही घर में, एक विधवा रहती थी उसकी एक बहुत गरीब बहन थी जो मजदूरी करती थी, इस बहन की एक लडकी लीपा थी जो खुद दिन में शहर में मजदूरी करती थी। लीपा की सुन्दरता की चर्चा शहर में होने लगी और सिर्फ उनकी अत्यधिक गरीबी के कारण लोग बात आगे नही बढाते थे। आम धारणा यह थी कि कोई बडी उम्र का आदमी, शायद कोई विधुर उसकी गरीबी के बावजूद उससे शादी कर लेगा या यू ही अपने साथ रहने को ले जायेगा। और तब उसकी मा की गुजर-बसर का भी इन्तजाम हो जायेगा। वर्वारा ने लीपा के बारे में शादी ब्याह करानेवालो से पूछ-ताछ की और फिर खुद तोर्गूयेवो के लिए रवाना हो गयी।

लीपा की मौसी के घर वधू दिखाने की रस्म बाकायदा अदा हुई, भोजन और शराब उडी, लीपा गुलाबी फ्राक पहने थी जो खास तौर पर इस मौके पर बनी थी, बालो में लाल सुर्ख फीता बाधे हुई थी, जो आग की लपट की तरह दमक रहा था। वह दुबली-सी नाजुक-सी, पीली-सी, सुकुमार नाक नक्शे वाली लडकी थी। खेतो में काम करते रहने से उसका रग तप गया था, उसके होठो पर शरमाती हुई उदास मुस्कान खेल रही थी, उसकी निगाह बच्चो जैसे विश्वास व जिज्ञासा से भरी थी।

उसकी उम्र बहुत कम थी, वह अभी किशोरी ही थी और उसके उरोज उभरे नही थे, पर शादी के लायक उसकी उम्र हो गयी थी। वह सुन्दर थी इसमें किसी को कोई सन्देह नही हो सकता था। अगर उसके खिलाफ कोई बात कही जा सकती थी तो यही कि उसके हाथ बडे बडे और मर्दो जैसे थे जो कि इस समय बडे लालपजो की तरह उसकी कमर के आसपास लटक रहे थे।

बूढे ने मौसी से कहा—"हमें दहेज की परवाह नही है। हमने दूसरे लडके स्तेपान के लिए भी एक गरीब घर की लडकी ली थी और उस लडकी की जितनी तारीफ की जाय थोडी है। वह घर और दूकान में हर काम बडी सुघरता से करती है।"

लीपा दरवाज़े के पास खडी थी। उसके चेहरे का भाव कह रहा था—"मुझे तुम पर पूरा विश्वास है तुम जो चाहो, मेरे साथ व्यवहार करो।" उसकी मज़दूरनी मा घबराहट और डर के मारे रसोई में छिपी हुई थी। उसकी जवानी में एक बार एक व्यापारी ने, जिसके घर वह फर्श की सफाई कर रही थी, पैर पटक कर उसे धमकाया था, वह डर से बेहोश-सी हो गयी थी और तब से वह अपना डर कभी भी नही मिटा पायी थी। उसके हाथ पैर यहा तक कि गाल भी

डर के मारे कापा करते थे। रसोई में बैठी वह सुनने की कोशिश कर रही थी कि मेहमान लोग क्या कह रहे है। प्रार्थना करने के ढग से बराबर अपने सीने पर सलीब का निशान बनाती जा रही थी और माथे से हाथ लगाये मूर्ति की ओर ताक रही थी। अनीसिम शराब के हल्के नशे में बीच बीच में रसोई का दरवाज़ा खोलता और लापरवाही से कहता—

"तुम वहा क्यो बैठी हो, प्यारी मा? तुम्हारी कमी हमें खल रही है।"

और प्रास्कोव्या झेंपती हुई अपने सूखे, दुर्बल सीने से हाथ लगाकर हर बार कहती—

"मेहरबानी आपकी आप बडे दयालु है"

वह देखने की रस्म के बाद शादी का दिन तय हुआ। अनीसिम घर में कमरो में सीटी बजाता हुआ चक्कर लगाता, फिर एकाएक जैसे उसे कोई बात याद आ जाती हो, किसी सोच में पड जाता और बधी, तेज़ दृष्टि से फर्श को घूरने लगता, मानो फर्श के भीतर ज़मीन मे गहरे देखने की कोशिश कर रहा हो। उसने न तो इस बात पर सतोष प्रकट किया कि शीघ्र ही—ईस्टर के दिन उसकी शादी हो जायेगी और न अपनी होनेवाली पत्नी को देखने की इच्छा ही प्रकट की, सिर्फ हौले हौले सीटी बजाता हुआ टहला करता। यह बात साफ थी कि वह अपन पिता और सौतेली मा को खुश करने के लिए ही शादी कर रहा था और इस लिए भी कि गाव की प्रथा थी कि लडके शादी करे, ताकि घर में एक मददगार आ जाय। जब चलने का समय आया, तब भी उसमें कोई उतावली नही दिखायी पडी, उसका रग ढग उसमे बिल्कुल भिन्न था, जो पहले घर आने पर हुआ करता था—वह पहले से भी ज्यादा अपनापे मे रहता और हमेशा गलत बाते कहा करता।

३

शिकालोवो गाव में दो दर्ज़िन वहने रहती थी, जो ख्लिस्ती सम्प्रदाय की अनुयायी थी। उन्हे शादी की पोशाके वनाने का काम मिलता था और वे अक्सर त्सिवूकिन परिवार में पोशाके नपवाने आती थी और वाद में चाय पीने के लिए देर तक रुकी रहती थी। वर्वारा के लिये एक वादामी रग की पोशाक वनायी गयी जिसपर काला लैस और कचकडे लगे थे, अक्सीन्या के लिए हल्के हरे रग की पोशाक थी जिसके सामने पीला कपडा लगा था और पीछे लम्वा कपडा लटकता था। जव दर्ज़िने अपना काम खत्म कर लेती तो त्सिवूकिन उन्हे नगद दाम नही देता था, वल्कि दूकान से ऐसा सामान दे देता था जिसका उनके लिए कोई इस्तेमाल नही होता था और उस सामान के—सार्डीन मछली के डिव्वो और चर्वी की मोमवत्तियो के वण्डल लिये वे उदास लौट जाती और गाव के वाहर खेतो में पहुच एक टीले पर वैठ रोया करती।

अनीसिम नयी पोशाक से लैस शादी के तीन दिन पहले आया। वह रवड के चमकदार ऊपरी वूट पहने हुए था और गले में टाई की जगह लाल डोरी वाघे हुए था, जिसके छोरो पर गुरिय वघे थे। अपना नया कोट उसने कन्धो पर डाल रखा था और आस्तीने ऐसे ही लटक रही थी।

मूर्तियो के सामने गभीरतापूर्वक प्रार्थना करने के वाद उसने अपने पिता को नमस्कार किया और चादी के दस रूवल व दस आधे रूवल दिये, इतनी ही रकम उसने वर्वारा को दी पर अक्सीन्या को उसने वीस चौथाई रूवल दिये। इस भेंट की मुख्य वात यह थी कि हर सिक्का विल्कुल नया था और सूरज की रोशनी में खूव चमकता

था। गभीर और सम्भ्रान्त लगने की कोशिश में अनीसिम अपने चेहरे की मासपेशियो को ताने हुए था और गाल फुलाये हुए था। उससे शराब की बू आ रही थी, लगता था कि हर स्टेशन के विश्रामगृह में जाकर उसने पी है। और फिर अपनापे के दिखावे का वही हावभाव, व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कुछ दिखावटीपन। बाद में अनीसिम व उसके पिता ने चाय पी कुछ खाया, वर्वारा बराबर नये सिक्को से खेलती, अपने उन जान-पहिचानवालो के बारे में पूछती रही जो जाकर शहर में बस गये थे।

"सब ठीक है, ईश्वर की कृपा है," अनीसिम ने उत्तर दिया। "अलबत्ता येगोरोव के घर मे एक घटना हुई थी, उसकी पत्नी सोफिया निकीफोरोवना मर गयी। उसे तपेदिक थी। उसने मृतक भोज हलवाई की दूकान मे तैयार कराया, ढाई रूबल फी शख्स। शराब भी थी। तुम तो जानती हो, इधर के कुछ दहकान भी थे और उन्हे भी ढाई रूबल फी शख्स वाला खाना मिला, पर उन्होने कुछ खाया नही। मानो गवारो को चटनी-मुरब्बो का स्वाद मालूम हो।"

सिर हिलाते हुए ताज्जुब से बूढा बोला, "ढाई रूबल!"

"हा और क्या? तुम तो जानते हो, वह गाव तो है नही। आप किसी रेस्त्रा में जाय, एक दो चीजो का नाश्ता करे, इस बीच कुछ और लोग आ जाय, उनके साथ आप थोडी बहुत पीयें और बस सवेरा हो गया, और तीन चार रूबल फी शख्स खर्च हो गया। और अगर समोरोदोव हुआ, जो आखिर मे कहवा-ब्राण्डी पीता है, और ब्राण्डी का एक जाम साठ कोपेक का होता है।"

बूढा मुग्ध होकर बोला, "कैसा झूठ बोलता है, कैसा झूठ बोलता है!"

"अरे मैं हमेशा समोरोदोव के साथ ही घूमता हू। वह ही मेरे खत लिखता है। वह वहुत खुशनवीस है। और मा! अगर मैं तुम्हे वता दू," खुशी खुशी वर्वारा से बात करते हुए अनीसिम कहता गया, "अगर तुम्हे वता दू कि समोरोदोव कैसा आदमी है, तो तुम यकीन भी न करोगी। हम सब उसे मुख्तार कहते हैं, वह विल्कुल अर्मीनिया के लोगो जैसा है, सावरे रग का। मै उसे खूब पहिचानता हू और उसकी हर वात से वैसे ही वहुत अच्छी तरह परिचित हू जैसे अपनी हथेली से, और, मा, वह यह समझता है और मुझसे वडा लगाव मानता है, वह और मैं कभी एक दूसरे से अलग नही रहते। उसे मुझसे कुछ डर लगता है पर तव भी वह मेरे विना नही रह सकता। जहा मैं जाता हू वहा वह भी जाता है। मुझे वहुत अच्छी पहिचान है, मेरी आख कभी धोखा नही खाती, मा। मिसाल के लिए कोई किसान गुदडी वाजार में कोई कमीज वेचता होता है तो 'रुको' मैं कहता हू, 'यह चोरी का माल है'। और मैं विल्कुल ठीक साबित होता हू, वह चोरी का ही माल निकलता है।"

"तुम्हे कैसे पता लग जाता है?" वर्वारा ने पूछा।

"मैं नही जानता। मेरी आख धोखा नही खाती, शायद यही वात है। मुझे कमीज के वारे में कुछ भी नही मालूम होता, फिर भी मैं उस ओर आकृष्ट हो जाता हू। हा, वह चोरी की होती है, वस असली वात यही है। पुलिस के लोग मुझे जाते देखते है तो हमेशा कहते हैं—"वह चला अनीसिम, छिपकर चिडिया फासने"। चोरी का माल वरामद करने को वे लोग चिडिया फासना कहते हैं। हा, अरे चोरी तो कोई भी कर सकता है, चोरी का माल रखना मुश्किल काम है। दुनिया वहुत वडी है, पर इसमें चोरी का माल रखने की जगह नही है।"

"हमारे गाव में गुन्तोरेव के यहा से पिछले हफ्ते किसी ने एक

मेढा और दो भेडें चुरा ली," वर्वारा ने गहरी सास लेते हुए कहा, "और यहा चोर पकडनेवाला कोई है नही।"

"क्यो, मै ही इस मामले की जाच कर सकता हू, उसमें कुछ नही, ऐसा तो हो सकता है।"

शादी का दिन आया। अप्रैल का ठढा दिन था पर सूरज चमक रहा था और आनन्द छा रहा था। सवेरे से ही दो और तीन घोडो वाली बग्घिया उक्लेयेवो की सडको पर घटिया बजाती बम व घोडो के अयालो पर रगीन फीते लहराती इधर-उधर दौड रही थी। शोरगुल से घबराये कौवे पेडो पर काव काव कर रहे थे और छोटी चिडिया लगातार गा रही थी मानो वे खुश हो कि त्सिवूकिन के घर शादी है।

घर पर मेजो पर पहले से ही बडी भारी भारी मछलिया, सुअर का गोश्त, मसाले भरी चिडिया, छोटी मछलियो के टिन और हर तरह की चटनी रखी थी। वोद्का और शरावो की अनगिनत वोतले सजी हुई थी। भुने गोश्त और डिब्बावद वासी केकडे की गध सव ओर छायी हुई थी। वूढा एक मेज से दूसरी मेज पर जा जाकर एक छुरी से दूसरी छुरी तेज करता घूम रहा था। हर कोई वर्वारा को वुला रहा था। कोई कुछ मागता, कोई कुछ और वह थकान के कारण ज़ोर ज़ोर से सासे लेते हुए पूरी तरह तमतमायी हुई रसोई घर से वाहर भीतर आ जा रही थी। रसोई में कोस्त्युकोव का खानसामा और छोटे ख्रीमिन का रसोइया सवेरे तडके से जुटे हुए थे। वाल घुघराले किये और सिर्फ कोर्सेट पहने नये जूते चरमराती अक्सीन्या अहाते में तूफान की तरह दौडती फिरती, इतनी तेज़ी से कि लोग कभी कभी सिर्फ उसकी नगी टागें और खुली छाती ही देख पाते। शोरगुल के वीच कसमे और गालिया सुनाई पडती, सडक से गुज़रने वाले ठिठक कर खुले फाटक के भीतर ताकने लगते, हर चीज़ मे यह वात लगती थी कि कोई असाधारणवात होने वाली है।

"वे वधू को लेने गये है।"

घटियो की आवाज़ गाव से दूर जाते हुए खो गयी दिन के दो वजे के वाद, भीड में रेलमपेल मच गयी, घटियो की आवाज़ फिर सुनाई दी, वह आ रही थी। गिरजाघर ठसाठस भरा था, ऊपर टगे दीवालगीरो की मोमवत्तिया जल रही थी और बूढे त्सिवूकिन के विशेष अनुरोध पर वाजे वजानेवाले स्वर-लिपिया हाथो में लिये गा रहे थे। लैम्पो की चमक और कपडो की रगीनी मे लीपा की आखें चकाचौंध हो रही थी, उसे लग रहा था कि मगीतज्ञो की आवाज़ छोटे छोटे हथौडो की तरह उसकी खोपडी पर पड रही है, कोर्सेट उसने आज पहले पहल पहने थे और वे कस रहे थे, उमके नये जूते उसे काट रहे थे और वह लग रही थी मानो अभी वेहोशी से उठी हो और अभी तक समझ न पा रही हो कि वह है कहा। काला कोट पहने और टाई की जगह लाल डोरी वाधे अनीसिम विचारो में खोया लग रहा था और एक जगह टकटकी वाघे घूर रहा था, जव गायक-मण्डली जोर से चिल्लाने लगी उसने जल्दी जल्दी अपने सीने पर सलीव का चिन्ह वनाया। वह वहुत द्रवित हो गया था और रो देना चाहता था। इस गिरजाघर को वह वचपन से जानता था। उसकी दिवगत मा उसे गोद में लिये, यहा धार्मिक सस्कारो के लिए आती थी और पवित्र जल ग्रहण करती थी, वाद मे वह अन्य वालको के साथ यहा धार्मिक गीत गाने आता था, हर कोने, हर मूर्ति को वह अच्छी तरह जानता था। अव यहा उसका विवाह हो रहा था, क्योंकि यही उचित वात थी, पर वह इस समय यह नही सोच रहा था कि यहा इस समय उसी की शादी हो रही है, यह वात किमी तरह उसके दिमाग में आने से रह गयी थी। आसुओ के कारण वह मूर्तिया नही देख पा रहा था, दिल पर उसे एक वोझ-सा लग रहा था, वह ईश्वर से प्रार्थना कर

"बच्चो, प्यारे बच्चो!" वह जल्दी जल्दी बडबडा रहा था, "प्यारी अक्सीन्या, प्यारी वर्वारा, हम लोग एक दूसरे के साथ शान्ति के साथ रहे, शान्ति और चैन से, मेरी प्यारी कुल्हाडिया"

शराब पीने की उसे आदत नही थी और जिन के एक गिलास में ही उसे नशा हो गया। यह कडवी, मतली लानेवाली शराब, खुदा जाने काहे की बनी हुई थी कि जिसने भी उसे पिया वह ऐसे विमूढ सा हो गया मानो किसी ने सिर पर कोई भारी चीज़ दे मारी हो। आवाज़ भारी और न सुनाई पडनेवाली हो गयी।

मेज़ के चारो ओर स्थानीय पादरी, कारखानो के फोरमैन अपनी बीवियो के साथ, व्यापारी और पडोस के गावो के सराय मालिक बैठे थे। वोलोस्त के प्रधान और क्लर्क जो पिछले चौदह वर्षो से दफ्तर में साथ साथ थे और जिन्होने किसी को धोखा दिये बिना या किसी का अहित किये बिना आज तक न तो एक भी कागज़ पर दस्तखत किये थे और न किसी को दफ्तर से जाने ही दिया था, यहा भी अगल बगल बैठे थे, मोटे-ताजे और चिकने-चुपडे ये लोग झूठ से ऐसे ओत-प्रोत लगते थे कि उनके चेहरो की खाल तक दगाबाजो की खाल मालूम पडती थी। क्लर्क की तिपखी दुबली-पतली पत्नी अपने सब बच्चो को दावत में समेट लायी थी और वहा शिकारी चिडिया की तरह बैठी हर थाली की ओर ताकती जाती थी और जो कुछ पाती झपट कर बटोर लेती, उसे अपनी व अपने बच्चो की जेबो में भरती जाती थी।

लीपा पत्थर की मूर्ति की तरह निश्चल बैठी थी, उसके चेहरे पर अब भी वही भाव अकित था जो गिरजाघर में था। अनीसिम ने जान-पहिचान होने के बाद से अब तक उससे बात भी नही की थी और उसे यह तक नही मालूम था कि लीपा की आवाज़ कैसी है,

ग्रौर ग्रव वह उसकी वगल में वैठा चुपचाप जिन पी रहा था ; जव उसे नशा चढ गया तो वह लीपा की मौसी से वात करने लगा–

"मेरा एक दोस्त है उसका नाम है समोरोदोव। वह वडा ग्रनोखा ग्रादमी है, वह सम्मानित नागरिक है ग्रौर वात करने का ढग जानता है, पर मौसी मैं उसे खूव पहिचानता हू ग्रौर वह यह वात जानता है। हम लोग उसके स्वास्थ्य की कामना करते हुए शराव पियें, मौसी!"

वर्वारा मेहमानो से खाने का इसरार करती हुई मेज़ के चारो तरफ घूम रही थी, वह थकी हुई ग्रौर हक्की-वक्की हो रही थी, पर इस वात पर वहुत खुश थी कि इतना सारा खाना वना था ग्रौर चीज़ शान-शौकत की थी–ग्रव कोई किसी वात पर उगली नही उठा सकता। सूरज डूव गया पर दावत चलती रही, मेहमानो को इस वात का ख्याल न था कि वे खा क्या रहे है, कौन क्या कह रहा है यह भी सुनाई नही पड रहा था, सिर्फ वीच वीच में एक क्षण के लिए सगीत रुक जाने पर ग्रहाते मे किसी ग्रौरत की ग्रावाज़ साफ सुनाई पडती–

"हमारे खून चूसने वाले ग्रत्याचारी, इनको मौत समेट ले!"

शाम को वाजे की धुन पर नाच शुरू हुग्रा। छोटे ख्रीमिन ग्रपने साथ शराव लेकर ग्राय ग्रौर उनमें से एक दोनो हाथो में शराव की वोतले लिए ग्रौर दातो में एक जाम दवाकर नाचा, जिस पर सव खूव हसे। 'क्वेड्रिल' नाच में कुछ लोगो ने ताल वदलकर रूसी ढग मे वैठ वैठ कर टागे फेंकना शुरू कर दिया। हरी फ्राक पहने ग्रक्सीन्या ग्रपने लम्वे दामन से हवा उडाती तेज़ी से गुज़री किसी नाचने वाले ने उसकी पोशाक की झालर पर पैर रख दिया जिससे वह फट गयी।

'खूटा' चिल्लाया–"वच्चो! तुमने चवूतरा तोड दिया, ग्ररे वच्चो!"

अक्सीन्या की आखें निश्छल व भूरी थी और वह बिना पलक झपकाये ताका करती, उसके चेहरे पर हमेशा एक निरीह मुस्कान खेला करती। उसकी अपलक दृष्टि, लम्बी गरदन पर टिका छोटा-सा सिर और उसके शरीर के लचीलेपन में कुछ साप जैसी बात थी, उसकी हरी पोशाक के पीले अग्रभाग व उसकी स्थायी मुस्कान से उस साप की झलक मिलती थी, जो वसन्त ऋतु में जई के पौधो के बीच अपना पूरा लम्बा शरीर खीचता हुआ बटोहियो की ओर ताकता है। ख्रीमिन बन्धु उससे सहज आत्मीयता का बरताव करते थे और यह स्पष्ट था कि सबसे बडे भाई के साथ उसका काफी समय से घनिष्ट सम्पर्क रहा है। पर उसका बहरा पति कुछ भी नही देख पाता था और इस समय भी वह उसकी ओर ताक भी नही रहा था, वह पैर पर पैर लगाये वैठा सूखे अखरोट खा रहा था और अखरोट के छिलके इस ज़ोर से तोड रहा था कि हर वार लगता था मानो पिस्तौल दागी गयी हो।

फिर बूढा त्सिबूकिन अपना रूमाल हिलाता हुआ, यह दिखाता हुआ फर्श के बीचोबीच जा खडा हुआ कि वह भी नाचना चाहता है, एक कमरे से दूसरे कमरे होती हुई कानाफूसी बाहर अहाते तक फैल गयी कि "वह खुद नाच रहा है! खुद!!"

असल में नाची तो वर्वारा, बूढा सिर्फ सगीत की धुन पर रूमाल हिलाता हुआ थिरकता रहा, पर उत्सुक भीड खिडकियो पर ठसा, ठसभरी खिडकियो मे झाकती रही और आनन्द लेती रही —इस भीड ने क्षणभर को उसे हर बात के लिए उसकी अमीरी और हर अन्याय के लिए क्षमा कर दिया था।

लोग बाहर से चिल्ला रहे थे—"जमे रहो, ग्रिगोरी पेत्रोविच, कमाल कर दिया, लगे रहो! बुढऊ में अबकी भी दमखम है! हा-हा-हा!"

रात एक वजे के वाद उत्सव समाप्त हुआ। अनीसिम गवैयो व वाजो वालो के पास लडखडाता हुआ पहुचा और हर एक को विदा भेंट की तरह आधे रूवल का एक एक नया सिक्का दिया। वूढा लडखडा तो नहीं रहा था पर नशे में धुत्त वह डगमग डगमग हो रहा था और हर मेहमान से विदा लेते हुए कह रहा था—"शादी में दो हजार रूवल खर्च हुए।"

जव लोग जा रहे थे तभी पता लगा कि कोई अपना पुराना कोट छोड गया है और उसकी जगह एक शरावखाने के मालिक का नया कोट पहन गया है। एकाएक सचेत हो, अनीसिम चिल्लाया—

"ठहरो! मैं अभी पता लगाता हू! मैं जानता हू कि नया कोट कौन ले गया है! ठहरो!"

वह वाहर गली में दौड पडा और एक मेहमान को पकडने की कोशिश करने लगा, उसे पकडकर घर लाया गया, और एक कमरे में धकेल कर वन्द कर दिया गया, जहा मौसी पहले से ही लीपा के कपडे उतार रही थी। अनीसिम नशे में धुत, क्रोध मे लाल व पसीने से सरावोर था।

४

पाच दिन गुजर गये। जाने मे पहले वर्वारा मे विदा लेने के लिए अनीसिन ऊपर पहुचा। मूर्तियो के मामने का दीप जल रहा था और लोवान की खुशवू आ रही थी, वर्वारा खिडकी के पास वैठी, लाल ऊन का मोजा वुन रही थी।

"अच्छा, लेकिन तुम हम लोगो के पास ज्यादा तो ठहरे नही," उसने कहा, "हमसे ऊव गये, शायद? च—च—च—यहा

चलने लगे। सूरज डूब रहा था, उसकी किरणें झाडियो में घुसकर तनो को रोशन कर रही थी। कही आगे से आवाज़ो की भनभनाहट आ रही थी। उक्लेयेवो की लडकिया बहुत आगे आगे जा रही थी, झाडियो में रुक रुककर शायद कुकुरमुत्ते ढूढती जा रही थी।

येलिजारोव ने चिल्लाकर कहा—"ए लडकियो। मेरी सुन्दरियो।"

उसकी आवाज़ का हसी से स्वागत हुआ।

"खूटा आ रहा है। खूटा। बूढा बक्कू।"

और प्रतिध्वनि में भी हसी सुनाई दी। और अब वे बाग से बहुत आगे बढ गये थे। कारखानो की चिमनियो की चोटिया दिखाई पडने लगी थी और गिरजाघर के घन्टाघर पर लगा सलीब सूरज की रोशनी से चमक रहा था, गाव आ गया था, "वही गाव जहा पादरी का सहायक मृतकभोज में सारी कैव्योर खा गया था"। अब शीघ्र ही घर पहुचने वाले थे, अब उन्हे सिर्फ इस बडे नाले में उतारना था। लीपा और प्रासकोव्या जो अब तक नगे पैरो चल रही थी जूते पहनने के लिए रुक गयी, ठेकेदार उनके पास घास मे बैठ गया। ऊपर से देखने पर छोटी-सी नदी, सफेद गिरजाघर और बेंत की झाडियो के कारण उकलेयेवो का दृश्य सुन्दर और शान्तिमय लगता था पर किफायत के लिए गहरे उदास रग में रगी कारखानो की छते इस प्रभाव को नष्ट कर देती थी। नाले के दूसरे, सामने वाले ढलान पर रोश के खेत दिखाई पडते थे इधर-उधर पूलो में, ढेरो में मानो आधी से बिखरे हो, या जहा सिर्फ कटाई हुई थी, कतारो में, जई भी पक गयी थी और डूबते सूरज की रोशनी में मोती जैसी चमक रही थी। फसल की कटाई ज़ोरो से चल रही थी। आज छुट्टी थी, कल वे रोश और पुआल इकट्ठा करेंगे और परसो इतवार होगा, फिर छुट्टी का दिन, रोज़ ही बादल बिजली कही न

कही गरजती थी, हवा में उमस थी और लगता था कि शीघ्र ही वर्षा होगी, और खेतो की ओर देखते हुए हर एक सोच रहा था—अगर कटाई वक्त से हो जाय—और हर एक के हृदय में खुशी और प्रसन्नता धुक-धुका रही थी।

प्रास्कोव्या ने कहा—"इस साल पुआल बनाने वाले अच्छा पैसा पा रहे हैं, उन्हे एक रूबल और चालीस कोपेक प्रति दिन मिल रहे हैं।"

कज़ानस्कोये के मेले से लोग लगातार लौट रहे थे, औरते, नयी टोपिया लगाये कारखाने के मज़दूर, भिखारी, बच्चे एक ठेला गर्द का गुबार उडाता निकल गया, उसके पीछे एक घोडा चला आ रहा था, उसके मालिक उसे बेच नही पाये थे और लग रहा था मानो बिक्री न हो पाने से घोडा खुश हो। अब एक अडियल गाय सीगो के जरिये पकड कर ले जायी जा रही थी, एक ठेला और गुज़रा जिस पर शराब पिये किसान बैठे थे, उनके पैर ठेले के बाहर लटक रहे थे। एक वृद्धा स्त्री एक छोटे बच्चे का हाथ पकडे गुज़री, बच्चे के सिर पर बडी भारी टोपी थी और पैरो में बहुत बडे बूट थे, जिनके कारण उसके घुटने झुक नही पा रहे थे, गर्मी और भारी बूटो के कारण थककर चूर होने पर भी बच्चा एक छोटी-सी तुरही अपनी पूरी ताकत से बजाये जा रहा था, वे ढलान पार कर गाव की गली में मुड गये थे, पर तुरही की आवाज़ अब भी सुनाई पड रही थी।

"हमारे मिल-मालिको को कुछ हो गया है," येलिज़ारोव ने कहा। "दुर्भाग्य! कोस्त्युकोव मुझसे नाराज़ है। उसने कहा—'तुमने करनस में बहुत सारे तख्ते लगा दिये है।' मैंने पूछा—'बहुत सारे? मैंने तो उतने ही लगाये है, जितनो की ज़रूरत थी, वसीलि दनीलिच! मैं तख्तो को दलिये के साथ खा तो लेता नही हू, आप जानते है।' वह बोला—'मुझसे इस तरह की बात करने की हिम्मत कैसे हुई?

मूर्ख, तुम ऐसे हो, वैसे हो। तुम अपने को भूलो मत! मैंने ही तुम्हे ठेकेदार बनाया था!' मैंने कहा—'हा, तो इससे क्या हुआ? ठेकेदार वनने के पहले भी मुझे दिन में पीने के लिए चाय मिल जाती थी, मिल जाती थी न?' वह बोला—'तुम सब लोग बेईमान, धोखेबाज हो '
मैं चुप रहा। मैं सोचता रहा, हम इस दुनिया में धोखा देते हैं, पर तुम दूसरी दुनिया में धोखा दोगे। हा-हा-हा! अगले दिन उसका व्यवहार इतना रूखा न रहा। वह बोला 'तुम मुझसे नाराज़ न हो, मकारिच, मैंने कल जो कहा उसके लिए नाराज न हो। अगर मैंने ऐसा कुछ कहा भी जो मुझे न कहना चाहिए था, तब भी, आखिरकार मैं व्यापारी हू, प्रथम मन्डल का व्यापारी और तुमसे बडा हू, तुम्हें मेरी वात वरदाश्त करनी चाहिए।' मैंने जवाब दिया—'यह सही है कि तुम प्रथम मण्डल के व्यापारी हो और मैं सिर्फ एक बढई हू। लेकिन सन्त जोसफ भी बढई ही थे। बढईगीरी का पेशा सम्मानित पेशा है और भगवान इसे पसन्द करते हैं। अगर तुम समझते हो कि तुम मुझसे बडे हो तो ठीक है, वसीलि दनीलिच!' और तब उस बातचीत के बाद मैं सोचने लगा हम मे से कौन वडा है। व्यापारी या बढई? बच्चो, बढई, बढई!"

'खूटा' थोडी देर तक सोचता रहा, फिर बोला—"हा, मेरे बच्चो। जो मेहनत करता है और वरदाश्त करता है, वही वडा है।"

सूरज अब डूब गया था और दूध-सा सफेद घना कुहरा नदी से, गिरजाघर के मैदान मे व कारखानों के पास से उठ रहा था। अब, बढते हुए अधकार मे, जब नीचे से रोशनिया झिलमिला रही थी, और कुहरा अतल गड्ढे को छिपाता लग रहा था। बिल्कुल निर्धनता में पैदा हुई और हमेशा गरीबी में रहने की स्थिति को स्वीकार करने वाली लीपा और उसकी मा जो अपनी सीधी-सादी सहमी

आत्माओ को छोडकर सब कुछ अर्पित करने को तैयार थी, वे भी इस समय, एक क्षण के लिए तो यह अनुभव कर रही ही होगी कि वे भी इस विराट् रहस्यपूर्ण विश्व में, प्राणियो की अनन्त शृखला में, कुछ अर्थ रखती है, वे भी किसी से बडी हैं, ढलान के ऊपर चोटी पर बैठना उन्हें अच्छा लग रहा था और वे आनन्दमग्न हो मुस्करा रही थी, एक क्षण के लिए वे यह भूल गयी थी कि देर या सवेर उन्हे नीचे नाले में तो जाना ही होगा।

अतत वे घर पहुच गये। घसियारे फाटक के पास और दूकान के सामने बैठे हुए थे। उक्लेयेवो के किसान आम तौर पर त्सिबूकिन के यहा काम नही करते थे और उसे काम करने के लिए बाहर के मजदूर बुलाने पडते थे, उस वक्त में ऐसा लग रहा था मानो हर ओर काली लम्बी दाढियो वाले लोग बैठे हो। दूकान खुली थी और दरवाजे से बहरा एक लडके के साथ गोटियो का खेल खेलता दिखाई पड रहा था। मजदूर धीमे स्वरो में गा रहे थे। उनका स्वर इतना धीमा था कि वह सुनाई भी मुश्किल से पड रहा था, बीच बीच में वे गाना रोककर ऊची आवाजो में कल की मजदूरी मागते थे, पर यह मजदूरी उन्हे इस डर से नही दी जा रही थी कि कही वे सवेरे से पहले चल न दें। चर्च के एक बडे दरख्त के नीचे जो ओसारे के सामने उगा हुआ था, बुढा त्सिबूकिन खाली कमीज और वास्कट पहिने हुए बैठा अक्सीन्या के साथ चाय पी रहा था, जलती हुई एक लैम्प मेज पर रखी हुई थी।

"बा-आ-बा" फाटक की दूसरी तरफ से एक मजदूर ताने भरी आवाज में गा उठा। "हमें आधा, सिर्फ आधा ही दे दो बा-आ-आ-बा!"

26—948

इस पर हसी हुई और फिर धीमे, दबे स्वरो में न सुनाई-सा पडने वाला गाना शुरू हो गया 'खूटा' चाय पीने के लिए मेज़ पर बैठ गया।

"तो फिर हम लोग मेले गये," उसने वर्णन प्रारम्भ किया। "बहुत अच्छा वक्त कटा, बच्चो। बडा मजा आया, भगवान की कृपा है। पर एक बहुत अप्रिय बात हो गयी। साशा लुहार दूकान पर तम्बाकू खरीदने गया और उसने दूकानदार को आधे रूबल का एक सिक्का दिया और सिक्का खोटा निकला।" बोलते हुए 'खूटा' चारो तरफ देखने लगा। वह फुसफुसा कर बोलना चाहता था, पर अपनी भारी, घुटी घुटी-सी आवाज़ में वह जो कुछ कह रहा था, वह सभी को सुनाई पड रहा था। "और वह सिक्का खोटा निकला। 'तुम्हे यह कहा मिला?' उन्होने पूछा। साशा ने कहा—'शादी के मौके पर अनीसिम त्सिबूकिन ने यह मुझे दिया था ' इस पर उन लोगो ने पुलिस वाले को बुलाया और वह साशा को पकड ले गया पेत्रोविच! होशियार रहना, कोई ऐसी-वैसी बात न हो जाय लोग ऐसी बाते न करे "

फाटक से वही ताने भरी आवाज़ आयी—"वा-आ-वा, वा-आ-वा!"

फिर शान्ति छा गयी।

जल्दी जल्दी "मेरे बच्चो! आह बच्चो, बच्चो, बच्चो!" बुदबुदाता हुआ 'खूटा' उठ खडा हुआ, उसे थकान और नीद सता रही थी। "चाय व शक्कर के लिए धन्यवाद, मेरे बच्चो! अब सोने का वक्त हुआ। मै बूढा और खोखला हो रहा हू और मेरे सब शहतीर सड रहे है। हा-हा-हा!"

जाते जाते वह बोला—

"शायद मरने का वक्त आ गया।"

और उसने एक सिसकी भरी। बूढ़े त्सिबूकिन ने अपनी चाय नही पी, पर वह मोचता हुआ वैठा रहा, लग रहा था मानो वह 'खूटे' की पगध्वनि अव भी सुन रहा हो, हालाकि वह गली में बहुत दूर पहुच चुका था।

उसके विचारो की कल्पना करते हुए, अक्सीन्या ने कहा— "साशा लुहार झूठ वोल रहा होगा।"

वह घर में गया और थोडी देर में एक छोटी-सी पोटली हाथ में लिये हुए लौट आया। उमने उसे खोला और रूवल के विल्कुल नये सिक्के मेज़ पर चमकने लगे। एक सिक्का उठा कर उसने दातो के वीच दवाया फिर उसे मेज़ पर रखी किश्ती पर फेंक दिया, दूसरा उठाया और दातो तले दवाकर उसे भी फेंक दिया

"सिक्के सचमुच खोटे हैं " अक्सीन्या की ओर मानो आश्चर्य से देखते हुए वह वोला। "वे खोटे हैं—वे ही सिक्के है जो अनीसिम लाया था उसकी सौगात है। लो, वेटी, ये लो," पोटली अक्सीन्या को देता हुआ वह फुसफुसाया, "इसे ले जाओ और कुए मे फेंक दो उनकी क्या ज़रूरत? और देखो इसके वारे मे वात न करना। कोई अनहोनी न हो जाय। समोवार ले जाओ, लैम्प वुझा दो "

लीपा और प्रासकोव्या छप्पर मे वैठी, एक एक कर रोशनी वुझते देख रही थी, सिर्फ ऊपर की मजिल में, वर्वारा की खिडकी से मूर्तियो के सामने रखी तेज़ लाल और नीली रोशनी की चमक आ रही थी, और उससे शान्ति, सतोप व निश्छलता आती लग रही थी। प्रासकोव्या को इस वात की आदत नहीं पड रही थी कि उमकी वेटी की एक रईस से शादी हुई है और जव वह उमसे मिलने आती तो

दरवाज़े में दब सिमट कर रुक जाती, औरो को खुश करने के लिए मुस्कराती रहती और वे उस के पास चाय और शक्कर भेज देते। लीपा भी इस नयी स्थिति की आदी नही हो पा रही थी और पति के जाने के बाद से अपने पलग पर नही सोती थी, बल्कि रसोई में, छप्पर में, जहा तहा पड रहती थी, और हर दिन फर्श धोकर साफ करती थी व कपड़े धोती थी। उसे लगता था कि वह अब भी भाडे का मज़दूर है। इस बार भी, तीर्थयात्रा से लौटकर उसने व उसकी मा ने रसोईदारिन के साथ चाय पी और फिर छप्पर में जाकर दीवाल और स्लेज गाडी के बीच फर्श पर पड रही। वहा अधेरा था और घोडे की ज़ीन व काठी आदि की बू आ रही थी। घर में बत्तिया बुझ गयी, बहरा दूकान में ताला लगाता सुनाई पडा, अहाते में मज़दूरो के सोने की तैयारी करने की आवाज़ें आने लगी। दूर छोटे ख्रीमिन के घर से किसी के बाजा बजाने की ध्वनि सुनाई पड रही थी लीपा और उसकी माँ की आँख लग गयी।

किसी के पैरो की आहट से जब उनकी नीद खुली तब उजाला हो चुका था, क्योकि चाद निकल आया था, अक्सीन्या छप्पर के दरवाज़े पर बिस्तर बगल में दाबे खडी थी।

दरवाज़े के पास ही बिस्तर लगा कर सोने की तैयारी करते हुए अक्सीन्या बोली—"यहाँ ठडक होगी," उसका सारा शरीर चादनी में चमक रहा था।

वह सोयी नही, गहरी सासे लेती रही, गरमी के कारण इधर-उधर करवटें बदलती रही, और कपडे फेंकती रही, चाद की जादू भरी रोशनी में वह कोई अत्यन्त सुन्दर और गर्वीला पशु लग रही थी। कुछ वक्त गुजरा और फिर किसी के पैरो की आहट आयी, सफेद कपडे पहने हुए बूढा दरवाज़े में दिखाई दिया।

"अक्सीन्या!" उसने आवाज़ लगायी, "क्या तुम यहा हो?"
वह चिढकर बोली –

"क्यो?"

"मैंने तुम से वे सिक्के कुए में फेंक देने को कहा था, क्या तुमने फेंक दिये?"

"नकद माल को पानी में फेंक देने वाली मूर्ख मैं नही हू! मैंने उसे मज़दूरो को दे दिया"

"हे भगवान!" बूढा बोला, उसके स्वर में स्तब्ध व भयभीत होने की ध्वनि स्पष्ट थी। "अरे, गुस्ताख लडकी हे भगवान!"

निराशा से हाथ झटकता हुआ, अपने आप कुछ बडबडाता हुआ, बूढा चला गया। कुछ देर बाद अक्सीन्या उठ बैठी, खीज में भरकर गहरी सास ली, अपना बिस्तर समेटा और छप्पर के बाहर चल दी।

"मा, तुमने इस घर में मेरी शादी क्यो की?" लीपा ने कहा।

"बेटी, शादी हर एक को करनी होती है, यह दूसरो का नियम है, अपना बस, नही है।"

अपार शोक की भावनाओ में वे डूबने डूबने को हो रही थी। पर उन्हे लग रहा था कि ऊपर आकाश में कोई है, जो सितारो के नीले जाल के पास मे उक्लेयेवो को ताक रहा था और जो कुछ हो रहा था, उसकी निगहबानी कर रहा था। और इतनी ज्यादा बुराई होने के बावजूद रात शान्त व सुन्दर थी और ईश्वर की सृष्टि में न्याय था, और इस रात की तरह का शान्त और सुन्दर न्याय होगा, पृथ्वी पर हर वस्तु उस न्याय में निहित हो जाने की प्रतीक्षा में थी। बिल्कुल वैसे ही जैसे चादनी रात में निहित हो जाती है।

और दोनो, शान्त हो, एक दूसरे मे चिपट गयी और सो गयी।

६

यह खबर बहुत पहले ही आ गयी थी कि जाली सिक्के बनाने और उन्हे चलाने के अभियोग में अनीसिम जेल में बन्द है। महीनो बीत गये, आधे से ज्यादा साल बीत गया, लम्बा जाडा आया व चला गया, वसन्त शुरू हो गया और घर व गाव सभी जगह लोग अनीसिम के जेल में होने के आदी हो गये। जो भी रात में मकान या दूकान के सामने से गुज़रता उसे याद आ जाती कि अनीसिम जेल में है, और जब लोग गिरजाघर में मृतको के लिए घण्टिया बजाते तो उन्हे फिर अचानक याद आ जाती कि अनीसिम अपने मुकदमे की सुनवाई की प्रतीक्षा में जेल में है।

पूरे घर के ऊपर एक छाया-सी पड गयी थी। घर की दीवाले ज्यादा गहरे रग की लगती, छत में मोर्चा लग गया, दूकान का लोहेदार, भारी, हरा दरवाज़ा ऐंठ गया, और खुद त्सिबूकिन ज्यादा काला नज़र आने लगा। बाल कटाना या दाढी छटवाना उसने काफी दिनो से छोड दिया था और उसके गालो पर झबरे बाल उग रहे थे, अब वह अपनी गाडी में अकड के साथ उचक कर नही बैठता था और न भिखारियो से चिल्लाकर कहता था—"तुम्हे भगवान ही देगा!" उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी और यह क्षीणता उसकी हर बात में प्रकट होने लगी थी। अब लोग उससे इतना ज्यादा नही डरते थे और पहले की तरह ही ठोस रिशवत पाने के बावजूद अफ्सर ने उसी की दूकान में बैठकर एक अभियोग-पत्र तैयार किया, बूढे को तीन बार कस्बे में बुलाया जा चुका था, ताकि उस पर बिना लैसन्स शराब बेचने के लिए मुकदमा चलाया जा सके और तीनो बार गवाहो के न आने के कारण सुनवाई मुल्तवी कर दी गयी थी, बूढा अब थक गया था।

अपने बेटे से मिलने वह अक्सर जेल जाता था, उसने एक वकील किया, कई अर्जियां भेजी और गिरजाघर को एक पताका भी भेंट की। जिस जेल में अनीसिम बन्द था उसके अफसर को उसने चादी का एक गिलासदान भेंट में दिया जिस पर इनामिल से लिखा हुआ था "आत्मा अपनी सीमा जानती है," इस गिलासदान के साथ चादी का एक लम्बा चम्मच भी था।

वर्वारा बराबर कहती घूमती, "ऐसी कोई नही है, जिसे अपनी सुनायें, कोई भी तो नही है, च– च– च सम्भ्रान्त, कुलीन लोगो में से किसी से कहकर मुख्य अधिकारियो को चिट्ठी लिखवानी चाहिए काश, वे उसे मुकदमे के पहिले छोड देते बेचारा लडका वहा क्यो पडा सडे?"

उसे भी दुख था पर वह स्थूल और और ज्यादा चिकनी निकल आयी थी, वह बदस्तूर मूर्तियो के सामने लैम्प जलाती, घर की चीज़ो की देखभाल करती और अभ्यागतो को मुरब्बे व सेव-चूर खिलाती। अक्सीन्या और उसका बहरा पति पहले की तरह दूकान में काम करते। एक नया काम शुरू हो रहा था बूत्योकिनो में ईंटो का भट्ठा लग रहा था और अक्सीन्या गाडी में बैठ कर रोज़ वहा जाती थी, गाडी वह स्वय हाकती थी और अगर रास्ते में कोई परिचित मिल जाता तो वह रोग के हरे पौधो में से जैसे साप सिर निकालता है, वैसे गरदन ऊची कर अपनी रहस्यमय, भोली मुस्कान बिखेर देती। और लीपा हर वक्त अपने बच्चे के साथ खेला करती जो लैण्ट के उत्सव के ठीक पहले पैदा हुआ था। बच्चा बहुत छोटा, दुबला-पतला और बीमार-सा था और यह ताज्जुब ही लगता था कि वह गरदन घुमा कर इधर-उधर ताक लेता था, और रो लेता था और लोग उसे इसान मानते थे और उसे निकीफर के नाम से

पुकारते थे। बच्चा अपने पालने में पड़ा रहता और लीपा दरवाज़े तक जाकर झुक कर सलाम करती हुई कहती –

"नमस्कार, निकीफर अनीसिमिच!"

और वह दौड़कर बच्चे के पास लौट उसे चूम लेती। फिर वह लौटकर दरवाज़े तक जाती, झुककर सलाम करती और कहती –

"नमस्कार, निकीफर अनीसिमिच!"

और बच्चा अपने नन्हे नन्हे लाल पैर चलाता और एक ही वक्त साथ साथ हसता व रोता जाता जैसे कि बढ़ई येलिज़ारोव करता था।

अत में मुकदमे की एक तारीख़ नियत हुई। बूढ़ा तारीख़ से पाच दिन पहले कस्बे के लिए रवाना हो गया। इसके बाद कहा गया कि गाव से किसान गवाही के लिए बुलाये गये हैं। त्सिबूकिन का बूढ़ा नौकर भी सम्मन पाकर गया।

मुकदमा गुरुवार को होने वाला था पर रविवार हो गाया और बूढ़ा लौटा नही था और न कोई खबर ही आयी थी। मगल की शाम को वर्वारा खुली खिड़की में बूढ़े के आने की प्रतीक्षा कर रही थी, लीपा दूसरे कमरे में बच्चे के साथ खेल रही थी। वह बच्चे को गोद में झुला रही थी और प्रसन्नता से हौले हौले गाती जा रही थी –

"तू बड़ा होगा, बहुत बड़ा! तू पूरा आदमी हो जायेगा तब हम तू दोनो साथ साथ मज़दूरी करने निकलेगे। मज़दूरी करने निकलेगे!"

"अरे!" वर्वारा ने स्तम्भित होकर कहा, "अरे पगली, यह मज़दूरी करने की क्या बात हुई? वह बड़ा होकर व्यापारी बनेगा।"

लीपा ने गाने का स्वर मध्यम कर दिया पर थोड़ी ही देर में वह भूल गयी और फिर वही गाने लगी –

"तू वडा होगा, किसान होगा, और हम साथ साथ मजदूरी करने चलेगे।"

"फिर वही वात? फिर वही गाने लगी।"

लीपा दरवाज़े में निकीफर को गोद में लिये रुक गयी और वोली—

"मा, मैं उसे इतना प्यार क्यो करती हू? यह मुझे इतना प्यारा क्यो है?" और उसका गला भर आया और आखो में आसू छलक निकले। "यह है कौन? क्या है? पर जैसा हलका, ऐसा नन्हा मुन्ना-सा, और मै उसे प्यार करती हू, मानो वह भला पूरा इसान हो। देखो, यह कुछ कर नही सकता, कुछ भी नही कह सकता और मै उसकी हर ज़रूरत समझ जाती हू, सिर्फ उसकी आखें देख कर सव वात समझ जाती हू।"

वर्वारा फिर सुनने लगी। शाम की रेलगाडी के स्टेशन पर पहुचने की आवाज़ उसे सुनाई दी। वूढा शायद इस गाडी से आया हो? लीपा क्या कह रही थी, इसे वह न सुन रही थी, न समझ रही थी, वक्त गुज़रने का उसे आभास नही था, वह वैठी हुई काप रही थी, डर से नही वल्कि तीव्र उत्सुकता व जिज्ञासा से। उसने एक ठेला को खडखडाते हुए गुज़रते देखा, जिसमें किसान भरे हुए थे। ये लोग वे गवाह थे जो स्टेशन मे लौट रहे थे। वूढा नौकर ठेले के दूकान के सामने आने पर कूद पडा और अहाते में आ गया। उसमे लोगो के वात करने की आवाज़ वर्वारा को सुनाई पड रही थी

"सभी सम्पत्ति और अधिकारो से वचित कर दिया गया," वह ज़ोर ज़ोर से जवाव दे रहा था, "साइवेरिया में सख्त कैद, छ साल के लिए।"

अक्सीन्या दूकान के पीछे के दरवाज़े से निकलती दिखाई दी, वह मिट्टी का तेल वच रही थी और उसके एक हाथ मे वोतल और दूसरे में कीफ थी, उसके दातो के वीच में चादी के कुछ मिक्के दवे थे।

उसने अस्पष्ट स्वर में पूछा—

"और पिता जी कहा है?"

नौकर ने जवाव दिया—"स्टेशन पर। वह कह रहे थे कि वह अधेरा होने पर घर आयेंगे।"

घर में जव पता चला कि अनीसिम को कडी कैद हुई है, रसोईघर मे रसोईदारिन ने जोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया मानो कोई मर गया हो, क्योंकि उसने सोचा कि शिष्टाचार में उसे यही करना चाहिए—

"तुम हमें क्यो छोड गये, अनीसिम ग्रिगोरिच, मेरे सोने के लाल?"

कुत्ते भी जाग गये और भोकने लगे। वर्वारा दौडकर खिडकी के पास गयी और वहा दुख से भरी आगे पीछे हिलने डोलने लगी। रसोईदारिन पर वह पूरे ज़ोर से चीखी—

"वन्द करो, स्तेपानीदा, वन्द करो! भगवान के लिए हमे सताओ मत!"

किसी को समोवार गर्म करने की याद न रही, सभी विमूढ हो गये लगते थे। लीपा ही अकेली ऐसी थी जिसे इसका ज्ञान न था कि क्या हो गया है, वह वच्चे को दुलराती रही।

जव वूढा स्टेशन से घर लौटा, किसी ने उससे कुछ न पूछा। उसने अभिवादन स्वरूप कुछ कहा और फिर चुपचाप कमरो में चक्कर काटने लगा, रात का खाना खाने से उसने इनकार कर दिया।

जव वूढा और वर्वारा अकेले हुए, वह वोली—

"कोई भी तो ऐसा नही है, जिसके पास हम इस मुसीवत में जाय, मैंने तुम से कहा था कि तुम कुलीन घरानो में से किसी के पास जाओ, पर तुमने मेरी वात नही मानी तुम्हें प्रार्थना पत्र भेजना चाहिए था"

हाथ हिलाते हुए वूढा वोला—

"मै जो कुछ कर सकता था, किया। जव सज़ा सुनायी गयी मै उन मज्जन के पास गया, जिन्होने अनीसिम की वकालत की थी। अव

कुछ नही हो सकता, वह बोले, अब बहुत देर हो गयी। और अनीसिम ने भी यही शब्द कहे—"बहुत देर हो गयी।" लेकिन तब भी जब मैं अदालत से निकल रहा था, मैंने एक वकील से बात की। मैंने उसे इस मद में कुछ रुपये भी दिये मैं एक हफ्ते इन्तज़ार करूगा और फिर जाऊगा। सब ईश्वराधीन है।"

बूढा फिर चुपचाप कमरो के चक्कर लगाने लगा। और जब वह फिर वर्वारा के पास आया तो बोला—

"मेरी तबीअत खराब लगती है। मेरे सिर में कुहरा-सा भर गया है। मै ठीक से साफ सोच नही पा रहा।"

फिर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया ताकि लीपा सुन न पाये। वह धीरे से बोला—

"मुझे अपने रुपये के बारे में चिन्ता है। तुम्हे याद होगा ईस्टर के बाद वाले हफ्ते में शादी के ठीक पहले अनीसिम रूबल और आधे रूबल के नये सिक्के लाया था और मुझे दे गया था। एक पोटली तो मैंने अलग रख दी थी, पर बाकी मैंने अपने रुपयो में मिला दिये थे जब मेरे चाचा, दिमीत्री फिलातिच, भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे, ज़िन्दा थे, वह माल खरीदने जाया करते थे—कभी क्रीमिया, कभी मास्को। उनकी एक बीवी थी जो चाचा के माल खरीदने जाने पर और मर्दों के साथ घूमती थी। और उनके छ बच्चे थे। और जब चाचा ज्यादा शराब पी लेते थे तो हसी में कहा करते थे—'मुझे यही पता नही चल पाता कि इन में से कौन मेरे है और कौन नही।' तुम जानो, वह बडे मौजी जीव थे। और अब मुझे यह पता नही लग पा रहा कि मेरे रुपयो में से कौन सिक्का खरा है और कौन खोटा। अब मुझे लगता है कि सभी सिक्के खोटे हैं।"

"भगवान के लिए ऐसा न कहो।"

"हा, मै स्टेशन पर टिकट खरीदने जाता हू और टिकट के लिए तीन रुवल निकालता हू तो यही सोचा करता हू कि कही ये खोटे तो नही है। मुझे बडा डर लगता है। शायद बीमार हू।"

"हम सभी ईश्वराधीन है, च-च-च " वर्वारा ने सिर हिलाते हुए कहा। "पेत्रोविच हमें इस मसले पर गौर करना चाहिए कुछ भी हो जा सकता है, तुम अब जवान तो हो नही। अगर तुम मर गये तो हो सकता है कि तुम्हारे पोते के साथ बुरा व्यवहार हो। उफ! मुझे निकीफर के वारे में बडी चिन्ता है। बाप न होने के बराबर समझो, मा अल्हड और वेवकूफ है तुम कम से कम वुत्योकिनो की ज़मीन का वह टुकडा तो उस बच्चे के नाम कर ही दो। हा, पेत्रोविच! तुम वह टुकडा जरूर उसके नाम कर दो। इस वात पर तुम गौर करना।" उसे समझाते वुझाते हुए वर्वारा कहती गयी— "वह विलकुल नन्हा मुन्ना है, वेचारा। कल ही जाकर लिखा-पढी कर डालो। इन्तज़ार करने की क्या ज़रूरत?"

"हा, मै उस वच्चे के वारे में भूल गया था "

त्सिवूकिन ने कहा। "मैने आज उसे देखा नही। वह वडा भला वच्चा है, है न? अच्छा, अच्छा, उसे वढने दो। ईश्वर उस पर कृपा रखे!"

उसने दरवाजा खोला और तर्जनी के इशारे से लीपा को वुलाया। वह वच्चे को गोद मे लिये हुए आयी।

"अगर तुम्हे किमी चीज़ की ज़रूरत हो, लीपा वेटी, तो तुम कह भर देना," वह वोला। "और जो चाहो खाओ, तुम्हे कोई चीज़ देना हमे नही अखरता, हम तो मिर्फ यह चाहते है कि तुम स्वस्थ रहो"

वच्चे के ऊपर उमने पाक सलीव का चिन्ह वनाया। "और मेरे पोते की ठीक मे देख भाल करना, मेरा वेटा चला गया पर मेरा पोता मेरे पास है।"

आसू उसके गालो पर ढुलक आये, उसने एक सिसकी भरी और दूसरी ओर चला गया। इसके फौरन वाद वह सोने के लिए विस्तर पर पहुच गया और सात राते विना सोये विता चुकने के वाद पहली वार गहरी नीद मे गाफिल हो गया।

७

वूढा कई दिन से कस्वे को गया हुआ था। किसी ने अक्सीन्या को वताया कि वह अपनी वसीअत के वारे में वात करने दस्तावेजो को प्रमाणित करने वाले एक ओहदेदार के पास गया हुआ है और वुत्योकिनो जहा अक्सीन्या की ईटें पकती थी, उसने अपने पोते निकीफर के नाम कर दिया है। यह वात उसे सवेरे उस वक्त वतायी गयी थी जव वूढा और वर्वारा ओसारे के सामने वर्च के दरख्त के नीचे वैठे चाय पी रहे थे। उसने दूकान की गली और अहाते दोनो ओर के दरवाज़े वन्द कर दिये, अपने कब्ज़े की सारी चाभिया इकट्ठी की और उन्हें वूढे के पैरो के पास पटक दिया।

एकाएक रोती हुई वह ऊची आवाज़ में चिल्लाकर वोली—

"मै अव तुम्हारे लिए काम नही करूगी! लगता है मै तुम्हारी वहू नही, नौकरानी हू! अभी सव लोग हसते है— 'देखो त्सिवूकिन को कितनी वढिया नौकरानी मिली है।' मैं तुम्हारे यहा मज़दूरी करने नही आयी हू। मै भिखारी नही हू, अनाथ प्राणी नही हू, मेरे भी मा-वाप है!"

आसू पोछे विना उसने अपनी तैरती हुई सी आखें वूढे के चेहरे पर जमा दी, जो रोप मे जल रही थी और तिपखी-सी लग रही थीं, वह पूरे गले से चिल्ला रही थी और उसका चेहरा व गरदन लाल हो रहे थे

"मै अव तुम्हारी सेवा नही करूगी! मै थक गयी हू! जव काम करने का वक्त आता है, दिन दिन भर दूकान पर वैठने, और चोरी-

छिपे वोदका लेने रात मे जाने की बात होती है, तो मै हू, जब ज़मीन देने की बात होती है तो वह है, वह कैदी की बीवी और उसका वह नन्हा शैतान! वह यहा मालकिन है, महारानी है और मै उसकी चाकर हू! जो मन में आये करो, हर चीज़ इसी कैदी के बीवी के नाम लिख दो। भगवान करे इससे उसका गला घुट जाय। पर मै घर चली। अपने लिए कोई दूसरा मूर्ख तलाश करो, किस्मत के मारे ज़ालिमो!"

अपने जीवन में बूढे ने कभी अपने बच्चो को मारा नही था और न गाली ही दी थी, और यह बात उसकी कल्पना में भी नही आती थी कि उसी के घर का कोई आदमी उससे इस उद्दण्डता से बात कर सकता है या बेइज़्ज़ती का बरताव कर सकता है, और अब वह भयातुर हो उठा और भागकर घर में चला गया और वहा एक आल्मारी के पीछे छिप गया, और वर्वारा ऐसी स्तम्भित हो गयी कि उसका बोल भी नही फूटा, वह उठ भी न पायी और सिर्फ इस तरह हाथ हिलाते बैठी रह गयी मानो किसी मक्खी को उडा रही हो।

घबराहट और डर भरी आवाज़ में वह बुदबुदाती रही– "यह क्या है, यह है क्या? क्या उसे इस तरह चिल्लाना चाहिए? च-च-च लोग उसकी आवाज़ सुन लेगे! वह अगर थोडी शान्त हो जाय उफ, थोडी शान्त!"

"तुमने बुत्योकिनो उस कैदी की बीवी को दे दिया है," अक्सीन्या वैसे ही चिल्लाती रही,–"तो ठीक है–तो सब कुछ उसी को दे डालो! मुझे तुम से कुछ नही चाहिए! जहन्नुम में जाओ तुम सब लोग! तुम लोग चोरो का गिरोह हो! मैने बहुत देखा है, मै अब ऊब गयी हू! तुमने राह गुज़रने वालो को, मुसाफिरो को लूटा है, बदमाशो! तुमने बूढो और जवानो को लूटा है! बिना लैसस वोदका कौन बेचता था? और वे खोटे सिक्के? तुम्हारी तिजोरिया खोटे

सिक्को से भरी पडी है और अब तुम्हे हमारी दरकार नही है!"

अब तक खुले फाटक के सामने भीड जमा हो चुकी थी जो अहाते में झाक रही थी।

"लोगो को देखने दो।" अक्सीन्या चिल्ला रही थी। "मै उनके सामने तुम्हे शरमिन्दा करूगी! मै तुम्हे शर्म की आग में जला डालूगी! तुम मेरे पैरो पर नाक रगडोगे! हे, स्तेपान!" उसने बहरे को आवाज़ लगायी। "फौरन घर चले आओ! मेरे साथ मेरे मा-बाप के यहा इसी दम चल पडो। मै कैदियो के साथ नही रह सकती! फौरन सामान बाधो!"

अहाते में रस्सी पर कुछ कपडे पडे सूख रहे थे, उसने उस रस्सी से साये और ब्लाउज खीच ली जो अब भी गीली थी और उन्हे बहरे के हाथो में डाल दिया। फिर उन्माद में वह रस्सी से हर चीज़ नोचती-खीचती दौडने लगी और जो कपडे उसके नही थे, उन्हे ज़मीन पर डाल कर रौंदने लगी।

"अरे, अरे, उसे रोको" वर्वारा चीखी, "उसे हो क्या गया है? दे दो उसे, भगवान के लिए, उसे बुत्योकिनो दे डालो।"

फाटक पर लोग कह रहे थे— "उफ क्या औरत है! बला की औरत है भाई! कही ऐसा गुस्सा देखा है?"

अक्सीन्या भागकर रसोईघर में पहुच गयी जहा कपडे धुल रहे थे। लीपा अकेली कपडे धो रही थी, रसोईदारिन नदी पर कपडे धोने चली गयी थी। चूल्हे के सामने कपडो की नाद और कठरे मे भाप उठ रही थी और रसोई में अधेरा व घुटन थी। फर्श पर बिना धुले कपडो का एक ढेर पडा था और ढेर की बगल में एक बेंच पर निकीफर पडा था, ताकि गिरे तो उसके चोट न लगे, वह अपने दुबले-पतले लाल लाल पाव फेंक रहा था। जैसे ही अक्सीन्या रसोई में घुसी लीपा ने उसकी

एक कमीज़ ढेर से निकाल कर नाद में डाली, बगल में मेज़ पर रखे खौलते पानी से भरे एक करछे को लेने के लिए हाथ बढाया

घृणा से उसकी ओर घूरती हुई और टब में से अपनी कमीज़ खीचती हुई अक्सीन्या बोली – "इधर लाओ। तुझ जैसी को मेरे कपडे छूने की मजाल नही। तू एक कैदी की बीवी है और तुझे अपनी औकात समझनी चाहिए कि तू है क्या?"

लीपा इतनी स्तम्भित हो गयी कि बात समझ भी नही पायी, लेकिन एकाएक वह निगाह देखकर जो अक्सीन्या ने बच्चे पर डाली, वह समझ गयी और आतक से जडवत हो गयी

"यह ले, मेरी ज़मीन मुझ से छीनने का फल!" यह कहते हुए अक्सीन्या ने करछे भर का खौलता हुआ पानी निकीफर पर उडेल दिया।

एक चीख सुनाई दी, ऐसी चीख जो उक्लेयेवो में पहले कभी नही सुनी गयी थी और वह विश्वास करना मुश्किल था कि ऐसी छोटी-सी और नाजुक लीपा इस तरह चीखी होगी। फिर अहाते में गम्भीर शान्ति छा गयी। अक्सीन्या अपनी अनोखी भोली मुस्कान लिये, चुपचाप मकान में लौट गयी वहरा अब तक धुले कपडे बाहो मे समेटे अहाते मे टहल रहा था, अब उसने उन्हे फिर से रस्सी पर टागना शुरू कर दिया, चुपचाप, आहिस्ते से। और जब तक रसोईदारिन नदी से वापस नही लौटी, किसी को रसोई मे जाने और यह देखने की हिम्मत नही पडी कि वहा क्या हुआ है।

८

निकीफर को ज़ेम्स्तवो का अस्पताल ले जाया गया, जहा वह शाम को मर गया। लीपा ने बिना इसका इन्तजार किये कि कोई उसे पहुचाने आये, एक कम्बल में बच्चे के शव को लपेटा और घर रवाना हो गयी

वडी खिडकियो वाला नया अस्पताल पहाडी की चोटी पर. वना था, अस्त होते हुए सूरज की किरणो से अस्पताल चमक रहा था और लग रहा था कि जैसे उसमें आग लग गयी हो। गाव पहाडी की तलहटी में वमा हुआ था। लीपा सडक मे नीचे उतरी और गाव के वाहर ही एक छोटे पोखरे के किनारे वैठ गयी। एक औरत घोडे को पानी पिलाने लायी थी, मगर घोडा पानी नही पी रहा था।

"तु पानी क्यो नही पीता ?" औरत ने मुलायमियत से पूछा, जैसे उसे ताज्जुव हो रहा हो। "क्या मामला है ?"

लाल कमीज़ पहने हुए एक छोटा लडका विल्कुल पानी के किनारे वैठा हुआ, अपने पिता के जूते धो रहा था। इनके अलावा गाव या पहाडी के आम-पास कोई भी व्यक्ति नजर नही आ रहा था।

"यह नही पीयेगा" लीपा ने घोडे की तरफ देखते हुए कहा।

तव वह औरत और जूते वाला लडका दोनो उठकर चले, और कोई दिखाई नही दे रहा था। सोने और रक्त वर्ण की चादर ओढे सूरज आराम करने चला गया था, आकाश में लाल और हल्के वैगनी रग के वादल फैले हुए सूरज की निद्रा को देख रहे थे। कही दूर, जाने कहा, विटर्न-पछी वोल रहा था। उसकी आवाज़ ऐसी लग रही थी, जैसे वाडे में वन्द कोई गाय रभा रही हो। हर वसन्त में इस रहस्यमय चिडिया की आवाज़ सुनाई पडती थी और कोई नही जानता था कि वह कैसी चिडिया है अथवा कहा रहती है। पहाडी की चोटी पर,अस्पताल के पास, पोखरे के पाम की झाडियो और खेतो में वुलवुले गा रही थी। लग रहा था जैसे कोयल किसी की उम्र वतला रही हो, वीच में भूल जाती हो और फिर शुरू मे वतलाना शुरु कर देती हो। पोखरे में मेढक टर्रा रहे थे, लग रहा था जैमे वह नाराजगी में कठोर आवाज़ मे एक दूसरे को पुकार रहे हो, यहा तक कि कुछ शव्द भी ममझ में आ रहे

थे – "ई ती तकावा! ई ती तकावा! (तू भी ऐसी ही है।)" कैसा शोर था! चारो नरफ़! मालूम होता था कि ये सब प्राणी जानबूझ कर चिल्ला और गा रहे थे ताकि वसन्त की इस रात में कोई सो न पाये, ताकि बुरे स्वभाव वाले मेढक भी प्रत्येक क्षण का आनन्द उठा सके, क्योकि आखिरकार हम केवल एक ही जीवन पाते हैं!

तारो जडित आकाश में रुपहला अर्द्ध चन्द्र चमक रहा था। लीपा को ध्यान नही था कि वह कितनी देर पोखरे के किनारे बैठी रही, लेकिन जब वह उठी और चलने लगी तो उसे मालूम हुआ कि गाव का हर व्यक्ति सो चुका है और बत्तिया बुझ गयी है। वहा से उक्लेयेवो करीब आठ मील दूर था और लीपा बहुत कमजोर थी, वह रास्ता ढूढने मे पूरा ध्यान भी नही दे सकती थी। चाद चमक रहा था। कभी उसके सामने, कभी बायें और कभी दायें ओर कोयल जिसकी आवाज़ गाते गाते अब तक फट चुकी थी, चिल्लाये जा रही थी, मानो वह उस पर हस रही हो और उसका मज़ाक उडा रही हो – "तू रास्ता भूल जायेगी! तू रास्ता भूल जायेगी!" लीपा तेजी से चलने लगी। उसका सिर पर बाधने का रूमाल खो गया लीपा आकाश की ओर देखने लगी और वह सोच रही थी कि उसके छोटे बच्चे की आत्मा अब कहा है? क्या वह उसका अनुसरण कर रहा है या कही ऊचाई पर तारो के पास अपनी मा को भूलकर तैर रहा है। जब चारो ओर बिखरे सगीत में तुम गा नही सकते, अविरल आनन्द की ध्वनियो के बीच तुम आनन्द नही मना सकते, जब आकाश में चाद तुम्हारी तरह अकेला, बिना जाडे या वसन्त की परवाह किये चमकता है, चाहे लोग जीवित हो या मृत, तो रात को खेतो में कितना अकेलापन महसूस होता है जब तुम्हारे दिल में दुख भरा हो तो अकेला रहना कठिन होता है। काश वह अपनी मा, या "खूटा", बावर्ची या किसी किसान के भी साथ इस वक्त हो सकती!

"वू-ऊ-ऊ" विटर्न-पछी चिल्लाया "वु-वु।"

उसको अकस्मात किसी के वोलने की आवाज़ साफ सुनाई दी—

"चलो वावीला, घोडे को जोतो।"

कुछ दूर आगे, सडक के किनारे आग जल रही थी, लपटें खत्म हो चुकी थी और सिर्फ अगारे दहक रहे थे। घोडे के घास चरने की आवाज़ आ रही थी। धुंध में दो गाडिया दिखाई पड रही थी, एक पर एक पीपा लदा था और दूसरी पर जो कुछ नीची थी, वोरे लदे थे और दो व्यक्तियो की शक्लें भी नज़र आ रही थीं। एक आदमी घोडे को गाडी के पास ले जा रहा था और दूसरा आग के पास हाथ पीठ के पीछे किय खडा था। गाडी के पास कही से एक कुत्ता भूका। घोडे को ले जाने वाला आदमी रुक गया और वोला—

"लगता है सडक पर कोई आ रहा है।"

दूसरे आदमी ने कुत्ते को डाटा—"शारिक, चुप रहो!"

उसकी आवाज़ से कोई भी वतला सकता था कि वह एक वूढा आदमी है। लीपा रुक गयी और वोली—

"ईश्वर तुम्हारी मदद करे।"

वूढा व्यक्ति उसकी ओर आया और पहले पहल कुछ नही वोला। तव फिर उसने कहा, "नमस्ते"।

"तुम्हारा कुत्ता तो मुझे नही काटेगा, क्यो वावा?"

"नही, नहीं, तुम गुज़र सकती हो। वह तुम्हें छुयेगा भी नही।"

"मै अस्पताल में रही हू," लीपा ने थोडा रुक कर कहा, "मेरा छोटा वच्चा वहा मर गया था, मै उसे घर ले जा रही हू।"

ज़ाहिर था कि उसने जो कुछ कहा उससे वूढा आदमी परेशान हो गया, क्योंकि वह वहा से हट गया और जल्दी मे वोला—

"दुख मत करो मेरी दुलारी। यह ईश्वर की इच्छा थी।

चलो, लडके!" अपने साथी को मुखातिब करते हुए वह चिल्लाया। "जल्दी करो, क्या तुम जल्दी नही कर सकते?"

"तुम्हारे जुऐ की कमान यहा नही है," लडके ने जवाब दिया। "मुझे मिल नही रही है।"

"तुम नासमझ हो, वाविला!"

बूढे व्यक्ति ने एक कोयला उठा लिया और उसे फूकने लगा, जिससे उसकी आखो और नाक पर रोशनी हो गयी और तब कमान ढूढ लेने के बाद वह हाथ में कोयला लिये हुए लीपा की ओर आया और उसकी तरफ देखा। उसकी दृष्टि से कोमलता और सहानुभूति झलक रही थी।

"तुम एक मा हो," उसने कहा। "हर मा अपने बच्चे को प्यार करती है।"

और उसने एक उसास ली और सिर हिलाया। वाविला ने आग पर कोई चीज़ फेंक दी और उसे रौंद कर बुझा दिया और फौरन ही चारो तरफ घोर अधकार छा गया, दृश्य गायब हो गया और एक वार फिर खेतो, तारो जडित आकाश, और शोर मचाने वाली चिडियो को छोड कर जो एक दूसरे को जगाये हुए थी, वहा कुछ न था। एक जगली पछी जैसे ठीक उसी जगह चिल्ला रहा था, जहाँ आग जली थी।

लेकिन एक मिनट वाद दोनो गाडिया, बूढा आदमी और लम्बा वाविला फिर नज़र आने लगे। जव गाडिया सडक पर लायी गयी तो उनके पहिये चरमराने लगे।

"क्या तुम लोग सन्त हो?" लीपा ने बूढे मे पूछा।

"नही। हम फिर्सानोवो में रहते है।"

"तुमने मेरी तरफ देखा तो मेरा दिल द्रवित हो उठा। और तुम्हारे साथ का लडका इतना सीधा है। इसलिए मैंने मोचा कि ये लोग शायद सन्त होगे।"

"क्या तुम्हे दूर जाना है?"

"उकलेयेवो तक।"

"गाडी में वैठ जाओ। हम तुम्हे कुजमेंकी तक पहुचा देंगे। वहा से तुम सीधी चली जाना, हम वायें मुड जायेंगे।"

वाविला पीपे वाली गाडी में वैठ गया, वूढा और लीपा दूसरे में। गाडिया धीरे धीरे चलने लगी, वाविला की गाडी आगे थी।

"मेरा वच्चा दिन भर तकलीफ भुगतता रहा," लीपा ने कहा। "उसने अपनी प्यारी आखो से मेरी तरफ इतनी कोमलता से देखा, जैसे वह कुछ कहना चाहता हो और कह नही पा रहा हो। हे स्वर्ग के ईश्वर! ईश्वर की पवित्र मा! मै जमीन पर दुख के मारे गिर गिर पडी। मै उसके विस्तरे के पास खडी हुई और गिर पडी। मुझे वताओ, वावा, कि एक छोटे-से वच्चे को मरने से पहले इतना कष्ट क्यो उठाना पडता है? जव वडे आदमी या औरत कष्ट सहते है तो उनके पापो को क्षमा कर दिया जाता है। परन्तु एक छोटे-से वच्चे जिसने कोई पाप नही किया, क्यो कष्ट सहना पडे? क्यो?"

"कौन वता सकता है?" वूढे आदमी ने जवाव दिया। आध घटे तक वे खामोशी से गाडिया हाकते रहे।

"सव कुछ क्यो कैसे होता है, यह जानना असम्भव है," वूढे आदमी ने कहा। "एक चिडिया के दो पख होते है, चार नही क्योकि उडने के लिए दो पख काफी है, इसी तरह से आदमी, जो कुछ जानने को है, वह सव नही जान सकता, सिर्फ आधा या एक चौथाई ही जान सकता है। आदमी को केवल उतना ही मालूम रहता है जितने की उसे जिन्दगी वसर करने के लिए जरूरत होती है।"

"अगर मै पैदल चलू तो ज्यादा स्वस्थ अनुभव करूगी, वावा! गाडी के हिलने से मेरे दिल में धक्का लग रहा है।"

"कुछ नही। बैठी रहो।" अपने मुह पर सलीब का चिन्ह बनाते हुए बूढे ने जम्हाई ली।

"कुछ नही " उसने दोहराया "तुम्हारा दुख सिर्फ आधा दुख है। ज़िन्दगी लम्बी है, अच्छाई और बुराई अभी आने को बाकी है। महान है माता-रूस!" सडक के इस तरफ और उस तरफ देखते हुए उसने कहा। "मै रूस में चारो तरफ घूमा हू और रूस में जो कुछ देखने को है, मैंने सब देखा है, इसलिए, मेरी बच्ची, तुम मेरा विश्वास करो। बुराई और भलाई अभी होने को बाकी है। मै साइबेरिया को पैदल गया हू, मै आमूर नदी घूम आया हू और अल्ताई पहाड भी। मै साइबेरिया में बस गया और वहा मैंने ज़मीन जोती है। फिर मुझे माता-रूस की याद सताने लगी और मै अपने गाव लौट आया। हम पैदल रूस वापस गये, मुझे याद है कि एक दफा हम बेडे से नदी पर जा रहे थे, और उस समय मै बहुत पतला चिथडे लपेटे और नगे पाव था। सर्दी में जमा जा रहा था, मैं रोटी के एक टुकडे को चूस रहा था। बेडे में एक वृढे सज्जन थे, अगर उनकी मृत्यु हो गयी हो तो भगवान उनकी आत्मा को शाति दे, उन्होने मेरी तरफ दया भाव से देखा और उनके गालो पर आसू बहने लगे। 'आह' उन्होने कहा, 'काली रोटी खाते हो और तुम्हारी ज़िन्दगी भी काली है ' और जब मै वापस आया तो जैसी कि कहावत है, मेरे पास न घर था न द्वार। मेरी पत्नी थी, मगर मै उसे साइबेरिया मे कब्र में छोड कर आया था इसलिये मैंने खेतिहर का काम अपना लिया। और क्या? कहता हू तब से मेरी जिन्दगी में बुराई भी आयी है और अच्छाई भी। और मै मरना नही चाहता, मेरी बच्ची! बीस साल और ज़िन्दा रहने की मेरी इच्छा है, इसलिए तुम समझो, कि मेरी ज़िन्दगी मे बुराइयो से अच्छाइया ज़रूर ज्यादा

होगी। लेकिन मा-रूस कितनी महान है!" दायें वायें और पीछे की ओर देखते हुए उसने दुहराया।

"बाबा!" लीपा ने कहा, "जब कोई मर जाता है तो कितने दिन तक उसकी आत्मा पृथ्वी का चक्कर काटती रहती है?"

"कौन कह सकता है? देखो, हम वाविला से पूछेंगे, वह स्कूल में पढ चुका है। आजकल यहा वे हर एक चीज़ पढाते है। वाविला!"

"हा?"

"वाविला जब कोई मरता है तो कितने दिन तक उसकी आत्मा पृथ्वी का चक्कर काटती है?"

वाविला ने पहले घोडे को रोका फिर जवाब दिया—"नौ रोज़। लेकिन जब हमारे चाचा किरीला मरे तो उनकी आत्मा हमारी झोपडी में तेरह रोज़ रही थी।"

"तुम्हे कैसे मालूम?"

"तेरह दिन तक अगीठी में खडखडाहट की आवाज़ें आती रही थीं।"

"अच्छा। आगे चलो," बूढे आदमी ने कहा और यह साफ ज़ाहिर था कि उसने एक शब्द पर भी विश्वास नही किया था।

कुज़मेंकी के नज़दीक गाडिया प्रधान सडक की तरफ मुड गयी और लीपा पैदल चल पडी। प्रकाश फैल रहा था। जब वह ढाल से नाले में उतर रही थी तो उक्लेयेवो की झोपडिया और गिरजाघर धुध में छिपे हुए थे। ठड पड रही थी और लीपा को लगा कि वही अब भी कोयल कूक रही है।

जब लीपा घर पहुची तो उस वक्त तक जानवरो को चरागाह नही हाका गया था। हर एक व्यक्ति सो रहा था। वह इन्तज़ार करती हुई बरामदे में बैठी रही। बुड्ढा सबसे पहले बाहर आया, जैसे ही

उसने लीपा की ओर देखा वह सब समझ गया और कुछ देर तक एक शब्द भी नही बोल सका, सिर्फ वहा खडा मुह चला रहा था।

"आह लीपा," उसने आखिर कहा, "तुम मेरे पोते की देख भाल नही कर सकी "

वर्वारा की नीद खुल गयी। छाती पीट कर वह रोने लगी और बच्चे की लाश को ताबूत में रहने का बन्दोबस्त करने लगी।

"और वह कितना प्यारा छोटा-सा बच्चा था च-च-च," वह कहती रही, "तुम्हारे सिर्फ एक बेटा था और तुम उसकी देखभाल न कर सकी। बडी बेवकूफ हो।"

शाम और सवेरे मृतक के लिए प्रार्थनाए की गयी। अगले दिन बच्चा दफन कर दिया गया और अन्तिम क्रिया के बाद मेहमान और पादरी खाने पर इस तरह टूट पडे कि लगता था जैसे कई दिन से उन्हें खाना न मिला हो। लीपा मेज़ पर भोजन परोस रही थी और पादरी ने काटे से कुकुरमुत्ते का अचार उठाते हुए उससे कहा

"बच्चे के लिए शोक न करो। क्योकि स्वर्ग का राज्य उन्ही के लिए है।"

सब लोगो के चले जाने के बाद ही लीपा वास्तव मे समझ सकी कि निकीफर अब नही रहा, और न कभी होगा और यह समझ कर रोने लगी। उसकी समझ में नही आ रहा था कि वह किस कमरे में जाकर रोये क्योकि वह महसूस कर रही थी कि उसके बेटे के मर जाने के बाद इस घर में उसके लिए जगह नही है, यहा उसकी ज़रूरत भी नही है और हर आदमी उसके बारे में यही महसूस करता था।

"क्यो, तुम वहा किस लिए रेक रही हो?" दरवाजे में एकाएक आकर अक्सीन्या चिल्लायी। अन्तिम क्रिया के उपलक्ष्य में वह नये कपडे पहने सजी हुई खडी थी। उसके चेहरे पर पाउडर पुता हुआ था। "बन्द करो!"

लीपा ने रोना बन्द करने की कोशिश की, लेकिन वह और जोर से रोने लगी।

"क्या तुम मेरी बात सुन रही हो ?" गुस्से से जमीन पर पैर पटकते हुए अक्सीन्या चिल्लायी। "क्या सोच रही हो कि मैं किस से बाते कर रही हू ? यहा से निकल जाओ और कभी दुबारा अपना मुह न दिखाना, कैदी की बीवी, निकल जा!"

"अरे, अरे," चौंकते हुए बूढे ने कहा, "अक्सीन्या प्यारी, शात हो जाओ उसके लिए रोना स्वाभाविक है उसका बच्चा मर गया है "

"स्वाभाविक, स्वाभाविक!" चिढाते हुए अक्सीन्या ने दोहराया। "वह रात भर ठहर सकती है, लेकिन कल उसे चला जाना पडेगा। स्वाभाविक!" हसते हुए एक बार फिर दुहराकर वह दूकान में जाने के लिए मुडी। दूसरे दिन सवेरे तडके लीपा अपनी मा के पास तोर्गूयेवो चली गयी।

६

दुकान की छत और लोहे के दरवाजे पर रग कर दिया गया है और वे नये की तरह चमकते हैं। पहले ही की तरह खिडकियो में अब भी खुशनुमा जिरेनियम के फूल खिलते हैं और त्सिबूकिन खानदान में तीन साल पहले घटित घटनाओ को लोग करीब करीब भूल चुके हैं।

ग्रिगोरी पेत्रोविच को अब भी मालिक समझा जाता है लेकिन दरअसल हर चीज अक्सीन्या के हाथो में चली गयी है। वही खरीदती और बेचती है और उसकी अनुमति के बिना कोई काम नही किया जाता। ईंटो का भट्ठा अच्छी तरह चल रहा है, रेलो के लिए

ईंटो की माग बढ जाने के कारण उनकी कीमत बढ कर चौबीस रूबल प्रति हज़ार हो गयी है। औरते और लडकिया ईंटो को स्टेशन ले जाकर ट्रको पर लादती हैं। उनको इस काम के लिए पचीस कोपेक रोज़ाना मिलते हैं।

अक्सीन्या ने ख्रीमिन के साथ साझेदारी कर ली है और कारखाने का नाम अब "ख्रीमिन छोटे और कम्पनी" हो गया है। स्टेशन के पास ही उनके द्वारा एक शराबखाना खोल दिया गया है। कारखाने में नही बल्कि इस शराबखाने में अब कीमती बाजा सुनाई पडता है। डाकबाबू, जिन्होने अपनी एक तिजारत स्थापित कर ली है, अक्सर शराबखानेमें जाते है और स्टेशन मास्टर भी जाते है। ख्रीमिन छोटे ने बहरे आदमी को एक घडी दी है, जिसे वह बार बार जेब से निकाल कर कान के पास लगाकर सुनता है।

गाव में लोग कहते है कि अक्सीन्या बहुत ताकतवर हो गयी है, और यह सच ही होगा क्योकि जब निरीह भाव से मुस्कराती हुई, सुख से दमकती हुई वह खूबसूरत स्त्री कारखाने को जाती है और दिन भर लोगो को हुक्म देती रहती है तो आप उसकी ताकत का अनुभव किये बिना नही रह सकते। घर पर, गाव में, कारखाने मे हर कोई उससे डरता है। जब वह डाकखाने में नज़र आती है तो डाक बाबू यह कहते हुए उछल पडते है—

"बैठिये, अक्सीन्या अब्रामोव्ना, तशरीफ रखिए!"

एक प्रौढ टीमटाम-पसद ज़मीदार कीमती कपडे और बढिया चमडे के जूते पहने हुए एक घोडा बेचते वक्त अक्सीन्या की बातचीत से इतना मोहित हो गया कि उसने अक्सीन्या की लगायी हुई कीमत पर ही घोडा बेच दिया। बहुत देर तक उसका हाथ अपने हाथो में

पकडे रहने के वाद जमीदार उमकी हमती हुई, चतुर निरीह आखो में देखता हुआ वोला –

"तुम्हारी जैसी औरत के लिए मै समार में कुछ भी कर मकता हू। अक्सीन्या अव्रामोवना, मुझे सिर्फ यह वता दो कि हम कहा मिल सकते है वहा हमें कोई परेशान न करे?"

"क्यो, जहा तुम चाहो।"

तव से, वह टीमटाम-पसन्द प्रौढ तक़रीवन हर रोज उमकी दूकान पर वीयर पीने के लिए आता है। वीयर वहुत खराव और चिरायते की तरह कडवी होती है। जमीदार नाक-भौंह सिकोडता है लेकिन शराव पी जाता है।

वूढा त्सिवूकिन व्यापार के किसी भी मामले में अव दखल नही देता। उसकी जेवो मे कभी एक पैसा नही होता क्योकि वह अच्छे और नकली सिक्को में फर्क नही पहचान पाता। लेकिन वह इमके वारे में कुछ कहता नहीं क्योकि वह अपनी कमजोरी किमी पर जाहिर नही होने देना चाहता। वह वहुत भुलक्कड हो गया है, और अगर खाना उसके सामने परस नही दिया जाता तो वह कभी मागने के वारे में सोचता भी नही। लोग उसके विना खाने के लिए वैठने के आदी हो गये है और वर्वारा अक्सर कहती है–

"वह कल फिर विना खाना खाये सोने चला गया।"

वह यह वात वहुत शाति से कहती है क्योकि उसे अव इमकी आदत पड चुकी है। जाडे और गर्मी दोनो में रोयेंदार कोट पहने त्सिवूकिन घूमता रहता है और गर्मियो के सिर्फ वहुत गरम दिनो मे वह घर पर वैठता है। आम तौर पर जाडो का कोट पहने, कालर ऊचा किये, वह गाव में या स्टेशन जाने वाली मडक पर चक्कर काटता रहता है या गिरजे के फाटक के पाम वेंच पर सुवह से शाम

तक बैठा रहता है। वह निश्चेष्ट बैठ रहता है। गुज़रने वाले उसे सलाम करते है लेकिन वह कभी भी उनका जवाब नही देता, क्योकि किसानो के प्रति अपनी घृणा को वह अब भी सजोये हुए है। पूछे जाने पर वह समझदारी और नम्रता से जवाब देता है लेकिन उसके उत्तर हमेशा बहुत सक्षिप्त होते है।

गाव में लोग कहते हैं कि उसकी बहू ने उसे निकाल दिया है और उसे भूखा मारती है, और बूढा दान पर ज़िन्दा रहता है। किन्ही को इन अफवाहो में मज़ा आता है और कुछ लोगो को बूढे के लिए दुख होता है।

वर्वारा और मोटी हो गयी है, उसका रग और भी निखर आया है और वह अब भी दान देती है और अक्सीन्या उसे रोकती नही है। हर गर्मी में इतना ज्यादा मुरब्बा बना लिया जाता है कि इसे खाया भी नही जा पाता तब तक नये साल के बेर फलने लगते है, और मुरब्बे का रस जमकर मिस्री बन जाता है, वर्वारा इसे देखकर रुग्रासी हो जाती है, क्योकि उसकी समझ में ही नही आता कि वह इसका क्या करे।

लोग अनीसिम को भूलने लगे है। एक वार उसके पास से एक वडे कागज़ पर उसी खूवसूरत लिखावट में कविता के रूप में एक चिट्ठी आयी। स्पष्ट था कि अनीसिम का दोस्त समोरोदोव भी उसके साथ ही सज़ा भुगत रहा है। कविता के नीचे भद्दी लिखावट मे जिम का पढना मुश्किल था, लिखा हुआ था—"मैं यहा सारे समय वीमार रहता हू, वहुत दुखी हू, ईसा मसीह के नाम पर मेरी मदद करो।"

पतझड के एक धूपवाले दिन के तीसरे पहर बूढा त्सिबूकिन अपने जाडे के कोट का कालर ऊचा किये गिरजे के फाटक के पाम वाली वेंच पर वैठा हुआ था। उमकी टोपी का छोर और नाक का सिरा ही

नज़र आता था। लम्बी बेंच के दूसरे सिरे पर ठेकेदार येलीज़ारोव और उसकी बगल में स्कूल का चौकीदार याकोव बैठे हुए थे। याकोव पोपले मुह का सत्तर वर्ष का बूढा था। 'खूटा' और चौकीदार आपस में बातचीत कर रहे थे।

"बच्चो को बूढे आदमियो का पालन-पोषण करना चाहिए अपने माता-पिता का आदर करो।" याकोव ने झुझलाकर कहा। "लेकिन उसने, उसकी पुत्रवधू ने ससुर को उसीके घर से निकाल दिया है। बुड्ढे के पास खाने पीने के लिए कुछ भी नही है, उसके पास जाने के लिए कोई ठौर भी नही है। तीन दिन से उसे खाना नही मिला है।"

"तीन दिन?" 'खूटे' ने ताज्जुब से पूछा।

"हा! एक शब्द बोले बिना वह वहा बैठा है। वह कमज़ोर हो गया है। मामले को दबाया क्यो जाय? उसे बहू के खिलाफ कानून की शरण लेनी चाहिये। अदालत में उसकी तारीफ नही होगी।"

"किसकी तारीफ की गयी?" 'खूटा' ने पूछा। वह चौकीदार के शब्दो को समझ नही पाया था।

"तुमने क्या कहा था?"

"वह बुरी औरत नही है। वह मेहनत करती है। औरते बिना उसके मेरा मतलब है, बिना थोडा-सा पाप किये रह नही पाती।"

"अपने ही घर से बूढे को निकाल दिया," याकोव गुस्से में बोलता रहा। "अपना मकान हो, मैं कहता हू, तब लोगो को घर से निकालना। वह अपने को समझती क्या है? कृमि कही की!"

हिलेडुले बिना त्सिबूकिन उनकी बाते सुनता रहा।

"जब तक मकान गर्म है और औरते लडती नही तब तक क्या फर्क पडता है कि मकान तुम्हारा अपना है या किसी दूसरे का"

'खूटे' ने कहा और हसने लगा। "जब मैं नौजवान था तो अपनी नस्तास्या को बहुत प्यार करता था। वह सीधी औरत थी। वह मेरे पीछे पडी रहती थी—'एक मकान खरीदो, माकारिच, मकान खरीदो, घोडा खरीदो, माकारिच!' जब वह मरी बत भी वह यही कहती रही—'अपने लिए एक गाडी खरीद लो, माकारिच, ताकि तुम्हे पैदल न चलना पडे'। लेकिन मैंने उसे जो कुछ खरीद कर दिया, वह सिर्फ सोठ लगी रोटी थी और कुछ नही।"

"उसका पति बहरा और बुद्धू है।" 'खूटे' की बातो पर ध्यान दिये बिना याकोव कहता रहा। "दरअसल बुद्धू। उसके पास एक बत्तख से ज़्यादा दिमाग नही है। वह क्या समझता है? तुम बत्तख के सिर पर चोट मारो फिर भी वह कुछ नही समझ पायेगी।"

"खूटा" खडा हुआ और कारखाने वाले अपने मकान की ओर चल दिया। याकोव भी उठ खडा हुआ और वे दोनो बाते करते हुए साथ साथ चलने लगे। जब वे लोग करीब पचास कदम दूर चले गये तो बूढा त्सिबूकिन उठा और उनके पीछे लडखडाते कदमो से डगमगाता हुआ चल दिया, मानो वह बर्फ पर चल रहा हो।

सूरज सिर्फ साप की तरह टेढी मेढी सडक के सिरे पर चमक रहा था और गाव धुध में नहाने जा रहा था। बूढी औरते जगल से लौट रही थी, उनके पीछे बच्चे दौड रहे थे, वे कुकुरमुत्तो से भरी डलिया लिये हुई थी। औरते और लडकिया स्टेशन से ट्रको पर ईंटें लाद कर लौट रही थी। उनकी नाको पर, आखो के नीचे और गालो पर ईंटो की लाल गर्द जम रही थी। वे गाना गा रही थी। उनके आगे बासुरी की सी सुरीली आवाज़ में गाना गाती हुई, आकाश की ओर देखती, कूकती हुई लीपा चल रही थी, मानो वह ईश्वर की दया मे दिन के समाप्त हो जाने पर प्रसन्न हो कि अब आराम करने का

वक्त आ गया है। इसकी मा मजदूरनी प्रासकोव्या, भीड के साथ साथ एक गठरी लिये हमेशा की तरह हाफती चल रही थी।

"नमस्ते, माकारिच" 'खूटे' से मुलाकात होने पर लीपा ने कहा। "नमस्कार मित्र।"

"नमस्ते लीपा प्यारी।" 'खूटे' ने प्रसन्नता से जवाव दिया। "औरतो और लडकियो, रईम वढई पर मेहरवान रहो। हा-हा-हा मेरे वच्चो, मेरे वच्चो!" 'खूटे' ने सिसकी भरी। "आह मेरी अनमोल कुल्हाडियो!"

'खूटा' और याकोव चले गये। हर आदमी उनको वाते करते सुन सकता था। उसके वाद भीड का वूढे त्सिवूकिन से सामना हो गया और एकाएक वहा खामोशी छा गयी। लीपा और उसकी मा अव भीड के जरा पीछे थी। वूढे को सामने देख कर लीपा ने उसके आगे झुककर सलाम किया।

"नमस्कार, ग्रिगोरी पेत्रोविच!"

उसकी मा ने भी झुककर सलाम किया। वूढा रुक गया और चुपचाप उनकी तरफ देखता रहा। उसकी आखो में आसू भर आये। लीपा ने अपनी मा की गठरी से रोटी का एक टुकडा लेकर वूढे आदमी को पेश किया। उसने टुकडा ले लिया और उसे खाने लगा।

सूरज डूव चुका था। सडक के सिरे पर भी सूरज की रोशनी उजाला न फैला पा रही थी। ठडक और अधेरा वढते जा रहे थे। लीपा और प्रासकोव्या अपने रास्ते चली गयी और वाद में वे अपने ऊपर वार वार सलीव का चिन्ह वनाती रही।

१६००

कारखाने में नौकरी कर ली। वह करीब करीब हर गर्मी में ग्राम तौर से काफी बीमार होकर ग्राराम करने और सेहत बनाने के लिए ग्राता था।

गले तक बटन लगाये वह एक लम्बा कोट और पुरानी-सी किरमिच की पतलून पहने हुए था, जिसके पायचो के किनारो से छूछके निकल रहे थे। उसकी कमीज पर इस्त्री नही थी, वह मलिन दिखलाई पड रहा था। वह दुबला, क्षीण, बडी-बडी ग्राखो, लम्बी हडीली उगलियो और दाढीवाला, सावले रग का, परन्तु सुन्दर युवक था। शूमिन के यहा उसे लगता जैसे वह ग्रपने ही लोगो के बीच है और उन लोगो में उसी तरह से घुला मिला रहता था। गर्मियो में उसके ठहरने का कमरा भी साशा का कमरा कहलाता था।

ग्रोसारे से उसने नाद्या को देखा और उसके पास चला गया।

"यहा बहुत सुहावना है" उसने कहा।

"हाँ, बहुत सुहावना है, तुम्हे पतझड तक यहा ठहरना चाहिए।"

"हा, शायद ठहरना ही पडेगा। मै शायद तुम्हारे साथ सितम्बर तक ठहरुगा।"

वह ग्रकारण हसा और उसकी बगल में बैठ गया।

"मै यहा बैठी मा को देख रही हू," नाद्या ने कहा। "यहा से वह बहुत ही कम उम्र मालूम पड रही है। यह ठीक है कि मेरी मा में कमजोरिया है," उसने ज़रा रुककर ग्रागे कहा, "मगर फिर भी वह ग्रनूठी ग्रौरत है।"

"हा, वह बहुत ग्रच्छी है," साशा ने सम्मति प्रकट की। "एक तरह से तुम्हारी मा बहुत ग्रच्छी और दयालु है, लेकिन मै कैसे समझाऊ? मै ग्राज सवेरे तडके रसोईघर मे गया था, और मैने वहा चार नौकरो को फर्श पर सोते देखा, बिना बिस्तर, लेटने के लिए सिर्फ चिथडे, बदबू खटमल, तिलचटे बिल्कुल बीस साल पहले की तरह, ज़रा

भी बदले बिना। दादी को दोष नही देना चाहिए, वह बुड्ढी है— लेकिन तुम्हारी मा, अपनी सभ्य फ्रेंच भाषा और नाटको में दिलचस्पी के साथ.. उन्हें तो समझना चाहिए।"

साशा की आदत थी कि बोलते समय सुनने वाले की ओर दो उगलिया कर लेता था।

"यहा मुझे हर चीज़ बडी अजब लगती है," उसने कहा। "मै इनका आदी नही हू। निकम्मे कही के। कोई कभी कोई काम नही करता है। तुम्हारी मा रानी की तरह टहलने के अलावा कुछ नही करती है, दादी भी कुछ नही करती है और न तुम। और तुम्हारा मगेतर, वह भी कुछ नही करता है।"

नाद्या पिछले साल यह सब कुछ सुन चुकी थी और उसे याद आ रहा था कि उससे भी साल भर पहले यही सब सुना था। नाद्या को पता था कि साशा का दिमाग सिर्फ इसी तरह सोच सकता था। एक वक्त था कि जब इन बातो से उसका मनोरजन होता था लेकिन अब किसी वजह से उसे चिढ लग रही थी।

"यह पुराना पचडा है, मै इसे सुनते सुनते ऊब गयी हू" नाद्या ने उठते हुए कहा। "क्या तुम कोई नयी बात नही सोच सकते हो?"

वह हसा और उठ खडा हुआ, और दोनो घर में वापस चले गये। साशा के बगल मे चलती हुई वह खूबसूरत, लम्बी और छरहरी लगती थी, उसकी तडक-भडक और स्वास्थ्य कुछ खटकता-सा था। इसे खुद इस बात का अहसास था और उसे साशा के लिए अफसोस व न जाने क्यो कुछ झेंप भी लग रही थी।

"और तुम बहुत बेकार बाते करते हो" उसने कहा। "देखो, तुमने अभी मेरे अन्द्रेई के बारे में क्या कहा है लेकिन तुम उसे ज़रा भी नही जानते हो, है न।"

28*

"मेरा अन्द्रेई   तुम्हारे अन्द्रेई का, जिक्र नही, मुझे तुम्हारी जवानी का शिकवा है।"

जब वे खाने के कमरे में गये, उस वक्त हर एक खाने के लिए बैठ ही रहा था। दुहरे बदन की असुन्दर बूढी औरत मोटी भौंहें और मूछो वाली, नाद्या की दादी, जिसे घर का हर एक प्राणी दादी कहता था, जोर से बात कर रही थी। उसकी आवाज़ और बात करने के ढग से जाहिर होता था कि घर की असली मालिकिन वही है। बाजार में दूकानो की कतारो की वह मालिकिन थी, और खम्भो और बगीचे वाला मकान भी उन्ही का था। लेकिन हर रोज़ सवेरे वह भगवान से प्रार्थना करती कि सर्वनाश से भगवान उसकी रक्षा करे और रो पडती। उसकी बहू, नाद्या की मा, नीना इवानोव्ना, गेहुआ रग की, तग कपडे पहने, बिना कमानी का चश्मा लगाये और सब उगलियो में हीरे की अगूठिया पहने हुए थी, पादरी अन्द्रेई, पोपले और दुबले जो हमेशा ऐसे लगते जैसे कोई मजाकिया बात कहने जा रहे हो और उनका लडका अन्द्रेई अन्द्रेइच नाद्या का मगेतर तगडा, खूबसूरत, घुघराले बालो वाला नौजवान जो एक अभिनेता या कलाकार ज्यादा मालूम पडता था, ये तीनो सम्मोहन-विद्या के बारे में बाते कर रहे थे।

"तुम यहा एक हफ्ते में मोटे हो जाओगे" दादी ने साशा से कहा। "लेकिन तुम्हे और ज्यादा खाना चाहिए। ज़रा अपने को देखो," उन्होंने आह भरी, "तुम बहुत डरावने लगते हो। एक आवारा बेटा, वाकई तुम वही हो।"

"ऊधमी जीवन बसर करने की वजह से इसका शरीर क्षय हुआ है   " पादरी अन्द्रेई ने धीरे धीरे शब्द निकालते हुए विचार प्रकट किये। उनकी आखे हस रही थी।

"मै अपने बूढे पिता को प्यार करता हू" अन्द्रेई अन्द्रेइच ने अपने पिता काकन्धा छूते हुए कहा। "प्यारे बुजुर्ग, अच्छे बुजुर्ग।"

किसी ने कुछ नही कहा। साशा एकाएक हसा और उसने रुमाल से अपने ओठ दबा लिये।

"तो तुम्हे सम्मोहन-विद्या मे विश्वास है" पादरी अन्द्रेई ने नीना इवानोव्ना से पूछा।

"मै ठीक नही कह सकती कि मैं इसमें यकीन करती हू" नीना इवानोव्ना ने गभीर, लगभग कठोर, भाव दर्शाते हुए जवाब दिया, "लेकिन मुझे यह मानना पडता है कि प्रकृति में बहुत कुछ अगम्य और रहस्यमय है।"

"मै तुमसे सहमत हू, हालाकि मै यह और जोड दू कि हम लोगो की धार्मिक आस्था रहस्य का क्षेत्र काफी कम कर देती है।"

एक बहुत ही बडा और रसदार मुर्ग मेज पर परोसा गया। फादर अन्द्रेई और नीना इवानोव्ना बातो में मशगूल रहे। नीना इवानोव्ना की उगलियो के हीरे चमक रहे थे और आखो में आसू, वह बहुत भावुक हो गयी थी।

"मै आप के साथ तर्क करने का साहस तो नही करती हू" उसने कहा, "लेकिन आप सहमत होगे कि जिन्दगी में बहुत-सी बिना हल की हुई पहेलिया है।"

"एक भी नही, मैं तुम्हे यकीन दिलाता हू।"

खाने के बाद अन्द्रेई अन्द्रेइच ने वायलिन बजाया और इसके साथ में नीना इवानोव्ना पियानो बजा रही थी। उसने विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान विभाग मे दस साल पहले डिग्री प्राप्त कर ली थी परन्तु न वह नौकर था और न उसका कोई मुस्तकिल धन्धा था, सिवा इसके कि कभी वह सहायतार्थ सगीत-कार्यक्रमो मे वायलिन बजाता था। शहर में वह एक सगीतज्ञ के रूप में मशहूर था।

अन्द्रेई अन्द्रेइच बजा रहा था और सब खामोशी से सुन रहे थे। मेज़ पर समोवार से भाप निकल रही थी और अकेला साशा चाय पी रहा था। जैसे ही बारह बजे, बाजे का एक तार टूट गया। सब हस पडे और बिदाई की भडभडी शुरू हो गयी।

अपने मगेतर से 'शुभ रात्रि' कह कर नाद्या ऊपर चली गयी। ऊपर के कमरे उसके और उसकी मा के पास थे (नीचे के हिस्से में दादी रहती थी)। नीचे खाने के कमरे में बत्तिया बुझायी जा रही थी, लेकिन साशा बैठा चाय पीता रहा। वह हमेशा देर तक चाय पीता था मास्को के फैशन में एक के बाद एक छ-सात गिलास चाय। कपडे उतार कर बिस्तर पर लेटने के बहुत देर बाद तक नाद्या को नौकरो के मेज़ साफ करने की आवाज़ और दादी की डाट सुनायी पडती रही। आखिरकार, नीचे साशा के कमरे से कभी कभी खाँसने की आवाज़ को छोड कर घर में खामोशी छा गयी।

२

ज़रूर दो बजा होगा जब नाद्या जग गयी, क्योकि पौ फटने लगी थी। दूर चौकीदार की लाठी की खडखडाहट सुनाई पड रही थी। नाद्या को नीद नही आ रही थी, आराम मे लेटने के लिए उसे अपना बिस्तर जरूरत से ज्यादा मुलायम जान पड रहा था। गत कई रातो की तरह मई की इस रात को भी वह बिस्तर में बैठ गयी और विचारो में खो गयी। यह विचार पिछली रात की ही तरह अरुचिकर, व्यर्थ के और अस्तव्यस्त। अन्द्रेई अन्द्रेइच का ख्याल आया कि किस तरह उसने अपनी प्रणय-प्रार्थना की और शादी का प्रस्ताव रक्खा, और कैसे उसने वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था और बाद मे धीरे

धीरे वह इस अच्छे और चतुर आदमी की कद्र करने लगी थी। लेकिन जब शादी का सिर्फ एक महीना रह गया था, तो न मालूम क्यो उसे डर और बेचैनी लगने लगी थी, जैसे उसके भविष्य में कोई अस्पष्ट शोक निहित हो।

"टिक-टोक, टिक-टोक " चौकीदार की अलसायी आहट सुनाई पड रही थी, "टिक-टोक टिक-टोक "

पुराने फैशन की बनी हुई बडी खिडकी से बगीचा और उसके पीछे फूलो से लदी बकाइन की झाडिया, ठडी हवा मे उनीदी और अलसायी दिखलाई पड रही थी। और एक घना कोहासा बकाइन की झाडियो पर छाया हुआ था, मानो उन्हे घेर लेने का निश्चय कर चुका हो। दूर पेडो मे कौवो की आवाज़ सुनाई पड रही थी।

"हे ईश्वर, मुझे क्यो इतना शोक है?"

क्या शादी से पहले सब लडकिया ऐसा ही महसूस करती है? कौन जानता है? क्या यह साशा का प्रभाव है? लेकिन साशा तो सालो-साल उन्ही पुरानी बातो को बराबर दुहराता रहा था, मानो रटी हुई हो। और वह जो कुछ भी कहता वह बहुत भोला और अजीब होता मगर वह साशा का विचार अपने दिमाग मे निकाल क्यो नही पा रही थी? क्यो?

चौकीदार बहुत देर पहले ही गश्त खत्म कर चुका था। पेडो की चोटियो पर और खिडकी के नीचे चिडियो ने चहचहाना शुरु कर दिया था, बगीचे का कुहासा दूर हो गया था, हर चीज़ बसन्त की धूप मे चमक रही थी, हर चीज मुस्कराती हुई मालूम दे रही थी। थोडी देर में सारा बगीचा सूर्य की प्यारी गर्मी से गर्म हो जीवित हो उठा, पेडो की पत्तियो पर ओस हीरो की तरह चमक रही थी और पुराना उपेक्षित बगीचा इस सवेरे मे तरुण और उल्लसित हो उठा था।

दादी भी जाग चुकी थी। साशा अपनी भद्दी और रूखी खासी खास रहा था। नीचे से नौकरो के समोवार लाने और इधर-उधर कुर्सिया हटाये जाने की आवाज़ आ रही थी।

समय धीरे धीरे गुज़र रहा था। नाद्या उठकर बहुत देर से बगीचे में टहल रही थी, मगर सवेरा फिर भी लम्बा होता जा रहा था।

नीना इवानोव्ना, आसू भरे, हाथ में मिनरल वाटर का गिलास लिये हुए आयी। उसे अध्यात्मवाद और होम्योपेथी में दिलचस्पी थी, काफी पढा था और उसे अपनी शकाओ के बारे में बात करने का शौक था। और नाद्या का ख्याल था कि इन सब में कोई रहस्यमय गूढ महत्व होगा। उसने अपनी मा का चुम्बन किया और उसके बगल में चलने लगी।

"तुम किस के बारे में रो रही हो मा?" उसने पूछा।

"मैंने कल रात एक बूढे आदमी और उसकी बेटी के बारे में किताब पढी थी। बूढा किसी दफ्तर में काम करता था और क्या

नाद्या को महसूस हुआ कि उसकी मा उसे नही समझती, उसे समझने में असमर्थ और अयोग्य है। इससे पहले कभी उसने यह बात महसूस नही की थी। इस एहसास से वह डर गयी, वह छिपना चाहती थी और अपने कमरे में वापस चली गयी।

दो बजे दिन में सब खाना खाने बैठे। आज बुध यानी उपास का दिन था और दादी के खाने में बिना गोश्त का शोरबा मछली और दलिया परसा गया।

दादी को चिढाने के लिए साशा ने गाजर का शोरबा और गोश्त का शोरबा दोनो चीज़ें खा ली। वह पूरे खाने भर मज़ाक करता रहा। लेकिन उसके लतीफे लम्बे और हमेशा सदाचार गर्भित होते थे और बिल्कुल पुरमज़ाक नही मालूम पडते थे जबकि कोई खास हसी की बात कहने के पहले वह अपनी दो हडीली और निर्जीव-सी उगलिया उठाता था, और यह बात याद आते ही कि वह बहुत बीमार है और शायद ज़्यादा दिन ज़िन्दा न रहे, इतना दु ख मन में उमड पडता कि रोना आ जाता।

भोजन के बाद दादी अपने कमरे में आराम करने चली गयी। नीना इवानोव्ना थोडी देर पियानो बजाती रही और फिर वह भी उठ कर कमरे के बाहर चली गयी।

"ओह, प्यारी नाद्या," साशा ने अपने रोज़मर्रा के खाने के बाद के विषय पर बोलते हुए कहा, "अगर तुम मेरी बात सुनो! तुम सुनो तो!"

वह एक पुराने फैशन की आराम-कुर्सी पर सिमटकर, आखें बन्द किये बैठी थी, और वह कमरे में चहलकदमी कर रहा था।

"अगर तुम चली जाओ और पढो" उसने कहा। "केवल सुविज्ञ और मस्त व्यक्ति दिलचस्प होते हैं, केवल उन्ही की ज़रूरत

होती है। और जितने ही ऐसे आदमी ज्यादा होगे, उतनी ही शीघ्र पृथ्वी पर स्वर्ग होगा। तब ईट से ईंट बज जायेगी। तुम्हारे इस शहर में हर चीज उलट-पुलट हो जायेगी। हर चीज बदल जायेगी, मानो कोई जादू हो गया हो। और फिर यहा शानदार भव्य इमारते, सुन्दर उद्यान, बढिया फव्वारे और अच्छे आदमी होगे लेकिन वह मुख्य बात नही है। मुख्य बात यह है कि कोई भीड नही होगी, जैसा कि इस शब्द के मानी हम समझते है। अपनी मौजूदा शक्ल में यह बुराई गायब हो जायेगी क्योकि हर व्यक्ति की आस्था होगी, और वह जानता होगा कि उसे जीवन में क्या करना है, और कोई भी भीड से समर्थन नही चाहेगा। प्यारी बच्ची, चली जाओ। उन्हे दिखा दो कि इस सुस्त, पापी और गतिरुद्ध जिन्दगी से तुम ऊब गयी हो। कम से कम तुम अपने को दिखा दो कि तुम ऊब गयी हो।"

"असभव, साशा, मै शादी करने जा रही हू।"

"रहने दो! उससे क्या होता है?"

वे बगीचे में चले गये और टहलने लगे।

"कुछ भी हो, मेरी प्यारी, तुम्हे सोचना ही पडेगा, समझना ही पडेगा कि तुम्हारी बेकार की जिन्दगी कितनी घृणात्मक और अनैतिक है," साशा बोलता रहा। "क्या तुम देखती नही हो, दूसरे तुम्हारे लिए काम करते है ताकि तुम्हारी मा, तुम्हारी दादी और तुम बेकार की जिन्दगी बसर कर सको। तुम दूसरो की जिन्दगी नष्ट कर रही हो, क्या यह अच्छा है, क्या वह गन्दा नही है?"

नाद्या कहना चाहती थी– "हा, तुम ठीक हो," बताना चाहती थी कि वह उसे समझती थी, लेकिन उसकी आखो में आसू भर आये, वह खामोश हो गयी, लगा जैसे कि वह अपने में सिमट गयी हो। वह अपने कमरे में चली गयी।

शाम को अन्द्रेई अन्द्रेइच आया और सदैव की तरह बहुत देर तक वायलिन बजाता रहा। वह प्रकृति मे चुप्पा था, और उसे वायलिन बजाना शायद इसीलिए प्रिय था, क्योंकि बजाते वक्त उसे बोलना नही पडता था। दस बजने के फौरन बाद ही, जब उसने घर जाने के लिए अपना कोट पहन लिया तो उसने नाद्या को अपनी बाहों में भर लिया और उसके कन्धे, बाहों और चेहरे पर गर्म चुम्बनो की बौछार कर दी।

"मेरी प्यारी, मेरी प्रियतमा, मेरी सुन्दरी," वह फुसफुसाया। "मै कितना खुश हू, मै समझता हू कि मै खुशी से पागल हो जाऊगा।"

और यह भी उसे लगा कि वह बहुत पहले सुन चुकी है, जैसे किसी पुराने जीर्ण-शीर्ण उपन्यास में पढ चुकी हो जिसे अब कोई न पढता हो।

खाने के कमरे में साशा अपनी पाचो उगलियो की नोकों पर प्लेट सम्हाले हुए चाय पी रहा था। दादी अकेली ताश खेल रही थी। नीना इवानोव्ना पढ रही थी। दीपक की रोशनी कमरे में थिरक रही थी और हर चीज़ स्थिर और सुरक्षित मालूम हो रही थी। नाद्या ने शुभ रात्रि कहा और अपने कमरे में चली गयी। बिस्तर पर लेटते ही उसको नींद आ गयी। लेकिन पिछली रातो की तरह सहर की पहली किरन के साथ ही वह जाग गयी। वह सो नहीं सकी, उसके दिल में बेचैनी और एक बोझ-सा था। वह उठ कर बैठ गयी और घुटनो पर सर रख लिया और सोचने लगी—अपने मंगेतर के बारे में, अपनी शादी के बारे मे किसी कारण से उसे याद आ गया कि उसकी मा ने अपने पति को प्यार नही किया था और अब उनके पास अपना कहने को कुछ नही था, और पूरी तरह से दादी

यानी अपनी सास पर निर्भर थी। कोशिशो के बावजूद नाद्या न समझ सकी कि कैसे उसने मा को "विशेष और विशिष्ट " समझा था और यह नही देखा था कि वह सिर्फ मामली और दुखी औरत है।

नीचे साशा भी जाग चुका था, उसे उसकी खासी सुनाई दे रही थी। वह एक अजीब भोला व्यक्ति है, नाद्या ने सोचा और उसके सपनो में कुछ वाहियातपने है,—उन शानदार और बढिया उद्यानो और फव्वारो के सपनो में। लेकिन उसकी सरलता में, वाहियातपने मे भी कितनी सुन्दरता है कि जैसे ही नाद्या ने सोचना शुरू किया कि चला जाना और पढना चाहिए, उसके सारे दिल में, उसके भीतर ताज़गी देने वाली ठडक भर गयी और वह आह्लादविभोर हो उठी।

"इसे न सोचना ही अच्छा है" वह फुसफुसायी, "इसके वारे मे न सोचना ही अच्छा है "

दूरी पर चौकीदार की टिक-टोक टिक-टौक की आवाज़ आ रही थी।

३

जून के मध्य में साशा एकाएक खीज और ऊव उठा और मास्को वापस जाने के वारे में वाते करने लगा।

"मै इस शहर में नही रह सकता" उसने रुखाई से कहा। "न नल है और न पानी की निकासी का इन्तज़ाम! मेरे लिए खाना खाना भी असह्य है—रसोई इतनी गदी है कि क्या कहा जाय "

"थोडा और इन्तिज़ार करो, आवारा वेटे!" दादी वुदवुदायी, "शादी सातवी को होगी!"

"मै नही रुकना चाहता।"

"तुमने कहा था कि तुम हमारे साथ सितम्बर तक ठहरोगे।"

"और अव मै नही चाहता। मुझे काम करना है।"

गर्मिया ठण्डी और भीगी निकली। पेड हमेशा टपटपाते रहते। वगीचा उदास और अप्रिय मालूम होता। काम करने की इच्छा विल्कुल स्वाभाविक थी। ऊपर नीचे हर कमरे से अनजानी औरतो की आवाजें सुनाई पडती। दादी के कमरे में सिलाई की मशीन खटखट करती रहती। यह सव शादी की पोशाक के ऊपर शोरगुल का हिस्सा था। नाद्या के लिए अकेले जाडे के कोट छ वन रहे थे और उनमें सवसे सस्ता, दादी ने डीग मारी—तीन सौ रूवल का था। इम शोर-शरावे से साशा को चिढ हो रही थी। वह अपने कमरे में मुह फुलाये वैठा रहता। लेकिन उन लोगो ने उसे ठहरने के लिए राजी कर लिया था और उसने पहली जुलाई से पहले न जाने का वादा कर लिया था।

वक्त जल्दी गुज़र गया। सेट पीटर्स के दिन, खाना खाने के वाद अन्द्रेई अन्द्रेइच नाद्या को दम्पति के लिए किराये पर लिए गए सजाए हुए मकान को एक वार फिर देखने के लिए मास्को स्ट्रीट ले गया। यह मकान दुमज़िला था लेकिन अभी तक सिर्फ ऊपर का तल्ला मजाया गया था। चमकते हुए फर्श वाले नाचने के हाल में, जिमका फर्श इस ढग से रगा गया था कि वह तख्तो का वना दिखाई दे, मुडी हुई लकडी की कुर्सिया, एक वडा पियानो और वायलिन के लिए स्टेन्ड था। ताज़े रग की वू आ रही थी। दीवाल पर मुनहरे चौखटे में मढा हुआ एक वडा तैल-चित्र टगा हुआ था—एक नगी औरत की तस्वीर, जो टूटे हत्येदार वैजनी रग के गुलदान के पास खडी हुई थी।

"वहुत सुन्दर तस्वीर है।" अन्द्रेई अन्द्रेइच ने मम्मान-भरी आह के साथ कहा, "यह शिग्मचेवम्की की कृति है।"

उसके वाद दीवानखाना था, जिसमें एक गोल मेज, एक मोफा और चमकीले नीले रग के कपडे में मढी हुई आराम-कुर्सिया थी।

सोफे के ऊपर पादरी अन्द्रेई का एक बडा चित्र था। चित्र में पादरी साहब अपने सब तमगे और अपना खास टोप लगाये हुए थे। तब वे लोग खाने के कमरे में गए और वहा से सोने के कमरे में। यहा मद्धिम रोशनी में, अगल-बगल दो बिस्तरे लगे थे, और ऐसा लगता था कि इस कमरे को सजाने वालो ने यह समझ लिया था कि यहा जीवन हमेशा सुखी रहेगा, जैसे और कुछ हो ही नही सकता। अन्द्रेई अन्द्रेइच नाद्या को कमरे दिखाता रहा, बिना उसकी कमर से हाथ हटाये हुए। और वह अपने को कमजोर, दोषी समझ रही थी, और उसे उन तमाम कमरो, बिस्तरो और कुर्सियो से घृणा हो रही थी। नगी औरत से तो उसे मतली आ रही थी। अब वह साफ तौर पर समझ रही थी कि वह अन्द्रेई अन्द्रेइच को अब प्यार नही करती, शायद कभी उसे प्यार नही करती थी। लेकिन उसे मालूम नही था कि इसे वह कैसे कहे, किससे कहे, और कहे ही क्यो। हालाकि वह रात दिन इसके वारे में सोचती, वह ठीक नही समझ पा रही वह उसकी कमर में हाथ डाले था, उससे इतनी दयालुता से, इतनी नम्रता से वाते कर रहा था, अपने घर में घूमता हुआ वहुत खुश था। और उसकी सिर्फ फहडपन, जाहिल, भौंडा असह्य फूहडपन दिखलाई पड रहा था। और अपनी कमर में अन्द्रेई का हाथ उसको लोहे के घेरे की तरह ठडा और सख्त मालूम हो रहा था। किसी भी क्षण वह भाग जाने को, सिसकिया भरने को, खिडकी से वाहर कूद पडने को तैयार थी। अन्द्रेई अन्द्रेइच उसको गुस्लखाने में ले गया, दीवाल में जडे हुए एक नल को दवाया और पानी वह निकला।

"कैसा रहा?" उसने कहा और हस पडा। "मैंने उन लोगो से एक सौ वाल्टियो की एक टकी वनवायी ताकि हमारे गुस्लखाने के नल मे पानी आता रहे।"

वे थोडी देर अहाते में टहलते रहे और फिर सडक पर निकल आये और किराये की गाडी में बैठ गये। धूल भरे बादल उठे और लगा कि पानी बरसने वाला है।

"क्या तुम्हें सर्दी लग रही है?" अन्द्रेइ अन्द्रेइच ने धूल म आखें सिकोडते हुए पूछा। उसने जवाब नही दिया।

"तुम्हे याद है कि कल साशा मेरे कुछ काम न करने पर भर्त्सना कर रहा था?" उसने थोडी देर रुक कर कहा। "हा, वह ठीक था। एकदम ठीक था! मै कुछ नही करता और न कुछ करना मैं जानता ही हू। ऐमा क्यो है, मेरी प्यारी? ऐमा क्यो है कि टोपी में बैज लगाकर दफतर जाने के विचारमात्र से मुझे मतली आने लगती है, ऐसा क्यों है कि मै एक वकील को, लेटिन के शिक्षक को, नगरपिता को देखना तक बरदाश्त नही कर सकता? आह मा-रूस! मा-रूस! तुम अपने वक्ष पर कितने आलसियो और बेकारो को वहन करती हो। मेरी तरह के कितने लोग, लम्बा कष्ट भोगने वाली मा!"

और अपनी निष्क्रियता को समय का चिन्ह मान कर उस पर सिद्धान्त बनाना शुरू कर दिया।

"जब हमारी शादी हो जायेगी" वह कहता रहा, "हम देहात में चले जायेंगे, मेरी प्यारी, वहा हम काम करेगे। हम वहा बगीचे और झरने वाला एक छोटा-सा ज़मीन का टुकडा ख़रीद लेगे और हम मेहनत करेगे, ज़िन्दगी समझेंगे आह यह कितना सुन्दर होगा!"

उसने अपना टोप उतार लिया। उसके बाल हवा मे लहराने लगे। वह उसकी बाते सुनती रही और सोचती रही— "या ईश्वर! मै घर जाना चाहती हू। या ईश्वर!"

नाद्या के घर वापस पहुचने से पहले ही उन्होंने पादरी अन्द्रेई को पकड लिया।

हो। यह गुज़र जायेगा। ऐसा अक्सर होता है। शायद तुम आन्द्रेई से झगड आयी हो, लेकिन प्रेमियो के झगडे का अन्त चुबनो में होता है।"

"जाओ, मा, जाओ" नाद्या रो पडी।

"हा," नीना इवानोव्ना ने थोडा रुककर कहा। "कल तक तुम एक छोटी बच्ची थी और अब तुम करीब करीब दुलहिन हो। प्रकृति सदैव परिवर्तनशील है। इसके पहले कि तुम समझ सको कि तुम कहा हो, तुम स्वय मा हो जाओगी और उसके बाद बूढी, जिसके मेरे समान एक उपद्रवकारी बेटी होगी।"

"मेरी प्यारी, तुम दयालु और चतुर हो और तुम दुखी हो।" नाद्या ने कहा। "तुम बहुत दुखी हो, तुम ऐसी फूहड बाते क्यो करती हो? क्यो, ईश्वर के लिए?"

नीना इवानोव्ना ने बोलने की कोशिश की। लेकिन एक शब्द भी नही बोल सकी, केवल सिसकिया भरती रही और अपने कमरे में लौट गयी। एक बार फिर चिमनी से भारी आवाजो का रुदन सुनाई दिया और एकाएक नाद्या भयभीत हो गयी। वह बिस्तर से कूदकर अपनी मा के कमरे में भाग गयी। नीना इवानोव्ना की आखें रोने से सूज गयी थी, वह नीले रग का कबल ओढे हुए एक किताब हाथ मे लिये लेटी हुई थी।

"मा, मेरी बात सुनो," नाद्या ने कहा "सोचो, मुझे समझने की कोशिश करो, मैं तुमसे प्रार्थना करती हू। सिर्फ सोचो कि हमारा जीवन कितना ओछा और अपमानजनक है। मेरी आखें खुल गयी हैं। मैं अब सब समझ रही हू। और तुम्हारा अन्द्रेई अन्द्रेइच क्या है? क्यो, वह बिल्कुल भी अक्लमद नही है। मा! हे ईश्वर, हे ईश्वर, ज़रा सोचो, मा, वह बेवकूफ है!"

नीना इवानोव्ना एक झटके से उठकर बैठ गयी।

"तुम और तुम्हारी दादी, मुझे सताती रहती हैं।" उसने हिचकी भरते हुए कहा। "मैं जिन्दगी चाहती हू, जिन्दगी।" वार वार अपनी छाती पर मुक्के मारते हुए उसने दुहराया। "तुम मुझे आजादी दे दो। मैं अभी भी जवान हू, मैं जिन्दगी चाहती हू। तुमने मुझे वूढी औरत वना दिया है। "

वह फूट फूटकर रोती हुई लेट गयी और उसने कम्बल ओढ लिया। वह छोटी-सी वेवकूफ और दयनीय लग रही थी। नाद्या ने अपने कमरे में जाकर कपडे पहन लिये और फिर सुवह के इन्तजार में खिडकी पर जाकर वैठ गयी। सारी रात वह वैठी सोचती रही और ऐसा लग रहा था कि कोई झिलमिली भडभडा रहा है और सीटी वजा रहा है।

दूसरे दिन सवेरे दादी ने शिकायत की कि हवा ने सारे सेव उखाड दिये थे और पुराने वेर के पेड को वीच से चीर दिया था। सुवह उदास, धुधली थी। ऐसा दिन जव कि सुवह से ही लैम्प जलाने की तवीयत होने लगती है। हर आदमी ठण्ड की शिकायत कर रहा था, खिडकियो के शीशो पर पानी की वूदें टपटप कर रही थी। नाश्ते के वाद नाद्या साशा के कमरे में गयी और विना वोले कोने में रक्खी हुई कुर्सी के सामने घुटनो के वल गिर पडी और अपने चेहरे को हाथो से ढाप लिया।

"क्या?" साशा ने पूछा।

"मैं इस तरह से नही रह सकती, मैं नही रह सकती" उसने कहा। "मैं नही जानती मैं यहा पहले किस तरह रहती थी, मैं विल्कुल नही समझ सकती। मैं अपने मगेतर से घृणा करती हू अपने आप से घृणा करती हू और मैं इस पूरी काहिल और खोखली जिन्दगी से घृणा करती हू "

"हा, हा" साशा ने कहा, वह अभी तक समझा नही था कि वह किस वारे में कह रही है। "कुछ नही अच्छा "

"यह ज़िन्दगी मेरे लिये घृणित है," नाद्या ने कहा "मैं एक दिन और यहा रहना बरदाश्त नही कर सकती हू। मैं कल चली जाऊगी। ईश्वर के लिए, मुझे अपने साथ ले चलो!"

साशा आश्चर्य में एक क्षण उसकी ओर देखता रहा। आखिरकार बात उसकी समझ में आ गयी और वह एक बच्चे की तरह खुशी मनाने लगा, अपनी बाहे हिलाने और ढीली-ढाली चट्टियो में पैर घसीटने लगा जैसे वह आनन्द के मारे नाच रहा हो।

"वाह वाह!" उसने अपने हाथ मलते हुए कहा "वाह, भगवान, यह कितना बढिया है!"

वह उसकी तरफ निर्निमेष आखो से, प्रेम से सनी टकटकी बाधे देखती रही, जैसे मुग्ध हो गयी हो और प्रतीक्षा में थी कि वह फौरन ही कोई खास और असाधारण महत्व की बात कहे। साशा ने अभी तक उससे कुछ नही कहा था लेकिन उसे अनुभव हो रहा था कि कुछ नवीन और विस्तृत, कोई अभूतपूर्व नवीन चीज़ उसके सामने होने जा रही है, और वह उसको आशा से देखती रही। वह हर नवीन चीज़ के लिए तैयार थी, मृत्यु के लिए भी।

"मैं कल जा रहा हू," कुछ देर रुककर उसने कहा, "तुम मुझे छोडने के लिए स्टेशन तक आओगी। मै तुम्हारा सामान अपने सन्दूक में रख लूगा और तुम्हारे लिए टिकट खरीद लूगा और जब तीसरी घटी बजे, तो तुम गाडी में चढ जाना और हम चले जायेंगे। मास्को तक मेरे साथ चलो और वहा से पीतरबूर्ग खुद अकेली चली जाओ। क्या तुम्हारे पास पासपोर्ट है?"

"हा।"

"तुम कभी इसके लिए नही पछताओगी, कभी पश्चाताप नही करोगी, कसम से," साशा ने उत्साह से कहा। "तुम चली जाओगी

श्रौर श्रध्ययन करोगी, श्रौर वाद में श्रपने श्राप रास्ता निकल श्रायेगा। जैसे ही तुम श्रपनी ज़िन्दगी उलट कर दोगी, हर चीज़ वदल जायेगी। वडी वात तो ज़िन्दगी का उलट-पुलट कर देना है, वाकी सव वेकार है। श्रच्छा तो, हम लोग कल जा रहे है?"

"हा, श्रच्छा, ईश्वर के लिए, चलो!"

नाद्या का विचार था कि वह उद्वेलित हो गई है श्रौर उसका मन कभी इतना वोझिल नही था, उसे पूरा यकीन था कि जाने के पहले उसको वहुत सदमा होगा, दुखद विचार उसके दिमाग पर छा जायेंगे। लेकिन वह मुश्किल से, ऊपर श्रपने कमरे में पहुचकर विस्तर पर लेटी ही थी, कि गहरी नीद में सो गयी श्रौर श्रासू भरे चेहरे श्रौर श्रोठो पर मुस्कराहट लिये शाम तक श्रच्छी तरह सोती रही।

५

गाडी मगायी गयी थी। नाद्या कोट श्रौर टोप लगाये श्राखिरी मरतवा श्रपनी मा श्रौर उन सव चीज़ो को जो श्रभी तक उसकी थी, देखने ऊपर गयी। वह श्रपने कमरे में थोडी देर विस्तर के पास खडी रही, विस्तर श्रभी तक गर्म था, चारो श्रोर देखा श्रौर फिर खामोशी से श्रपनी मा के कमरे में गयी। नीना इवानोवना सो रही थी श्रौर उसके कमरे में सन्नाटा था। मा के वाल ठीक करने श्रौर उसे चूमने के वाद एक दो मिनट तक खडी रही तव धीरे कदमो से नीचे उतर गयी।

वारिश की झडी लगी हुई थी। पानी से भीगी श्रौर टपकती हुई गाडी श्रोसारे के सामने खडी थी। गाडी की छतरी उठी हुई थी।

"तुम्हारे लिए उसके पास जगह नही है, नाद्या," नौकर गाडी में सामान रखने लगे तो दादी ने कहा। "मुझे ताज्जुव है कि तुम ऐसे

"यह ज़िन्दगी मेरे लिये घृणित है," नाद्या ने कहा "मैं एक दिन और यहा रहना बरदाश्त नही कर सकती हू। मैं कल चली जाऊगी। ईश्वर के लिए, मुझे अपने साथ ले चलो!"

साशा आश्चर्य में एक क्षण उसकी ओर देखता रहा। आखिरकार बात उसकी समझ में आ गयी और वह एक बच्चे की तरह खुशी मनाने लगा, अपनी बाहे हिलाने और ढीली-ढाली चट्टियो में पैर घसीटने लगा जैसे वह आनन्द के मारे नाच रहा हो।

"वाह वाह!" उसने अपने हाथ मलते हुए कहा "वाह, भगवान, यह कितना बढिया है!"

वह उसकी तरफ निर्निमेष आखो से, प्रेम से सनी टकटकी बाधे देखती रही, जैसे मुग्ध हो गयी हो और प्रतीक्षा में थी कि वह फौरन ही कोई खास और असाधारण महत्व की बात कहे। साशा ने अभी तक उससे कुछ नही कहा था लेकिन उसे अनुभव हो रहा था कि कुछ नवीन और विस्तृत, कोई अभूतपूर्व नवीन चीज़ उसके सामने होने जा रही है, और वह उसको आशा से देखती रही। वह हर नवीन चीज़ के लिए तैयार थी, मृत्यु के लिए भी।

"मै कल जा रहा हू," कुछ देर रुककर उसने कहा, "तुम मुझे छोडने के लिए स्टेशन तक आओगी। मै तुम्हारा सामान अपने सन्दूक में रख लूगा और तुम्हारे लिए टिकट खरीद लूगा और जब तीसरी घटी बजे, तो तुम गाडी में चढ जाना और हम चले जायेंगे। मास्को तक मेरे साथ चलो और वहा से पीतरबूर्ग खुद अकेली चली जाओ। क्या तुम्हारे पास पासपोर्ट है?"

"हा।"

"तुम कभी इसके लिए नही पछताओगी, कभी पश्चाताप नही करोगी, कसम से," साशा ने उत्साह से कहा। "तुम चली जाओगी

याद आया कि वह आज़ाद होने और पढने के लिए जा रही है, जैसे कभी पुराने ज़माने में "कज़ाकों के पास भाग जाना" कहा जाता था। वह हसी, रोयी और प्रार्थना की।

"अच्छा, अच्छा" साशा ने मुस्कराते हुए कहा, "अच्छा, अच्छा।"

६

पतझड समाप्त हुआ और उसके बाद जाडा भी। नाद्या को अब घर की याद बहुत सताती और वह हर रोज़ अपनी दादी और मा के बारे में सोचती। उसे साशा का भी ख्याल आता। घर से कृपापूर्ण और सहृदय पत्र आते जिससे लगता था कि सब बात क्षमा कर दी गयी थी और भूली जा चुकी थी। मई की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के बाद वह स्वस्थ और सानन्द घर को रवाना हो गयी। साशा से मिलने के लिए वह मास्को मे रुकी। वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा कि साल भर पहले, डाढी रक्खे, अस्त-व्यस्त, वही पुराने फैशन का लम्बा कोट और पुरानी किरमिच की पतलून पहने, उसकी आखें हमेशा की भाति बडी और सुन्दर। लेकिन वह बीमार और परेशान लग रहा था। वह अधिक बूढा और दुबला दिखाई दे रहा था और लगातार खासता था। नाद्या को वह नीरस और तनिक पिछडा हुआ लग रहा था।

"अरे, यह तो नाद्या है।" खुशी से हसते हुए, वह चिल्लाया। "मेरी प्यारी, मेरी लाडली!"

वे दोनों साथ साथ तम्बाकू के धुए और रग व स्याही की दम घोटने वाली बदबू वाले धातु-शिल्पवाले कमरे मे बैठे, और फिर साशा के कमरे में चले गये, वहा तम्बाकू की बू भरी हुई थी, कूडा-करकट फैला हुआ था और चारो तरफ गन्दगी थी। मेज़ पर ठडे समोवार के पास एक टूटी प्लेट रखी हुई थी, जिसमें भूरा-सा एक कागज़ का टुकडा

खराब मौसम में उसे छोड़ने जाना चाहती हो। अच्छा हो कि तुम घर पर ही ठहरो। जरा बारिश को तो देखो!"

नाद्या ने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन कह न सकी। साशा ने उसे गाडी में बिठाया और कबल से उसके पैर ढक दिये। और अब वह उसकी बगल में बैठा था।

"विदा, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे," दादी ओसारे से चिल्लायी। "मास्को पहुचकर चिट्ठी लिखने का ख्याल रखना, साशा!"

"अच्छी बात है, विदा दादी!"

"स्वर्ग की देवी तुम्हारी रक्षा करे!"

"क्या मौसम है!" साशा ने कहा।

नाद्या ने अब रोना शुरू किया। उसे अब जाकर ज्ञान हुआ कि वह वास्तव में चली जा रही है। इसका उसको अभी तक वास्तव में विश्वास नही हो रहा था, अपनी मा के पास खडी थी, तब भी नही, दादी से विदा लेते समय भी नही। विदा, मेरे शहर! तमाम बाते जल्दी जल्दी उसके दिमाग में घूम गयी—अन्द्रेई, उसका पिता, नया मकान और गुलदान वाली नगी औरत। लेकिन अब उसे इन बातो से डर नही लगा और न उसे मन पर बोझा ही मालूम हुआ। यह छोटी और क्षुद्र बाते हो गयी थी। अतीत मे यह सब दूर, और दूर खोया जा रहा था और जब वह रेल में सवार हुए और गाडी चल दी तो उसका सम्पूर्ण अतीत—इतना बडा और महत्वपूर्ण—सिमट, सिकुडकर जरा-सा रह गया, और एक शानदार भविष्य जिसकी अभी तक कठिनाई से रेखा दिखाई देती थी, उसका चित्र उसके सामने उपस्थित हो गया। खिडकियो पर पानी की बूदे टप टप कर रही थी। हरे भरे खेतो, तेजी मे गुजरने वाले तार के खम्भे, तारो पर बैठी चिडियो के सिवा और कुछ दिखाई नही पड रहा था, और एकाएक वह आनन्द विभोर हो उठी। उसे

प्रति वहुत ऋणी हू। तुम कल्पना नही कर सकते कि तुमने मेरे लिए कितना काम किया है! वास्तव में, साशा, मेरे प्यारे, तुम मेरे जीवन में सबसे घनिष्ट और प्रिय व्यक्ति हो।"

वे बैठे हुए बाते करते रहे, और अब पीतरबूर्ग में एक जाडा व्यतीत करने के वाद उसे लग रहा था कि वातचीत में, उसकी मुस्कराहट और उसकी सम्पूर्ण आकृति में कोई चीज, पुराने फैशन की, पिछडी, गुजरी हुई है, जो शायद कब्र तक पहुच चुकी है।

"मै परसो वोल्गा पर सैर करने के लिए जा रहा हू," साशा ने कहा "उसके वाद मै कही चला जाऊगा और कुमीस (घोडी के दूध से बना पेय) का इस्तेमाल करूगा। मै कुमीस का इस्तेमाल करना चाहता हू। मेरा एक दोस्त और उसकी वीवी मेरे साथ जा रहे हैं। दोस्त की वीवी वहुत अच्छी है। मै उसे समझाने की कोशिश करता रहता हू कि वह जाकर पढे। मैं चाहता हू कि वह अपनी जिन्दगी को उलट-पलट दे।'

जव वे अपनी वातो का खजाना खाली कर चुके तो स्टेशन गए। साशा ने उसे चाय पिलायी और उसके लिए कुछ मेव खरीदे और जव गाडी चली और वह मुस्कराता हुआ अपना रूमाल हिला रहा था तो नाद्या उसकी टागें देख कर ही समझ रही थी कि वह कितना वीमार है और उसके ज्यादा दिनो जिन्दा रहने की आशा नही है।

नाद्या अपने शहर में दोपहर को पहुची। जव वह स्टेशन से अपने घर जा रही थी तो उसे सडक अस्वाभाविक रूप से चौडी लग रही थी और मकान छोटे और नीचे नीचे। उसे कोई भी आदमी न दिखाई पडा सिवा पियानोसाज़ जर्मन जो अपना घुसा हुआ मटमैला ओवरकोट पहने हुए था। मकान धूल से सने हुए मालूम पड रहे थे। दादी ने जो अब वाकई बूढी हो गई थी और पहले ही की भाति मोटी और असुन्दर थी, नाद्या की कमर में बाहे डाल दी और नाद्या के

था और मेज़ व फर्श मरी हुई मक्खियो से बिछे हुए थे। यहा की हर चीज़ बतला रही थी कि साशा अपनी निजी ज़िन्दगी का जरा भी ख्याल नही करता, अस्तव्यस्तता में रहता और उसे आराम के प्रति उपेक्षा थी। यदि कोई उससे उसके व्यक्तिगत सुख और निजी जीवन के बारे में पूछता, कि कोई ऐसा है, जो उसे प्यार करता हो, तो उसकी समझ ही में न आता कि पूछने वाले का मशा क्या है और वह सिर्फ हसता।

"हर चीज़ अच्छी तरह गुज़र गयी" नाद्या ने जल्दी से कहा। "मा मुझसे मिलने के लिए पतझड के मौसम में पीतरबूर्ग आयी थी, उनका कहना था कि दादी नाराज़ नही है। लेकिन वह मेरे कमरे में जाकर-दीवालो पर सलीब का चिन्ह बनाती रहती हैं।"

साशा खुश दिल मालूम हो रहा था, लेकिन खासता था और फटी आवाज़ में बाते कर रहा था और नाद्या उसकी ओर देखती रही। वह सोच रही थी कि क्या वह वास्तव में बहुत बीमार है या यह उसकी कल्पना है।

"साशा, प्यारे साशा," उसने कहा "लेकिन तुम नो बीमार हो।"

"मै ठीक हू, ज़रा अस्वस्थ हू–कोई गभीर बात नही "

"ईश्वर के लिए," नाद्या ने बेचैन आवाज़ मे कहा, "तुम डाक्टर को दिखाने के लिए क्यो नही जाते? तुम अपने स्वास्थ्य का ध्यान क्यो नही रखते? मेरे प्यारे साशा। मेरे प्रिय!" उसने कहा और उसकी आखो में आसू भर आये और किसी वजह से अन्द्रेई अन्द्रेइच, गुलदानवाली नगी औरत और उसका सारा अतीत का चित्र, जो बचपन की तरह बहुत धुधला और दूर प्रतीत होता था, उसके दिमाग में घूम गया। और वह रो उठी क्योकि अब उसे साशा साल भर पहले की तरह मौलिक, चतुर और दिलचस्प नही मालूम हुआ। "साशा, प्रिय, तुम बहुत बीमार हो, मै नही जानती कि तुम्हे पीला और क्षीण न देखने के लिए मै क्या नही कर सकती? मै तुम्हारे

"अच्छा, नाद्या क्या हालचाल है" उसने पूछा। "क्या तुम ठीक हो? वाकई ठीक हो"?

"हा, मा!"

नीना इवानोव्ना ने उठकर नाद्या और खिडकी के ऊपर क्रास का चिन्ह बनाया।

"जैसा कि तुम देख रही हो, मै धार्मिक हो गयी हू," उसने कहा। "मै दर्शन का अध्ययन कर रही हू, तुम जानती हो। और मै सोचती हू, सोचती रहती हू   और बहुत-सी चीज़ें अब मुझे दिन की रोशनी की तरह साफ हो गयी है। मुझे लगता है कि सबसे महत्व की बात जीवन को बहुमुखी शीशे के ज़रिये देखना ही है।"

"मा, दादी वास्तव में कैसी है?"

"वह ठीक लगती है। जब तुम साशा के साथ चली गयी और दादी ने तुम्हारा तार पढा तो वह ज़मीन पर गिर पडी। उसके बाद बिना हिले वह तीन दिन तक बिस्तर पर पडी रही और फिर वह रोने और प्रार्थना करने लगी। लेकिन अब वह ठीक है।"

नीना इवानोव्ना उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगी।

"टिक-टोक   " चौकीदार की आहट आयी "टिक-टोक, टिक-टोक   "

"बडी चीज़ ज़िन्दगी को बहुमुखी शीशे के ज़रिये देखना है," उसने कहा "दूसरे शब्दो में अपनी चेतना में जीवन को विभाजित कर देना चाहिए, सात मौलिक रगो की तरह और हर तत्व का अलग अलग अध्ययन करना चाहिए।"

नीना इवानोव्ना ने और क्या कहा और वह कब चली गयी नाद्या को नहीं मालूम, क्योंकि वह फौरन ही सो गयी थी।

मई गुज़री और जून आया। नाद्या घर पर रहने की आदी

कधे पर सिर रख कर बहुत देर तक रोती रही, गोया वह अपने को अलग न कर पा रही हो। नीना इवानोव्ना की भी उमर बहुत ज़्यादा लगने लगी थी और वह मामूली-सी सिकुडी-सी लग रही थी, मगर वह अब भी चुस्त कपडे पहनती और उसकी उगलियो से हीरे चमकते।

"मेरी प्यारी!" उसने ऊपर से नीचे तक कापते हूए कहा "मेरी दुलारी!"

और फिर वह बैठ गयी और चुपचाप रोने लगी। यह सहज ही देखा जा सकता था कि दादी और मा दोनो समझ गयी है कि अतीत हमेशा के लिए खो गया है। उनका सामाजिक रुतबा, पहले का बडप्पन, घर में मेहमान बुलाने का हक खत्म हो चुका है। वे उन आदमियो की तरह महसूस कर रहे थे, जिनकी आराम और बिना परेशानी की ज़िन्दगी के बीच एक रात पुलिस आये और तलाशी ले और यह पता लगे कि घर के मालिक ने गबन या जालसाज़ी की है और फिर हमेशा के लिए आराम और बिना परेशानी की ज़िन्दगी को विदा।

नाद्या ऊपर गयी और वही पुराना बिस्तर, लजीली, सफेद परदो वाली खिडकिया, खिडकी से बगीचे का वही दृश्य—धूप से नहाया हुआ, खुश, जिन्दा। उसने अपनी मेज़ छुई, बैठ गयी और सपनो में खो गयी। उसने अच्छा खाना खाया और फिर मलाई की मोटी तह वाली चाय पी। मगर उसे कुछ कमी-सी महसूस हो रही थी। कमरो मे एक खोखलापन नज़र आ रहा था, छत बहुत नीची लगी। रात में जब वह सोने गयी और उसने चादर ओढी तो उसे गर्म और बहुत नर्म बिस्तर में लेटना उपहासास्पद लगा।

नीना इवानोवना एक मिनट के लिए आयी और अपराधी की तरह सहमी-सी चारो तरफ देखती हुई बैठ गयी।

"अच्छा, नाद्या क्या हालचाल है" उसने पूछा। "क्या तुम ठीक हो? वाकई ठीक हो"?

"हा, मा!"

नीना इवानोव्ना ने उठकर नाद्या और खिड़की के ऊपर क्रास का चिन्ह बनाया।

"जैसा कि तुम देख रही हो, मै धार्मिक हो गयी हू," उसने कहा। "मै दर्शन का अध्ययन कर रही हू, तुम जानती हो। और मै सोचती हू, सोचती रहती हू   और बहुत-सी चीजें अब मुझे दिन की रोशनी की तरह साफ हो गयी है। मुझे लगता है कि सबसे महत्व की बात जीवन को बहुमुखी शीशे के जरिये देखना ही है।"

"मा, दादी वास्तव में कैसी है?"

"वह ठीक लगती है। जब तुम साशा के साथ चली गयी और दादी ने तुम्हारा तार पढा तो वह जमीन पर गिर पड़ी। उसके बाद बिना हिले वह तीन दिन तक बिस्तर पर पड़ी रही और फिर वह रोने और प्रार्थना करने लगी। लेकिन अब वह ठीक है।"

नीना इवानोव्ना उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगी।

"टिक-टोक   " चौकीदार की आहट आयी "टिक-टोक, टिक-टोक   "

"बड़ी चीज जिन्दगी को बहुमुखी शीशे के जरिये देखना है," उसने कहा "दूसरे शब्दो मे अपनी चेतना में जीवन को विभाजित कर देना चाहिए, सात मौलिक रगो की तरह और हर तत्व का अलग अलग अध्ययन करना चाहिए।"

नीना इवानोव्ना ने और क्या कहा और वह कब चली गयी नाद्या को नही मालूम, क्योकि वह फौरन ही सो गयी थी।

मई गुजरी और जून आया। नाद्या घर पर रहने की आदी

हो गयी। दादी समोवार के पास बैठी हुई चाय उडेलती हुई ठण्ढी सासें भरती। नीना इवानोव्ना शामो को अपने दर्शन के बारे में बाते करती। वह अब भी एक आश्रित की तरह रहती और थोडे से कोपेक की भी ज़रूरत पडने पर दादी के सामने हाथ पसारती। घर में मक्खिया भरी थी और छत दिनो दिन नीची आती प्रतीत हो रही थी। इस डर से कि कही पादरी अन्द्रेई और अन्द्रेई अन्द्रेइच से मुलाकात न हो जाय, दादी और नीना इवानोव्ना कभी बाहर नही निकलती थी। नाद्या बगीचे और गलियो में टहलती और मकानो और बदरग चहारदीवारो को देखती हुई सोचती कि शहर बहुत दिनो से बूढा हो रहा है, इसके दिन बीत चुके है और अब यह अपने अत की प्रतीक्षा में है या फिर ताज़गी और जवानी के आरम्भ होने की। काश, यह नयी और पाक ज़िन्दगी जल्दी आ जाए, जब हम सिर ऊचा कर आगे बढ सके, किस्मत की आखो मे आखें डालकर देख सके, यह जानते हुए कि हम सही है, खुश और आज़ाद रह सके! ऐसी ज़िन्दगी देर-सबेर आकर रहेगी! वक्त आयेगा जब कि दादी के मकान का कुछ भी नही रहेगा, जिसमे चार नौकरानियो के रहने का एक ही ढग है तहखाने के गदगी से भरे एक ही कमरे में रहना—हा वक्त आयेगा, जबकि उस मकान का चिन्ह भी शेष नही रहेगा, जब हर आदमी इसका अस्तित्व भूल जायेगा और याद करने वाला कोई भी नही बचेगा। नाद्या का केवल मात्र मनवहलाव पडोस के घर के बच्चे थे जो, जब वह बगीचे में टहलती, तो चहारदीवारी पर हाथ मारकर हसते हुए चिल्लाते

"दुल्हिन, दुलहिन!"

मारातोव मे साशा का ख़त आया। उसने अपनी टेढी-मेढी और बेढगी लिखावट मे लिखा था कि वोल्गा की सैर बहुत सफल रही है। लेकिन वह सारातोव मे ज़रा बीमार पड गया और उसकी आवाज़ गायब

हो गयी थी और पिछले पन्द्रह दिन मे वह अस्पताल में है। नाद्या समझ गयी कि इसके क्या मानी है और एक आशका, एक विश्वास-सा उसके दिल में बैठ गया। उसे चिढ लग रही थी कि आशका और खुद साशा के विचार से वह अब पहले की भाति द्रवित नही हो पा रही थी। उसे ज़िन्दा रहने की इच्छा, पीतरबर्ग में होने की इच्छा हो रही थी। और साशा के साथ दोस्ती, अतीत की चीज़ मालूम हो रही थी, जो प्रिय होने पर भी बहुत दूर हो गयी थी। वह सारी रात सो नही सकी, और सवेरे खिडकी पर जाकर बैठ गयी, मानो किसी बात को सुनने वाली हो। और वास्तव में नीचे से बातचीत की आवाज़ आयी – दादी घबराहट के साथ किसी से कुछ जल्दी जल्दी पूछ रही थी। फिर कोई रोया जब नाद्या नीचे गयी तो दादी कमरे के कोने में खडी हुई प्रार्थना कर रही थी और उनका चेहरा आसुओं से भरा हुआ था। मेज़ पर एक तार पडा हुआ था।

दादी का रोना सुनते हुए नाद्या कमरे में बहुत देर तक इधर से उधर चक्कर काटती रही। फिर तार उठाकर पढा। तार में लिखा था कि कल सुबह सारातोव में अलेक्सादर तिमोफेइच छोटा नाम साशा क्षय से मर गया।

दादी और नीना इवानोव्ना मृतक के लिए प्रार्थना करवाने के लिए गिर्जाघर गयी और नाद्या बहुत देर तक कमरो में सोचती हुई चक्कर काटती रही। वह अच्छी तरह समझ रही थी कि जैसा साशा चाहता था, उसकी ज़िन्दगी उलट-पलट हो गयी थी, वह यहा पर अकेली, विदेशी-सी, यहा पर अवाछित थी। और यहा पर कोई चीज़ नही थी, जिसे वह चाहती हो। विगत छीनकर खतम कर दिया गया था मानो वह आग में जल कर भस्म हो गया था और राख हवा में बिखेर दी गयी थी। वह साशा के कमरे में गयी और वहा खडी रही।

"बिदा, प्यारे साशा" उसने कहा। उसकी कल्पना में उसके सामने नयी वृहत् श्रौर विशाल ज़िन्दगी थी श्रौर यह ज़िन्दगी, यद्यपि श्रभी तक श्रस्पष्ट श्रौर रहस्यमय थी, उसे बुला रही थी, श्रागे खीच रही थी।

वह ऊपर सामान बाधने चली गयी श्रौर दूसरे दिन सवेरे श्रपने घर से बिदा लेकर शहर से प्रसन्न श्रौर उमगो से भरी हुई चली गयी कभी भी वापस न लौटने के विश्वास के साथ।

१६०३

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।

हमारा पता है

२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

"बिदा, प्यारे साशा" उसने कहा। उसकी कल्पना में उसके सामने नयी वृहत् और विशाल ज़िन्दगी थी और यह ज़िन्दगी, यद्यपि अभी तक अस्पष्ट और रहस्यमय थी, उसे बुला रही थी, आगे खीच रही थी।

वह ऊपर सामान बाधने चली गयी और दूसरे दिन सवेरे अपने घर से बिदा लेकर शहर से प्रसन्न और उमगो से भरी हुई चली गयी कभी भी वापस न लौटने के विश्वास के साथ।

१६०३

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।

हमारा पता है

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।